शाक्यमुनि बुद्ध

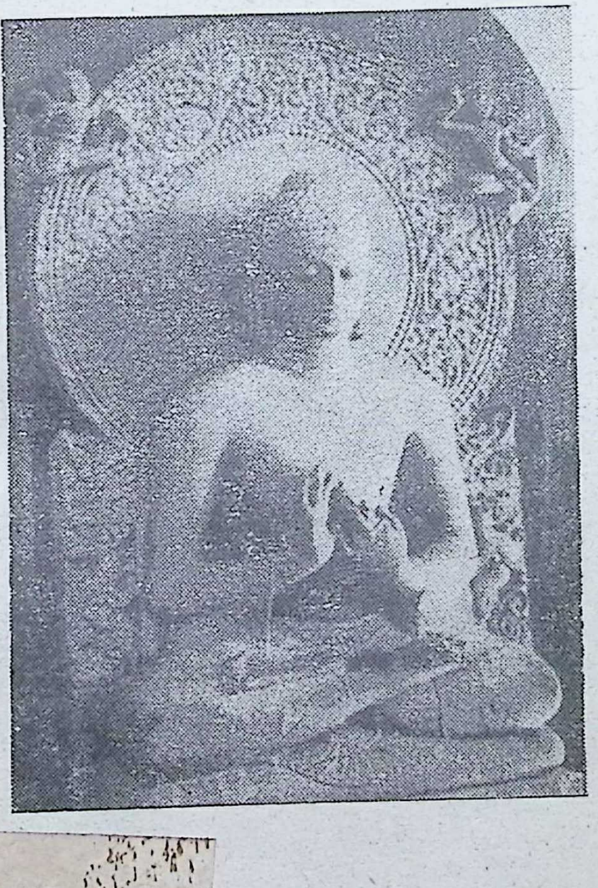

२९ शा

ले.– तेजनारायण पञ्जियार थारु

शाक्य मुनि बुद्ध

मैया कलरीदेवी आ बाबू देवनाथ पञ्जियार

के

शान्ति ले समर्पण

तेजनारायण पञ्जियार थारु

प्रकाशक– धर्मादय सभा, वागबजार काठमाडौं, नेपाल

२९४.३
धा ३२९सा

प्रथम पटक– २००० प्रति मिति २०४६ वैशाख पूर्णिमा

सर्वाधिकार लेखकमे छं।

(आवरण सारनाथ कासी, चारिम शताब्दि ई. धर्मचक्र परिवर्तन आसन)

मुद्रक– मुद्रण तथा प्रकाशन विभाग, सिंहदरवार काठमाडौं,

शुभ-कामना

महात्मा बुद्ध यहै नेपालके धरतीमे जन्मलहा संसार प्रसिद्ध धर्मगुरु चिऐ। पाली एवं संस्कृत भाषामे एकर जिवनी छिटल छाटल रूपमे भेटैछै। उदयपुर जिल्ला निवासी श्री तेजनारायण पंजियार मेहनैत क्याके "शाक्यमुनि बुद्ध" शीर्षकमे ऐ महात्मा के जिवन लिखके असल काम करलकै। यै पुस्तकसे बुद्ध धर्म प्रतिके आस्थामे वडका योगदान थपलजेतै सेहम कामना करै चिऐ। तथास्तु।

द.............

(विजय कुमार गच्छदार)

सञ्चार राज्यमन्त्री

दुई शब्द

सक्य मुनि बुध (शाक्य मुनि बुद्ध) लुंमिनि (लुम्बिनी) मे यैस्नो यहै ठाममे जनम मेल छैलै से अशोकके शिलास्तम्भ अभिलेखमे देखल जाइछैं तैयो बुद्धके जीवनके विषयमे बहौत कम ज्ञान मात्र हमरा औरके ज्ञातव्य आइछ। यकर बहौत प्रमुख कारण सवछै। तँ मध्ये थोरहेक प्रमुख कारण सबके पहिने यै ठाम चर्चा करै चिऐ ।

बुद्धके उपदेश सम्बन्धके वाङ्मय जतवेहेक विशालछैं ततवेंहेक बुद्ध विषयके वाङ्मय स्वल्प छैं। यकर कारण जे बुद्ध मुकुत करै वला नै चिऐ महज मुक्तिके बाट देखेनिहार (मार्ग प्रदर्शक) हैके मूल दर्शन आ संस्कृति चिऐ। वौद्ध सब पूजा पाठ करनाई से वेसी शील, समाधि आ प्रज्ञामे अग्रसर है छैं।

दोसर बात, बुद्ध जीवनी कहनाईएटामे प्राचीने युगसे एकटा समस्या के अभास भेंटै छैं। सिद्धार्थके जनमके समयसे बुद्धत्व प्राप्ति तैक के कथा आ बुद्धत्व प्राप्तिसे महापरिनिर्वारण तलिकके कथा मध्ये कोनटा कथाके बुद्ध जीवनी कहल जेतै ? पहैनका कथा कहैले जतहेक हलुक छैं पछुलका कथा ततवेंहेके गुढ, कहैके माने जे बुद्ध ४५ वरिस तलिकगामे-गामे नगरे-नगरे आ चौरासी चौरासीके चारिका आ चारिकाके समयमे देलहा यावत उपदेश सवके वर्णका आवै छै। बहुजन हिताय आ बहुजन सुखाय लक्षित एवं निर्वाण उन्मुख बुद्धके उपदेशमे राजकीय जीवनके वृहद परिचर्चा ततहेक अर्थ युक्तो नै छैं। यहै सव कारणसे जनमसे बुद्धत्व प्राप्ति समयके कथा यत्र तत्र प्रसङ्ग रूपमे, उदाहरणके रूपमे सम्वेग-संस्मरणके उदातरूपमे कहल गेलहा मात्र उपलब्ध छैं। त्रिपिटक लखा विशाल आ प्रमाणिक वाङ्मयमे स्मेत पूर्ण बुद्ध जीवनी अर्थात् जनमसे महापरिनिर्वारण तलिकके कथा एके ठाममे

वा सूत्रमे उपलब्ध नै छै। पब्बजा सूत्र, अत्तदण्ड सूत्र, अरिय परिवेसन सूत्र, महासच्चक सूत्र, बोधि राजकुमार सूत्र, धम्म चक्क पवत्तन सूत्र, पास सूत्र, महापरिनिर्वारण सूत्रके बुद्ध कथा प्रसङ्ग बुद्धहैके शब्दमे सम्वाद शैलीमे छै। यै सूत्र के बुद्ध जीवनी प्रसङ्गके एक एकटा वाक्यसे हमराओरके हृदयमे संवेगके विद्युत झंकार प्रवाहित करै छै। आनन्द आ शान्तिके अक्षुरण इजोत दै छै। धम्मपद, बुद्ध वंश आ महावग्गौमे बुद्धके जीवनके प्रसङ्ग भेटै छै। यतहेक हेतौं पूर्ण बुद्ध जीवनी स्पष्ट नै है छै।

जातकीय कथा अभिव्यक्तिमे बुद्ध जीवनी के तीन निदानमे प्रस्तुत करै छै। बुद्धत्वके वास्ते प्राणी धान केलहासे अर्थात् बोधिसत्व चर्य्याकि प्रार्थना भेलहासे दस पारमिता, दस उपारमिति आ दस परमत्थ पारमिता पूर्ण केलहा यावत बोधिसत्व चर्य्या के दुरे निदान कहै छै। सिद्धार्थके जनम से बुद्धत्व प्राप्ति तलिकके कथा के अति दुरे निदान कहै छै। शान्तिके निदानमे कोनो अनुच्छेद तलिकके विस्तार नै क्याल गेल छै। धर्म चक्र परिवर्तन से महापरिनिर्वारण तलिकके कथा के शान्ति के निदान कहैवला सूचना दैके उल्लेख करैत इतिल्यम करने छै। वास्तवमे वुद्धत्व प्राप्त के बुद्ध जीवनी कहैके अरथ त बुद्ध के ४५ वरिसके सम्पूर्ण क्रियाकलापके उल्लेख करनाई जरूरी भ्या जाइछै। तहैले अर्थ कथाके आचार्यके इत्यलम करैके बाहेक दोसर कोनो विकल्प नै छेलै।

ललितविस्तरौसे तुषित देवलोक स्थित बोधिसत्व के गर्भ प्रवेश आ लुम्बिनीमे जनम कयासे धर्मचक्र परिवर्तन तलिकके बुद्ध कथाके वर्णन क्याल गेल छै। यनङ्ग भेनेसे ललितविस्तरौमे बुद्धत्व-प्राप्ति तलिककके कथा निदानसे निगमनतैक २७ परिवर्त सबमे बुद्धकथा क्याल गेल छै। धर्म चक्र परिवर्तनके पाछेके निर्माण तलिकके कथाके समटैके काम नै क्याल गेलै। ललितविस्तर श्रद्धाभिसिञ्चित काव्यात्मक शैलीमे छै त जातकीय अविदुरे निदानमे प्रतिकात्मक अभिव्यक्ति के छै।

बुद्धके जिवनी सम्बन्धि दोसर प्राचीन श्रोत "बुद्ध चरितम" चिए। मूल संस्कृत पाठ सहितके प्रथम भाग आ अनुवाद रूपमे प्राप्त दोसर भाग बुद्ध चरितंभे बुद्धके जनम से महापरिनिर्वाण तलिकके पूर्ण कथा उपलब्ध भेलहा सवसे पहिनका एकेटा काव्य ग्रन्थ चिऐ। पहिनका भागमे १४ सर्गसे ल्याके बुद्धत्व प्राप्ति तलिकके कथाके वर्णन क्याल गेल छै। दोसर भाग १५ सर्गसे प्रारम्भ भ्याके २८ सम सर्गमे समाप्त भेल छै। यह्या बुद्ध जीवनीके १४ सर्गके वर्णन जातक अठकथा आ ललितविस्तरसे

मिलल जुलल बौद्ध वाङमय मे यत्रतत्र भेटलहा बुद्ध प्रसङ्ग सव चिऐ । धर्मचक्र परिवर्तन, अनेक शिष्य, महाशिष्य, सवके प्रवज्या, अनाथपिण्डकके दिक्षा, पिता पुत्र समागम, जेतवन दान, प्रवज्या श्रोत, अम्रपालीके वगँचामे आयु संस्कार त्याग, लिछबी सवमे अनुकम्पा, निर्वाणके बाटमे, महापरिनिर्वाण, निर्वाणके प्रशंसा, आ धातु विभाजन प्रसङ्गके ललितविस्ततर बुद्ध जीवनमे सामिल नैं करने छै ।

पाली त्रिपिटकमे छिटल छाटल बुद्ध जीवनी, जातकके बुद्ध जीवनी, ललित विस्तरके बुद्ध जीवनी, आ बुद्ध चरितम् के बुद्ध जीवनीके कथा प्रसंग प्रकारान्त रूपमे तत्वतः वोहिनङ वोहिनङ छै । सिद्धार्थके जनमसे बुद्धत्व प्राप्ति तलिकके कथा मे यी तीन श्रोत सवके आपने आपने शैलीके अभिव्यक्तिके विशेषता छै । मगर ऐ ठाम एकटा बात एहेन छै जे यतहेक भेलौंपर सिद्धार्थके २९ वरिसके जिवनी स्पष्ट श्रृखलावद्ध आ पूरा करँले आई तक आचार्य सव, लेखकवृन्द आपने आपने किसीमसे प्रसंग प्रयोजन एवं वर्णका शैलीमे स्वतंत्र हँके बात देखल जाइछै। "भद्र कल्पावदान" लखा प्राचीन कृतिसे त्रिपिटक प्रसंग, जातक, ललितविस्तर आ बुद्ध चरितमे नैं भेलहा रौद्र आ विभत्स रस परिपूर्ण क्याके गोपा (यसशोधरा) प्रसंगके विरह रसमे श्रद्धालु सवके चुर्लुम डूंग्या देने छै। विसवी सदीके Buddha and his teachings मे डा. भिमराव अम्वेदकर कपिलवस्तु आ देवदह विचके रोहनी लदीके पाइनके प्रसंग ल्याके सिद्धार्थ के जीवनीमे लवका उत्तेजनात्मक ईजोत राजनैतिक एवं सामयीक प्रसंगसे बुद्ध अभिनिष्क्रमणके मूल कारण देख्याके क्याल गेल छैं ।

नेपालके वौद्ध भिक्षु सव मध्यम विहारमे विहार करँले, किन्नरी जातक, उत्कीर्ण कराइले, बुद्ध धर्मके अर्थमे वुद्ध शासन शब्दके व्यवहार करनाई उज्ञानमे निवास करँले स्थविर वादी, स्र्वास्तिन वादीके पाछे ह्वेनसंग युग तलिक अधहा महायानी भ्यगेलहा वातके स्पष्ट करँछै। फेरो नेपाली वौद्ध सव दार्शनिक, तांत्रिक आ कला वस्तुकलाके साधन भ्याके जिवन्त आ सशक्त बुद्ध प्रवाहके अंग भेलै। बुद्ध जीवनी विषयमे भी बुद्धके यथार्थ कथा से वेसी दार्शनिक पक्षमे विलसित क्याल गेलछै। वुद्धत्व ने त उत्पन्न है छै आ ने त परिवर्तने है छै, निर्वाण आ संसार नहाइत संसार आ निर्वाण एके चिऐ कँहके माध्यमिक शून्य दर्शन मे गहन भेलँ। तकर वाद पछाके युगमे अर्थात पँछला मल्ल कालमे वौद्ध दमन आ वौद्ध संस्कारमे आन संस्कारके आरोपण प्रयास भेलाके वादमे वौद्ध नेतृत्व वौद्ध सवके कथात्मक रस संचारणमे आवद्ध करँले अवदान आ जातक कथा दिसर फेरो वौद्ध नेतृत्व सक्रीय

मेलहा विषय देखल जाइछै। ताव फेरो बुद्ध कथा (ललित विस्तर) सुने लागलछै आ "स्तुतमपि" स्त्रोत पाठ विहान विहानैमे करैके शुरू भ्यागेल छै। निष्ठानन्द वज्राचार्यके नेपाल भाषामे अनुदित ललितविस्तर से नेपाल भाषा भाषी बौद्ध भगत सवके छातीमे बुद्ध कथा घर वनवे लागलै। श्री महा प्रज्ञा भिक्षुके पाली भाषा अनुसार ललितविस्तर आ आचार्य भिक्षु अमृतानन्द महानायक महास्थवीरपाहि सम्पादित अनुदित संक्षिप्त बुद्ध जीवनी के प्रकाशनके वादमे बुद्धके कथा विषयमे सम्यक चिन्तन मनन प्रारम्भ मेलै। हमर "शाक्य संघमे सिद्धार्थ" "बुद्ध" पाली वाङ्मयमे संस्कृत वाङ्मयमे आ पुरातात्विक दृष्टिकोणमे त्रिपिटकके आपने शब्दमे रचनाके प्रकाशनमे बुद्ध कथा स्वतंत्र चिन्तनके महत्व पूर्ण सुरुवातके रूपमे स्वीकारने छै। वोने श्री कवि चित्तधर "हृदय" जी के "सुगत सौरभ" महाकाव्य श्री सत्यमोहन जोशीजीके "गौतम बुद्ध" एकांकी काव्य, स्व. धर्मरत्न यमीजीके "अर्हत नन्द" महाकाव्यसे नेपाल भाषा भाषी विशेषतः शैक्षिक पाठ्यक्रम संगे सम्वद्ध युवा वर्गमे बुद्ध जीवजिनीके विषयमे जिज्ञासा जग्या देलकै। लेकिन आचरजके वात ई चिऐ जे बुद्ध लुम्विनीमे जनमलेलकै, किंवा अवतारवादमे बुद्धके स्वीकार करलकै तैयो सरकारी, अर्ध सरकारी, प्रतिष्ठान,स्वतंत्र संकायसे आई तलिक बुद्ध जीवनी ऐकोटाने छापल गेल छै। आचार्य अमृतानन्द महानायक महास्थविरके संक्षिप्त बुद्ध जीवनीके नेपाली अनुवाद आ धर्मरत्न यमीजीके "बुद्ध मानिस हुन्" खण्ड काव्य प्रकाशित नै भेल रहतिऐ त नेपाली भाषा वाङ्मयसे बुद्ध जीवननीके विसन्याले ठहरतिऐ ।

वस्तुतः यहेन परिपेक्षमे श्री तेजनारायण पंजियार थारु रचित थारु भाषाके "शाक्य मुनि बुद्ध" प्रकाशित भेनाई कतहेक महत्वपूर्ण वात चिऐ से स्वयं स्पष्ट छै। बुद्ध शाक्य कुलपुत्र चिऐ । शाक्य कुल थारु जाइतके एकटा वंश हैके तथ्य प्रकाशमे आइव रहल छै। यै अर्थमे बुद्धके कथा बुद्धके आपन प्राचीन जाइत आ कुलके भाषामे प्रकाशित भेनाई एकटा महान ऐतिहासिक घटना चिऐ। कथीले ? आई तक थारु भाषामे बुद्धके कथा प्रकाशित हैके वात हमरा थाह नै भेल आइछ। ऐ "शाक्य मुनि बुद्ध" पुस्तकके अध्ययनसे नेपालके तराई प्रदेशके पूरुवसे पछिम तलिक फैलल थारु समुदायके आपन पूर्खाकि बौद्धत्व जागृति, सशक्त आ संगठित हेतै से हमरा पूरा पूरी असा आ विश्वास आइछ।

श्री तेजनारायण पंजियार थारु विरचित ३५ अध्यायके "शाक्य मुनि बुद्ध" हमे पठहलिऐ। यै पुस्तकसे पहिने थारु भाषाके कोनो दोसर पुस्तक हम नै पढ्ने चिऐ। "शाक्य मुनि बुद्ध" पुस्तकके पाण्डु लिपिके सगे डा. केशव मान शाक्य आ पंजियार थारुजी श्री कीर्ति विहारमे एलै। पहिने हम पुस्तक पढहैले आपन अस-

मर्थता प्रगट करलिऐ । पाछे डा. शाक्यजीके आग्रह अनुसार हमे पुस्तक पठैहैले प्रयास करलिऐ । थोर वेहेक पता पढहैत पठहैत हमरा मस्किल नै लागे लागल । ३० पता जतहेक पढहलिऐ त "शाक्य मुनि बुद्ध" हमरा आपनै पढहैले मन लागे लागल । उपन्यास पढहैके समयमै पढहैले किताब छोडैके मन नै लागै छै तहिनङ्गे हम "शाक्य मुनि बुद्ध" नै छोडे सकिलिए । एक राइत दुई दिनके भितरमे हमे ऐ ३५ अध्यायके पुस्तक सवटा पंढ लेलिऐ ।

ऐ किताबके अध्ययन क्रममे हमरा लागलजे बुद्ध जीवनीके प्रायः लेखकसव नहाइत डेविड कलुपहनाके अनुशरण करैत येकर लेखक अतितके तथ्यसवके आपने शैलीमे आ प्रकारान्त रूपमे प्रस्तुत करने छै । विशेषतः सिद्धार्थके कपिलवस्तु हवैली भितरमे रहे परैके, लेकिन वोकर चिन्तन-मनन अत्यन्त विस्तृत रूपमे, गहन रूपमे फैलल आ वोकर तक्षशिलादि महाविद्यालय सवमे शिक्षित दिक्षित भ्याके एलहा वोकर परिचित पुरजन परिजन एव मित्र सवसंगे हवैलीके भितरैमे रहे वला सिद्धार्थके तर्क वितर्कके जे प्रसंग सवछै से प्रसंग सव हमरा तत्कालिन समाजिक राजनैतिक, आ शैक्षिक वस्तु स्थितिके विचारके नया आयामिक बुद्ध कथा लखा लागल । पुस्तकमे अभिव्यक्ति केलहा दार्शनिक विषयके यथार्थता, विचहन नहाइत बुद्ध दर्शनके मरमके बुझनाई आ सत्यासत निरूपण करैले हमरा थारु भाषा सिखैले बड मन लागे लागल । दोसर वात, पुस्तक पढतै पढतै हमर मानसिक तन्तुमे अशोकके अभिलेखके भाषाके क्रीया पद झंकृत भ्याल नहाइत अनुभव भ्याल । थारु भाषाके मूल व्याकरण स्वरूपके ठिमावे सकतै त सस्कृत भाषा आ व्याकरणके दृष्टि से मात्र अर्थ लग्याल गेलहा अशोकके अभिलेखके चित्तनै बुझहै वला अनुवादके अर्थ स्पष्ट हेतिऐ कि तेहेन अभास हमरा मेटैए ।

अस्तु, ई शाक्य मुनि बुद्ध थारु भाषा भाषी सवके वास्ते सरल आ सरस शैलीके बुद्ध जिवनी चिऐ । यकर अध्ययन अध्यापनसे थारु जाइत सव [आपन मूल धर्म आ संस्कार दिसर फेर से लवका जागरण आ संगठित हेतै आ तैसे नेपालके विभिन्न राष्ट्रिय भाषा मधके एकटा प्राचीन भाषा थारु भाषाके यी ग्रन्थ समृद्ध वनैने छै से वातमे दुईटा मत नै हेतै । ई स्तुत्य काम सम्पादन करै वला तेजनारायण पंजियार थारुके दिर्घाय आ सुस्वास्थ्य के वास्ते हम त्रिरत्नमे प्रार्थना करै चिऐ आ प्रकाशन मे सहयोग करै वला सवके साधुवाद दै चिऐ ।

श्री कीर्ति विहार भिक्षु सुदर्शन
कीर्तिपुर यें
१५।१२।२०४८

वनहैन

अपनाश्रौरके नहाइत लोक सव ऐ दुनियामे सवदिन जनमैछै आ मोरै छँ। ककरौने कोई पूछै छै। ककरौ पूछवो करै छै त थोर वेहेक समय तलिकरहैछै। समयके अन्तरालमे लोक वोकरा विसैर जाइछै। अपनाश्रौरके लजैरसे देखैचिऐ जे कोई गरिवमे जनम लैछै आ आपन कामसे वडका धनिक भ्या जाइछै, कोई धनिकमे जनम ल्याके गरिब भ्या जाइछै। कोई महाफ मछगीध रहैछै, लेकिन पाछे ववाजी भ्या जाईछै कोनो वडका ववाजी भरैठ जाईछै। कोई सिपाहीसे रजा भ्या जाई छै आ कोनो रजा राज्य गम्या दै छै। ई सवटा आपने करनीके फलाफलके वात चिऐ तहै परिपेक्षमे आई से करिव दुई हजार पांचसय छतिस वरिस पहिने थारु जाइतमे एकटा वच्चाके जनम भेलै। वच्चाके सौरिए घरमे महताइर ऐ दुनिया से चैल गेलै। वच्चा टुगर भ्यागेलै। उ टुगर वच्चा सिद्धार्थ ऐ दुनियाके दोसरे लजैर से देखे लागलै। एकदिन वावूसंगे खेत दिसर गेल छेलै त देखलकै जे हरके नास लके वहरेलहा घुघराके एकटा नेना एलै आ उठ्याके खया लेलकै। तहै दिनसे वोकर मन ऐ दुनियाके रित विमूत से उखैड गेलै। उ ऐ दुनियाके जंजालके घर वुझहे लागलै। दुःखके खाइन देखलकै आ वोई दुःखके पहाड पार हेवैले वोकर मन छटपटवे लागलै।

समय एलै त गामके अभिजात वर्गके धनिकहालोकसवआपन वेटाके तक्षशिला वारणसी आ राजगीर पढहैले पठवैत देखै त वोकरौ जाइले मन लागै लेकिन वोकर पिता शुद्धोधन (सुदहन) जे वोई समयमे आपन इमन्दारी एवं न्यायप्रीयता के कारणे राज काजमे रजाके काम क्या रहलछेलै से वावहन सवके फेरामे पैरके वेटा सिद्धार्थके पढहैले अन्ते न पठैलकै। एकटा जोतषी वावहन जे सिद्धार्थके टिपैन लिखने छेलै से कहलकै जे तोहर वेटा वडका ववाजी भ्या जेतौ तै एकरा वडका

ठाममे वडका शिक्षा नै दहं । तहौंसे वेसी उमेर भेलै त यशोधरा नामके एकटा कन्यासे वोकरा वियाह् क्या देलकै । तैंसे एकटा वालक भेलै । वियाह् भेलाके वादमे जेनङ लोक सव घरवालीके पछा वेहाल रहछै तहिनङ उ नै रहलै मगर प्रेममे कनहिको कोताही नै करै आ तौंहेमे वोकर उखरलहा मनके घरवाली यशोधरा नै मोहे सफलकै त एक दिन राइतके समयमे घरसे वहऱ्या गेलै ।

जै ठामके एखनी वर्तमानमे हाजीपुर कहै छै से जगहके तखनी वैशाली कहै छेलै । वोहै ठाम वोकरा गुरु भेटलै त दिक्षा लेलकै आ तकर अनुसरण करे लागलै मगर वोकरा चित नै वुझलै त मगह चैल गेलै । छ वरिसके कठिन से कठिन तपस्या क्याके वैशाख पूर्णिमाके राइतमे वोकरा ज्ञान प्राप्त भ्यागेलै । काशीके सारनाथमे ज्याके उ आपन धरमके प्रारंभ करलकै । सारनाथमे कैलहा धरम उपदेशके धर्मचक्र परिवर्तन कहै छै जेकरा दुनिया जानै छै । तकर वाद ४५ वरिस तलिक कासीसे ल्याके मगह आ कोशल राज्यके गामे गामे, नगरे नगरे घुइम घुइमके आपन धरमके प्रचार करलकै । आई तलिकके संसार भैरमे एलहा गेलहा धार्मिक गुरुके व्यक्तित्वके लोक सवमे यह्या एकटा दुनियामे एहेन गुरू भेलै जे आपने जिवन कालमे आपन धार्मिक मण्डली खडा कैलके जैमे जाइत पाइत, उच-नीच,रजा-रंक आ मरद मौगीके कोनो भेद भाव नै राखल गेलै । वोकर आपने समयमे लाखन के लाख चेला चाटी भेलै लेकिन तैयो उ अपनाके कहियो आदमी छोइड दोसर हैके घमण्डी नै करलकै। उ असी वरीसके पाकल उमेरमे आपन खूसीसे ऐ दुनियाके तैजके मोरलै । उ मोरलै, उ आपन पार्थिव शरीरके तेजलकै लेकिन दोसर दोसर लोक नहाइत उ फेर ऐ दुनियामे जनम नै लेवै से कैहके मोरलै ।

हिन्दु धरमके पुस्तक सवमे वर्णका केलहा धार्मिक उच नीचके वात आ भगवानके वात उ कहियोने मानलकै आ ने एकर शिक्षा दिक्षा देलकै । धार्मिक तत्वमे उ कहियो अजगुत अजगुतके वातके करैके वा कराइके विषयमे कहियो दिलचस्पी न देखैलकै । उ वोहिनङ करै जेनङ सव लोक करैछै। वोकरौ भूख लागै त भिक्षाटन क्याके उदर भोरै लेकिन एक दिनमे उ वोतवेहेक भिक्षाटन करै जतहेक से वोकरा छाक टरतै । शरीर वला जिवके जेनङ रोग दोष है छै तहिनङ वोहो वेमार परै छेलै त दवाई विरो ख्याके स्वास्थ्य लाभ करै छेलै । ई सव लौकिक वात व्यवहारके वोकर चेला चाटी सव गौर से लजेर गाडने रहै । मगर उ जेह्या भखै सेह्या करै आ जेह्या करै सेह्या भखै । वोकर कथनी आ करणी एके है छेलै । वोकरा वहौत ठाम आदर सत्कार हेवै त वहौत ठाम निन्दा आ अनादर सेहो हेवै । चेला चाटीके

वडका वथान मे कहियो कहा सुनी भ्या जाई कहियो झगडा झाटी हेवे करँ। ई सव वेंहोरा के फैसला वोकरा करे परै। वोकर आपने पितियोत भाई देवदत्त वोकर ज्ञान दिप्त से ईख करे लागलै आ वोकरा मारैले वडका दन्तरवा हाथीके खौसे दारू पीय्याके वोकर दिसर हुल्या देलकै। लेकिन सर्वसिद्ध प्राप्त बुद्ध लग आवैत मातैर हाथी आपनै भूइञ्या मे वैठगलै आ वुद्धके चरण स्पर्स क्याके सुढ लके उठ्याके आपन पीठमे वैठलकै आ चारूकता घुम्या फिन्याके वोकर अखडहामे पुन्या देलकै सवटा वात बुद्धके समयमे लिखल गेलहा त्रिपिटकके ठाम ठाममे निखाइर निखाइर के लिखल छै एवं भारतके सांची, वरहुत मे ढेरी के ढेरी पाथरमे लिखके राखल छै।

बुद्धके चलेलहा धरमके पहिने थेर गाथा कहै छेलै। ई थेर गाथा वोकरे जाइत के दुनिया मानै वला सम्राट अशोक वडका धार्मिक सभा कैरके पुस्तकके रूपमे तैयार करलकै। वोई पुस्तकसवके उत्तरमे नेपाल, काश्मीर दखिनसे श्रीलंका, पछिममे अफगानिस्तान आ पुरूवमे हसाम तलिक धर्मगुरू सवके साथलग्या के पठैलकै आ धरम प्रचार करलकै। ऐ धरमके रक्षा करैले सम्राट अशोक ८४ हजार शिलालेख, स्तम्भ, स्पूत तैयार करलकै। महात्मा वुद्धके मोरलाके आठसय वरिस पाछे चीनसे फाहियान नामके विद्वान आदमी भारत एलै आ बुद्ध धर्म के अध्ययन क्याके वहौत किताव चीन ल्यागेलै तकर वादमे फेरो ह्वेनसंग एल छेलै वोह १७ वरीस तलिक ए ठाम रैहके बुद्ध धर्मके शिक्षा लेलकै आ चीन गेलै। चीनमे एखनियो बुद्ध धर्म छै। चीने टानै जापान, कोरिया, फिलीपीन, भीयतनाम, थाइल्याण्ड, वर्मा, श्रीलंका ऐ सव देशसे यहै धरमके मानै छै।

यखनी वर्तमान समयसे पछवैरिया गोरका लोकसव एकरा वडे माने लागल छै। भारतमे अंग्रेजसव राज करैतरहै त श्रीलंका सेहो एकरे राज्यके अधिन परै छेलै। भारते नहाइत वोहौ ठाममे अंग्रेज सव आपन धरम स्थपना करैले सभा लगैलकै तैंमे श्रीलंकाके बुद्ध धर्मके महात्मा सव टाङ्ग अड्या देलकै। वडका वहसा वहसी भेलै। पहिनकादिन दस हजार लोक जमा भेलै। दोसर दिन २५ हजार आ तेसर दिन ५० हजार लोकसव जमा भ्याके वहस सुने लागलै। आखिरमे बुद्ध धरम वला सव जितलकै। अंग्रेजसव आपनै कहलकै जे तोरा सव जित गेलही। मगर ई कोन धरमचिऐ आ एकरा केवलैने छै आ कते से चलल छै। वात १८६५ ई. मे भेल रहै। ऐमे श्रीलंकाके महात्मा श्री गुणानन्द जी सवसे प्रमुख रहै आ अंग्रेज दिसरसे डेभीड डी सिलभा से वहसा वहसी भेल रहै। वोनङ वोईसे पहिनौ ऐ बुद्ध धरमके सम्बन्धमे वात उखैड गेल छेलै आ विद्वान अंग्रेज सव एकर खोजी

नीती करे लागल छेलै । तँ मे सवसे पहिने जर्मन विद्वान डा. फुरहरके नाम आवै छै । डा. फुरहरे लुम्वीनीके पत्ता लग्याके वुद्धके जनम भेलहा जगहमे सम्राट अशोक के गडलहा अशोक स्तम्भ के पता लगैलकै । ऐ वातके आव डेढ सय वरिस भेल जाइछै । ऐ समयमे अंग्रेज विद्वान सव ऐ धरसके वडे खोजी करलकै आ आपन भाषामे किताव सव लिखलकै । वोह्या किताव सवके अध्ययन क्याके हम ई पुस्तक तैयार करलिऐ । तँ किताव सवमे हवाई विश्वविद्यालयके प्रोफेसर डेभिड आ इन्द्रेनी कलुपहना दुनु परानी के The Way of Siddhartha, A Life of the Buddha (दी वे अफ सिद्धार्थ, लाइफ अफ दि बुद्ध) हमर ऐ शाक्य मुनि बुद्धके अधार चिऐ । ई पुस्तक हम कोन कोन पुस्तक पैढके लिखने चिऐ तकर वर्णका अन्तमे अध्याय अनुसार क्या देने चिऐ । लेकिन शब्द आ वाक्य विन्यास विल्कुल हमर आपन चिऐ ।

ई पुस्तक बुद्ध धरमके नै चिए सहज बुद्ध धरमके चलवैवला महात्मा बुद्धके जिवन वर्णका चिऐ । वोकर जिवनके वर्णका हमर लखा पातकी लोक नै करे सकतै । इ त वोहै वडका महत्मा बुद्धके कृपा चिऐ जे हमरा प्रेरणा देलक जैसे ई पुस्तक अपने सवके समक्ष प्रस्तुत क्या रहल चिऐ । अपना थारु जाइत के लोक सव ऐ बुद्ध धरमके नै विसरल चिऐ मगर एकरा नै जान चिऐ । अनजानै मे एकर पूजा करै चिऐ आ एकर धरमके अनुशरण करै चिऐ । धरम खाली विश्वासैसे नै है छै वल्की वोहेन काम करनाई आ तँ काम के फलाफलके अनुभव करनाई धरम कहल जाइछै । चोरी, झूठ, छिनरपनी, लोभ, आ घमण्डी के छोडनाई बुद्ध धरम चिऐ आ थारु सव सकभैर ऐसे फराके रहे चाहै छै । इ त अनुभवके वात चिऐ जेकरा आन जाइत के सवलोक कहै छै जे थारु सव वड सोझ साझके आदमी है छै । वोनङ ऐ बुद्ध धरम आ ऐ थारु जाइतके मटिया भेट करैले वावहन आ शासक सव कोनो कसैर ने छोडलकै । औक्सफोर्ड विश्वविद्यालयके प्रो. रिचार्ड गोम व्रीच आ जमर्नी विद्वान टी. डब्ल्यू रीस डेभिस वेगल वेगल उद्धरण के साथ कहै छै जे बुद्ध धर्म के मटिया मेट करैले वावहन आ शासक सव वौद्ध विहारके उजाइड देलकै आ वुद्ध धरमके कितावमे आइग लग्याके सुडाह क्या देलकै । बुद्ध जनमलहा जाइतके बुद्धके विषयमे कोनो थाह नै रहै तैके वास्ते ऐ जाइतके क्या नेर ने क्यावेर छेमान करलकै । लेकिन यहै जाइतके रजा सम्राट अशोक ततहेकने शिलालेख, स्तम्भ सव वनैने रहै जे सवके नै विगाडे सकलकै आ ई धरम फेर उरमलै । अंग्रेजी पढलहा वावहन श्री राम शंकर त्रिपाठी सेहो कहै छै जे मगहके वावहंन रजा पुष्य मित्र जाव रजा भेलै त बुद्ध धरमके पुस्तकमे आपनैसे आईग लग्याके डाहलकै आ एकटा बुद्ध धरमके

ववाजी के मुडी काइटके लावै वलाके एक सय दिनार (तखैनका रूपैया) ईनाम दैंके ढोलहा पिट्या देलकैं ।

कुछो हौं ई त हमरा ग्रौरके पुरखा महात्मा बुद्ध भेलैं जे तकरे केलहा धरमके प्रतापसे एखनी तलिक अपना ग्रौरके वाचल चिऐ आ उ वचैंने ग्राइछ आ नैं त समयके ऐ दुई हजार पांचसय वरिसके अन्तरालमे कतहेक जाइत एलैं आ विल्या गेलै जेनङ भारतमे शक, हुण, मुसलमान आ अंग्रेज आइवके शासन चलै लकैं आ विल्या गेलैं । एखनी शक, हुण सवके नामो निसान नैं छै । भारतमे राज करैंवला अंग्रेज सव कहियो कहियो थारु सवके लगसे देखलकैं आ देखके छकित भ्याके ऐ जाइतके विषयमे दुईटा आशिषके शब्द लिखके हमरा ग्रौर के ऋण वोक्या देलक । तैंमे सवसे पहिने डा. व्राइन हौंगसन के नाम ल्याल जाइ छै । थारु सवके वसोवास करैंवला स्थानके देखके उ लिखने छै जे थारु सव मलेरियाके पच्या नेनेछै । ई सव के ऐ मलेरिया के पचवैंले कमसे कम तीन हजार वरिस लागल हैंतै । यहै सिलसिलामे विद्वान अंग्रेज डल्यू पी. एन्ड्र्युज सेहो कहैं छै "जै ठाम सव गोडे मोइर जाइछैं आ जै ठामके नामके उच्चारण क्याके दखैनवैंरिया आ उतरवैंरिया पहाडके लोक सवके धुक धुकी वन्द भ्याजाइछैं थारु कहैंवला एकटा वडका जाइत (Race) गरीव, डरपोक, थीचल मीचल लेकिन विल्कुल साच कहैं वला आ करैं वला जाइतके वसोवास छै । उ सव सैंकडनो वरिससे ऐ प्रतिकूल वातावरणमे निवास क्या रहल छैं । एकरा सवगोडे मारे चाहैंछै लेकिन एकरा खतम करैंवला सव आपनैं खतम भ्या रहलछैं आ ई जाइत वाचले छैं आ वाचले रहतै ।"

महात्मा बुद्धके चलैंलहा घरमके ज्ञानके त्रिपीटक कहल जाइछैं । त्रिपीटक माने तीनटा सखारी (१) विनय जैंमे अनुशासन सिखवै छैं (२) सूत्र जैंमे नियम सिखवै छैं आ (३) अभिधम्म जैंमे अनुशासन :मे रैंहके धार्मिक सूत्रके नियम पूर्वक अखिहांस केल जाइछैं । ऐ तीनु सखारीमे वहौत पुस्तक सवछैं । एतहैंक पुस्तक ग्रौर कोनो दोसर धरममे नैं छैं । आ ई पुस्तक सव दुनियाके सैंकडनो भषामे अनुवाद क्याके लिखके अखिहांस क्या रहल छैं । बुद्धके सौम्य मूर्ति एवं एकर चलेलहा धरमके किताव के अध्ययन क्याके एस्ट्राउस लेभी नामके वडका विद्वान बुद्ध ववाजी लिखने छैं जे पच्चिस सय वरिस पहिने पूरूवमे जनमलहा ई महात्मा गाछके तरमे वैठके जे चिजके पता लगैंने छैं तै विषयके जानैंले ग्रौजका पछवैंरिया विद्वान सव जे वैज्ञानिक अनुसंधानके घमण्डीके धाख लगवै छैं से सव टाके अगर तरजु मे तौलल जाई त वोई वड़का महामत्माके केलहा अनुसंधानके पासंङ्ग वरावैर नैं पुगतै ।

एखनी दुनियामे तीनटा घरमके चलती छै। ईसाई, इस्लाम आ बुद्ध। तैमे बुद्ध धरम एखनी वडी जोरसे चललछै आ वास्तवमे ई धरम सक्षात छै। एकर पैंहचान छै, एकर महत्ता छै आ इधरमके सोजहा साजही देख सकै छै। यहै युगके १९४५ ई. मे अमरिका वला सव जपानमे एटम बम खस्याके जपान के निठाह खतम क्या देलकै लेकिन बुद्ध धरम पालन करनीहार जापानी सव पचास वरिस नै पुगैतमे दुनियामे फेरो नाम क्या लेलकै। संसार भैर मे एखनी कनिएटा देश जपान सवके आपन धार्मिक विश्वासके करतूत से दुनियाके देख्या देलकै जे बुद्ध घरम वडका चिऐ आ एकरा पालन करैत अगर निरंतर कर्तव्य के वाट चढहल जाइ त कहियो दुःख नै हेतै। तकर दोसर उदाहरणमे विना धरमके चलै वला कम्युनिष्ट सवके वडका राज्य रूस एखनी अपना औरके सामनेमे खतम भ्या गेलै। देखल ज्या धरमके कतहेक महिमा है छै तहौमे अपना सवके पूर्खा बुद्ध के चलेलहा धरम एखनी वडी जोरसे चललछै आ भैरसक अपना औेर के ऐ वडका पुर्खाके सेवा करनाई विसैर गेल चिऐ तै एखनी अपना थारु जाइतके एहेन गलानैत आइछ, एहेन गरिव भ्यगेल चिऐ जे सव गोडे थिचो मिचो करैए। अपना औरके चारूकताके लोक सव छिया छिया क्या रहल आइछ। अपना सब आलसी भ्या गेल चिऐ। आलससे सव कामके विनास है छै आ बुद्ध धरम आलसके भगवै छै। आन धरममे नाम रूपके जाप कर त देवता आपनै तोरा सहायक हेतौ से कहै छै लेकिन बुद्ध घरम सव चिजके तनकी करैत मेहनैत से आपन काम आपनै कर सफलता हेवे करतौ से कहै छै आ एहै वातके बुझके ध्वस्त भेलहा जपान वला एखनी वढलै। पूजा पाठ क्याके अनकरा दही चुरा खीय्याके धरम हेतौ तैमे विश्वास करै वला वात बुद्ध नै सिखवै छै। ऐमे त आपन शील, समाधि आ प्रज्ञा तीनुके हरदम जगैनेरह आ आपन काम रसे रसे लेकिन सुर सुर करैत रह तोरा सफलता भेटवे करतौ। ई धरम परिवारमे रहै वला गृहस्त आ डोडा कटेलहा ववाजी सवके वास्ते छै। ई घरम ऐ दुनु के आपन आपन काममे हरदम तनकी करे कहै छै। जैसे सफलता हरदम वोकर लगैमे रहै छै।

हमर घरमे हमर वावू देवन मुखिया रमायण, महाभारत आ आन दोसर दोसर हिन्दु धरमके पुस्तक सव वडे पढहै छेलै आ से देखके हमहू वालकपनैसे वोई पुस्तक सवके अध्ययन करलिऐ तकरै धरम मानै छे लिऐ लेकिन मान्यवर श्री रमानन्द प्रसाद सिंह जी के अध्ययनके अनुसार कहलहा वातमे जाव बुद्ध धरमके पुस्तक सवके पढहे लागलिऐ आ एकर वात सव बुझहे लागलिऐ ताव देखलिऐ जे सवसे वडका धरम यह्या चिऐ आ ई आपने पूर्खा के चल्याल धरम चिऐ त ऐमे

और वेसी मन लागे लागल । ऐ धरमके वात हमरा आपन जाइतमे से हो पुगाबैक चाही तेहेन वात मनमे उठे लागल त हम २०४६ साल भादो महिनासे ई पुस्तक लिखैके चेष्टा करलिऐ । पुस्तक तैयार भेलै त श्रद्धेय डा. केशव मान शाक्य (सगतोडा) के वडका सहयोगसे हम पूज्यपाद श्री सुदर्शन भन्ते लग पुस्तकके पाण्डूलिपि ल्याके गेलिऐ । उ हमर लिखलहा पाण्डू लिपि पढहलकै तकर वास्ते हम वोकर वडका कृतज्ञ चिऐ । श्री ५ के सरकार जे हमरा मौका दयाके ऐ पुस्तक के छापल कैं से हम श्री ५ के सरकार प्रति वडा ऋणी चिऐ । पुस्तकके प्रकाशनके जिम्मा ल्याके धर्मोदय सभा हमरा वड उपकार करलकै, तैके वास्ती हम बोहौ सभाके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर चिऐ ।

अन्तमे ई पुस्तक महात्मा बुद्धके जाइत नेपालके आदिवासी पिछडल थारु जाइतके धार्मिक कृत के साथे समाजिक क्रीया कलापमे एकटा नयां मोर दैले सक्षम हेतै त हम अपनाके सार्थक बुझहैत गल्ती सुधारके वास्ते एलहा सलाहके वढिया मानैत शुभम् करै चिऐ ।

विनित

तेजनारायण पञ्जियार थारु

ललितपुर

२०४८ वैशाख पूर्णिमा

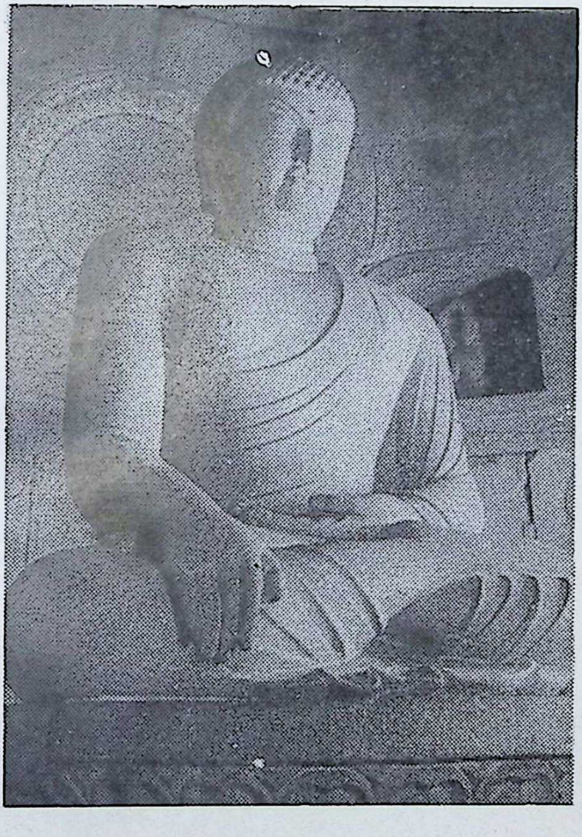

शाक्यमुनि बुद्ध, कोरिया, आठम शताब्दि

शाक्यमुनि बुद्ध

१–एक

किसकारके टेम रहै। लोकसवके धमाधमी रहै। राजघरके गव लैके समय जतहेक लग एलजाई लोक ततबेहेके तनमातान काममे व्यस्त रहै। एकटा यहचा समय आवै छेलै जैमे रजा आ प्रजा दुनु मिलके खेतीके काम संगे सम्पन्नकरै छेलै। गवलैके समयमे रजा आ प्रजा दुनु मिलके प्रकृतिके पूजाकरै छेलै जैसे कि उपजा असल हेवै। हिमालय पहाडके सवसे निवला दखैनवैरिया जंगली कछारमे निवास करैवला शाक्य थाकके थारू सवके पुरना रजवडा कपिलवस्तु छोटे रहै लेकिन स्वतंत्र रहै।

हिमालय पहाडके ऐ मलेरिया अक्रान्त जंगली प्रदेशसे निवासकरैवला शाक्य सव वडा रूच्छ स्वभाव के रहै लेकिन तैयो उसव शान्तिप्रिय आ धार्मिक मनोवृतिके समाजिकता कायम करने रहै। उ सव कपिलवस्तु देश हमर चिऐ आ एकरा जोग्याके रखनाई शाक्य सवके कर्तव्य चिऐ तै मैमलामे उ सव वडा होस राखनै रहै जे चेतनशीलताके प्रथम लच्छन चिऐ। जै समयके ई कथा प्रारम्भ क्याल ग्याल छै तखनी शुद्धोधन नामके एकटा न्यायप्रीय एवं इमन्दार व्यक्ति राज काजके काम रेख देख क्या रहल छेलै। शाक्य सव आपन दखैनवैरिया परोसिया मगह आ कोसलके साम्राज्यवाद नीतिके खौ असलसे बुझहै छेलै तं कोनो प्रकारके आक्रमक गडबडीके समयमे आपन मुखिया शुद्धोधनके चारूकताते घैरके रक्षा करैले शाक्यसव हरदम तैयार रहै छेलै। ऐ रित विम्रतसे शुद्धोधन शाक्यसवके एकताके पहैनकारूपमे देखल जाइछेलै।

ई एकटा कृषि प्रधान देश रहै आ आपनैमे परिपूर्ण रहै। धान आ गहुम ऐठामके मुख बाइल गनल जाइ छेलै आ से अपरजात उपज्यालोजाई छेलै। प्रत्येक परिवारके थोर बेसी जग्गा रहवे करै। खेतीके काम आनसमाजिक काम नहाइत सझियारै मे चलै। प्रत्येक परिवार दोसर परिवारके काममे काम क्या दै छेलै जेनङ जोतनाई रोपनाई आ कटनाईके काम।

ई धन हमर चिऐ । एतहेक जग्गा हमरमे परै छै तकर झंझट नै रहै बल्कि सम्पैतके सम्बन्धमे बैचारिक मान्यता मात्र रहै । समाजिक व्यवस्थाके प्रतिपालनमे कोन काम ठिक आ कोन बेठिक तकर वडा कडाइसे पालन क्याल जाइ छेलै । गमाजी झै झगडाके मिलापत्र वा छिनोफानो के काम माइनजन मार्फत है छेलै जे अन्तीम रूपसे रजाके प्रति उत्तरदायित्व है छेलै । कृषि पश्चात पशु पालन, सुगर पालन, काठके काम, निर्माण काम, कपडा बुननाई आदि शीप आ कलाके बडका विकास भेल रहै जैसे गामके लोकसवके विभिन्न पेशामे काम करैके अवसर भेटल रहै आ तैसे आर्थिक रूपे सुखि छेलै । धनिकहा व्यापारी सव जे गामके लोक सवसे अपेक्षाकृत सुखी जिवन व्यतित करै छेलै शहरमे निवास करै छेलै । समाजमे मनोरञ्जन करैवला संगीतज्ञ गवैया आ नटिन आदि समाजके धनिक वर्गके व्यक्ति सवके उपभोगके बस्तु रहै । समाजिक क्रीयाकलाप, धार्मिक पावैन तिहारसव समाजमे हरदम मन्याल जाइत रहै ।

यद्यपि समाजिक एवं राजनैतिकरूपमे समाजके चलन चल्तीमे एलहा व्यवहारके राजकीय रूपमे संगठित राइखके चलवैले क्षत्री एवं शासक बर्गके हाथ उपरे रहै लेकिन समाजिक धरम करमके काममे पोथी पतराके बदौलत बावहन आ पुरहित सवके स्थान सवसे बडका उपरमे मानल जाइछेलै । जोगी, फकिरसव जे लगैके जंगलमे आश्रम बन्याके रहैत रहै आ खाचोभेलहा चिज सवके पूर्ति करैले कहियो कहियो गाम दिसर आइवके पूर्ति करै छेलै से सव बहौत कमे रहै आ तकर जिवन पद्धतिके शाक्य सव असल नै मानै छेलै ।

गवलैके अबसरमे वडका तैयारी क्याल गेल रहै । रजा गवलैले जाइछेलै त रजाके सवारीके वास्ते खेत तलिक सडक पिटेनाई जरूरी भ्या जाइ छेलै । गवलैके खेतके चारू आइरमे धजा पताका लग्यालगेल छेलै जैसे कि चारूकोनमे निवास करैवला देवता सव खूसी हैते । बडका डीगा डीगा सवके बैठैले चबूतरा बन्याल गेलछैलै । ई सवकाम सधारण जनता सव राइत दिन खैटके पूरा करने छेलै । गव लैके समयमे रजाके सवारीके खौ असल मानल जाइछेलै । रजा शुद्धोधन आपन बेटा सिद्धार्थ आ राज परिवारके दोसर सदस्यके साथे बावहन पुरहित एवं अन्य भर भलाआदमीके साथमे ल्याके गव लैवला खेतमे पुइग गेलै ।

सिद्धार्थके जनम भेलाके तुरून्ते बादमे वोकर मैया मायादेवी स्वर्गिय भ्या गेल रहै । सिद्धार्थके मौसी प्रजापति गौतमी जे एखनी रजा शुद्धोधनके पटरानी रहै सिद्धार्थके लालैसे पालन पोषण करैत रहै । सिद्धार्थ जाव टेवलक भेलै ताव उ बुझहलकै जे वोकर आपन महतारी जन्मासोचके तुरून्ते बादमे मोइर गेल छेलै ।

तँहियासे उ विचित्र मनोभावनामे रहे लागलै। उ प्रजापति गौतमीके कोरामे वढल छेलै आ वोकर दुलारके उ खौ असलसे अनुभव करने छेलै तँ एखनी तलिक उ यहे विचारमे ढुगल छेलै जे महताइरीएटा ऐहेन दुलार द्या सकैछै लेकिन आव उ दोसर किसिमके विचार करे लागल छेलै। उ बिचार करैजे महताइरिएटासे एहेन दुलार नै हैछै बल्कि जे महताइर लखा वच्चाके शुसूर्षा करैछै तँ सवसे एहिनङ्गे वात्सल्यता एवं दुलार प्राप्त भ्या सकैछै। जै दिनसे उ ई सवटा बात बुझहे लागलै तँ दिनसे उ आपन वगैरिया कपिल आ पितियोत भाई देवदत्त संगे वेसी घनिष्ट भ्याके संगैत करे लागलै। तावे उ टेवलक सेहो भ्या गेलरहै। ऐ गवलैके समयमे उ आपन बगैरिया कपिल आ देवदत्तके संगे आनने रहै।

गवलैके स्थानमे केलहा सज धजके धजा पताकामे बच्चा भुटका रमल रहै। उ सब यहैमे आकर्षित भ्याके मगन भेल रहै। गव लैके समयमे इन्तजाम क्याके अनलहा ढेरी ढेरी सामग्री खीर, पुरी सव तैयार भ्या गेल रहै। बावहन-पुरहित के पतरा अनुसार गवलैके समय चैल एल छेलै। ऐ सव कृतके जम्मा भेलहा लोक सव वडा धार्मिक मरम के दृष्टिसे देख रहल छेलै। गवलैकला हेवै वला पूजा-पाठ आरम्भ भ्या गेलछेलै। पूजाके आसनमे बैठलहा रजा शुद्धोधन एखनी पूर्ण रूपसे शाक्य सवके प्रतिनिधित्व क्या रहल छेलै। बावहन पुरहितसव आव बेद पुरान फदफदवे लागल छेलै। रजाके बेटा भ्याके एहेन समयमे सिद्धार्थके करै वला कामके सम्बन्धमे सिखेलहा बात विचार अनुसार उ आपन प्रतिष्ठा कायम करने रहै लेकिन वडा नेदान भेलासे बावहन पुरहित जे फद फदवै से उ किछो ने बुझहेसकै वोकर बगैरिया कपिल तहिनङ्गे आ छोटका देवदत सेहो वोई गुन धुनके कुछोने बुझहै। गवलैके अवसरमे ऐ पूजा पाठके विषय वस्तु तकर उपादेयता आ बावहन पुरहितके मुहसे उच्चारण कैलहा बेद मन्तरके बुझहैमे विल्कुल अज्ञान वच्चा सिद्धार्थके मन वोई ठामसे उचैट जाई आ वोई दिन अखाढ़ महिनाके धपधपहा कडगर रौद रहै तहौसे वोकरा वोई ठाम बिल्कुल मन नै लागै। ऐ कामके वास्ते क्या दिनसे वोकर पिता रजा शुद्धोधन एवं सधारण जनतासव राइत दिन खैटके ई सवटा तैयारी करने रहै। ऐ समयमे लोक सवके साथे वोकर पिताके भेलहा दुःखके उ खौ असलसे देखने आ बुझने रहै।

सवगोडे गवलैके पूजा पाठमे व्यस्त रहै। सवगोडे ऐ धार्मिक कृतके निर्विघ्न रूपसे सम्पन्न करैमे जुटल रहै। बावहन पुरहित वेद उच्चारण क्या क्याके पूजाके महत्ताके बढह्या रहल छेलै। रजा शुद्धोधन बावहन पुरहितके आज्ञा अनुसारके पूजा सामग्री चढह्या रहल छेलै। सव आपन आपनमे व्यस्त रहै तखै निए

कनकीरवा सिद्धार्थके वोई टिपटिपिया रौदसे बचैले भागैके मौका भेट गेलै । उ लगैके एकटा घनगरहा गाछके तरमे ज्याके अराम करे लागलै । ऐ समयमे उ वडका छुटकराके अनुभव करे लागलै । सितल छहाइर वोकर मनके खौ शान्ति देलकै । असगरे वोई समयमे उ विचारकरे लागलै जे ई व्यक्ति सव ऐ प्रकारके तकलिफ कथीले उठया रहल छै ऐ तकलिफके फलाफल कथी हेतै आ कि तखैनिऐ पिताके तमसेलहा "बौआ कोने गेलै" के आवाज एलै त डरसे उ फेरो वोई धपधपहा रौदमे दौडल एलै ।

सुरूज भरखर पछिभरा उन्टलै तखैनिए गवलैके सवटा काम समाप्त भ्या गेलै । आव भोजनके समय एल रहै । एखनी तलिक जे बच्चा भूटकासव अन्ते अन्ते छिटकल फिरै सेहोसव पांतीमे बैठलै आ अपरजात रूपसे तैयार केलहा खीर पूरीके इच्छा भोइरके रसास्वादन कैलकै । भोजनोपरान्त तुरन्ते राज परिवार फिर्ता भ्या गेलै । पूजाके कामके समयमे सिद्धार्थ जे घसैक गेलरहै तै आत्मग्लानिके बुझके शंकोचकरैत आपन बाबु शुद्धोधनकेपूछलकै ।

"बाबु, पुर्‌हित सवजे मंतर फद फदवै छेलै से हम किछोने बुझहलिए उ सव कथी गावै छेलै आ कोन भषा छेलै ?"

"बौआ, ई वेदके पवित्र भषा चिऐ । वेदके ब्रह्मा रचने छै आ एकर अर्थ बडा गुढ हैछै । अपना सवके वास्ते पुर्‌हितसव एकरा जोग्याके राखने छै । बावहन कुलमे जनमलहा व्यक्तिसव मात्र ऐ बेदके अध्ययन अध्यापन करैके अधिकारी है छै । वह्मा सव एहेन व्यक्ति है छै जे ई पवित्र मन्तरके उच्चारण क्याके हमरासवके रक्षा करैछै।" आपन पिताके कहलहा वचनसे उ चुप भ्यागेले। उ ऐलै नै चुपभेलै जे उ आपन पिताके बातके बुझहलकै बलिक फेर किछो बाजवै त बाबु तमसत तै डरसे उ चुपचाप रहलै । सिद्धार्थके चुपचाप देखलकै त शुद्धोधनके आपनै डर भ्यागेलै । उ विचार क्या लेलकै जे वोकर बातसे सिद्धार्थके प्रश्नात्मक मस्तिष्कके चित नै बुझलै । वोकर पुर्‌हित एवं मित्र असित कालदेवल जे सिद्धार्थके टिपैन (भविष्य बाणी) लिखने छेलै से वात वोकरा मन परलै आ तैसे वोकर मन छोट भ्यागेलै ।

असितकाल देवल बावहन विद्याके पुर्‌हिताई परम्पराके अलावा मानव शरीरमे जनमैसे एलहा चिह्न सवके अदभूत अर्थके अधारमे ज्योतिष शास्त्र अनुसार भविष्य वाणी करैमे वडा माहिर छेलै । उ जाव सुनलकै जे रजाके पुत्र भेलै त वडा हजसैत फुलसैत दरवारमे गेलै । दरवारी स्वागत सत्कारके वादमे उ पूछलकै "रजा साहेव, हमरा मालूम भ्याल जे अपनेके रानी माया देवीसे पुत्र जनम लेलक ।"

"जी गुरू महराज, वास्तवमे हमरा पुत्र जनम लेलक आ उ अस्वभाविक रूपसे सुन्दर छै ।"

राजघरानाके धार्मिक परम्पराके चलवैवला बावहनसवके अध्यात्मिक क्रीया कलाप अनुसार ई जरूरी छेलै जे बच्चाके जातक क्रीया है, तै पूछलकै "हमे बच्चाके देख सकै चिऐ ।"

"ई हमर अहोभाग्य हेतै ।" रजा कहलकै आ रानी माया देवीके खोपीमे ज्याके रेशमी कपडामे लपेटल बच्चाके उठयाके आनलकै आ आपन अध्यात्मिक गुरू एवं मित्र कालदेवलके कोरामे द्याके देखे कहलकै । कालदेवल वडा गौरसे बच्चाके देखलकै बच्चाके शारीरिक चिह्न सवके निरिक्षण क्याके उ भविष्यवाणी करलकै, "बच्चा बडा कर्मठ हेतै ।"

"बच्चा अस्वभाविक रूपसे कुशाग्र वुद्धिके हेतै ।" कालदेवल भविष्यवाणी करलकै, "एकरा परम्पराके प्रति कोनो प्रकारके आदर भाव नै रहतै आ ई वडका भारी वैचारिक बिद्रोहके सुत्रपात करतै ।"

"बिद्रोहात्मक नै हेवे तकर बास्ते हम कोन उपाय कैर सकवै ।" रजा शुद्धोधन सेहो वडी जोरसे अकचक्या गेलै आ पूछलकै ।

"हमनै जानै चिऐ जेउ एनङ नै हेवै तैके बास्ते की क्याल ज्या । बच्चाके देखके वोहो अकमक्या गेलै । उ बिचार करे लगलै जे शाक्य सवके भविष्यके रजा, बावहन परम्पराके नै मानै वलाहेतै । अगर सिद्धार्थ परम्परा एवं अधिकारीक रित बिभूतके नै मानैवला हेतै त बाबहन पुर्हितसव जे चल्ती एखनी रजा शुद्धोधनके पलामे भोग क्या रहलछै से नै रहतै । उ बिचार करे लागलै जे एखनी जेनङ रजा सव बावहन आ पुर्हितके जे पूजा क्या रहलछै तकर बदलामे बाबहने सव रजाके पूजा करतै । आपन परम्पराके कायम राखैमे असमर्थ महशूस करैत आपन मित्र रजाके सहयोग करैमे अपनाके अज्ञान बुझहलकै । ई सव बात बिचार क्याके कालदेवल बाबहन परम्परा अनुसारके जातक क्रीया करसके बहिष्कार क्याके कानैत राज दरवारसे चैलगेलै ।

शुद्धोधन ई सवटा घटनाके स्मरण क्याके चुपे रहनाई ठिक बुझहलकै । तैयो उ अनुभव करलकै जे वैदिक मन्तरके सम्बन्धमे सिद्धार्थके देलहा अखिहाससे चितनै बुझलै आ बेसी बात बडहेलासे उ और बेसी असमंजसमे पैर जेतै ।

२—दोसर

जँ समयके ई बात भ्या रहलछै तँ समयमे भारत बर्षके बिचला प्रदेशके नामी शहरसब राजगीर, बाराणसी आ श्रांवस्ती रहै जते बावहन आ क्षत्री सब आपनके ऊच्च बनबैके संघर्षमे जुटल रहै आ जते बावहन आ सन्तसब हरेक प्रकारके दार्शनिक एवं धार्मिक बिचार गोष्ठीमे सदत सक्रिय रूपसे भाग लैत रहै । भारत के पश्चिमोतर प्रान्त गन्धार प्रदेश जेकर रजधानी तक्षशिला रहै से ठाम भारत आ बिदेशी संस्कृतिके संगम केन्द्रके वास्ते प्रसिद्ध छेलै । तैमे खास क्याके ग्रीक देशके नाम रहै । उपनिषद विषयके दार्शनिक एवं सन्त उद्धालक आरूणीके शिक्षा-दिक्षा यहै तक्षशिलामे भेल रहै । उद्धालकद्वारा प्रतिपादित दर्शन जे मानबीय अनुभवके आधारमे दुनिया जहान विषयके तथ्यगत प्रारूपके वास्तविक रूप रेखा के प्रदर्शन करै, गन्धार संस्कृतिके संसर्गके प्रतिफल रहै । यद्यपि बाराणसीके शैक्षिक केन्द्रसे सम्बन्ध हैके बाद उद्धालकके शिक्षा भारतके ऐ सम्पूर्ण प्रदेशमे बिस्तारित भेलै तैसे पहिने यज्ञवालक ऋषीके शिक्षा जे वोकरसे छोट रहै, बैचारीक प्रभावके अजगुत (अदभुत) रूपके माध्यमसे देखबैमे ऐ प्रान्तमे प्रख्यात भ्या गेल रहै ।

कपिल पन्द्रह बरिषके भेलै त उच्च शिक्षाके वास्ते वोकर पिता वोकरा दुरदेश तक्षशिला पठवै के निर्णय कैलकै । कपिलके अनुभबि पिता ई बिचार कैलकै जे भारतके ऐ बिचला प्रदेशमे शिक्षा क्षेत्र पूर्ण रूपसे बभनौटी परम्परासे प्रभाबित छै । तँ तक्षशिलाके उदात बाताबरणमे वोकर पुत्रके शिक्षा दिक्षा के क्षेत्रमे बढिया अवसर प्राप्त भ्या सकै छेलै । कपिलबस्तु के वासी हैके कारण अनुभबि एवं बुजुर्ग कपिल आपन दखैनबैरिया बडका राज्यके उच्च आदर्शके अधलाहेटा नै मानै छेलै, बल्की वोकर सम्राज्यवादी राजनैतिक नीतिके घृणा सेहो करै छेलै ।

पढहे तक्षशिला जेबै से बुझके कपिलके मन छ कनमा न कनमा हेबे लागलै । तक्षशिला जाईकला खौ धुमबै फिरवै से बिचार क्याके उ बड मनगर भेलै, लेकिन आपन लगौटिया साथी सिद्धार्थ आ देबदत्त के साथे मैया बाबुसे बिछुडके रहे परतै तै बिचारसे उ खिन्न भ्याजाई छेलै आ तक्षशिला जाईके अगामी यात्राके समचारसे साथी भाईके मनोमे सेहो कोनोनिक भावनाके उजागर नै हेतै से सब बिचार करैत कपिल, सिद्धार्थ आ देवदत्त संडगे पासके खेलमे बैठलै लेकिन वोकर मन उडल रहै । वोकरा खेलमे मन एकदमे नै लागै । सिद्धार्थ ऐ बातके बुझि गेलै त पुछलकै । "हे, कपिल आई तो मनसे पास नै भाजै चिही, तो कथिके सुरता मे लागल चिही ।" कपिलके आपन सम्बन्धके समचार कहैके साहस नै भेलै । "तोहर

स्वास्थ्य त ठीक छौ" पूछलकै देवदत्त। "नै हम ठिके चिए।" कपिल जवाव देलकै। "भैरसक एहेनकोनो वातछै जे तो हमारा सबके नै कहे चाहे चिही" सिद्धार्थ प्रश्न कैलकै त कपिलके साहस बढलै श्रा, कहलकै।

"हमर बाबु हमरा पढहैले तक्षशिला पठ्यारहल छै। हमरा घुमैफिरै के खौ असल अबसर प्राप्त भेलछै से बिचार क्याके हम खौ मनगर भेलचिऐ, लेकिन वोई दुरदेशमे हमरा कोन कोन समस्यासे जुझहे परत तैसे हमरा बडा डर भ्या रहल आईछ। यहै ठाम हमरा बेसी संगी साथी नै आइछ आ हम नै जानै चिऐ जे जाव हम वोते पुगबै त ककरौ आपन मित्र बन्या सकबै।"

कपिलके बिचार के विपरीत सिद्धार्थके देखलकै जे उ ऐ समचारसे खौ खुसी भेलै।

"ऐ ठामके व्यबहार एहिनङ छै, महताईर वाप खर्च करे सके त आपन बच्चाके शिक्षा दिक्षाके वास्ते तक्षशिला, राजगीर आ बाराणसी पठ्याके पढहावैछे। हम ई सुनने चिए जे वोई सब जगहमे ऐठामसे बेशी शिक्षक रहै छै। हमरौ बड मन लागैए जे हमर बाबु हमरा ऐ ठामसे वोई सब जगहमे पढहैले पठ्यादैत। हम जानै चिऐ जे तो हमरा सबसे बिछुड जेवही लेकिन अपना सब पैढ लिखके फेर कपिल बस्तुमे फिर्ता एवे करबै।" सिद्धार्थ भरोस देलकै।

सिद्धार्थके बुद्धिमतापूर्ण जवाबसे देवदतकेचित नै बुझलै त, उ सलाह देलकै।

"अपना सब असित कालदेवलै से आपन पठन पाठन कार्य जारी राखैले आपन आपन बाबुके कथिले नै पूछबै? उ हमरा सबके मानै छे आ हमहुसब वोकरा निके मानै चिए। तेहेन हेतै त अपना सब ने त मैया बाबुसे बिछुडबै, आने आपन आपन मे।"

"देबदत्त कनहिक बिचार क्याके देखहीत, कतहेक दिन तलिक ऐ प्रकारके खेल धुपमे जिनगी बितैबिही।" सिद्धार्थ देवदत्त के प्रश्न कैलकै त देबदत्त कुछ वात नै वुईझके एने वोने ताकेलागलै आ चुपे रहलै।

रैतका भोजनके समयमे सबगोडे जमा भेल रहै तखनी खौ बिचार क्याके सिद्धार्थ आपन बगैरिया कपिलके समचार सबके सुन्या देलकै। ई वुइझके उ छक परलै जे वोकर बाबु शुद्दोधन के वास्ते इ कोनो लवका समचार नै रहै। किएक त कपिलके बाबु ऐ सम्बन्धमे सबटा सलाह मसबिरा शुद्धोधनै से क्याके वेटाके दुरदेश पठवैके निर्णाय करने छेलै।

"बाबु, कपिल हमरा कहलक जे उ पढहैले तक्षशिला ज्या रहलछै हम विचार करै चिऐ जे ई बढिया बिचार छै, यद्‌यपि हमरा सबके बिछुरन भ्या ज्यात।"

सिद्धाथ कल्पना करे लागलै जे आव बाबु कहतै । "हं, पढहेंके वास्ते आब तू हु जल्दिए वहार जेवही।" लेकिन तकर वदलामे उ कहलकै ।

कपिलके बावु हमरा वहै दिन कहलक जे हम वेटा कपिलके पढहेंके वास्ते तक्षशिला पठ्या रहलचिए । हमरा आचरज लागैयेजे वोकर बाबू वोकरा पढहैले एतहेक दुर कथिले पठ्या रहलछै । जाबकि उ कपिल के बाराणसी अथवा राजगिरमे पढह्मा सकै छेलै । कपिलके वास्ते ई वडा दुःख दायी यात्रा हेतै । हम जाने चिऐ जे तो आपन बगैरियासे बिछुड जेवही" ।

गौतमी जे सिद्धार्थके भरोस देवे चाहै छेलै वापबेटाके ऐ वातचितमे सामिल भेलै आ कहे लागलै ।

"कपिल पढहैले कपिलबस्तुसे वहार दुरदेश ज्या रहलछै तैंमे तोरा ततहेक चिन्ता करैके वात नै छौ । जाव उ तक्षशिलासे फिर्ता भ्याके एतै, त उ तोहर जिम्मेवारीमे सहयोग करतौ । के जाने गैले जे जावतो शाक्य सबके रजा हेवहि त उ तोहर प्रमुख सलाहकारके काम करतौ ।

सिद्धार्थ ई सब कैफियत सुईनके असमंजसमे पैर गेलै । उ ई नै बुझहे सकलकै कि शिक्षा पूरा करैके वास्ते वोकर महताईर वाप वोकरा कपिल संगे बाहर तक्षशिला वा राजगिर ज्या । रजा शुद्धोधन आपन गुरु एवं मित्र कालदेवल से भेंट कैने रहै आ सिद्धार्थ के शिक्षा दिक्षाके विषयमे सरसलाह कैने रहै । ऐ अवसरमे कालदेवल एकदमसे नकारात्मक सलाह द्याके रजा शुद्धोधन के आपन पक्षमे क्या लेलकै ।

"हे राजन" । कालदेवल कहलकै, "अपनेके पुत्रके हम भविष्य वाणी क्या देने चिऐ आ तै के अनुसार उ बडा सम्वेदनशील व्यक्ति चिऐ । मात्र परम्परा एवं अधिकारिक विषयके उ सहजै स्वीकार नै क्या सकतै । तक्षशिला एकटा बडा उदात वातावरणके स्थान चिऐ जैं ठाम अपने के पुत्र आपन स्वभावके बसमे नै राखे सकत । राजगीर आ बाराणसीके सेहो तहिना स्थिति बुझिऔं, किएकत नानाप्रकारके योगी, फकिर सब हरदम धुमैत फिरैत रहैछै । तैं अपने अगर आपन पुत्रके शाक्य वंशके राज्याधिकारी बनावे चाहै चिए त हमर विचारसे वोकरा कपिलबस्तुएमे राखू आ यहै ठाम वोकरा सब प्रकारके शिक्षा दिक्षामे पारंगत करू जैसे अपनेके पश्चात राज्य सुसञ्चालन करे ।"

"अपने विलकुल ठिक कहल जाईछै, गुरु महराज," शुद्धोधन कहलकै विद्वान् व्यक्तिद्वारा प्रतिपादित विभिन्न विषयके पक्षके जनकारी सिद्धार्थ

के नहिए भेनाई वढिया । वोकरा ऐ समाज के वास्ते विशेष प्रकारके काम के ग्राव-श्यकता छै ग्रा वोकरा उकाम ग्रसलसे करे परतै ।

ईजोरियामे खिडकी दने शुद्धोधन देखलकै जे दुई गोडे हवेली दिसर ग्राईब रहल छेलै । शुद्धोधन एहै ग्रसवरके ताक मे छेलै जे कौहनङ ऐ बहससे पिन्ड छुटे ।

"मेजमान ग्रावै छै ।" शुद्धोधन ग्रापन जगहसे उठैत कहलकै । उ फटक लग गेलै ग्रा केवाड खोईल देलकै । ग्रागन्तुक सबके स्वागत केलेकै । पहिने जे धरमे प्रवेश कैलकै तकरनाम विश्वामित्र रहै ग्रा दोसरके नाम भारद्वाज छेलै । विश्वामित्र ग्रस्त्र विद्यामे निपुण शाक्य रजवडामे ख्याति प्राप्त कैनेरहे जावकि भारद्वाज राजनीति शास्त्र के निष्णात पण्डित रहै । उसव रजा शुद्धोधनके बडा घनिष्ठ रहै ग्रा यदाकदा राज्य सञ्चालनके प्रशासनमे रजा शुद्धोधन के सलाह मसविरा से सेवा करै छेलै । उसव ग्रनढन्याल वा कोनो दोसर कारण से नै एल छेलै वल्कि पूर्वनिश्चित कार्यक्रमके फलिभूत करै वला छेलै । सिद्धार्थ के शिक्षा दिक्षा के सम्वन्धमे कपिलबस्तुसे बहार दुरदेश नै पठ्याके धरै मे यैदुनु से ग्रहण करैके योजना रहै । यखैन तलक ग्रसित कलीदेवल सिद्धार्थके पाठ्यक्रम ग्रनुसार भाषा, साहित्यके शिक्षा द्या रहल छेलै जे पाछे उच्चतम ज्ञान ग्रार्जनमे बेद, दर्शन एवं धर्मके विषयमे पढहयाल जेतिऐ । सिद्धार्थके वास्ते समय चैल एल छेलै जे उ ग्राव ऐ दुनु शिक्षक वर्गसे ग्रस्त्र शस्त्र एवं राजनीतिके शिक्षा प्राप्त करै ।

सिद्धार्थ शिक्षा एवं तालिमके सम्वन्धमे ग्रापन पिताद्वारा निर्धारण केलहा योजनाके प्रति विलकुल ग्रनभिज्ञ रहै । मेजमान एलै त उ ग्रापन महतार्ईर संगे घर चैलगेलै ग्रा कपिलके पश्चिमोतर प्रान्त जाइके यात्रामे हेवैवला सम्भाव्य घटनाके विषययसे बातचित करेलागलै ग्राखिरमे जाव वोकरा सबुरनै भेलै त महतार्ईरके पूछिए देलकै ।

'मैया, साँच कह त बाबू हमारा पढहैले कते ग्रा कहिया पठैतै । गौतमी सिद्धार्थ के जवाबदेलै जेनङ पहिनैसे विचारके ओरियाके राखने छेलै ।

"बौग्रा, तोहर बाबु शाक्य सबके रजा चियौ उ जाव ग्रवस्था ग्रनुसार कामसे ग्रवकाश ल्यालेतौ त ऐ राज्य सञ्चालन करैके सबटा भार तोरे कान्हमे परतौ । कपिलके एहेन कोनो जिम्मेवारी नै छै । तै वोकरा जे मन लागैछै से करैछे । लेकिन तोहर बात दोसर छौ । तोरा त राज्य सञ्चालन करै के सवटा ग्रसलका विद्या नै सिख्याके नै हेतै । हम ई विचार करै चिऐ जे तोहर बाबु जानै छौ जे तोहर वारते सबसे बढिया कथी हेतौ ।"

सिद्धार्थ निरास भ्यागेलै । वोकर भविष्यके जिम्मेवारी वुझही जे वाहर ज्याके शिक्षा ग्रहण करै के बाटमे टाटलग्या वेलकै। वोकर आसमे फटक लाईग गेले।

तीन वरिसके भाई नन्दा कतौसे एलै आ वोकर कोरामे बैठके खेलौड करे लागलै सिद्धार्थ आपन छोटका भाईसे वड रितल रहै। एखनी वोकर हसनाई आ चक चकसे वोकरा बडका उसास भेटलै जैसे उ आपन दुःख के विसैर गेलै।

३–तेसर

कपिलके तक्षशिला दिसरके यात्राके बाद सिद्धार्थ खौमन लग्याके पठन काममे भिरगेलै। सिद्धार्थ मन मसोइसके आपन बाबु के निर्णयके स्वीकार क्याके कपिलवस्तुमे रहे लागलै। उ भारद्वाज से बेसी विश्वामित्रके संगे रहैले रूचावे लागलै। राजगुण यथोचित बिद्या अनुसार तरूवाईर चलेनाई, तिर धनुषके तालिम उ विश्वामित्र से सिखलकै। वोकरा सबसे बेसी घोड सवारी मे मन लागै छेलै जैसे उ कपिलवस्तु राज्यके दूर दराज ईलका तक ज्या सकै छेलै।

वैदिक परम्पराके अध्ययनसे सिद्धार्थ ऐतिहासिक तथ्यके मरमके असलसे बुझहै छेलै। वोकरले ई जरूरी भ्यागेल छेलै जे उ पुरातन परम्पराके असल से बुझहै। यद्यपि कि उ वोईसब तथ्यके सहजै स्वीकार करेवाला नै छेलै। लेकिन भारद्वाजसे जे उ राजनैतिक ज्ञानसिखलकै से वहुते फरक छेलै। छोटका छोटका राज्य जेनङ शाक्य राज्यसब आपन दखैनवैरिया बलगरहा पारौसिया राज्यके बिस्तारबाद नीतिसे हदरम संसकित रहै छेलै। सिद्धार्थ रसे रसे वोइ शंका से अवगत भ्यारहल छेलै तै आपन गुरूसे बहस करे लागलै।

"अगर महगके रजा हमरासबके उपरमे लडाई करैले चढाई क्यादेतै त हमरासब कथी करबै।" उ एक बेर भारद्वाजके पुछिएदेलकै।

"अगर उ ऐहिनङ करैके निर्णय करतै त वोकर बिरूद्धमे खडा भेनाई मुर्खता हेतै। हमरासब समुद्रके छोटका माछ चिऐ बिना कोनो परिश्रमके बडका माछ हमरा सबके सहजै घोईटलेतै। ई प्रकृति चिऐ एकर बिरूद्धमे हमरा सब नै ज्यासकै चिऐ।" जवावदेलकै भारद्वाज।

ऐ जवावसे सिद्धार्थ के चित्त नै बुझलै। वोकर प्रश्नात्मक मन तुरन्त न्यायके सिद्धान्त के प्रश्नमे चैलगेलै। उ जोर द्या के कहे लागलै।

"प्रकृति केनङ एकटाके कखा आ दोसरके पखा करतै। हम त ऐमे कोनो प्रकारके न्याय नै देखैचिए।"

"ऐहनङके दुनिया बनलछै। सिरलजहार ब्रह्मा ऐ प्रकारके अन्यायपूर्ण विषयसे पूर्ण अवगत छेलै। ब्रह्मा ऐ बातके पूर्ण जानिफकार छेलै जे बिना अन्याय के न्याय नै भ्या सकतै। ब्रह्माके मनोभवना कोनो खराब नै छै। उ एकदमसे बढिया छै। लेकिन वोकरा ई माने परल छेलै जे वोकर श्रृष्टी मे एहेन कतौ कोई हेतै जे वोकर श्रृष्टी के नै मानतै। उ पहिनै बिचार क्यालेलकै जे कोई दुष्ट प्रकृतिके हेतै जे वोकर सिरजलहा प्रकृतिके सन्तुलनके चौपट करतै।"

सिद्धार्थ ई बुझहलकै जे बभनौटी परम्परा के अनुसार कर्म फलके विश्वासमे श्रृष्टीके सीरजलहार के अस्तित्वेके उपरमे बैठ्याके भारद्वाज वोकरा चित बुझबैले सकमैर कोशिस क्या रहलछै। लेकिन उ सन्तुष्ट नै भेलै त, पूछलकै।

"एकर मतलव त ई भेलै जे हमरा औरके शाक्यसब खराब चिऐ आ मगैहिया सब जे हमरसे शक्ति शाली छै वडा वढिया छै।"

भारद्वाज रोकलकै, नै नै। "हम ई नै कहैचियौ जे ब्रह्मा काईलिए संसारके सिरजलकै आ शाक्य सब के ऐ पहाडी एवं जङ्गली इलका मे स्थापित क्या देलकै किएक त हमारा सव खराव चिऐ आ मगैहिया सवके उपजाउ आ सुविधाजनक जगहमे स्थापित क्यादेलकै किएकत उसव वढिया छै। अपना सबके मानव समाजके बिकासके लम्बा इतिहासके सेहो वडा सुक्ष्मरूपसे मनन करे परतै। ई प्रश्न आपनै करे परतै जे हमरा सब पृथ्वीके एहै इलका मे कथिले जनम भ्याल एवं मगह आ कोशलमे किएकने जनमभ्याल। प्रत्येक व्यक्ति आपन वर्तमान जिवनके भागी आपनै हेछै। कर्म एकटा अकाट्य सत्यचिऐ जे सवकोई आपन जिनगीके अपनै ढङ्ग से निर्माण करैछे। हम आई जे चिए से कैलका करमके अधारमे बनल चिऐं आ औजका करमसे हम भबिष्यके बाट बनबैचिऐ। तै हमरासब आपन जन्मान्तरमे कहियो एहेन काम करलिऐ जैसे आई इ जिवन मे पुगल चिऐ आ हमरसे वढिया केलहा व्यक्ति सबके दया मायामे निर्भर चिऐ। आपनै समाजके विचार क्याके देखही। रजपूतसब शासक है छै आ दोसरसे शक्तिशाली है छै। समाजमे बाबहन है छै आ वोकरा सबगोडे आदर भाव करैछै। एकर बाद व्यापारी, किसान, कलाकार आदि सब वड कडा परिश्रम करैछै लेकिन समाजमे वोकर स्थिति वावहन आ रजपूत नहाइतनै रहैछै। जिवन यापनके सम्बन्धमे बाभने आ रजपूतेटा बढहल रहैछै। अन्तमे जन अवादीके एकटा बडका भाग उपरका जाइत सबके अपेक्षा एकदम घटिया दर्जा के जिवन यापन करैके वास्ते बाध्यछै। समाजमे भेलहा ऐ प्रकार के भिन्नताके सम्बन्धमे तो कोन प्रकारके विचार द्या सकविहि।'

सिद्धार्थ विचार करेले एकछन चुपे रहलै। शाक्य वंशी रजाके बेटा भेलासे वोकरा आपन अडानके कायम राखैले इ जरूरी छेलै जे उ खौ विचार क्याके कोनो जवाव देतै। वोकर घरमे जे नोकर चाकरसब काम करै छेलै, वोकर परिश्रम आ भवनाके सम्बन्धमे विचार करे लागलै। उ सबके विचार आ भवना वडा फरक छेलै। कथीले? उ ईसब विचार क्याके किछो कहतै तावे भारद्वाज जे आपन अडानसे बभनौटी प्रकिया अनुसार समाजिक रीति-थितिके सम्बन्धमे फेर से जोर द्याके सिद्धार्थके बुझवे लागलै।

"अच्छा, कहत सिद्धार्थ, बडका सन्त नारायणके विषयमे तो किछो सुनने चिही? "ह", सिद्धार्थ कहलकै। "हम असित गुरूसे एकर विषयमे सुनने चिऐ। वास्तवमे हम वोकर प्रसिद्ध मन्तर नारायण पुरूष-शुक्त सेहो पढने चिऐ।"

"त, की, तो वोई मन्तरके वास्तविकताके विषयमे कहियो किछो विचारो कैने चिही?"

"हम निश्चित पूर्वक कहै नै चिऐ जे नारायण वोईद्वारा की कहै छै से हम बुझलिऐ किनै?" सिद्धार्थ जवाव देलकै।

नारायण पुरुष शुक्तके जै दृष्टीकोणसे भारद्वाज अर्थ लगैने छेलै, तैके अनुसार बिचार कैलकै जे सिद्धार्थ के दार्शनिक तौरसे चित्तबुझबैले सबसे बडका अवसर एखैनिए छै तै उ नारायण के पुरूष शुक्तके दुइटा अलगे अलग दृष्टिकोणसे अखिहांस देवै लागलै।

'तो देखने हेवहीजे ऐ मन्तरके दुइटा धराछै एकटा दार्शनिक आ दोसर समाजिक लेकिन दुनु असम्बद्धनै छै। नारायणके बिचारमे समाजिक बातावरण के अधार दुनिया दारी के गतिबिधि चिऐ। दोसर प्रकार से बिचार कैलापर वोकर दुनिया दारीके गतिबिधिके अधार अनुभव जन्य हैछै। उदाहरणक के वास्ते अपना सबके ज्ञातछै जे प्रत्येक कार्य के एकटा कारण है छै। कारणद्वारा निः श्रृत कार्य प्रभाव पूर्ण रूपसे कारणसे वेगल नै रहैछै। अंशतःई कार्य-प्रभाव कोनोकारणसे, कोनोभाजसे सम्वन्धित रहै छै। यहै धतु मतुसे नारायणके माने परलैजे वर्तमानमे जे है छै आ भविष्यमे जे हेतै से-सबटा बिराटपुरुषसे निःश्रृत है छै।"

सिद्धार्थ बिचैमे रोकलकै, आ कहलकै। एह, इ त बैचारिक सिद्धान्त मात्र चिऐ। नै, भारद्वाज कहलकै "ई बैचारिक सिद्धान्त मात्र नै चिऐ। इ त अनुभवके अधारमे सजेलहा अनुभूति चिऐ। नारायण लखा सन्त जेकरा भत वर्तमान आ

भविष्यके असिमित आ आन्तरिक अनुभूति रहै ऐ ब्रह्माण्डके प्रारम्भिक अवस्थाके पूर्ण रूपसे देखने रहै । ऐ प्रकारके असिमित शक्तिके अनुभूति उ दैवि विश्वसनीयतासे प्राप्त कैनै छेलै ।"

"जेकरा हम सोजहा सामने देख रहल चिऐ तकरा हम निश्चित रूपसे केनङ कहे सकै चिऐ जे बिराट रुप आ ब्रह्माण्ड एके चिऐ ।" सिद्धार्थ रोकलकै ।

"ऐमे समता आ विषमता दुनुछै ।" जोर द्या के कहलकै भारद्वाज । "जेनङ प्रत्येक वस्तु अलग अलग बिराट स्वरुपके रूप चिऐ तैंहिनङ वोई अलग अलग चिजके एकठाम जोड्डदेलासे भी वीराट स्वरुप चिए। तैयो देखवा सुनवामे उ फरके है छै । एतहेक तलिक जे बिराट स्वरूप ब्रह्माण्डमे बदैल जाई छै लेकिन ब्रह्माण्ड बिराट स्वरुपके सादृश्यनै है छै । एकटा सोनाके टुकडा लै है । वोई सोनाके टुकडाके छोट छोट टुकडा क्याके गहना सब बन्याले । गहना तैयार हैके बाद हमरा सब इ नै कहे सकै चिऐ जे सोन दोसर दोसर चिऐ । ई त सोनाके टुकडाके अकार चिऐ जेकरा दोसर दोसर कहैं चिऐ। वास्तवमे समष्टिरुपमे सोन एक चिऐ । वोहिनङ हमरा सब कहै चिऐ जे विराट पुरुषब्रह्माण्ड चिऐ ।"

"नारायणके अनुसार त एकर मतलव ई भेलै जे समाजिक आ राजनैतिक परिवेशमे औजका संसार जे छै से सवटा बिराट स्वरुप के तहत छै ।" शङ्का सहित सिद्धार्थ पूछलकै ।

"ह," चित्त बुझहाबैके आसमे भारद्वाज धेंघऐलै । "पहिने नारायण अखिहास दै छै जे वावहन बिराट पुरुषके मुह चिऐ, रजपूत बाह, वैश्य जांघ आ पैरसे शुद्र सब उत्पन्न भेलछै । चुके बावहन बिराट पुरुषके मुहके प्रतिनिधित्व करै छै तैं बेदके पठन पाठनके बंशानुगत काम वोकरे सौपल गेलछै वोकर बाद कोई उ काम करै के अधिकारी नैचिऐ, तैं कोशिस नै करै । राजपूतसब बाह चिए तैं बोकर फरज चिऐजे उ खांडके हरदम पिज्याके तेजराखे, छत्रपिनहे आ लडाई भिराई करैत राज्य करे । बैश्य जे जांघके प्रतिनिधित्व करै छै समाजके आवश्यक परै बला उपभोग्य वस्तु के उत्पादन आ वितरण करे । शुद्रजे बिराट पुरुषके पैर से उत्पन्न भेलछै उपरका तीनु, समाजके सकभैर सेवाकरे । समाजके ई चारू बरण बिराट पुरुषके तत्व चिऐ । तोनै जानै चिही जे निरंकार से कोनो वस्तुके प्रादुर्भाव नै भ्या सकैछै ।"

"अगर एहेन बात छै त, यात, बिराट पुरुषदुष्ट चिऐ अथवा बिराट पुरुषके सिरजैवला दुष्ट चिऐ । आ नैत ऐ समाजमे एखनी शुद्रनै रहतिऐ । सिद्धार्थ आपन बातमे अडले रहलै ।

"हमरासब ने त बिराट पुरुषके अथवा बिराटपुरुषके सिरजलहारके दुष्ट कैहसकैंचिऐ। ऐखैनका शुद्रसबजे भेलछै उ. बिराट पुरुषसे उत्पन्न भेलहा पहैनका शुद्रसबसे मेल नै खाई छै। वर्तमान समयके शुद्रसब त समयके बडका अन्तरालके परिवर्तनसे परिवर्तित भ्यागेलछै।"

ऐ प्रकारके सिद्धान्तमे अधारित बहस से न्याय प्रेमी सिद्धार्थ कोनो प्रकारके न्याय संगत तथ्यके ग्रहण नै करे सकलकै आ बिचार कैलकै जे आव वोकर पहिनका प्रश्न जे अगर महगके रजा हमरा सबके उपरमे चढाई करै त हमरा सबके कथी करैक चाही सेहो दोहरेनाई उचित नै लागलै त चुप भ्यागेलै।

यहै समयमे नरदत्त नामके एकटा युवक जे शिक्षा ग्रहण करैके वास्ते बाराणसी आ राजगीर गेल रहै, थोरबेहेक समय तक अध्ययन क्याके घर चैल एलै। अध्ययन सेहो पूरा नै करे सकलकै। कपिलसे बिछुडलहा सिद्धार्थके नरदत्त फिर्ता भ्याके ऐला से बगैरिया जोडैले असल मौका भेटलै। सिद्धार्थ बुझ्झ गेलै जे नरदत्त कट्टर आदमी छै लेकिन स्वभावसे असल छै। वोकर कट्टरपना दोसर कीसिमके छेलै। बभनौटी कट्टरपना जेकरा उ हरदम घृणा करै तै से वेगले रहै। बभनौटी कट्टरपनाके उ बडा सुक्ष्म दृष्टिसे देखै लेकिन तै यो बावहन प्रतिके वोकर बिगड-लहा दिमागके सिद्धार्थनै बुझ्हे सकलकै। ऐ बातसे दुनुमे फरक रैहितौ दुनुटामे बडका समता रहै। समता रहै घोडसवारीके। दुनुटा युवक घोड सवारीके वड प्रेमी रहै।

एक दिन सिद्धार्थ आ नरदत्त घोड सवारी करैले बहरैले त कपिलवस्तु से खौ दुरौंगके गाम तक जाईके बिचार क्याके घोडाके छोड्लकै। जाव दुनुटा घोडाके बमकैने चैल जाईतरहै त सिद्धार्थ जाइनके नरदत्तके पुछलकै।

तोहे दखिनभरा कतहेक दिन तलिक रहलीही।" 'तीन बरिष।"

"तोरा दखिनभरा नै मन लागलौ।" वोकर अनुभव बुझ्हैले सिद्धार्थ बातके अगा बढहैलके। "हम खौ घुमफिर करे चाहै चिऐ आ धुइम घुइमके आदमी सबके जाने चाहै चिऐ।" नरदत्त जवाव देलकै। "लेकिन हम निश्चित पूर्वक नै कहेसकै चिऐ जे हम दखैनबैरिया शिक्षा पद्धतिके रुचेलिऐ कि नै? हम ई बुझ्है चिंऐ जे पिश्चमोन्तर प्रदेश तक्षशिलाके शिक्षा पद्धती उच्चतम छै।"

सिद्धार्थ ई सव विषय बेसिसे बेसी जानैके ईच्छुक रहै।

"कोन प्रकार से ई तक्षशिलासे फरक छै। प्रश्न कैलकै सिद्धार्थ।

"ह, अच्छा । दखैनबैरिया लोक सब एखनियो बभनौटी फेरा से स्वतन्त्रनै भ्यासकने छै ।" यज्ञवालक्यके चमत्कारी करतूतसे लोकसब वडा प्रभावितछै । उ एकटा चलाक बजक्कर चिऐ । आ बाजैमे बहुते विद्वान आ बबाजी सबके निचा क्या देलकै ।

"निश्चित रुपसे वोकर शिक्षाके ख्यातिके सम्बन्धमे कोनो जवरजस्त कारण हेतै । उ कथी पढ़बै छै ?" सिद्धार्थ पूछलकै ।

"उ वडका भारी तात्विक बिचारक चिऐ । पहिनका सन्तसबके गुढ बिचारके एकत्रित क्याके उ एकटा दोसर सिद्धान्तके प्रतिपादन करैके कोशिस क्या रहलछै । उ विश्वास करै छै जे प्रत्येक जिवमे एकटा जिवात्मा रहै छै । जिवात्माके सम्वन्धमे उ बिश्वास करै छै जे ई स्वतः छै आ हरदम एकर अनुभूति जिवके हैत रहै छै । प्रत्येक जिब आपन जिवात्माके विषयमे निश्चित छै । ई परलौकिक, अकाट्य, सर्वव्यापी आ स्वभावसे पवित्र छै ।"

सिद्धार्थ ऐ बात मे नरदत्तके टोकलकै । "अगर ई स्वभावसे पवित्र छै त फेर धार्मिक जिवन व्यतित करैके कोन आवश्यक्ता ।"

"ह', नरदत्त आपन बात जारी राखैत कहलकै ।" हम एहिनङ प्रश्न कैलिऐ त यज्ञवालक्यके जवाव छेलै जे यद्यपि अतमाके स्वभाव पवित्र छै लेकिन मायाके बस मे पैरके इ मायाके बन्धनमे छै । आपनै अज्ञानता के कारण अत्माके व्यक्ति संगे चले परै छै जेनङ मन, मष्तिष्क, बुद्धि, बिचार अनुभव आ ईच्छा । अत्मा ई सबसे उपर छै ।

"जिवसे जाव अतमा स्वतन्त्र है छै ताव जिवात्माके कथी है छै ।" सिद्धार्थ एकदमसे पूछलकै ।

यज्ञवालक्य अडल छै । जखनी अत्मा आपन बास केलाहा जीवसे स्वतन्त्र है छै त उ ब्रह्माण्डमे मिल जाई छै जेकरा ब्रह्म कहल जाई छै आ जे पूर्ण रूपसे नित्य चियै । हमरो ई जिवात्मा आ परमात्माके सम्बन्धके विषय वुझ है मे वडा कठिनाई भ्या रहल आइछ । यज्ञवलावयके विचारसे जिवात्मा नित्य वा अनित्य दुनु चियै । ई नित्य चियै किएकत ई चित्यके अंश चिऐ आ ई अनित्य चिऐ किएकत अज्ञानके अन्धकारमे जिव भटकै छै ।

"हम कल्पना करै चिऐ जे सम्पूर्ण कथा एतबेहेक नैहेतै ।" सिद्धार्थ कैफियत देलकै ।

"जिवात्माके सम्बन्धमे ई त वोकर व्याख्या चिऐ आ उ बिचार करैं छै जे ई दुनु छेवो केल चिऐ आ नहियो चिऐ। ई चित्य, अचित्य दुनु चिऐ। पूर्णआत्मा सर्बव्यापी चित्यके उ कोन किसिमसे व्याख्या करैं छै।"

"सिद्धार्थ तो वडा बुधियार चिही।" जवाव देलकै नरदत्त। यज्ञवालक्यके मनःस्थिति अनुसार सर्वव्यापी चित्य जेना हमरा सब आपन आईखसे देखैं चिऐ, कानसे सुनैं चिऐ, नाकसे बसनाके पकडै चिऐ, स्थिति एवं अकारके बिचार करैं चिऐ, तँसे उ अनन्त आ अगोचर छै। उ ऐसब प्रकारके भिन्नतामे अभिन्न छै। जाव कहियो कोई सर्वव्यापी चित्यके कोनो दोसरसे तुलनात्मक मिलान करे चाहैं छै त यज्ञवालक्य तडाक से कहे लागैंछै। ई उ नैं चिऐ, ई उ नैं चिऐ।"

"एकर मतलब त ई भेलै जे यज्ञवालक्य कहैं छै जे ई उ नैं चिऐ, ई उनैं चिऐ, उई नैं चिऐ,' लेकिन ई चिऐ।"

सिद्धार्थ हम तहिनङ बिचार क्या रहल चिऐ। नरदत्त आपनक्रम जारी राखैत कहलकै, निश्चित पूर्वक वोकर बिचार समर्थन नैं क्या रहल छै जे सर्वव्यापी चित्यके अस्तित्व छै वा नैं छै।

"अगर सर्वव्यापी चित्यके हमरासव आपन मस्तिष्क सहित ज्ञानेन्द्रियके विचारसे ज्ञान नैं क्या सकै चिऐ त फेर कोन प्रकारसे एकर अनुभूति प्राप्त क्या सकैचिऐ।" सिद्धार्थके दोसर प्रश्न छेलै।

घोडाके देखके हमरासब जानैं चिऐ आ, कहैं चिऐ जे ई घोडा चिऐ। तहैं प्रकारसे हमरा सब सर्वव्यापी चित्यके ज्ञान नैं क्या सकै चिए। किएकत घोडाके सम्बन्धमे कर्ता आ करम दुनु बिद्यमान छै जकरा द्वैत कहैं छै। ऐके उपरान्त सर्वव्यापी पूर्ण चित्य त अद्वैत छै। तँयो यज्ञबालक्य ई कहाँ कहैं छै जे ई ब्रह्म चिऐ जेकरा सन्तसब सबसे बडका कैहके अनुभूति करैंछै यद्यपि हम बिचार करैं चिऐ जे अगर कोई ऐ बिचारके यज्ञबालक्य के समक्ष संपुट करैं त उ कोनो प्रकारके अवरोध नैं खडा करतैं।

सिद्धार्थ आ नरदत्त बडिकालसे घोड सवारी क्या रहल छेलै आ नरदत्त घोडसवारीसे थकान महशूस करे लागल छेलै। उ त खाली दक्षिणभर रैंहके प्राप्त केलहा ज्ञानके विषयमे सिद्धार्थके आपन अनुभवके व्याख्या क्या रहल छेलै आ जे विचार वोकरा पसिन नैं परल छेलै तैं के विषयमे उ जाईनके बहस नैं करे चाहलकै। सिद्धार्थ जे आपन घर शाक्य भूमिसे बेसी डेग नैं वढहैने रहैं तेकर वास्ते ज्ञानके आर्जनमे ई वडका भारी अनुभव छेलै। सिद्धार्थ जानलकै जे नरदत के

वोतेका बिचारसब पसिन नै परलै त फिर्ताभ्याके कपिलवस्तु चैल एलै । तै नरदत्त आपन बिचारके समालोचनात्मक पक्षके ल्याके और बेसी वहस क्याके ज्ञानके बेसी प्रकाश करै से बिचार क्याके वहस बढवैले सिद्धार्थ कहलकै ।

"हम ठीकसे नै जाने चिऐ जे मानबके नैतिक जिवनके ईच्छाके विषयमे यज्ञवालक्य कोन प्रकारसे व्याख्या करैछै । अगर कोनो व्यक्तिके व्यक्तित्व पूर्ण नै छै त अनकरा भलाई करलाके वान्छित उद्देश्य कथी भ्या सकेछै । अगर हम कोनो खराबी काम करै चिऐ त कोनो गल्ति अथवा पापके कामनै करै चिऐ किएकत जेकरा हम खराबी करै चिऐ, उ कोनो सत्वके आदमी नै चिऐ ।

हम तोहर बातसे पूर्ण सहमत चियौं; सिद्धार्थ । हमरा आपनै ई बात बुझहैमे वडा कठीन भ्या रहल आईछे जे नैतिक जिवन बितेलासे कोन फेदा हैते जाव हम जानै चिऐ जे हमर व्यक्तित्त्व पूर्ण नै छै । ई बात एहेन कठिन छै जे अजित केसम्वली आ पाकुधा कात्यायन सन्तसब असल आ खराबके भिन्नताके नकारैत भौतिकबादी सिद्धान्तके अपनैने छै । लेकिन यज्ञबालक्यके ऐ प्रकारके विषयमे समझावैके आपन तरिका छै । यद्यपि बहौत पुछनहार सवके चित्त नै बुझहै छै ।"

"उ एकर व्याख्या कोन तरहे करै छै" । पूछलकै सिद्धार्थ ।

"यज्ञवालक्य विश्वास करै छै जे एकटा व्यक्ति आपन घर बालीके जे प्रेम करै छै से उ वोकरा प्रेम नै करै छै बल्कि आपनै सत्त्वसे प्रेम करै छै । एकटा पिता अगर आपन वालकके स्नेह करै छे त उ आपन वालकके स्नेह नै करैछै, बल्कि उ आपनै सत्त्वसे स्नेह करै छै । एकटा आदमी जे धनके लोभी छै उ आपन धनके लोभ नै करैछै, बल्कि उ आपनै सत्त्वसे लोभ करैछै । एकटा वढीया आदमी जे सव जिवके प्रेम करै छै उ वास्तवमे सब जिवके प्रेम नैकरे छै, बल्कि आपने सत्त्वसे प्रेम करैछै ।

"उ जे एनङ कहै छै एकर मतलब ई मेलै जे पुर्णत्विके सम्वन्धमे व्यक्ति व्यक्ति सव पूर्ण चित्यके वास्ते एक चिऐ ।

"भैरसकै ऐहनङ्ग है छै;" नरदत्त कहलकै ।

वोकरासबके बहसके छोटका बच्चा सबके एकटा झुण्ड आईबके भङठ्या देलकै । बच्चा सव लगैके भरखर कटलहा खेतमे मालजालके उबेर चरैले छोईडके आपनमे खेल-धुप करै छेलै; तखैनिए उसव ई नव आगन्तुक सवके देखलकै त दौडल ऐलै । सिद्धार्थ आ नरदत्त घोडासे हेठ भ्यागैले । सिद्धार्थ जे कपिलबस्तुके सिमनासे कहियो बहार नै गेल रहै बच्चासबके देखके चकित भ्या गेलै । कपिल बस्तुके बच्चा आ ऐ सवमे वडा फरक देखलकै । ई बच्चासव आपनौ गन्दा आ

कपडोसव गन्दा पिह्नने छेलै यद्यपि कि खेनाई खोराक कोनो खराव नै बुझहाई छेलै । खेनाई खोराकके हिसाबसे बच्चासव तंदुरूस्त लागै छेलै तैयो उ सवके शारीरिक अवस्थाके कोमल नै कहल ज्या सकै छेलै जेनङ कपिलवस्तुके वोई उमेरके बच्चासबके रहै ।

सिद्धार्थ आ नरदत्त फर्नाहिककाल जिरबैले एकटा गाछके तरमे गेलै आ घोडाके खोईल देलकै । दुनु एकटा खसलाहा गाछके जैरमे बैठ रहलै । बच्चासब धरती मे बैठ गेलै आ नरदत्त वोकरासबसे बतियाबे लागलै । नमहरकासब खौ बात चित्त करैवाला छेलै लेकिन छोटका सब लाज मानै छेलै । नमहरका बचचासव दस वरिस तकके छेलै जेकर शरीरसे बुझ्झपरै जे कोनो हरोठवा काममे व्यस्त रहैछै । नरदत्त वोकरा आपन औङगरीसे इसारा क्याके पूछलकै ।

"ऐ, तो हे, वोतेका, तोहर नाम कथी चियौ ।

"गाभम्पति,, बच्चा जवाव देलकै ।

'तोरा इ नाम केनङ भेटलौ ।" नरदत्त पूछलकै ।

"हमरा थाह नै छै" बच्चा जवाव देलकै । लेकिन नरदत्त तुरून्त अनुभव कैलकै जे भैरसक ई दैहियार चिऐ ।

"की तोरा बहौत गाई भैस छौ ?" नरदत्त हासैत पुछलकै त सबबच्चा हांसे लागलै । उ सव भैरसक ई नै बुझहै जे गाभम्पति माने कथि हैछै । वोकरा सबके वास्ते त ई खाली नामे चिऐ ।

"की तोहर महताइर बापके बहौत गाइ भैस छौं ।" नरदत्त पूछलकै

"ह, गाभम्पति कहलकै" हमरा करिव पन्द्रहटा छै । हमरा सब दुधके दही आ घी बनवै चिऐ आ गामके वनिया हाथे बेच लैचिऐ ।"

"की तो आपन महताइर वापके कामसे सहयोग करै चिही ।"

"ह, हमे गाई मालके हेरचाह करै चिऐ । घर से खोइल दै छै त चरवे जाईचिऐ आ घास काइटके आनै चिऐ जैसे राइतके गाई माल खेतै ।"

"तो गामके पुरहित लग ज्याके लिखनाइ पढनाइ नै सिखै चिही ।" नरदत्त पूलछकै ।

"नै", बच्चा जवाव देलकै । "हमे बाबु मैया संगे भगवानके पूजा क्याके चढौवा-बढौवा दै के वास्ते मात्र पुरहितलग जाईचिऐ । हमरा सब जाव पुरहितके देखे जाइचिऐ त चढौवा बढौंवाके वास्ते वाहौत घी आ अन्न ल्याके जाईचिऐ ।"

"तो जाव घी आ अन्न ल्याके पुरहितके दैचिही त वोकर बदलामे तोरा कथी दै छौ" । बार्तचितमे सामिल हैत सिद्धार्थ पूलछकै ।

"नै , बाबु कहै छै जे जाव हमरासब भगवानके घी आ अन्न चढवै चिऐ त उ हमर गाई मालके रक्षा करैं छै आ गाई माल खौ दुधगर हेवैं तैके वास्ते भगवान सहयोग करैं छै ।"

नरदत्त, सिद्धार्थ दिसर ताकलकै । सिद्धार्थ बुझ्झगेलै जे नरदत्त के मन केहेन भ्या रहल छेलै । वोकर दृष्टिसे बुईझपरैंछेलै जे नरदत्त, पुरहित सव जे गरिबके शोषण करैं छै तै से मनैमन तमस्या गेलै ।

सिद्धार्थ गाममे ज्याके बुजुर्ग लोक सवसे भेट क्याके वोकर रहन सहन, विश्वास आदि जाने चाहै । लेकिन घर जाइले आव वडा अबेर भ्या रहल छेलैं ।

"हम विचार करैं चिऐ जे आव हमरा सबके घर दिसर फिर्ता हेवक चाही ।" सिद्धार्थ कैहके उठलै आ घोडा दिसर ज्यालागलै । "हम दोसर दिन फेरसे आवे चाहै चिऐ । आव जे एवैं त घरसे अनगुतिए चलवै जैसे ऐ ठाम सबेरे पुगवै आ खौ कलासे गामके लोक सवसे बातचित करवैं । आव वडका देरी से घर पुगवै त बाबु तमसत ।"

"ठिके छै", नरदत्त कहलकै यद्यपिकी उ घर जाइके ममलामे लापरबाह छेलै ।

घोडा हाकलकैत उ सव चुपे चाप छेलै । वेरिया पहरके निर्जनताके शान्त बाताबरण असल लागैं छेलै । चिरैं सव एने वोने फुदकै छेलै, उडै छेलै, गीत गावै छेलै आ रतुका वास के जोगाड करैके तरखरमे छेलै । सुरूज पछि भरा एकटा धनगरहा गाछके अढ भ्या रहल छेलै जे ई साबित क्या रहल छेलै जे सवसे असल आ सुन्दरौके परिवर्तन हेवै परैं छै एवं अस्थायीत्व के स्वीकार करे परैं छै ।

सिद्धार्थके वास्ते फेर ई राइत वडका भ्यागेलै । असित आ भारद्वाजसे जे उ वावहन परम्पराके अनुसार भगवान एवं कर्मके विषयमे जे पढनेरहै आ नरदत्त मार्फत अत्माके सम्बन्ध मे यज्ञवालक्यके बिचार सब जे सुनने रहैं आ आइ जे वेरिया पहरमे बच्चा सवके स्थिति देखलकै त उपरका पढलहा बात सवटा बिरोधाभास लागलै । वोकरा लागलै जे बच्चासवके जिनगी वोकर बाताबरण मार्फत निश्चित भेल छै जैं मे उ सव जनम नेने छै । कि त उ बच्चा सव आपन जनमके भागी आपनै चिऐ ? कथिले ? उ सबके जनम वोइ ठाममे आ ओहेन परिस्थितिमे भेलै कथिले ? हमरा सुख आ अरामके सवचिज उपलब्ध आइछ आ वोई बच्चा सबके आपन महताइर-बापके सहयोगमे दिन भैर काम करे पडैछे जैसे उ जिवन धाने सकै । एहै प्रकारके बिचार सव वोकार मन मस्तिष्क के मोथने रहैं । दिनका थाकल से उ कखनी सुतलै थाह नै भेलै ।

४–चारिम

सिद्धार्थ नरदत संगे यारी गाठैले खौ जोरतोरमे छेलै। नरदत्त जे वाराणसी आ राजगीरमे आपन शिक्षा पूरानै करे सकलकै सिद्धार्थके वास्ते एकटा चानके भेलै वोकरा स्मरण भेलै जे नरदत्त कहै छेलै जे दखैनबैरिया लोकसव एखैनियो बभनौटिके बडका प्रभावमे छै। की यहै कारण सबसे उ फिर्ता भ्याके कपिलवस्तु चैल एलै ? की दोसर शिक्षक नै छेलै जे वोकरा आपन शिष्य बनैतिऐ ? अगर सिद्धार्थके बाबु वोकरा पढहैले वोई सव जगहमे पठैतिऐ त की वोकरो एसव झन्झटके अनुभव नै करे परतिऐ ? ई प्रश्न सबके विचार उपरान्त सिद्धार्थ आपन मनके सान्त्वना दैत कपिलवस्तु नै छोडनाइए असल बुझहे लागलै। लेकिन मानव जीवनके इहलिलाके विषयमे और बेसी जानैके वास्ते वोकर मनबडा व्यग्रहेबै जेनङ कोनो फतिङ्गा बधासे जुहैत रहेछै। अखैन तलिकमे उ असित, विश्वामित्र आ भारद्वाजसे शिक्षा दिक्षा पूरा करैके अवस्थामे पुइग गेल छेलै। पिता शुद्धोधन सेहो आव व्यग्र भ्यारहल छेलै जे बेटा सिद्धार्थ रसे रसे राज्य प्रशासनके काममै भाग लै।

पिता शुद्धोधन राज काजके कामसे आपन शाक्य राज्यके विभिन्न क्षेत्रके भ्रमणके अबसर मे सिद्धार्थके हरदम आपन संगे ल्या जेवेलागलै। शुद्धोधन ऐ समयके वास्ते जगह जगहमे आपन निवास करैके घर तैयार करबैने रहै। ई निवास स्थान राज्य परिवारके दोसरो सदस्य सवके वास्ते छेलै जे वरिसके बिभिन्न ऋतु कालमे निवास केल ज्यासकैछेलै। सिद्धार्थ ऐ राजकीय भ्रमणमे आपन पिता संगे जाई छेलै। उ पिता संगे राज्य प्रशासनके तौर तरिका सिखैले नै जाइ छेलै वल्कि राज्यमे रहै वला जनता सबके जिवन यापन, रहन-सहन एवं चहना जानै ले बेसी ललायित रहै छेलै।

कहियो कहियो आपन लवका बगैरिया नरदत्त आ पितीयोत भाई देवदत्तके संग मे ल्याके उ पिता संगे राज्य भ्रमणमे जाई छेलै। जाव वोकरा समय भेटै छेलै त उ नरदत आ भाई देवदत्त संगे गाम लगके जंगलमे ज्याके हरिन, मृग आ पाईनमे चरैवला बिचित्र बिचित्र नै देखलहा जानवर सवके देखके मगन है छेलै। नरदत्त आ देवदत्त शिकारके सौखिन छेलै। जाव उ सव जंगल दिसर जाई छेलै त आपन तिर धनुष संगमे ल्यालैछेलै। यद्यपि सिद्धार्थके शिकार खेलैमे मननै लागै छेलै लेकिन आपन मित्रसवके खिसियाके रोकवोनै करै छेलै।

एकवेर नरदत्त एकटा चिरैके तिर मारलकै त उ सिद्धार्थ लग आइवके खसलै। सिद्धार्थ जल्दीसे दोडके गेलै आ चिरैके पकैडके वोकरदेहसे तिरबहार क्या देलकै आ चिरैके सेवा करे लागलै। ई देखके नरदत्त लगमे आइबके हांसे लागलै।

"सिद्धार्थ तो वडा करूणामय चिही। बुईझ परैए जे तो यज्ञवालक्यके दर्शनके मानै चिही। कितो ई विचार करैं चिही जे चिरैंके आत्मा है छै ? एकरा मारलासे खराव काम (पाप काम) है छै ?" हमनै जानै चिए जे एकरा अत्मा है छै किनै ? लेकिन तो नै देखै चिही जे ई बेचारा जिवके कतहेक दरद भ्या रहलछै ? तोरा अनकर दुःख दरदसे जेनङ कोनो तरहके पश्चाताप नै हैछौ।" सिद्धार्थ दुःख दरदसे भोरल नजैरसे आपन वगैरिया दिसर ताकलकै। "हम निश्चयपूर्वक नै कैह सकै चियो जे चिरैं कोनो दुःख के अनुभव क्या रहल छै।" नरदत्त घेंघिय्याके कहलकै "हम देखै चिऐ जे चिरैं आपन स्वभाविक तौरसे पाइख फरफऱ्या रहल छै जैसेकि उ फेरो उइड जेतै। कितो बिचार करैं चिही जे चिरैंके तिर माइरके हम कोनो गल्ती काम कैलिऐ (पापके काम) ?"

"हम स्याहा बिचार करैं चिऐ।" सिद्धार्थ दुःख प्रकट करैत जवाव देलकै।

"से जे बिचार करैं चिही त उ सवलोक जे शिकार क्याके आपन पेट पोसै छै से हरदम पापके काम करैं छै आ अगर हमरासव कथित नैतिक दर्शनिके माने लागवै त उपरका कहलहा शिकारी सवके नरकैंमे बास हेतै।"

हम वोकर वास्ते नै कैह रहल चियौ जेकरा आन काम करैके अवसर नै प्राप्त भ्याके लचार बस शिकार क्याके आपन भरण पोषण करे परैं छै; हमत खाली तोहर सनके आदमीके विषयमे जोर द्या रहल चिऐ जे मात्र मन बहलावैले आन जिवके हत्या करैंछे।

नरदत्त आपन केलहा जिव हत्याके काम आ लचार शिकारी सबके दिन चार्यामि कोनो फरक नै करे चाहै। तैं उ बात बढहैलकै।

"कितो बिचार करैं चिही जे कोनो काम एक तरहे आदमीके केलासे पूण्य आ दोसर तरहे आदमीके केलासे पाप है छै ईत ? नैतिकताके दोहरा सिद्धान्त भेलै जे तोहर सनके बहौत आदमी मानैछै आ बहसो करैं छै। सिद्धार्थ ईतो कथीलेने बुझैहै चिही जे हमरासबके काम समानछै। एकटा शिकारी आ हमत जह्या म कैलिऐ जे एकटा तिरके आपन शारीरिक बलसे चिरैं दिसर फेकलिऐ। व्यक्तिके आपन अनुकुल केलहा काममे त ई बिना मतलबके भिन्नता देखेनाई जे ई काम असल आ उ खराब, ई ठिक आ उ बेठिक, जे बास्तविक जिबनमे कोनो माने नै राखै छै।"

सिद्धार्थ वुईझ गेल छेलै जे नरदत्त नैतिकताके परम्परागत व्यवहारके मूल्यमे केहेन बिचारशिलछै। लेकिन एखैन तलिक उ ई नै बुझने छेलैजे वोकर बगैरिया खुलम बखतम भौतिकवादी रहै। वोकरा वोई दिनका बात जहिया उ घोडामे चैढके कपिलबस्तुसे वाहर गेल छेलै से यादएलै जे नरदत्त यहै सम्बन्धमे अजित

केशम्वली आ पाकुधा कात्यायनके प्रति केहेन सुहृद भेल रहँ । उ ताव सब बातके बिचार क्याके सोचे लागलँ ।

तहँ समयमे देवदत्त एकटा सुन्दर चिरँ हाथमे लटकैने एलँ जेकरा उ एके तिरमे खसैने रहँ । उ खौ जतनसे चिरँके भोटी आटी सफा क्या रहल छेलँ तकरा वाद सुख्याके रूईया भोइरके आपन कोठलीके सजवैके बिचार क्या रहल छेलँ ।

आपन सरकारी काम काज समाप्त क्याके शुद्धोधन भ्रमणसे फिर्ता भ्याके कपिलवस्तु ऐलँ । झम्मक साझमे उ सब घर पुगलँ त सिद्धार्थके सतमहताइर कहलकँ जे वोकर पुरना बगँरिया कपिल चैल एलँ । बास्तबमे सिद्धार्थके भेट करैले कपिल बहौत बेरा हवैली दिसर एल छेलँ । सिद्धार्थ ई समचार सुइनके वडा गदगद भेल छेलँ आ कपिलके भेटकरैले छटपटवे लागलँ । वोकरा वोकरसे भेट करैले बिहान तलिक रहे परलँ आ ई अखैन तलिकमे वोकर अन्दाजसे सवसे नमहर राइत भ्या गेलँ । अनगुतका झलफलैमे सिद्धार्थ आपन बालशखासे भेट करैले भागलँ आ बाटमे देवदत्तके सेहो संग क्या लेलकँ । ई तीनु बगँरियाके मुर्नमिलन एकटा वडका अनन्दोत्सवके रूप धारण क्या लेलकँ ।

"कपिल जे मानबीय ज्ञानके सवशखाके अत्यधिक अध्ययन मनन क्याके एलैत आव हमरा सब वोकरा खाली "बगँरिया" कहनाई उचित नै हेतँ । एकर बदलामे आव अफ्नासव वोकरा "महोदय" कहवै, कहवै किनँ देवदत्त ?" आपन पितीयोतके प्रश्न कैलकँ सिद्धार्थ ।

"दोहाई सरकार ! आव जाव हम आपन सव शिक्षा पूरा क्याके चैल एलिए त हम अपनेके सेवा करैले हरदम, तैयार चिऐ ।" कपिल अभ्यर्थना क्याके कहलकँ । तीनु वगँरिया हासे लागलें

"तक्षशिलामे तोरा खौ मन लागल हेतौ ।" देवदत्त पूछलकँ ।

"ह, शिक्षाके सम्बन्धमे वडका अनुभव भेलँ । हमरा बहौत शिक्षकसव भेटल जेकर निर्देशनमे हम अध्ययन कैलि ऐ । उ सव वडा सैरिय्याल आ सभ्यछै । अलौकिक वा ब्रह्म विषयके वोकरा सब महत्व नै दैछै । अलौकिक विषयके प्रश्नके सम्बन्धमे अगर प्रश्न नै उठचाल जाइछै त चुपे रहनाई ठिक मानल जाइछै । वोकरा सबके निर्देशनमे अध्ययन कैलासे कोनो विषयमे वडा बिचार पूर्ण तर्क देवे परछै आ ऐ प्रकारके अभिव्यक्तिके मात्र अत्माके वास्ते असल मानल जाइछै ।"

"एतहेके दिन तलिक तोराऔरके कथी करैत रहलीही ?" थोरहेक वेर चुपरहलाके बादमे कपिल पूछलकँ ।

हमरा सव असित कालदेवलके निर्देशनमे वेदके अध्ययन कैलिऐ । राजनीति शास्त्र भारद्वाजसे आ शस्त्र बिदया बिश्वाभित्र गुरूसे सिखलिऐ । हमरासव जे कुछ ऐठाम सिखलिऐ से वास्तबमे अलौकिक वास्तविकताके विज्ञाननै भ्याके वावहन परम्पराके कायम राखैके वात छेलै । कनहेक मनके खिन्न क्याके सिद्धार्थ जवाव देलकै ।

"हम निश्चितपूर्वक कैहसकै चिऐ जे ई विषय एकदिन लाभप्रद हेवेटा करतै ।" कपिलके कैफियत छेलै । उ सव कहै छै जे कोनो ज्ञान प्राप्तिमे पूर्ण लिप्त मेनाई खराब चिऐ आनेत सधारण रूपके ज्ञान प्राप्ति बेकार नै है छै ।"

यहै प्रसंगमे एकटा बातछै । एक आदमी नरदत्त नाम चिऐ जे आपन शिक्षा पूरानै क्याके वाराणसीसे फिर्ता भ्याके एले । भ्यासकैए जे तो वोकर कोनो बिचारके पसिन करबिही । सिद्धार्थ कहलकै ।

पहिने हम खौसे अराम करबै, ताव आपन अपनाइत कुटुम्बसव लग जेवै, तकरा बाद हम वोकरसे भेटैके कोशिश करबै । कपिल कहलकै ।

उ तिनु बगैरिया वोई दिन आपन अनुभव सुनैत सुनाईत रहलै ।

सिद्धार्थ आव ठेडवा उमेरसे बाहर भ्या गेल छेलै आ खौ छरहर सुन्दर जवान निकलल छेलै । शाक्य राज्यके भविष्यके राजा हेवै वाला सिद्धार्थके सम्बन्धमे पिता शुद्धोधन एवं मैया प्रजापति गौतमी हरदम सिद्धार्थके राजकाज सम्बन्धी भूमिकाके विषयमे बिचार करैत रहै छेलै । उ सव ऐ विषयमे कनहिक चिन्तित छेलैजे राज्य सिंहासनके उत्तराधिकारी हेवै वाला युवक सिद्धार्थ, राज्य संचालनके प्रशासन सम्बन्धी विषयसे वेसी न्याय एवं नैतिक मूल्यके बिषय जानैके ईच्छुक रहैछैलै । उ गृहस्थाश्रममे प्रवेश करैके वास्ते कोनो प्रकारके उत्तरदायित्व बहननै क्याके आ कोनो आपन पसिन केलहा कन्याके रूचवैले कोनो रूचिनै देख्या रहल छैलै । लेकिन तैयो प्रजापति गौतमी ई लक्ष्य कैने रहैजे सिद्धार्थ, दण्डपानी आ बिम्वाके पुत्री यशोधराके प्रति आकर्षित रहै । यशोधरा एकटा शिक्षीता नवयौवना रहै । धार्मिक कृत एवं समाजिक कृयाकलापके अवसरमे जैठाम नवयुवक एवं नव यौवना सबके भेट घाट हैके अवसर प्राप्त है छेलै तै मे यशोधरा एकटा असल व्यक्तित्वके रूपमे चिह्नल जाई छेलै ।

एक दिन साझके जखनी शुद्धोधन आ गौतमी दरबारके कौसिमे रहै त सिद्धार्थके देखलकै जे उ फुलबाईरके गाछके झुण्डमे घोसैर रहलै । एकछन पाछे छोटका भाई नन्दबहरैले आ सिद्धार्थके ताकने फिरै । सिद्धार्थ आपन छोटका भाईसे घोसरा

घोसरी खेल्याके आनन्दित हैछेलै । उ आपन छोटका भाई जेकर उमेरमे बहौत फरक रहै वोकर संगे खेलोड कैरके आनन्द प्राप्त करै छेलै ।

"देखहीं" दुनुटा बेटा दिसर इ्गित क्याके शुद्धोधन गौतमीके कहलकै । सिद्धार्थ एखैन तलिक बचकना नै छोडने छै । जाव उ घरमे रहैछै त छोटका नन्द संगे खेलौड करैत रहैछै । मुखियाके बेटा भ्याके मुखियाके कर्तव्यके सिखैले उ कोनो प्रकारके उत्साह नै देख्या रहलछै । हम बिचार करै चिऐ जे एकरा आव दुई से चाइर टांग बन्या देतिऐ । जाव एकर बियाह भ्या जेतै त ई आपन उत्तरदायित्वके बुझहे लागतै ।

सिद्धार्थ कोनो अनुत्तरदायी ढहलेल युवक नै छै । गौतमी पक्षल्याके कहलकै । उ आदमी सबके चिह्नैले, वोकर असा आ इच्छाके जानैले हरदम प्रयन्त्नशील रहैछै । जाव उ नन्द संगे खेलौड करैत रहैछै त उ नन्दके कामके वडी ध्यानसे देखैत रहैछै । कहियो कहियो जाव हम नन्दके तमसैत रहै चिऐ त सिद्धार्थ वोकर पक्षल्याके हमरसे बात करे लागै छै जे बच्चाके स्वतंत्र रूपसे विकास हेबक चाही । कुछहै, आव ई बिचार करैवाला समय चैल एलै जे सिद्धार्थ कोनो कन्याके पसिन करे ।

शुद्धोधन बडीदुर अकास दिसर ताकैत बिचार करे लागलै । अगर सिद्धार्थके मिलानके एकटा असल कन्या पसिन करैके इन्तजामनै क्या देबैत हम वडा गल्ति करबै । शुद्धोधन बिचार कैलकै ।

बियाह करैके बिषयमे सिद्धार्थसे बातचित कैलकै ? गौतमी घरवालाके पूछलकै । "नै" शुद्धोधन जवाव देलकै । अपनासव पहिने एकटा असल आ मिलानके कन्या देख आ ताव दुनुके भेटघाट हैके बन्दोबस्त करे परतै । गौतमी बिचार कैलकै जे आपन देखलहा बातके बिषयमे घरवला शुद्धोधनसे एखैनिये बात चित करै के नीकअवसर छै ।

ई साच बात चिऐ जे सिद्धार्थ एखनी तक बियाह करैके कोनो बिचारनै करैत देखै चिऐ लेकिन हम क्या बेर ऐ बातमे गौर करने चिऐ जे सिद्धार्थ वडा भेदिया किसिमसे यशोधरा दिसर झूकल रहैछै । भ्यासकै छै जे वोकर प्रति कोनो मोह हेतै ।

शुद्धोधन ऐ समचारसे उत्साहित नै भेलै । उ यशोधराके महताइर बापके असलसे चिह्नै छेलै । उ सबके बिचारधारा वडा उदार छेलै । एकटा नवयौबनाके वास्ते समाजके चलन चल्तीमे एलहा बात बिचारके सम्बन्धमे यशोधराके कोनो प्रतिबन्ध नै रहै । शुद्धोधनके, असितके भविष्यवाणिसे डर भ्या गेलै । उ अनुभव

कैलके जे जेकर डरे भिन भेलिऐ स्याह परल बखरा माने जे चिजके हम रोके चाहै चिऐ से यशोधराके उदार बातावरणमे पोषित ज्ञानके मार्फत वोकरा उजागर क्या देतै ।

"कितो साच कहै चिही जे सिद्धार्थ यशोधराके प्रति आकर्षित छै ?" शुद्धोधन जाने चाहलकै त गौतमी पता लग्याके कहवौ, कहलकै ।

सिद्धार्थ वडा बुधियार बच्चा छेलै आ वडा विचारशील युवक भेलै । वोकर राजकीय वातावरण वोकर उमेरके दोसर युवकसबमे उत्पन्न हेवै वला मनोभवनाके अनुभूतिसे उ अछुता नै छेलै आ वोकरे फलस्वरूप उ यशोधराके प्रति आकर्षित भेल रहै । लेकिन तैयो एकटा रजाके पुत्र भेलासे जे सम्पन्नतामे मदमत भ्याके जे काम करै छै तैसे सिद्धार्थ तीन लाठी फरके रहै छलै । उ राजकीय मदमत्ताके अनाधिकार बुझहै छेलै । तै शक्तिके दुर्व्यवहार करैले उ हरदम सचेत रहैछेलै । वोहौसे बेसी यशोधरा वडा होसगैर आ बुधियाइर नवयौवना रहै तै सिद्धार्थ वोकर दिसर झुकलै ।

यशोधराके प्रति आकर्षणके मध्येनैजर राखैत गौतमीके सिद्धार्थके वियाहके विषयमे बुझहैले बेसी दिननै लागलै । उ एखनी भर खरे एकटा खेल धुप प्रतियोगिता देखके एल रहै जैमे गामके लवतुरिया युवक युवती सव भाग नेने रहै । तैमे सवसे आचरज छेलै जे सिद्धार्थ आ कपिल अनुस्थित रहै । यशोधरासे बातचित करैके मनसुवासे प्रतियोगिताके वास्ते तैयार भेलहा अखडहाके लगैमे बैठल यशोधराके मन टोबैके विचारसे गौतमी वोकर सैटके बैठ गेले । नरदत्त आ देवदत्त बहुते प्रतियोगितामे भाग ल्या रहल छेलै । गौतमीके वडा आचरज तखनी लागलै जाव यशोधरा आपनै पूछलकै ।

"सिद्धार्थ कतै छै ? कि उ ऐ खेलमे सामिलनै भ्यारहल छै ?"

"हम आपनै छक परल चिऐ जे उ कथिले ऐ ठामनै छै ?

"हे तै, सिद्धार्थ बहौत दिनके वाद आपन बगैरिया कपिलसे भेट भेलै तैउ बहौत चिजके विषयमे बातचित करैमे मगन हे तै । हम विश्वासके साथ कैह चिऐ जे अगर एखैन उ रहतिऐ त नरदत्तके मुकैवला करतीऐ जे अखनी खेलके हथिऐने छै ।" यशोधरा जे आपन साथी सबके साथै प्रतियोगितामे भाग लै वला खेलाडी सबकेहोसला बडह्या रहलछेलै से आपन विचारके कैफियत देलकै ।

गौतमीके मन खौ असलमे माइन गेलै जे जैहिनङ्ग सिद्धार्थ यशोधराके टबने छै तहिनङ्ग यशोधरा सिद्धार्थ दिसर झुकलछै । वोकर मनमे बड दुःख भेलै जे एहेन उत्सवमे बेटा सिद्धार्थ नै उपस्थित भ्याल । मनके खौ भितरसे गौतमीके अनुभव भेलै

जे वोकरा यशोधरा बड पसिन परलै । लेकिन उ एहो जानै छेलै जे यशोधरा, सिद्धार्थके वास्ते शुद्धोधनके पसिन नै छै ।

जाव शुद्धोधन, गौतमी आ नन्द खेलके प्रतियोगिता देखके घर एलै त सिद्धार्थ घरैमे रहे । उ सव परिवार मिलके रैतका भोजन कैलकै आ दिन भैर सिद्धार्थ कते छेलै से विना पूछनै शुद्धोधन सुतैले चैल गेलै । नन्दके नोकरनी वोकरा सुतवे ल्या गेलै त गौतमी आ सिद्धार्थ रैह गेलै ।

"हम आइके यशोधरासे भेट कैनै छेलिऐ ।" गौतमी कहलकै ।

"तोरा उ कतै भेट भेलछेलौ ।"

"खेलके अवसरमे । उ तोहर विषयमे पूछै छेलौ ।" सिद्धार्थके प्रतिक्रिया देखैले वोकर दिसर ताकैत जवाव देलकै ।

"हम खेलके प्रतियोगितामे भाग लैले तैयार छेलिऐ, लेकिन कपिलके सलाह जे गाम दिसर चल, त, चैलगेलिऐ ।" प्रतियोगिता केहेन भेलै ।

"धनुष चलबैमे देवदत्त सबके जितलकै । घोडसवारीमे नरदत्त सबके हरैलकै तो नै गेलही से यशोधरा वडा सोच करै छेलै । उ कहै छेलै जे तो नरदत्तके हन्या देतही ।"

"तो ई वात केनङ्ग जाने सकलीही ।" लाजसे धकधकबैत मनके दबैने सिद्धार्थ महताइरके पूछलकै ।

" ह, उ हमरा तैहनङ्ग कहलक ।"

सिद्धार्थ वडा उत्सुक भ्या गेलै । वहै उमेरके नवयौवनासबसे कानी काईटके यशोधरा प्रतिके आकर्षणके प्रतिफल मात्र रहै, तै उ यशोधराके विचार जाने चाहलकै ।

"उ केनङ विचार कैलकै जे हम नरदत्तके हन्या देतिऐ । "भैरसक तोहर कर्त्तव्य परायणतामे वोकरा पूरापूरी विश्वास छै । उ तोरा वहौत मानै छौ । तो वोकरा कथी विचार करै चिही ।"

"तो हमरा ऐहेन बात कथिले पूछै चिही ?"

"की त ई बात जरूरी नै छै ?" गौतमी पूछलकै । सिद्धार्थ गौतमी के प्रश्नके गम्भिरताके बुझहलकै । वोकर वास्ते आव निश्चय करैके समय चैलएल छेलै जे उ वियाह करतै कि, नै ।

"ह, ई जरूरी छै लेकिन ऐसे पहिने एकटा और बातछै जे ऐसे बेसी जरूरी छै" । सिद्धार्थ आपन मनके बात खोलककै ।

"उ कोन बात चिऐ"? गौतमी पूछलकै ।

"कि हम पहिने ई नै विचार करबै जे हम वियाह करबै कि, नै ? अगर हम वियाह करैके विचार क्या लैचिऐ, त, कि जेकरसे हम वियाह करबै तैं कन्यासे हमरा आपनसे पसिन करैके स्वतन्त्रता रहतै कि, नै ? फेरो की ई जरुरी नै छै जे जैं कन्यासे हम वियाह करबै तकरा हम जाने सकै चिऐ कि नै ?"

गौतमी बडा होसियारीसे सिद्धार्थके पैहनका प्रश्नके उड्या देलकै । उ कहलकै "हम विचार करै चिऐ जे जकरसे तो वियाह करविही तकरा जननाई आ पसिन करनाई जरूरी छै लेकिन तो आपन जिनगीके मैमलामे एखैन ततेक परिपक्व नै भेल चिही । तैं जे जिनगीके सम्बन्धमे वेसी बुझहैछै तकरसे विचार विमर्श करनाई असल भ्या सकैछे ।" गौतमी कहलकै ।

सिद्धार्थ ई नै बुझहे सकलकै जे यशोधराके सम्बन्धमे वोकर सतमहताइर वोकरा हौसला देछै वा हौसला नै देछै । एतहैक उ बुईझगेलै जे वोकर महताइर वाप वोकरा वियाह क्या देबे चाहैछै आ उ एहो बुझहलकै जे कोनो कन्याके पसिन करैले महताइर वापके सलाहके आदर हेवै ।

मैया, एखनी आव जाइचिऐ कैहके सिद्धार्थ चैलगैलै । तकर बाद भैरसाझ आपन भविष्यके विषयमे विचार करैत रैह गेलै । एकटा रजाके बेटा भ्याके कि हमरा वियाह करै परत जे पहिनेसे निर्णित छै, जे हम एहिनङ्ग क्याके जिवन बितवै । की एकर कोनो उपाय छै जैसे एकरा हम बदले सकवै ? वियाह करनाई त प्रकृति चिऐ । लेकिन की ई खाली व्यवहार अथवा पूर्व निर्णित हेबक चाही ? पूर्व निर्णित त एकटा सोझकाबाट जेकरा सव मानै छै । नारायणके पुरुष शुक्त यहै बातमे जोर द्याके सबसे परम्परागत व्यवहार करवै छै । नै, हमर वास्ते वियाह करनाई कोनो अप्राकृतिक बात नैहेतै लेकिन पुरना परम्परा आ व्यवहारके षटरागके हम आपन वियाहमे नै आवे देबै । अगर हम वियाह करै चिऐ त कनिया हमर पसिनके हेवक चाही । उ हमर घरवाली आ जिवन संगीनी हेतै । ताव फेर यशोधराके विषयमे विचार करै छेलै । जतवेहेक बेसी उ यशोधराके विषयमे विचार करै छेलै ततवेहेक वेसी आपन असल जिवन संगीनीके रूपमे विश्वास उपजै छेलै ।

विहान हैसे पहिने गौतमी शद्धोधनके कुछनै कहे सकलकै । दोसर दिन शुद्धोधन आपन मातहतके काम समाप्त क्याके गौतमी लग घर एलैत, पूछलकै ।

"कि तो सिद्धार्थके मनोभवना किछो बुझहे सकलिही ?" कोनो खास नै । लेकिन हमरा सन्देह भ्यारहल आइछ जे दुनुटा एक दोसरमे भिरल छै । कौलका खेलकुद समारोहमे जाव हम यशोधरासे भेटलिऐ त उ हमरा सिद्धार्थके विषयमे

पुछैत रहे। राइतके जाव हम यशोधराके विषयमे बातउठैलिऐ त उ वड मनगर भ्या गेल छेलै। लेकिन बेसी बात नै बाजलै। हम निश्चितपूर्वक एहो नै कँह सकै चियौ जे सिद्धार्थ वियाह करे चाहै छै, कि नै ? गौतमी घरबलाके सवटा इति विति सुन्या देलकै ।

शुद्धोधन घरँमे चहल कदमी करे लागलै। शिक्षाके वास्ते उ आपन बेटा सिद्धार्थ के कपिलवस्तुसे बहार कहियोने ज्या देलकै। वोई समयमे सिद्धार्थ छोट वालक छेलै, त, की शुद्धोधन फेर आपन इच्छा जवान बेटा सिद्धार्थमे लादहे सकतै ? ई जरूरी छेलैजे सिद्धार्थ वियाह करे आ वोईसे जरूरी ई छेलै जे बेटा वा बेटीके वियाह, महताईर वापके निर्णयके अनुसार परम्परा आ रित विभूतसे हेवै। तँयो सिद्धार्थ परम्परा, रित विभूतके आईख मुइनके मानै वाला नै छै। ई सवटा तर उपर विचार क्याके शुद्धोधन आपन बेटा सिद्धार्थके जाचे चाहलकै ।

(५) पाँचम

सिद्धार्थके दिन सबेर सवेर प्रारम्भ भ्या जाइछेलै । घरके लोकसब जागैसे पहिनै उ उठै छेलै। कहियो रोहनी लदीके बगरै बगर त कहियो घोडामे चैढके, थोरहेक दुर पुइगके रोहनी खोलामे स्लान क्याके कलौवा बेरमे घर पुगै छेलै। सूर्योदयसे पहिनै गामके मरद, जनी, जवान आ बुढसब रोहनी लदीमे दिनहु डुब्की मारैत देखलहा दृष्यसे उ अभ्यस्त भ्या गेल छेलै।

वोई दिन सिद्धार्थ घोडामे चैढके रोहणी लदीके किनारै किनार आपन बिचारमे मगन ज्या रहल छेलै। बितलहा राईतमे जे सतमहताइरसे वातचित भेलरहै तहै विषयमे बिचार मगन छेलै। उ बियाह करैके निश्चय क्या ने ने छेलै। लेकिन महताइर-वापके मन राखैके पक्षमे नै छेलै। वोकरा यहो सन्देह छेलै जे वोकर पिता यशोधराके आपन पुतौह बनबैके पक्षमे नै रहै। उ ठिकसे नै जाने सकलकै जे वोकर सतमहताइरके बिचार केहेन छै। यद्यपि कि वोकर आ यशोधराके सम्बन्धके विषयमे मैया कखनो बिरोधाभासके बात चित्त नै करने रहै। उ अनुभव कैलकै जे वोकर बाबू बियाहके सम्बन्धमे अपनै किसिमके निर्णय लेवे चाहै छै ठिक ओहिनङ जे वोकर शिक्षा दिक्षाके समयमे कैनेरहै। वोई समयमे उ आपन पिताके निर्णयके प्रतिकूल नै करे सलकै। त कि अखैनीयो वोकर बियाहके सम्बन्धमे पिताके निर्णयके कार्यान्वयन करतै। बियाह त जिनगी भँरके निमहता है छै।

कि त हरदम परम्परा श्रा समाजिक रित बिभूत वोकर भविष्यके निर्णयके निर्धारण करतै ? ऐ के तहत ककरौसे सल्लाह लेनाई श्रावश्यक छै । ह, कपिल भेट सकैछै । कपिल एहेन परम्पराके कमे माने छै । वोकर बिचार वडा नापल तौलल रहैछै । तक्षशिलाके शिक्षा दिक्षा वोकर बिचारधराके बदैल देलकै । उ हरदम तार्किक औचित्यके पक्षमे रहै छै । उ वडा उदार प्रकृतिके युवक चिऐ । तै, ऐ मैमलामे कपिल सवसे बडका सहायक भ्यासकै छै ।

उ एहै गुन धुनमे मगन घोडा छोडने चैल ज्या रहल छेलै कि वोकर घोडा एकदम ऐड गेलै श्रा-श्रगामाथे नै ज्या चाहै छेलै । भरखरे पोह फाटैत श्रनगुता पहरमे श्रगा दिसर ताकलकै त देखलकै जे कोनो चिज वोकर बाटके श्रबरूद्ध क्या रहलछेलै । घोडासे हेठ भ्याके वोई चिज लग ज्याके देखलकै । एकटा बुढ श्रादमी रहै भैरसक श्रसिबरीससे बेसी उमेरके रहै । बरफके पोटरी भेल टस-से-मस नै हैवै वला छेलै ।

भैरसक मोरल छै ? ई बिचार मनमे श्रावैत, डरसे वोकर रिढके हाड काईप उठलै । डरसे थरथर कापे लागलै । ई पैहनका चोटी छेलै जे एकदमे श्रनायास रूपमे उ एकटा मूर्दाके देखने छेलै । तैयो साहस क्याके उ लगमे गेलै श्रा हाथसे वोकर देहके छुवलकै । उ छकितो भेलै श्रा वडका श्रासो एलैजखनी श्रादमी कनहिक कुहडलै । उ मोरल नै छेलै । सिद्धार्थ झवसिन श्रापन कोट सोटक्याके वोई श्रादमीके देहमे लपटचा देलकै जैसेकी वोकरा जाड नै हेवै । चारू कता ताकल कै त देखलकै जे श्रादमी सब स्लान क्या रहलछै त सहायताके वास्ते किलोल कैलकै ।

हल्ला सुनैत मातैर बहुते लोकसब जम्मा भ्या गेलै । वोई लोक सबसे कपडा जमा भेलै । वोकर देहसे भिजलहा नौश्रा उताइरके गरम कपडा पिनह्या देलकै । करिब श्राधा घण्टामे बुढबाके होस एलै । लेकिन उ बड कमजोर भ्या गेल छेलै । सिद्धार्थ लोकसब दिसर घुईमके पूछलकै ।

"एहेन ई श्रनगुतका पहरके हेमचल जुड पाइनमे ऐ उमेर श्रा एहेन देहवला लोक कथिले खोलामे स्लान करेश्रावै छै ?"

सिद्धार्थके लोक चिह्नलकै । उ त रजाके बेटा रहै । एकछन सब चुप रहलै । श्रन्तमे एकटा श्रघेड उमेरके जनी कहे लागलै ।

"सरकार, हमरा सब बिश्वास कैने चिऐ जे हिमाल खण्डसे निःशृत भेलहा ऐ रोहणी खोलाके जल वडा पवित्र छै । श्रगर हमरा सब भोरे ए जलमे स्लान करवै त जान- श्रनजाममे पहिनकादिनके केलहा सवटा पापसे मुकुत भ्याके श्रजुका

दिनके वास्ते तरौताजा हवै । एहै तरहे सबदिनका पाप जमा है के बदलामे सबदिन ऐ जलमे दह्या जाइछे तैसे मोरलाके बाद हमरासब सरङ्ग (स्वर्ग) जेवै ।

तोराऔरके ई बात के सिखैलकौ ? सिद्धार्थ पूछलकै ।

"एह्या पुरहित ।" जनी कहलकै। बुढके जेकरा सिद्धार्थ बचैने रहै देखवैत आपन बात कहैत रहलै । "पुरहित जे लोक सबके सिखैबो करै छेलै आ बहौत बरिससे खोलामे स्नान करैके अभ्यासो करै छेलै ।

सिद्धार्थ आपन तामसके नै रोके सकलकै आ हंसकियो लागलै । उ पूछलकै, अगर ऐ खोलामे स्नान क्याके कोई सरङ्ग ज्या सकैछे त खोलाके माछ, कौछ आ दोसर पैनयाहा जानवरसब पहिनै सरङ्ग पुगतै । हमर बिचारसेहमरा वोहेन सरङ्ग नै चाही

ऐ बुढ पंडितके घर पुग्या दहै । जम्मा भेलहा लोक सबके सम्बोधन क्याके सिद्धार्थ कहलकै आ घोडा हाइक देलकै । ई घटना वोकरा सोचैले बाध्य क्या देलकै जे परम्परा केहेन गलत रस्तामे व्यवहार भ्या रहलछै । उ बिचार करे लागलै जे परम्पराके फलाफल भुगते परतै । उ कपिलसे बातचित करैके खातिर हरबर सरवर कलौ खेलकै आ घोडामे चढ़के चैल गेलै ।

सिद्धार्थ जाव पुगलै त कपिल आ वोकर महताईर-बाप घरैमे रहै । सिद्धार्थके अनगुतिऐ आवैत देखलकैत वोकरा बड आचरज लागलै । साधारणतः भेट करैके समय दोपहैरिया बाद अनै त साझहैखिना हेवै । आपन आचरजके देखावैत कपिल सिद्धार्थके अभ्यार्थना करैत कहलकै ।

"हमर बगैरिया सिद्धार्थके एहेन कोन जरूरी भेलै जे अनगुतिए तकलिफ करे परलै । आ कि हम कोनो राजकीय सम्मानसे बिभूषित हेवै बला चिऐ ?"

सिद्धार्थ हासे लागलै । कपिलके महताइर बाप सेहो समयके देखके कपिलके बाबु बिन्ती चढ़हैलकै । "ऐबृद्ध अवस्थामे कपिलके दरवारी सलाहकारके पदमे देखके हम कतहेक आनन्दित हेतिऐ ।"

"ई कोनो असम्भाव्य बात नै चिऐ लेकिन हमरा एखनी कपिलसे एकटा दोसर जरूरी काम छै तैके वास्ते कि अपने क्षमा क्या सकै चिए ?"

कपिल आ सिद्धार्थके छोईडके दुनु बुढवा-बुढिया एङगना दिसर चैल गेलै ।

"कोन बात चिऐ ?" पूछलकै कपिल । "हमरा एकटा बडा महत्वपूर्ण निर्णय करे परतै । हम जानै चिऐ जे हम कथी करे चाहै चिऐ । लेकिन हम निश्चित

हेवै चाहैं चिऐ जे हम ठिक निर्णय करबै । हमरासब कोनो शान्त जगहमे ज्याके बात चित नै क्या सकै चिऐ जैसे शान्तिपूर्वक बात बिचार हेवै ?" सिद्धार्थ पूछलकै । वोकर दिसर देखके कपिल अन्दाज क्या लेलकै जे बात गम्भिर छै ।

"हेतै नेत" हमरासब घोडासे लदी किनारके बगैंचामे चल । उ वडा शान्त आ आनन्ददायक जगह छै । कपिल सलाह देलकै । तुरन्ते दुनु आमके बगैंचा जैमे आम कटहर, तुइत, बरहर, रहे पुइग गेलै । एकटा वडका गाछके छहाइर हेवै वाला ठाममे काठके पौवा पाटी वन्याल रहै सिद्धार्थ आ कपिल घोडाके छोटका गाछ लग्याके बाईन्ह देलकै आ खल खल बहैत लगैके लदी दिसर मुह घुम्याके बैठ गेलै । सिद्धार्थ, तोरा कोनबात सत्या रहलछौ । कपिल जे बातचित करैले आपनै औगत्या गेल छेलै, पूछलकै । "हमरा शङ्का लागैए जे हमरा बाबु घरबसबे कहैऐ । हमर सतमहताइरके भनक लागल छै जे यशोधराके हमरसे लाटघाटछै जे बात सत्य नै चिए । उ हमरा कहलक जे खेलधुप प्रतियोगिताके दिन यशोधरा वोकरा हमर विषयमे पूछने रहै । हम यशोधराके आन जनिजात जेकरसे हमरा भेट भेल आइछ तैसे असलमानैचिऐ । हमरा मात्र एकेटा डर भ्या रहल आइछ जे हमर बाबु हमर वास्ते परम्परासे चललदकियानुसी रित बिभूतके लफरामे फस्यादेत जे हमरा जिनगी भैर निमाहै परत ।" बिचैमै कपिल टोकलकै । "तो यशोधराके कथीमानै चिही ?"

"जेनङ्गहम कहलिऔ, वोकरा हम मानै चिऐ । हम हरदम वोकरा परखैत रहै चिऐ । उ वडा उदार हृदया आ बातचित करैमे वडा सोझछै । वोकर मनमे जे आवैछै से कैहवैछै लोकके तित लागैकी मीठ । एहेन लागैछै जे उ परम्पराके रूढीवादीसे उपर उठलछै ।"

"तै हम देखै चियौ जे तो वडका समस्यासे घैरल चिही ।" कपिल हलुके रूपे पूछलकै । "की तो बुझहै चिही जे तोहर बाबु यशोधराके पसिन नै करै छौ?"

भैरसक वोकर नजैरमे उ आदर्श नाइर नै चिऐ । सिद्धार्थ बात खोललकै ।

"हम कहै चिऔं जे पहिने तो यशोधराके मन टोबही, अगर उ बात बुझहै वाली हैछै, तावतो आपन बाबुके चित्त बुझहा जैसे तोहर बाट फराक हैतौ ।"

"वापरे! ईत बहौत वडका बात भेलौ । हमरा यशोधरासे ऐ सम्बन्धमे बात चित्त करनाई वडा मस्किल लागैए ।" तरमाथेमुडी क्याके बिहुसैत सिद्धार्थ कहलकै ।

कपिल त होसैतै होसैतै लटुव्यागेलै । "बेचारा सिद्धार्थ, कपिलवस्तुके राजवरानाके बेटा, एकटासिंहके बेटा, जे फेलामे पैरके घरमे पालल पोसल गेलै

आ जङ्गलमे छोड्डदेलकैंत आपनो शिकार मारैके काबिल नैं भेलै; तैंहनङ हमर बगैंरिया सिद्धार्थ छै । तो यशोधराके घर जाइत रह । तो त शाक्य रजाके बेटा चिही ।ई निश्चित छै जे यशोधराके बियाह तोहर संगें हेतै त, वोकर महताइर– बापके वडा खुसी हैतै जे हमर बेटी राजघरके जेठकी पुतौह हेतै ।" कपिल आपन बगैंरियाके हौसला देलकै जैसे उ कोनो निर्णय क्या सके । सिद्धार्थ और बेशी बिचार मगनभ्या गेलै ।" हम बिचार करै चिऐ जे हम यशोधराके सुहृद भ्याके बियाह करबै आ रजा शुद्धोधनके बेटा चिऐ तकर धाख लग्याके काम करनाई हमरा एको रति उचित नै लागैए । कोनो और दोसर बाट नै हेतै ?" सिद्धार्थ प्रश्न कैलकै ।

कपिल आपन पहिनका सलाहके वास्ते पछतावे लागलै । उ सिद्धार्थके मनोभवनाके खौंबुझहैछेलैं । उ बिचार कैलकै जे ऐ काम करैके वास्ते सिद्धार्थके एहेन सलाह नैं देबक चाहैं छेलै । लेकिन सिद्धार्थ ऐसे बेसी कैरिए कथि सकतै ? उ एकरा पसिन करै किनै, से त दोसर बात चिए, लेकिन उ त रजाके बेटा चिऐ तैं मर्यादाके खातिर वोकर केलहा सवकाम आ कोनो कामके वोकर पद प्रभावित करबे करतै । कपिल एकटा निश्चियात्मक व्यक्तित्वके मालिक छेलै । वोकरा विश्वास छेलै जे वस्तु-वस्तुमे आ कारण कारणमे तात्विक सम्बन्ध छै । एकटा आमके आठी दोसर गाछनै जनमावे सकतै । किएकत आमके गाछ आवश्यक रुपसे वोई आमके आठी मे छै । सिद्धार्थ रजा शुद्धोधनके बेटा बाहेक दोसर कथिसपिनै भ्यासकैं छै ।

उ सब एकछन चुपचाप छेलै । रोहनी लदीके झलझल सफा पाइन पाथरके ठोकर माइरके हड-हड आवाज करैत बैह रहलछेलै आ बगैंचाके चिरैं सबके रव-रवहा बोलिके संगमके अवाजसे वडा मर्म स्पर्शी संगीत गुल्जार भ्या रहल छेलै । उ टक टकी लग्याके सफा पाइनके देख रहल छेलै । लदीके रेतगर धार आपन संगं छोटका-छोटका ढोङ्गाके निचा दिसर भसियेने जाई छेलै आ ढोङ्गासब आपनैमे ठक्कर माईर माईरके गोल, चिकन भ्या रहल छेलै । उ सबमे जानके कोनो लक्षण नैं छेलै । चिमटी लखा करिया जोलिहैनी जकर टाङग बडी बडी रहै पाइनमे हेलैंत देखलकै । कोनो भेमही घाटके उपर माथे जाइके प्रयास करै छेलै लेकिन रेत कडा भेनेसे फेर घुइमके वोहै ठाम पुगैं छेलै जतेसैं चलल छेलैं । लेकिन वोहैं ठाम वडको पाथर सब छेलै जेकरा पाईनके धार घुस्कावे नै सकैछेलै । की त ई मानविय अस्तित्वके प्रतिनिधित्व करै छै ? सिद्धार्थ आपनैंके पूछलकै । ह ई एहिनङ्ग करैछै । अज्ञान आ अशिक्षित लोकसव यहै

पाथर आ ढोङ्गा नहाइत आपनै चारुकता घुमैत रहैछै; आपनैमे ठोकर मारैत रहैछै आ फेरो परम्परा रुपी तेजधारमे निच्चा दिसर बहैत आपन इहलिला करैत रहैछै। ऐ मे कोई छै जे धारमे बहादुरी देखवे चाहैछै लेकिन तेजधार वोकरौ पिटके भसियावैछै। कि, त, लोकसब वोई बडका अजेगरहा स्थिर पाथर नहाइत नै भ्या सकैछै जे शक्तिशाली तेजधाराके मोकैबलामे अडल रहतै ? वोकरा ऐ प्रश्नके कोनो जवाब नै छेलै। उ कपिल दिसर घुमलै आ कहलकै, हम यशोधरामे कोनो प्रकारके बलके प्रयोगनै क्याके वोकरा आपन निर्णय करैले वोकर भवनाके बुझहैकै प्रयास करवै। हम हरदम वोकर सम्पर्कमे रहैले खोजवै। आ यशोधरा जावे तक असलसे नै मानतै तावे तलिक बाबुके इन्तजार करे कहवै। अगर हम घरवाली करै चिऐ, त, से करैले निर्णय हमरा करे परतै।

कपिल कनहिक खिन्न भेलै जे उ आपन वगैरियाके कोनो निक सलाह नै देवे सकलकै। उ यहौके वास्ते निरास भेलै जे एहेन प्रकारके परिस्थितिमे सिद्धार्थ समाजमे आपन मर्यादाके जे अपरिहार्य रुपे लाभप्रद छै तकरा चिह्नके प्रयोग करैमे बिल्कुल अनईच्छुक छै। तैयौ उ आपन वगैरियाके सहयोग करे चाहैछेलै। सिद्धार्थ आपन इच्छा प्रगट क्या देने छेलै जे उ यशोधरासे संगत करे चाहतै। भैरसक; सिद्धार्थ वोकरसे हरबखत सम्पर्क जोडैके अवसरमे कोनो माध्यम भ्यासकै छेलै।

६—छठम

कपिल संगे विभिन्न विषयमे बहस करके सिद्धार्थके ज्ञान भेलैजे दछिन आ उतर पछिम दुनु प्रान्तमे परिवर्तनके क्रान्तकारी लहैर चैल रहलछेलै। जे विषय उ नरदत्तसे जे मात्र वाबहनेटाके नै बल्की कोनो प्रकारके अध्यात्मिक एवं नैतिक सम्बन्धके सैमलामे असह्य छेलै तकरसे ततहेक बात नै बुझहे सकने रहे। कपिलके बिचार जे धार्मिक एवं समाजिक क्रिया कलापमे परिवर्तनके वास्ते छिटलहा क्रान्तिके द्वारा बाबहनसब जे समाजिक मर्यादाके उच्चतम स्थानसे अधोगति दिसर ज्यारहल छेलै तकर सबटा जिम्मेदारी क्षत्रिऐमे खस्यादेलकै। उद्धालक नहाइत सन्त ऐ प्रकारके परिवर्तनके कार्यान्वयनके पक्षमे दार्शनिक तत्वके अधारमे अगामार्थे बडहैलकै। यद्यपि उद्धालक जे जनमसे बाबहन छेलै लेकिन वोकर शिक्षा दिक्षा सबटा उत्तर पछिम प्रदेशके तक्षशिलामे भेलरहे जैठाम दछिनके

अपेक्षा बभनौटि बिदयाके प्रभाव बड कम छेलै । फलतः उद्धालकके विचार शीलतामे रुढीबादके अभाव आ तर्कसंगैत रहै । उ ज्ञानके अलाध्य प्रेमीरहै । ई बात वोकर करतूतसे जानल जाई छेलै । सिद्धार्थ सुनने छेलै जे उद्धालकके बेटा जाव पढहे जाइछेलै त उद्धालक कहलकै "रह बेटा पढहैले दुनु बापूत संगे जेवै ।"

उद्धालकके वास्ते "अस्तितत्व" जिवनके मूलतत्व चिऐ । उ ई नै विश्वासकरे सकलकै जे अस्तित्वसे पहिने "अअस्तित्व" छेलै । सबसे पैहनका अस्तित्वके सम्बन्धमे बिचारकरैत उ विश्वास केलकै जे उ भवनात्मक रहै आ बलवती इच्छाके उजागर करैके सामर्थ्य राखै छेलै । इ अस्तित्वके नै भ्याके नै हेवै वाला अभिन्न गुण 'इच्छा' चिऐ । ऐ जग जाहिर बलवती इच्छा जे "अस्तित्व" के अभिन्न तत्व चिऐ आ अगर ई गुण वोकरसे कात भ्या जेतिए त औजका संसारके ई रुपनै हेबे सकतिऐ । वर्तमान दुनियात "अस्तित्व"के यहै अभिन्न गुण बलबती इच्छाके माध्यमसे संस्कार केलहा अस्तित्वके फलाफल चिऐ । यहैले वोकर सिद्धान्त नारायण पुरुष शुक्तसे वेग्याल जाई छेलै । नारायण पुरुष शुक्तके समाजिक प्रथामे व्याप्त वर्ण व्यवस्थामे आधारित चारू वर्ण जे प्रारम्भिक पदार्थ (तत्व) के अभिन्न अङ्ग छेलै तहैसे दुनियाके उत्पति भेलछै । ए प्रकारसे समाजमे प्रचलित वर्ण व्यवस्था जेकर बदौलत बावहनसब समाजमे सबसे उच्चतम मर्यादाके भोग क्या रहल छेलै से उद्धालकके बैचारिक मान्यता प्राप्त करैमे असफल रहलै ।

कपिल उद्धालकके सिद्धान्तके विभिन्न दृष्टिकोणासे विचार क्याके वोकर पक्ष ल्यालेलकै लेकिन उद्धालकके बिचारके अधारशिला जे सवसे पहिनका अस्तित्व जेकरसे दुनियाके उत्पति भेलछै एकात्मक वा एकेटा छेलै से मानैले कपिल तैयार नै भेलै । उ वोहो मानैले तेयार नै भेलै जे रचनात्मक क्रिया कलाप कोनो निर्जिव भौतिक पदार्थके अस्तित्वसे भ्या सकैछै । यहै धतु मतुसे उ शांख्य पद्धति जे ऐ समयमे आपन सिद्धान्तके प्रभुत्वके बिस्तार क्या रहल छेलै; जैमे प्रारम्भिक पदार्थके उत्पतिमे दोसर दैबिक तत्व जे भौतिक तत्वसे अलगछै तकर प्रभाव (संयोग) से भेलछै; तकराउ पक्ष ल्याके बैठलै । ई दुनु तत्व असगरे स्वतन्त्र रुपसे कोनो रचनात्मक कामनै क्या सकैछै । रचनात्मक कामके फलिभूतके वास्ते उ दुनुके एक दोसरमे निर्भर रहे परैछै जेनङ्ग एकटा आह्नर आ एकटा नेङ्गर आदमी ।

सिद्धार्थके वास्ते ई सवटा बहुते माने लागैवाला बैचारिक सिद्धान्तके खेलौड मात्र छेलै । ऐमे थोरहेक बिचार एहेन छेलै जे दकियानुसी परम्पराके बावहन सब समाजमे लादने राखे चाहै छेलै । तकरा शाख्यके क्रान्तिकारी सिद्धान्त उड्या

देलकै। ऐमे सिद्धार्थके वास्तेत दुखपूर्ण बात ई छेलै जे, जे बातसब वोकर मनके मोइथ रहलछेलै तकर समाधानके बाटमे उपरका सिद्धान्तसब एकोटा सहायक नै हेबे सकने छेलै। एखैनका विद्यमान दुनियाके उत्पैत अगर एकेटा वा एकात्मक तत्वसे भेलछै जेनङ्ग उद्दालक विश्वास करै वा वोई एकात्मक तत्वमे बाहरी समिधाके प्रभाव मार्फत ऐ विद्यमान संसारके उत्पत्ति भेलैछै जेकरा कपिल चिह्नलकै, तैं सबसे वहोत दूर सिद्धार्थ विचार करै छेलै जे ऐ उत्पति निष्पति के अलैहदा हमरासब जन्मोपरान्त असल आ खराव धनिक आ गरिव, सुखी आ दुखी जे ऐ दुनियामे भ्या जाइछै तकर जिम्मेवारी ककर उपरमेछै। यै सम्वन्धमे पूछ-लापर कपिल वहस करै जे असल आ सुख त प्रागऐतिहासिक पदार्थमे निहित चमकदार एवं छितिएलहा, हेलैत शक्तिसे सम्पन्न तत्वके कारणहेछै। खराब आ दुःख त प्रागएतिहासिक पदार्थमे निहितघुमफिर करे वला आ प्रतिक्रिया उजागर करै वला शक्ति सम्पन्न तत्वसे है छै। जावकी असंलग्न प्रागएतिहासिक पदार्थ मानवोचित अनुभव चिऐ जे प्रागऐतिहासिक पदार्थमे निहित अन्धकार वा शुन्यतासे प्रभावित शक्ति से है छै। यै प्रकारसे सम्झेलापर भीजाव सिद्धार्थ वोकर विचारके स्वीकारनै करैछेलै आ उन्टले प्रश्न करे लागेछेलै जे कोन ऐहेन चिजछै जे दोसरमे आपन शक्तिके प्रदर्शन (प्रवाहित) करे छै तकर प्रमाणिकता चाही। सिद्धार्थके ऐ अडानमे उद्दालक एवं कपिल दुनु ऐ विषयमे प्रमाणिकता दैमे असफल भ्याजावई छेलै, त सिद्धार्थ आपनै आपनै पूछै।

"हम शुद्धोधन जे शाक्य सवके रजा चिऐ तकरबेटा भेल चिऐ। हम कथिले एहिनङ्ग भेलिऐसे हम आपन वर्तमान ज्ञानके अधारमे कोनो व्याखा नै करे सकबै। लेकिन हमरजा शुद्धोधनके बेटा चिऐ तैं पदवीके धाख त हमर वास्ते सबकाम आ कोनो कामके नै छै। हम जे चाहै चिऐ से हमरा आपनै उपार्जन करे परतै।"

एहै सब बिचारके गुन-धुनमे सिद्धार्थ छेलै कि यशोधरासे भेट करैके मौकाएलै। कपिलवस्तुमे एकटा संगीत प्रदर्शनीके कार्यक्रम रहै। कपिलवस्तुमे निवास करै वला धनिक एवं प्रभावशाली व्यक्तिके वास्ते संगीत एकटा असलका फेशन मानल जाई छेलै। एक प्रकारसे गितैमे सुत, गितैमे उठ, गितैमे खो गितैमे पी संगीत बिकासके प्रतिफल रहै। बियाह अथवा कठुवाहीमे नृत्य आ गित भेनाई आवश्यक छेलै। लोक संगीत वदानके माध्यमसे गवैया आ नचैनिया सबके वडा वढिया अवसर प्राप्त भेल छेलै। ऐ मे कलाकारसब आपन प्रतिभा देखवैके साथे आपन कर्मठताके प्रदर्शन सेहो करै छेलै।

किछ महिना पहिने भेलहा खेलकुद प्रतियोगिता वोकरा हुइस गेलछेलै, से यशोधरासे भेट करैंके लोभसे यखैनका संगीत कार्यक्रममे जाइले उ वडा इच्छुक छेलै। वोकरा संगीत असल लागैछेलै लेकिन संगीतज्ञसबजे धनिक वर्गसे शोषित हैछेलै से वोकरा पसिन नै रहे। सब दिनका नहाइत कपिल वोकर संगेछेलै।

यशोधरा आपन अन्तरंग वहैनपा बुधियाइर आ चौतरी रोहणी जे एकटा धनिकहा सिम्बन्धीके पुत्री आ अनुपमा एकटा व्यापारीके पुत्रीके संगे रहै। संगीत कार्यक्रममे सबसे पहिने कपिल ये तिनु नवयौवनाके देखलकै त सिद्धार्थके कानमे कहलकै।

"है, वगैरिया, जे आदमीसबसे भेट हैके मनसुवा ल्याके ऐठाम एलही सेसब हे, देखही वोने उ वमाकता मजसे बैठलछै। वोकर लग जाइके बिचार करै चिही, कि नै ?"

सिद्धार्थ उसबके देखलकै त वडा मनगर भेलै लेकिन स्वभाविक लाजडरसे थर-थ-या गेलै। लेकिन वोकरा यशोधरासे भेटनाई एकटा बदानेछेलै। तैयो सोजहा सामने परैले वोकरा वडा डर है छेलै। ऐ परिस्थितिमे कपिलके उपस्थिति वोकरा वड फेदा कैलकै, जैसे उ आपन लाज डरके थामहे सकलकै।

चौतरी रोहणी सबसे पहिने वोई दुनु लवतुरियाके आवैत देखलकै। उ यशोधराके बाहमे चिम्टी काईटके लगैमे पुगलहा दुनु लवतुरियाके देख्या देलकै। लगमे पुगलै त कपिल उ नवयौवना सुन्दरी सबके अभ्यर्थना कैलकै लेकिन लजकोटरा सिद्धार्थ आपन लाजके थामहैले खालि बिहसैत रहलै। ऐमे सबसे पहिने बाजै वाली रोहीणीए भेलै आ उ जे बाजले तैसे सिद्धार्थके मनके बाघ बोन दिसर भाईग गेलै। यशोधराके पुलकारैत उ कहलकै, "यशोधरा, सिद्धार्थ जेकरातो ताकै छेलहिसे एहैसनो छौ।" आ तुरन्ते सिद्धार्थ दिसर घुइमके बिहसैत कहलकै, "यशोधरा तोरा बहुते बिचार करैत रहेछौ। गत खेलकुद प्रतियोगितामे तोरा नै देखके यशोधराके वडा दुःख भेलछेलै।" "रोहणी तो केनङ्ग जानै चिही जे हमरा वड दुख भेल छचाल। कि हम ऐके सम्बन्धमे तोरा कोनोबात कहने छेलिऔ ? बडका बडका आईख गुजारैत यशोधरा आपन अन्तरंग लेकिन खेलाईड रोहणी दिसर फुसियाही तामससे देखलकै।

"व्यक्त केलहा भवनाके अपेक्षा अव्यक्त भवनाके तात्विक मरम वड जोरगर हैछै; है छै, किनै ?" पूछलकै रोहणी।

"तोहर बातसे त हम ई बुझहै चिऐ जे बबाजी सबके सेवा वर्दाईस आ नित के भक्ति भावके प्रभावसे जेनङ तोरा दिव्यदृष्टि (अजगृत दृष्टो) भेटलछौ"। पूछलकै यशोधरा। उ रोहणीके नै तमस्या सकै छेलै किएकरत वोकर सखी कोनो झूठनै बाजे छेलै। यशोधरा सिद्धार्थ दिसर घुईमके पूछलकै

"साचे, कथि भेलौ जे खेलधूप प्रतियोगितामे भागलैले तोरोक्या गेलही" ?

"कपिल आ हम वास्तवमे प्रतियोगिताके निठाहे विसैरगेलिऐ। वोई दिन अनगुतिऐ हमरासब लदी वोई पारके गाममे लोक सबसे भेट करैले चैल गेलिए।

"हम मनै मन विचार करै चिऐ जे रजाके बेटा भ्याके ई जरूरी छै जे उ आपन प्रजा सबसे हरदम भेटघाट करैत रहै।" अनुपमा जे एखैन तक चुपचाप छेलै आपन कैफियत देलकै।

"नै, हम सर्वसाधारणके ऐले नै जाने चाहै चिऐ जे उ सब हमर वाबुके प्रजा चिऐ आ तै हम वोकरासबमे रूचि राखै चिऐ। वल्की हम वोकरा सबके ऐले जाने चाहै चिऐ जे उ कथी बिचार करैछै, कथी विश्वास करैछै, केनङ्ग व्यवहार करैछै आ वोकर चहना कथी चिऐ।" जवाब देलकै सिद्धार्थ।

"यशोधरा कथी बिचार करैछै ,कथि विश्वास करैछै आ वोकर कोन चहना छै, तै सबके विषयमे तो नै बिचार करै चिही" ? रोहणी आपन आईख यशोधरा दिसर मटक्या-मटक्याके लवरीके लहजामे सिद्धार्थके पूछलकै, त उत्तेजना से वोकर मुह कान तलिक लाल भ्यागेलै आ सांसलैके खातिर जेनङ्ग भितरका करजी वहार भ्या गेलै।

तैयौ, सिद्धार्थ आपन भिरतका वल लग्याके यशोधरा दिसर ताकलकै त यशोधराके आइख चमकैत रहै, आ गलफर लगसे चौअनिया हसकी बहराइंत देखलकै।

"हम कोनो परवाह नै करबै"। सवटा साहसके जमा क्याके छाती फुलवैत सिद्धार्थ जवाव देलकै।

सवगोडे हासे लागलै। सांगीतके कार्यक्रम शुरू हेवै बला छेलै। उ सब जगह दिसर ताके लागलै। जगह भेटलै त सब बठैलै। एतहैक बातचित भ्यागेलाके बाद आब सिद्धार्थ के वगैरिया कपिल आ यशोधराके वहैनपासबके कर्तव्य भ्यागेलैजे वोकरा दुनुके संगै बैठाबै। दुनु बैठवो कैलकै। स्वभाबिक रुपसे संगीत प्रति दुनुमे ककरौ नै ध्यान ज्या सकलकै। ओते दुनुके मनमे त लड्डू फुटे लागल छेलै।

सिद्धार्थके आपन उमेरके नवयौवना संगे बैठके ई पहैनका चानस छेलै। उ यशोधरा सनके नवयौवनाके शरीरसे मनके मोहैवाला गर्भि के वडा आनन्द मानलकै; आ तैसे पराभूत भ्याके बौक भ्या गेलछेलै । यशोधरा सेहो सिद्धार्थ सनके वलिष्ठ एवं उमेरिया आ मन मिलानके पैहनका युबक संगे सटके बैठके आपन सुद्दध हेर्‍या लेलकै !

प्रतियोगिता खतम भेलैत दुनु नवयुबक वोई तिनु नवयोवना संगे यशोधराके घर पुगैके बिचार कैलकै । बात मिल गेलै । कपिल, रोहणी आ अनुपभा खट सिनके अगा बैहगेलै जैसे सिद्धार्थ आ यशोधराके स्वतन्त्रपूर्वक बात चित भ्या सकै; से बिचार भेलछेलै। यशोधरा एकसरे सिद्धार्थ संगे भेलै त चुपचाप सिद्धार्थके पछा-पछा चले लागलै । वोकर संगी सबकपिलसे बात चित करै आ आनन्द पूर्वक ठहका माइर माइर के हांसै। ई सबके देखैत यशोधरा संगे बौक नहाइत चुपे चापे चैल जाइत सिद्धार्थके उकुस मुकुस लागे लागलै ।

"कितो बिचार करै चिही जे तोहर मैया बाबु तोहरले घरवाला पसिन क्या नेने छौं।" पूछलकै सिद्धार्थ। "अगर वोकरा औरके काइयो नेने छै त हमरा ऐके सम्बन्धमे एखनीतलिक कोनो भनक नै देने आइछ।" सिद्धार्थ दिसर चट देखके पट मुडी नीचाक्याके यशोधरा कहलकै ।

सिद्धार्थ ऐके छन् तर-उपर बिचार क्याके यशोधराके पूछलकै ।

"अगर उसव एखैन तक ई वातनै कैनेछै त, कितो हमरसे बियाह करविही ?" बात सुनैत मातैर यशोधरा सिद्धार्थ दिसर ताकलकै । दुनुके आइख मिललै; लेकिन सुहदहुङ सिद्धार्थ केत डरसेजेनङ्ग चहन्द्रा उइडगेलै कि जाइन-जाइन यशोधरा की कहत आ की करत । यशोधराके गोतलमुडीके सिद्धार्थ आपन कनखी नजैरसे ताकलकै त यशोधरासे अस्फुट प्रेम मुस्कान प्रस्फुरित हैत आ। आमके कुसौमही बनवैले कटलहा फडा: सनके छट-छट करैत करिया आइखसे प्रेमातुर भवना के लजकोटरा सिद्धार्थ सेहो देखलकै। ऐके छनमे यशोधराके लाज जेनङ्ग हेर्‍यागेलै आ पैहनका स्वभावमे एलै ।

"अगर, हमर, मैया बाबु हमर बरले कोनो नवयुवकके पसिन क्या नेनेछै त तो ज्याके ओकरसे कथिलेने वातचित करै चिही, जैसे उसव वोकरा तैजके हमरले तोरा बर पसिन करतौ ?"

"नै, हम वोनङ्ग नै करे चाहै चिए।" "कथिलेनै" ? यशोधरा छक परत पूछलकै।' हम ऐके सम्बन्धमे वोकरा सबमे कोनो प्रकारके बल प्रयोगनै करे चाहे चिए ।"

"एह, त तोकि हमरमे आपन बल प्रयोग करे चाहै छिही ?" यशोधरा सटिक प्रश्न सिद्धार्थके पूछलकै । लेकिन पाछे आपनै बडे पछताबे लागलै ऐ जे बातसे सिद्धार्थ कहाई बेसी दुःखितने भ्याजाई । "नै, हम योहो ने करे चाहे छिऐ । तोरा हमरसे ऐले नै वियाह करे कहै चियौजे हम रजा शुद्धोधनके बेटा छिऐ ।' एतहेक वात सुनैत मातैर यशोधराके वडका नाह्म सांस ल्याल गेलै । उ सिद्धार्थके शब्दके मरमके बुझहलकै आ आपन हाथरसे रसे सिद्धार्थके नमहरका हाथ दिसर ल्यागेलै; जै कोमल एवं सुकुमार हाथके सिद्धार्थ जोरसे दाइवके पकडलकै ।

७–सातम

हरेक तीन महिनामे राज्य भैरके मुखिया सबके बैठकी बैठेके नियम बाह्मल छेलै । तैके कार्यान्वियन रूपदैले शुद्धोधन विहानै से बडा व्यस्त छेलै । प्रत्येक मुखिया आपन आपनगछ अनुसार मौजा मौजासे सनेस आननेरहै जेनङ्ग चाउर, गहुम आदि । वास्तवमे ई रजाके वण्डा स्वरुप देल जाइछेलै । कपिलवस्तु ई तीन महिने सौराठके दिन असल लागै छेलै । यै समयमे रजाके, मुखिया सवके साथै गाम समाजके भोजके निमन्त्रण देवे परै छेलै । सौराठके वाद खो-पीनाचगानके धुमधाम हेवै । भोज, नाचगान, खो–पी यैसवसे लोक बड आनन्दित हेवै ।

मेजमानसब साझ हैसे पहिनै विदा भ्या गेल रहै । शुद्धोधन काम समाप्त क्याके घरके उपरका छतमे ज्याके रोहनीलदी दिसर ताके लागलै । सिद्धार्थ के थाह छेलै जे औजका दिन सव थाकल रहैछै, लेकिन वोकरा आपनै बडका कौवला पूरा करैले छेलै ।

सौझका पहर असले लागै । चान उगल आवैत रहै । ईजौरिया एखनी पहाडके अढहैमे छेलै, चानके कारी, उजर रंगके किरीणसब बडा सुन्दर आभा छिटकाबैत रहै । उपरका छतके केवाडलग ज्याके सिद्धार्थ ठाढ भ्या गेलै आ विचारकरे लागलै जे आपन लेलहा निर्णयके समचार कोन प्रकारसे बाबूके सुनैबै । शुद्धोधनके लागलै जे पछामे कोई खडा भेलछै त ताकलकै आ देखल कै जे बेटा सिद्धार्थ ठाड भेलछै ।

"बौआ, तोरा थाकल नै लागल छौ । ई तेमासी सौराठ त हमारा थक्या दैए, तैयो, हम औजका कामसे वड संतुष्ट छिऐ" । शुद्धोधन कहलकै । "एखनी हमरा थाकल नै लागल आइछ, बाबू ।' सिद्धार्थ जवाव देलकै आ चुपचाप रहलै । एक छनके वाद उ आपन बात पिताके कहलकै "हम समझै छिऐ जे अपने

हमरा वियाह क्याके प्रतिष्ठित करे चाहै चिऐ। हमरा मैयासे बातचित भेलछचाल, हम अपनेके आज्ञाके असामे एलिऐ यशोधरा हमर हेबैं वाली पत्नि चिऐं।"

शुद्धोधन, गौतमीसे पहिनै सुनने छेलै जे सिद्धार्थ आ यशोधरामे असल लाट घाट छै लेकिन ए बातके उ विश्वास नै करे चाहै। यशोधरा, सिद्धार्थ सनके युवकके वास्ते असल कन्या नै छेलै। उ आपन जगहसे उठलै सिद्धार्थ दिसर ताकलकै आ पूछलकै।

"कितो यशोधराके असलसे चिन्है चिहो।" "हम विचारकरै चिऐ जे हम वोकरा जानै चिऐ।" सिद्धार्थके जवाव छेलै।

"शाक्य कुलके रानी हेबैले की यशोधरा असल व्यक्तित्वके नारी चिऐ ?" वडा उत्तेजित भ्याके शुद्धोधन पूछलकै।

"बाबू, हम रानी कहा ताक्ने चिऐं। हमत आपनले घरवाली ताक्ने चिऐ।" सिद्धार्थके सटिक जवाव छेलै। "उ असल रानी हेतै, आ रानी त कैयो असल भ्या सकैछै जे रानीके भूमिकाकरतै" वडा नरम लहजासे सिद्धार्थ आपन बाबूके कहलकै। आपन हाथके पजियाके वाहलकै आ चुपचाप खडा भ्याके इजोरिया राइतके टक टकीलग्याके देखे लागलै। वहारके शान्ति शुद्धोधनके असह्य भ्यागेलै। एहेन शान्ति छेलै जे, शुद्धोधनके डर भ्यागेलै जे वोकर बेटा वोकर विचारके अवाज सुइन लेतै। उ वहार चैलगेलै। सिद्धार्थ कतौ नै घुसैकके वोहै ठाम ठाडहे रहलै।

शुद्धोधन निचका महलसे एलै। एकटा अङ्ग रक्षक फटक खोइल देलकै त उ शान्त राइतके वातावरणमे टहले लागलै जे वास्तवमे वोकरा शान्ति नै देलकै। वोतैसे देखलकै जे सिद्धार्थ आपनै ठाममे ठाड भेलछै।

शुद्धोधन आपन सुतना कोठलीमे एलै। गौतमीके एखनीतक फूर्सत नै भेल छेलै। घरके निपपोछं करलाके बादसे विभिन्न कामतके मुखिया सबके अनलहा सनेस वहीमे असलसे लिखल गेलै किनै आ लिखलहा अदत सब भण्डारमे दाखिल भेल रहै कि नै; यहै सबके मिलानमे व्यस्त रहै। शुद्धोधन आपन विछोनामे पलैट गेलै। वोकरा नीनन भेलै। गौतमी वडका राइतके एलै। एकेदिनमे घरबैया आ खजान्ची दुनुके कामसे गौतमी बहौत थाकल छेलै। शुद्धोधन एखेनियो तक जागले रहै।

विछोनामे सुते जाई छेलै त गौतमी देखलकै जे घरवाला जागले आइछ, त, छकपरैत पूछलकै "अखनी तलक जागले छै ?"

"ह, हमरा जागले रहे पँरैएँ, आनेत, ए ठाम केकरा, कखनी, कथी भ्या जेतै से के जाने गेलै ।" शुद्धोधन जेनङ्ग कल्पैत बाजलै ।

गौतमी अनुभव कैलकै जे शुद्धोधनके कोनो वडका चिन्ता लागलै लेकिन राइतके ऐ समयमे कोनो वात उठयाके लम्बा चौंडा करनाइ गौतमीके बुधियारी नै लागलै । दुनु थाकल छेलै । तै उ सलाह देलकै ।

"अपनासव थाकल चिऐ । शान्त पूर्वक नीन हेतै त सवथकान खतम भ्या जेतै । तकर बादमे समस्याके विषयमे ठण्डा मनसे बिचार करैमे बढिया हेतै ।" शुद्धोधन कोनो प्रकारके प्रतिकार नै कैलकै । वोकरौ शरीर थाकल छेलै । यद्यपिकी वोकरा दिमागके बडै दौडबे पडल छेलै लेकिन थकावट के कारणे नीन चैलऐलै । लेकिन असलका नीन नै छेलै । जखैनिए शारीरिक थकान कम भेलै वोकर चंचल भेलहा दिमाग वोकरा जग्या देलकै । दुई तीन घडीसे वेसी नै सुतल छेल हेतै । उ उठलै आ कौसिमे गेलै । उ छक्क परलै । वोकरा आपन आइखमे विश्वास नै भेलै । सिद्धार्थ तखनी जै ठाम जैहनङ्ग ठाड भेलछेलै तहिनङ्ग खडे छेलै जतेसे वोकर बाबू साझ खिना गेल छेलै । शुद्धोधनके तामस चैढ गेलै । ई पहैनका पटक छेलै जे सिद्धार्थ जवानीके अकडपन आपन बावूके देखलकै । लेकिन गुरू असितके वोकरा तुरून्ते यादएलै, त डरसे थरथऱ्या गेलै ।

"सिद्धार्थ, एखनी तलिक तो एहै ठाम कथिले चिही ।" शुद्धोधन पूछलकै ।

"हम अपनैके साठे असिय्याल छेलिऐ, बावू ।" सिद्धार्थ जवाव देलकै ।

"कखनी तलिक तो हमर साठे रह बिही ?" "जखनी तक हम अपनेके निर्णय नै सुनवै तावे तलिक हम अपनेके इन्तजार करबै ।"

"अगर हम तोहर बात नै मानवौ त, तो कथी करबिही ।" शुद्धोधन पूछलकै ।
"हम इन्तजार करैत अपनेके विश्वास देलै हरेक प्रकारके कोशिश करवै जैसे अपने बुझवै जे यशोधरासे बियाह करैले हमर लेलहा निर्णय असल छै ।"

"लेकिन अगर हम ई प्रस्ताव करवौ जे तो दोसरसे बियाह कर, ताव ?"

"जावे तलिक हमरा ई बिश्वास नै भ्या जेतै जे जकरसे हमरा बियाह भ्या रहलछै से आदमी बढिया छै तावे तलिक हमर साठे अपनेके असियावे परत ।" सिद्धार्थके सोझका जवाव छेलै । शुद्धोधन परिस्थितिके गम्भिरताके बुझहल कै । कौसीएमे उ कनहिक वेर तक चहल कदभी कैलकै । तावे उ वर्तमान समस्याके सम्बन्धमे वेहौत बातके बिचार क्या लेलकै । उ बिचार कैलकै जे गौतमी, यशोधरा आ वोकर परिवारके विषयमे कहियो कोनो प्रकारके बिरोधाभासके बात नै कैने

12२३४

रहै आ उ सव गौतमीके लगँके लरजर रहै। उ बिचार कैलकँ जे यशोधरा सिद्धार्थे नहाईत रूढिबाद नै छै। वास्तवमे ई सम्बन्ध जोडैके समयमे एहेनबातके ततेक देखलो नैजाइछै। उ दुरदेशके कथा सुनने रहै जे वोई देशसवमे वडका घरके कन्यासे बियाह भेनाई असल मानल जाई छेलै जैसेकि कन्या राज काजके मैमला मे सहायता करतै। लगँके आपनो परौसिया राज्यके रानीसवत सरकारी काममे दखल द्यारहल छेलै। लेकिन ए सम्बन्धमे एखैनतक नेत यशोधरा, आने वोकर परिवारके लोक सवके राज्य लिप्सा देख रहल चिऐ। वोकर बारी फूलबारी बडा असल आ शान्त छेलै तै मे यशोधराके एलासे और सुख सुखरित हेतैं। ई सवटा छ पाच क्याके शुद्धोधन सिद्धार्थके अगामे ज्या के खडा भ्या गेलै आ वडा मिर मिन्याल शब्दमे वाजलै। "ठिक छै बेटा जा आव आराम करले, तोहर बाट बढिया हेबौ। लेकिन हम निश्चय पूर्व कैहसकै चिऐ जे तोजे करैं चिही से बिलकुल ठिक करैं चिही।" जै खातिर सिद्धार्थ आपन पितासे अडलै आ किछ व्यबाहारो असभ्य भेलै तैंके तहन सिद्धार्थके मनमे बडा कचोट लागलै, लेकिन यहो बुझलकैं जे एनाङ नै क्याके दोसर बाटोत ने छेलै। "आव हम जाई चिऐबाबू।" सिद्धार्थ कहलकँ आ तुरून्ते आपन कोठली दिसर चैलगेलै। शुद्धोधनोके आव चिन्ता करैं वला कोनो विषय नै छेलै। उ आपन कोठली मे एलै त निपरवाह भ्याके सुतलै।

वोकर आ सिद्धार्थके बियाहके बिषयमे चललहा बात चितके सम्बन्धमे यशोधराके महताइर-वापके ततहेक असियावे नै परलै। संगीत कार्यक्रमके समयमे भेलहा करणी आ करतूतके सबटा आदयोपान्त कथा बलबतरी रोहणी यशोधराके महताइर बिम्वाके नोन तेल लग्याके कहलकै। समचार सुइनके बिम्बाके टाङ्ग धरतीसेउपर भ्यागेलै। लेकिन वोकर स्वामि नाथ दण्डपानी कनहेक पिछडाह रहै। दण्डपानी संकिर्ण बिचारधाराके व्यक्ति नै रहै। वास्तबमे उ वडा उदार हृदयके व्यक्ति रहै। एहैं सव कारणसे त कपिलबस्तु भैरमे आपन उमेरके कन्यामे यशोधरा आपन पितासे प्राप्त स्वतंत्रताके सवसे वेसी उपयोग करैत रहै। उ परम्पराके रित बिभूत मानैके सम्बन्धमे सिद्धार्थके कडियल भावनाके मनै मन वड आदर करै छेलै लेकिन तुरून्ते बिचारके बडका झटका लागैं छेलै। जाइनने जाइन सिद्धार्थ कहौ जिवनके दोसर छोरमे ज्याके पारिवारिक जिवनके एकदमे नैं त्याग क्यादै। यशोधराके भबिष्यके बिचार करै त एकेटा यहै बुनामे पुईग के दण्डपानीके मन हाहाकार करे लागे आ वडा असमंजसमे पैर जाई। लेकिन सोझ मैतिया बिम्बा एतवैहेकमे मगन रहै जे असलका सुन्दर युवक सिद्धार्थ जे रजा हेवे करतै हमर धी जम्या ह्यात। सिद्धार्थ बास्तबमे बडा सुन्दर युवक रहै। वोकर सुन्दरतासे केहेन केहेन नवयौवनासव रिझके आपनै दातमे अंगुरिकाटै। यशोधरा

सिद्धार्थके सम्बन्धके बिषयमे बात चित चलैसे बहौत पहिने से बिम्वा सिद्धार्थके सुन्दरतासे रिझहल छेलै। एकबेर जाव सिद्धार्थ आपन बाबू संगे कोनो जात पूजामे रहै त बिम्वा वोकरा देखके वडा मर्मिक शब्दमे कहने रहै।

"धन्य वोकर महताइर-वाप जेकरा सिद्धार्थ सनके बेटा छै आ तहौसे धन्य त उ मौगी जेकरा सिद्धार्थ सनके पुरूष घरवलाहेतै।"

यशोधराके मैया बिम्बाके त सपना विपना भ्यागेलै। उ त ऐ कुटमैतीके निमाहैले जेनङ्ग करे परैत सव करै ले तैयार छेलै।

सिद्धार्थ बिचार करै जे उ दुईटा काम क्या लेलकै। पहिने त उ ई बिचार कैलकै जे जै नवयौवनासे उ बियाह करे चाहे छेलै से नवयौवना वोकरा ऐले नै पसिन कैलकै जे उ रजा शुद्धोधनके बेटा चिऐ, वल्कि जेनङ्ग यशोधरा वोई दिन आपन हाथ सिद्धार्थ दिसर बडह्याके जे इसारासे जवाव देने छेलै तकर अनुसार उ वास्तबमे सिद्धार्थके प्रति आकर्षित छेलै। दोसर बात यशोधरासे बियाह करैके सम्बन्धमे बाबुसे बिना कोनो बेसी वात बतकहा वडह्याके असलैसे मंजुरी भेट गेल छेलै। ई दुनु बात वोकर मनके पुलकित क्या देलकै। आव उ यहो बास्तविकताके नै बिसरै जे अगर यशोधराके महताइर वाप हमरसे वियाह क्या दैले राजी भ्या जेतै त, उ, त हमर बाबू रजा शुद्धोधनके बेटासे वियाह करतै। उ सव चिजके आपन नियंत्रणमे नै राईख सकै छेलै तैयो उ खौ खुसी छेलै जे वोकर इच्छा अनुसारके काम बनैत गेलै। एहै बातसवके मद्धे नजैर राखैत उ यशोधराके घर जाइके बिचार कैलकै जे देखिए वोई ठाम हमरा कोन प्रकारके व्यवहार है छै।

जाव उ यशोधराके घर पुगैलै त यशोधरा आपन वहैनपा रोहणी आ अनुपमा संगेरहै।

यशोधरा जाव सिद्धार्थके देखलकै त आचरजसे देखैत रैह गेलै। यद्यपि उ बुझहै छेलै जे ई वात एक दिन हेवे करतै लेकिन एतहैक जल्दी हेतै से उ गुमान नै कैने रहै। जखैनिए सिद्धार्थ दरबजामे पुगलै रोहणी आ अनुपमा वोकरा छोइडके हवैलीदिसर भितन्धा गेलै। लेकिन जाइत जाइत चमकी रोहणी सिद्धार्थ दिसर घुइमके बिहसैत कनखी मारैले नै छोडलकै। सिद्धार्थ, यशोधरा दिसर घुइमके बैठ गेलै।

"हमे आपन बाबुसे बातचित कैलिए आ हमरा तोहरसे बियाह करैके अज्ञा भेट ग्याल।" उ खटा खैट यशोधराके आपन समचार सुन्या देलकै।

यशोधरा खुसीसे हांसे लागलै। खुसीसे वोकर आईख छटके लागलै। वडा नरम बोलिमे सिद्धार्थके पूछलकै।

"तोरा आपन बाबुके चित बुझबैमे बडे झगडा करे परलौ कि केनङ ?"

"हमरा ओनङ्ग करैके पूरा बिचार रहै, लेकिन कोनो खरावनै बुझही। की तो बिचार करै चिही जे तोहर महताइर वाप ऐ बियाहमे कोने अबरोध खडा करेतै"। सिद्धार्थ पूछलकै।

"हमर मैयाके त, की, कहवौ, दोसरे वातछै। उ तोरा वड पसिन करैछौ। हमनै जानै चिऐ जे बाबु ऐमे कोन तरहके विचार करैछै लेकिन सधारणतया घरमे मैयाके जुइत रहैछै।"

दुनु चुपे-चाप छेलै, कि तावे यशोधराके मैया एलै। दुनु आपन जगहमे खडा भ्यागेलै। सिद्धार्थ वोकरा अभ्यर्थना कैलकै। उ सिद्धार्थके कातमे बैठगेलै। एखैनिऐ रोहणी बाजैछेलै जे तो एल चिही। हमरा ततेहक खूसी भ्याल जे आखिरमे तो एने भरका बाट देखलीही। हम सुनैलिऐ जे हवैलीमे वोई दिन बडका भोज रहै। कामत कामत से बहुते मेजमान एल छेलै, कह कि नै ?"

उ एहिनङ्ग बाजैत रहतिए, पूछैत रहतिऐ, लेकिन यशोधरा बिचैमे टोकलकै। "मैया! कतहेक बदर बदर करबिही, सिद्धार्थके बैठे नै कहबिही ?"

"अहाह....बिम्बा कहलकै, बैठ, यशोधराके बाबु त आई अनगुतिए आपन कोनो कुटुमके भेटकरे गैलछै। उ आव जे घडीने घर पुगतै। तो भोजन क्याके जाइह ?"

"नै," सिद्धार्थ कहलकै। "हम खाली यशोधराके देखे एल छेलिऐ हम तुरुन्ते चैल जेवै"। "हे, आन बेर जे एव त एहेन हडबडच्याल सरबन्याल नै अबिह। हम साच कहै चियो जे यशोधराके बाबु तोरा देखके बडा खुसी हैते। हम वोकरा कहब जे तो एल छेलहक।"

सिद्धार्थ हासे लागलै। बिम्बा उठलै आ सिद्धार्थके आशिष दयाके चैल गेलै।

"हमर मैया एहिनङ्गे छै।" यशोधरा एकरती मन छोट करैत कहलकै। "वोकरा बात चित करैले बडा असल लागेछै। लेकिन हमर मैया बात बडं बुझहैछै।"

सिद्धार्थ आपन जगहसे उठलै आ यशोधरा संगे फटक दिसर बढलै। उ यशोधराके हाथ आपन हाथमे नेने छेलै। संगित कार्यक्रमसे लौटैत कला यशोधराके हाथ पहैनका वेर आपन हाथमे ल्याके जे सनसनीके अनुभूति कैने रहै अखैनियो तहिनङ्ग सनसनी सौसे देहमे दौडगेलै। घरसे बाहर हेवे लागलै त सिद्धार्थ वडा कोमल भावसे यशोधरा दिसर ताकैत वोकर पकडलहा हाथके रसे रसे उठ्याके वडा प्रेमसे लुलुहवामे चुमा लेलकै आ कहलकै, "आव हमरा सवके जल्दीए भेट

हेतै।" घरके फटककेवहार भ्याके सिद्धार्थ घुइमके ताकलकै त, देखलकै जे यशोधरा ओसरामे खडा भ्याके वोकरे दिसर ताकै छेलै। सिद्धार्थ घोडामे चढलै आ घोडाके एडिया देलकै ।

जाव सिद्धार्थ यशोधराके घरसे चैल गेलै त यशोधराके मैया वोकर आ सिद्धार्थकेसम्बन्धके बातसव पूछेलागलै ।

"सिद्धार्थ, कथी, बियाह करैले कहे एल छेलौ ?" "ह, वहैले एल छेलै।" यशोधरा जवाव देलकै ।

"तो वोकरा कथी कहलिही ?"

"किछोने ।"

"त, की तों, वोकरा पसिन नै करै चिही?"

"हम बिचार करै चिऐ जे उ हमरा खौअसल लागैए ।" ई सुइनके बिम्बा छकपैरगेलै ।

"जावतो ई वुझहै चिहौ जे तो वोकरा खौ पसिन करै चिही, त, जाव उ तोहरसे बियाह करैले तोहर हाथ मांगलकौ, त, तो कथीलेने किछो कहलिही ?"

"ह हमरा पूछलक त हम आपन हाथ वोकर दिसर वडह्या देलिऐ लेकिन तैयो किछो नै कहलिऐ । हाइस-हाइसके यशोधरा आपन माहताइरके कहलकै ।

एतहेक सुइनके बिम्बा खौमनगर भेलै, लेकिन तैयो बात जानैले बाकीए छेलै।

"अच्छा, ई कहत, जे वोकर बाबू वोकरा तोहरसे बियाह हेवै दैले स्वीकृति देतै कि नै ? सेतोकी बिचार कर चिही ?"

"हमरा उ स्याहृया समचार कहे एल छ्याल।" "कथी, शुद्धोधन बात माननेछै कि नै ?" विम्बा औगल्याके झकझोइरकेआपन बेटीके पूछलकै ।

"ह, । सिद्धार्थ आपन बाबूके जेनङ्ग तेनङ्ग मन्याके राजी क्या लेलकै । आव त हम ई देखै चिऐ जे हमरा आपने बाबूके अज्ञा भेटनाई जरूरी छै।" बिम्बाके मुह खुसीसे चमके लागलै ।

"मैया केनङ्ग हेतै, आव तो किछो नै क्या देव्या ?" दुलैरिया यशोधरा आपन महतईरसे नेङ्घ जोतलकै जे एखनी तलिकमे खौ असलसे सिद्धार्थके मोहनीमे डुइग गेलछेलै ।

बेटी दिसर देखंत विम्बाके आव ई जरूरी भ्या गेलै जे यै सम्बन्धके निमाहैले उ कोनो चिज उठ्याके नै राखतै। उ आपन घरवालाके जै किसिमसे हेतै मन्याके छोडतै ।

साझके दण्डपानी एलैं त घरवालीके खौ खूसी देखलकैं । एक छन आराम क्याके सौझका भोजनमे हवैली दिसर गेलैं ।

"आईके बडका मेजमान एल छेलैं।" विम्बा कहलकैं। दण्डपानी ऐ आकस्मिक घटनाके वास्ते तैयार नैं छेलैं। लेकिन जाव देखलकैं जे सधारणतया पारिवारिक वात चितमे हरदम उपरे धसल रहैं वाली यशोधरा आई बौक भ्या गेलछलैं त दण्डपानीशंका क्या लेलकैं जे वात कथी भ्या सकैछैं ।

'ह, त जखनी हम घरमे नैं छेलिऐ तखनी राजकीय सवारी भेलरहैं। यशोधरा जे मुडी गोतने थारीमे झुकल आपन समर्थन जनवैंत रहैं, तकरे दिसर ताकैंत दण्डपानी कहलकैं ।

यशोधराके डर भ्या गेलैं। उ जानैं छेलैं जे वोकर बावु वडा उदार हृदय के व्यक्ति छैं, तैयो ई बिचार क्याके जे वाबुके नज़ैरमे वोकरले सिद्धार्थ असलका बर नैं छेलैं, उ कनन सुख भ्यागेलैं। उ भात कहा खाई छेलैं खाली थारीके अन्नके गिज गिजके राखने जाइछेलैं ।

"साचे, सिद्धार्थ ये बातमे बिचारशिल छैं कि केनङ्ग ?" दण्डपानी पूछलकैं।

"तहिनङ्ग लागैं छैं" बिम्वा जवावदेलकैं । सिद्धार्थ परिवारवला आदमी हेतैं से विचार करैंले हमरा वडा मस्किल भ्या रहल आइछ। शुद्धोधन सिद्धार्थके राजकाजके कामसे छिटकैंत देखके हरदम चिन्तीत रहैछैं। ऐहेन लागछैं जे ऐं उमेर आ पदके व्यक्तिके जे जिम्मेवारी बहन कैरक चाही तैंसे सिद्धार्थ बडे कानी काटैंछैं।

यशोधराके डर, त मनैं मन भोरल जाई छेलैं। छौडी निरास भ्या गेलैं तैयो डरके भगवैंके पूरा कोशिस क्या रहल छेलैं ।

"लेकिन आई कौल्ह त वोई उमेरके युवकके हम तहिनङ्ग देखैंचिऐ ? की, त ई खाई-खेलाई के उमेर नैं चिऐ ? एक बेर जाव बियाह भ्या जेतैं त आपन घर राखैंके काम कर्तव्य आ जिम्मेवारी त निमाहैं परतैं, परतैं कि नैं ?" दण्डपानी के चित्त बुझवैले बिम्बा जोर लगैंलकैं ।

"साचे, यशोधरा संगे बियाह करैंले सिद्धार्थ वात चलैलकैं कि तोरा औरके खाली कल्पना मात्र करैं चिही जे वियाह हेतैं किएकत उ आपन घर एलछेलैं ?" दण्डपानी खोईघके पूछलकैं ।

"ह, यशोधरा संगे बियाह करैंके प्रस्ताव क्या देलकैं" बिम्बा जवाव देलकैं।

यसोधरा दिसर ताकैंत दण्डपानी पूछलकैं "यशोधरा तो कथी कहलिही"

"हम नै किछो कहलिऐ ।" एखैन तक मुडी झूकैंने यशोधरा जवाव देलक ।

"लेकिन शुद्धोधनके त बात हेतै ?" कि तोरा सब बिचार करै चिही जे उ सिद्धार्थके निर्णय के स्वीकार करतै ? आई के सिद्धार्थ स्याहचा जनकारी, त, हमरा सवके देवे एलछेलै" बिम्वा जवाव देलकै "उ आपन पितासे बियाहके विषयमे बात बिचार कैलकै आ वोकर बाबु माइन गेलै ।"

"हम छकित चिऐ जे शुद्धोधन बेटाके बात मानल कै" दण्डपानी कहलकै । एतहैक वरिससे आई तलिक उ आपन बेटा सिद्धार्थके आपने नियन्त्रणमे राखे चाहै छेलै । सिद्धार्थके शिक्षा दिक्षाके वास्ते वोकरा कहियो कपिलबस्तुसे बाहर नै ज्या देलकै । उ आपन सकभैर कोशिस कैलकै जे सिद्धार्थके बाहरी दुनियाके हवानै लागै । शुद्धोधन आपन बेटा सिद्धार्थके वास्ते ई नै चाहतै जे यशोधरा सनके कन्याके पसिन करै । यै सवके बिषयमे तोहर आपन की बिचार छौ ?" यशोधरा । यशोधरा चुपे रहलै ।

दण्डपानी थाह पाइव लेलकै जे कामदेव आपन काम पूरा क्या नेने छै । उ दुखित भेलै । उ आपनबेटीयशोधराके भविष्य देखकेदुखित भेलै । वोकरा सिद्धार्थमे बिश्वास नै छेलै ।

एकटा प्रौढ महताइर भ्याके बिम्बा बुईझगेलै जे वोकर स्वामी नाथ दण्डपानीके कोनो प्रकारके निर्णय करैमे वडा कठिनाई भ्या रहलछै लेकिन उ यहो बुझहै जे दण्डपानी कोनो बात वडा असलसे बुइझ सुइझके काम करैछै ।

"आव देरी भ्या रहलछै ई एकटा कठिन काम चिऐ । एहेन काममे एकरती बेसिए बिचार करैछै त असल है छै । तैमे फेर थाकलो चिही, अखनी अरामकर पाछे देखल जेतै" । बिम्बा आपन घरवालाके सम्झावैत कहलकै ।

दण्डपानी आपन जगहसे उठलै आ आपन बिछोना दिसर गेलै । यशोधराके भोजन एखैनतक थारिऐमे छेलै आ वोकर आईख भिजल छेलै । बिम्बा बेटी लग गेलै आ दुलारसे आपन अंगुरीलके बेटीके केश थकरैत कहलकै ।

दैया, तो काथलेने बुझहै चिही जे यै सम्वन्धमे असलसे बिचार क्याके तोहर बाबु कोने निर्णय करै, तकर वास्ते तोरा आपन बाबुके समय देवे परतौ । हमरा पूर्ण बिश्वास आइछ जे सबकाम ठिकैसे हेतै ।"

आ, वास्तवमे यशोधराके वास्ते सबकाम बिल्कुल ठिक हैत गेलै ।

८–आठम

सिद्धार्थके बियाहके शुभकार्य सम्पन्न करैंके वास्ते शुद्धोधन वडा भव्य इन्तजाम कैलकै । कपिलवस्तु नगरसे वहारके तीनु जगहके घर जे वर्षके तीनु ऋतु-गर्मि वर्षा आ जाडके समयानुसार निबास करैंले जे निर्मित छेलै तकरा रजा शुद्धोधन आपन बेटा सिद्धार्थ एवं वहौरिया यशोधराके वास्ते भव्य रूपसे सजैलकैं । सिद्धार्थ बैबाहिक जिवनके भरपूर आनन्दलै तैंके वास्ते शुद्धोधन सदत प्रयत्नशिल रहैं । एक त विबाह पश्चातके नयाँ जिवनसे सिद्धार्थके बात-बिचार, सोच समझमे परिवर्तन हैवैंके आसा राखने छेलै । शुद्धोधन जानैं छेलै जे सिद्धार्थ बभनौटी परम्पराके ततहेक मान्यता नै दैछै; तैं, थोरबेहेक बिधव्यवाहरसे बैबाहिक कार्य सम्पन्न भेलै । बैबाहिक शुभ कार्य वडा सधारण रूपसे कपिलवस्तुके राज तिलक भवनमे मंत्रोचारण द्वारा सम्पन्न भेलै । अन्तमे सिद्धार्थ आ यशोधरा गर्मि यामके निवासस्थानमे बिदा भ्याके महफासे गेलै ।

कपिलवस्तुसे उत्तर पहाडके हेठानी मे निर्मित निबासस्थान वडा सुन्दर छेलै । घरके अगाके बगैंचामे चहबचा आ नयनाभिराम गाछ बृक्षसब सुन्दर ढङ्गसे रोपल गेल छेलै । दुनुकता फलफूल के बगैंचा रहै । घरके पछुवारके करजानमे जङ्गली गाछ बृक्ष लागल रहै । वास्तवमे निवास करैंके वास्ते ई वडा आनन्द दायक स्थान रहे । खास क्याके गर्मिके महिनामे जखनी खल खल बहै वला खोलाके छोटका जल प्रपातके माध्यमसे पाइन छिटके ठन्डा क्याल जाइछेलै ।

अरियाती वरियाती जैंमे नवदम्पतिके मतामही पितामहि, हित, कुटुमब आ दोस- महिमसब अवैरिया पहरमे यै निवास स्थानमे पुगलै । यै आनन्दोत्सबके अबसरमे चारू किसिमके छत्तिसो व्यन्जन तैयार भेलछेलै । आनन्दोत्सवके और उल्लासपूर्ण वनवैले बिछलहा विछलहा नामी कलाकार सब प्रस्तुत भेल छेलै । सुन्दर सुन्दर गाइनी (गितहाईर) मिलके गीत गावलकैं । सवके वास्ते आनन्द उछाह छेलै । लगके गामसवके धनिक गरिब सबदिसरसे नव दम्पतिके स्वागत एवं शुभेच्छाके वास्ते निमंत्रित रहैं । ते, ए प्रकार से ई वडा आनन्द हैके महोत्सव रहै आ सब आनन्द मन्यारहलछेलैं ।

किछ दिनके वाद नर, नेतहारी कुटुम्ब, मेजमान सब बिदा भ्याके चैलगेलै । बिदा करैंके समयमे सिद्धार्थ आ यशोधरा के एङनाके देहरी मे खडा भ्याके आदर पूर्वक बिदा करे परै । बिदा भ्याके जाई बलामे सबसे पाछे यशोधराके बाब रहै । बिदा हैके समयमे यशोधरा आपन बाबुके पेर पकैडके काने लागलै । दण्डपानी

सेहो खुसीके लोर बहबैत बेटीके काह्न पकैडके उठैलकै आ सौभाग्य बतीहैके आशिर्वाद देलकै आ बिदा भ्या गेलै । ताबतमे मैया बिम्बा सेहो एक दिसर खुशिके साथै बिछुडनके ततकालिक दुःख मिश्रित लोर चुववैत रहै त यशोधरा लगमे ज्याके महताइरसे आशिष लेलकै । शुद्धोधन आ गौतमी सेहो पुतौहके आशिष देलकै । सिद्धार्थ पिता लग गेलै आ साष्टाङ्ग गोड लागलकै त शुद्धोधन बेटाके आपन छाती लग्याके अङ्कमाल कैलकै । सिद्धार्थ कनहिक मन छोट करैत पितासे बिन्ती भाव कैलकै । "हम विश्वास करै चिए जे हम जे कैलिए सेठिक कैलिए ऐंके वास्ते अज्ञानवस हम कष्ट देलौ तकर क्षमा प्रार्थी चिऐ।" तकराबाद उ मैया लग गेलै आ गोड लागलकै । यहै प्रकारसे सौस आ ससुरके सेहो गोड लागलकै । छोटका भाई नन्द सेहो ई सब व्यवहारके वडा कौतुक मनसे देख रहलछे लै । सिद्धार्थ वोकर लग गेलै आ स्नेह कैलकै ।

विदावारीके रित बिभूतके बाद सब आदमी आपन आपन समान गडीमे राखलक आ कपिलवस्तु दिसर गडी हाकलक । बिदा करैले नोकर चाकरके घरैमे छोईडके सिद्धार्थ आ यशोधरा दरवजा तक एलै । आपन आपन महताइर वापके बिदाहैत देखके सिद्धार्थ आ यशोधरा दुनुके वडा एकाकीपनके दुखद अनुभव हेवे लागलै । सिद्धार्थ यशोधरा लग गेलै आ आपन देहना हाथसे मन मलिन यशोधराके पजिय्यालेलकै । यशोधरा कनहिक झुइकके सिद्धार्थके चकरगरहा छातीमे आपन कपाड खस्याके विश्रान्तिके सुखद अनुभव करे लागलै । आव यशोधरा असगरे नै छेलै आ ताहिनङ्गे सिद्धार्थ ।

सिद्धार्थ जाव लेखके घरमे रहैछेलै त वोकर बगैरिया सबशुभेच्छा व्यक्त करैले अथवा अन्य काम वा वातचितके वास्ते हरदम आवैत रहैछेलै । तै आगन्तुक मध्ये सिद्धार्थके परानजी बगैरिया कपिल सबसे बेसी आवै । सिद्धार्थ मनैमन कहे लागलै जे कपिल संगै जेनङ्ग हरदम घुमफिर करै छेलिऐ से आव नैं करे सकवै । आव त ई आवश्यक भ्यागेल छेलै जे उ हरदम यशोधरा संगै रहै । जहिया जहिया कपिल सिद्धार्थसे वातचित क्याके चैलजाई तहिया लवकी कनिया यशोधरा अनुभवकरै जे सिद्धार्थ आपन बगैरिया कपिलसे बिछोड भेलाके बाद कोनो प्रकारके दुखित भ्या जाइके अनुभूति करैछे । वास्तवमे लवकी कनिया जाइन लेलकै जे सिद्धार्थके भवनामे एलहा बौद्धिक संसयके समाधान कपिलेटा क्या सकैछे ।

तै आपन पियाके हियाके बात जानै वाली चौतरी नवयौवना यशोधरा आपन बगैरियाके विछोडसे भेलहा दुखित मन मण्डलके सून्यताके भोरैले सिद्धार्थके

आवश्यक परैबला सबप्रकारके सेवासे संतुष्ट करैले अपनाके हरदम तैयार राखने रहैछेलैं ।

साझूहपहर सिद्धार्थ आ यशोधरा दुनु नवदम्पति घरसे बहार भ्याके घरके चारूकताके फूलबाइर, बगैंचा आ करजानमे टहल फिर करैं । जाव उसब घर आबैं त शुद्धोधनके नियुक्त केलहा गवैया सब वोकरा दुनुके गीत सुन्याके दिल बहलावैं छेलैं तैंमे भर्ना भेलहा सुन्दर सुन्दर नचैनिया नव युवति सव नाचक्याके सभाके गुल्जार करैं ।

कपिलवस्तुके धनिकहा व्यक्ति सब ऐ प्रकारके मनोरञ्जनके आनन्द लैं । धनिक व्यक्तिसव सवदिन साझहैसे दारू पिएत पिऐत वडका राईत के जाव वेहोस भ्या जाइ त नोकर चाकरसब बोइकके लज्याके सुत्या नैं दै तावे तलिक पशेवर सुन्दरतम नाचैवाली नटिन, गवैया आ संगितज्ञसब वोकरा मनोरञ्जन करबैत रहै । सिद्धार्थ जे ने त दारू पिऐ आने ए प्रकारके मनोरञ्जनसे आनन्द लेवेसकैं से ऐ वन्हलहा मनोरञ्जनके साधनसे औगत्या गेलैं। एकदिन जाव दुनु टहैलके आवैं छेलैं त सिद्धार्थ, यशोधराके पूछलकैं ।

"जहियासे अपना सब एलिऐ, तहियासे लगतार सबदिन जे नाच गान भ्या रहल छैं से की तोरा असल लागेछौ ?"

"तेहेन असल नैं छै ।" यशोधरा ई बुझहे लाईगगेलैं छेलैं जे शुशिल प्रकृतिके वोकर घरवाला सिद्धार्थ एहेन नाच नटुवा वला मनोरञ्जनसे थाकल ज्या रहल छेलैं तैं कहलकैं ।

"हमरा संगित असल लागऐ" । सिद्धार्थ कहैत रहै । "ई सुन्दर है छै आ कोनो सुन्दर बस्तु दिसर ककरो आकर्षित भेनाई स्वभाविक है छैं; येसे अबाध संतुष्टि प्राप्त भ्यां सकैए । लेकिन यहैमे एकदम लागल रहलासे मन बौंय्या सकैए । मन बौय्या गेनेसे प्राप्त भेलहा संतुष्टि औगतेनाईमे बदैलजाईछैं । कथिले ?" सिद्धार्थ एकछन जिरैलैं आ फेन यशोधराके प्रश्न कैलकैं ।

"कि तो ई विचार करैं चिही जे ई नचैनिया सवजे प्रदर्शन करैछै से इजे करैं छै तैंसे अपनाके संतुष्ट मानै छै, किनै ? ई काम करैत करैत थाकैं छैं, किनैं ?"

"हम ठिकसे नैं कैह सकैचिऐ जे उसव आपन कैलहा कामसे संतुष्टि प्राप्त करैं छै, किनै, लेकिन सम्भवतः उसव आपन कामसे नैं थाकैछैं । जाव उ सव प्रदर्शन करैत रहैछैं त दारू पिऐत रहैछैं तैं से भैरसक उसव अनुभव करैं छै जे एनङ्ग कैलासे

थकान श्रा औगतेनाई खतमभ्या जाइछै। सवसे त वोकरा सवके रोटी यहैसे चलैछै खाली मनोरञ्जनेटा के बास्ते कोईएहेन पेशा कथिले करतै।"

"एकर माने त ई मेलै जे श्रगर हमरासव ऐप्रकारके मनोरञ्जन नै करे चाहबै त बेचारा गरिव कलाकार सवके श्रापन भरण पोषणके कोनो दोसर चरानै रहतै।"

"ह, ठिक" यशोधरा जवाव देलकै। श्रगर कपिलबस्तुके सव श्रादमी ऐ प्रकारसे दारू पिनाई श्रा नाचके मनोरञ्जन केनाई चट दवर छोईड देतै त ई सवटा लोकसवके चपेट पड़तै। उ सवके औंर दोसर सिप नै छै; तकर परिणाममे वोकरासवके परिवारके दुःख भोगे परतै। लेकिन ई श्रादमीसव प्रकृति प्रतिभा सम्पन्न छै। ई सव, धनिक वर्गजे खाली श्रापनेटा सुख ताकैछै, तकरसे थीचल श्रा शोषित छै। हम ई कालाकारैसवके दोष देवै जे श्रापन प्रतिभाके ऐ प्रकारसे दुरुपयोग क्या रहल छै। यै मे दुनुदिसरसे हेर फेर श्रा मनौतिके वात छै। ई श्रावश्यक छै जे कलाकारसवके धनिक बर्गसेभेलहा शोषणसे छुटकरा हेवक चाही श्रा कलाकारौके चाही जे उसव श्रापन प्रतिभाके बेश्या वन्याके नै बेचै।

"तो श्रसलका गुरू चिही" यशोधराके कोमल श्रा सुकमार हाथके श्रापन औङ्गरीमे फसेलहा-औङ्गरीलके जोरसे दावैत सिद्धार्थ कहलकै" ई काम हमरा सव कथीलेने थालवै? हमरा सव ऐ श्रादमीसवके एखैनिऐ त नै हट्यां सकै चिऐ लेकिन ई सव तिन दिनमे एक दिन प्रदर्शन करे, से कथीले नै कहवै?

"कि त एकर मतलब ई मेलै जे वोकरा सवके पूरा बोईन नै भेटतै।"

"नै," सिद्धार्थ जवाव देलकै। "श्रपनासव वोकरा पूरा मजुरी मुक्तान देवै। श्रगर उसव बिचारकरैवला श्रादमी हेतै तश्रनुभव करवे करतै जे श्राखिरमे थोरहेक व्यक्ति एहेन छै जे वोकरसङ्गितके पसिन त करैछै लेकिन वोई प्रकारसे नै जेनङ्ग वोकराऔरके प्रदर्शन करैछै।"

समाधानके ई प्रकिया हमरा श्रसल लागल। यशोधरा सिद्धार्थ दिसर ललच्याल दृष्टीसे देखैतकहलकै।

तकर बिहानके यशोधरा घरके बुढवा नोकरके श्रसलसे सिख्याके नचैनिया मंडिलिके कहतै जे श्राव तीन दिनमे एक दिन मात्र मनोरञ्जन कार्यक्रम प्रदर्शन करे। गवैया श्रा नचैयिना मेरके लोकसव ईसमचार सुईनके पूर्णतया धवऱ्यायागेलै। उसव ई बुझने रहै जे उसव श्रापन कार्यक्रमसे सिद्धार्थश्रा यशोधराके खौ श्रसलसे मनोरञ्जन करवैछै। खौं परिश्रमसे श्रापन निर्दिष्ट काम करैत करैतउसव थाइक

जाई छेलै। ये थकानके मेटैलेउसव दारू पिऐ छेलै। दारू पिके उ सव आपन प्रदर्श-नके और बेसी मनोरञ्जक बनाइले और बेसी मेहनैत करै। राइत भैर प्रदर्शन करे परै आ अनगुतके खतमहै त प्रदर्शनके तुरून्ते बादमे मण्डलीके सदस्यसव जैह तैह बोङ्गहैरके सुइत जाई। उ सव पूर्वाहनी बाद फेर सुतै। उ सवके ई काम सिद्धार्थके वास्ते वडमर्मस्पर्शि हेवै। जाव सिद्धार्थ आ यशोधरावोकरा सवके प्रदर्शनमे रोक लाग्या देलकै त उसवके दिन चर्यामि भूमकौन आइव गेलै। मण्डलीके दिनचर्या जाव बदैल गेलै त वोकरासवके लगतार दुई दिनके साझमे कोनो काम नै रैह गेलै। तैयो, नव दम्पत्तिके तामसके डरसे उ बेचारा सवकोनो अडान नै लेवे सकलकै। फेर उ त आपन रजाके बेटा रहै।

थोरहेक दिनके बाद सिद्धार्थ, यशोधराके पूछलकै "तीन दिनमे एक दिन नाच कैलासे ई नचैतिया मण्डलीके कोनो प्रतिकृया छै, कि नै ? की, वोकरासवके खौ छुट्टी भेटलछै ?"

"नै"। यशोधरा कहलकै "हम समझै चिऐ जे उसव वडा कननसुख भ्यागेलछै। उ सव अनुभव करै छै जे वोकरा सवके सेवाके उचित मूल्यांकन नै भेलै। यहौसे बेसी उसव सोचै छै जे उसव आपन मजुरीनै काम्यारहलछै।"

"हम खुशी चिऐ जे उसव ऐ रस्ते अनुभव क्या रहलैछै। उसवके ई महशूस करे पड्तै जे उसव आपन गिरहथके शोषण क्या रहलछै जेनङ्ग उसव आपनै शोषित भ्या रहलछै। उ सव आपनैके नोकसान क्या रहलछै। जैसे अनकरो नोकसान भ्या रहलछै आ अनकर नोकसानके सवटा जिम्मेवारी वोकरे मुडमे मेरहल जाइछै। उसवके आपन पेशाके तहत आपन विवेक बिचारके भवनात्मक एवं क्रीयात्मक दुनु पक्षसे पूर्ण रूपसे परिवर्तन करे परतै।" यशोधरा बुझलकै जे सिद्धार्थ बिल्कुल ठिक कहैछै लेकिन सिद्धार्थके मुहसे और असलबात सुनैके खातिर बहस कैलकै।

"यहै प्रकारसे समाज चलै छै किनै ?" उ पूछलकै, "उदाहरणके वास्ते देखही क्षत्रीसव देशके रक्षाकरैके वास्ते लडाई करैछै। कहियो कहियो आन गोडेके रक्षा करैके खातिर आपन जानके वलिदानकरे परैछै। यहैसव कारणसे उ सवके देशमे शासन करैके अभिभारा भेटलछै। वोकरे मुखिया त शासकचिऐ।"

यद्यपि यशोधरा पेशेवर गवैया आ नचैनिया जे आपन भरण पोषणके वास्ते समाजके धनिकमर्द आ स्त्रीके अवांछनीय ईच्छापूर्तिके साधन भ्याके जिनगी चलेनाईके सिफारीस नै कैलकै; तैयो उ बिचार कैलकै जे बिभिन्न पेशाके समूहके व्यक्तिसव सेहोत समाजके अभिन्न अङ्ग चिऐ।

सिद्धार्थ आपन घरवालीके राजनीति दर्शनसे भोरल बुधीयारी बात सुइनके यशोधरा दिसर ताकलकै आ कहे लागलै ।

लडाई कथीले हैछै ? लडाई के लडे चाहै छै ? कि तो ई बिचारनै करै चिही जे लडाईत क्षत्रीसवके जिवन पद्धतिमे आनन्द देबै वला खेलोना चिऐ अथवा क्षत्री सवके वास्ते लडाई एकटा एहेनसाधन चिऐ जे उसव आन राज्यमे चढाई क्याके जितै छै आ तैसे प्राप्त भेलहा धन सम्पतिसे-मज मजा करैछै । क्षत्रीसव शक्ति हथियावैले वडा तोडगर है छै । वाबहन पुरहित जे आपनाके सर्वाधिकार सम्पन्न सम्राट कहावैछै क्षत्री सवके हरदम उकस्याके लडाई लडबैछै । शासक वर्गमे-वभनौटी चापके यहिनङ्गे फलाफल फलित छै ।

तो क्षत्री समूहके बिरूद्धमे बात करै चिही लेकिन तो आपनौ त शासके चिही । यशोधरा सिद्धार्थकेखिझवैले कहलकै जैसे उ बुझहै जे सिद्धार्थ आपना शासक भ्याके कथी बुझहैछै ।

हम आपनैके आलोचना करैले डर नै मानै चिऐ। की, शासक कूलमे जनमलेलासे हम शासकसवके झूठघमण्डके धज्जी नै उड्या सकैचिऐ ?

यशोधरा महशूस कैलकै जे सिद्धार्थ आपन मनके बात कहै छै । उ न्याय, अन्याय, असल-खराबके गुढतत्त्वसे सम्वन्धित प्रश्न छेलै । यद्यपि यशोधरा ई मानलकै जे शासकसवके झूठ धमण्डके विषयमेजे सिद्धार्थ आलोचनाकैलकै से बिलकुल असल बात चिऐ लेकिन समाजके बिभिन्न बर्ग, समूह, जाईत, उप जाईतमे प्रचलित परम्पराके बिभिन्न रित बिभूतके चट्टक छोडनाईके सम्बन्धमे यशोधराआपन सहमती नै देवे सकलकै। उ समाजके क्रमिक सुधार परिवर्तनके पक्ष धर छेलै क्रान्तीकारी माध्यम से सुधार करैके पक्षमेनैरहै । बहसके बेसी नै चल्याके चुपचाप रहलै ।

समय एलैत उ सव रजधानी कपिलबस्तु फिर्ता जाइके बिचार कैलकै । घर-पुगलैत दुनु दिसरसे नव दम्पतिके परम्परा अनुसार धुमधामसे स्वागत सत्कार भेलै । सिद्धार्थ आ यशोधरा-कपिलबस्तुके रजा शुद्धोधनके राजदरवारमे निवास करे लागलै आ राज्य संचालन कार्यमे सेहो भागलेवैलागलै ।

९—नवम

सिद्धार्थके बियाह भ्यागेलै त पाछे वोकर बगैरिया कपिल निठाह एसगरे भ्या गेलै । वोकरा कोनो बगैरिया नै भेटलै । कपिलके बियाह करैके मननै छेलै । वोकर बस्ते ई जरूरी भ्या गेलै जे उ एकटा एहेन अभिन्न मित्र फेला पारै जे वोकरा

बौद्धिक स्तरमे वोहिनङ खोराक दै जेनङ्ग कि वोकरा सिद्धार्थसे प्राप्त है छेलै। नरदत्त जे कपिलके तक्षशिला दिसर गेलाके बादमे सिद्धार्थके बगैंरिया भेलछेलै भौतिकबादके मानै वला युबक छेलै। यद्यपि सिद्धार्थके सहबासमे कपिल क्याबेर नरदत्तसे बात-चित, भेट-घाट क्या ने ने छेलै लेकिन मन नै मिललाके कारणसे बगैंरिया नै हेवे सकने छेलै।

यहै समयमे यज्ञवालक्यके एकटा शिष्यसे कपिलके भेट भेलै। वोकर नाम ललकु रहै। ललकु दछिनभर शिक्षा प्राप्त करनें छेलै आ तहै समयमे यज्ञवालक्यके संसर्गमे ऐलै। यसवालक्य जे आत्मा आ परमात्माके सम्बन्धमे भेलहा समस्याके आधारमे एकटा आपन सिद्धान्त वडा उत्साहित भ्याके समाजमे प्रस्तुत करने छेलै तँ समस्याके विषयमे ललकु वडा चाख लेने छेलै। ललकु खाली बौद्धिकरुपसे वोई सिद्धान्तके स्वीकारनै करै छेलै वलिक वोई एकात्मताके सम्बन्धमे अनुभव द्वारा प्राप्त करलै उद्दत छेलै। यहै सव कारणसे कलिपवस्तु नगरके लगैमे भेलहा जंगलमे वासकरै वला महात्मा सवके आश्रममे ज्याके उ महिनो महिनो भैर भक्ति अभ्यास करैत रहै छेलै। कपिल देखलकै जे उ हरदम ललकु संगे बहसमे भिरल रहैछै। उच्चतम बास्तबिता (सवसे वडका सत्य) के सम्बन्धमे ललकुके देलहा व्याख्याके उ एकदम्‌मे स्वीकार करैके पक्षमे नै भेलै। तक्षशिलामे शिक्षा प्राप्त क्याके उ शांख्य सिद्धान्तके द्वैत बादके आपन क्षेत्र बनैलकै। एकरा तकरै क्रमवद्ध दर्शनके विकास कैलकै। दोसर पक्षमे ललकु अध्यात्मबादके योग दर्शनसे सम्बन्ध गाडहलकै। उ विश्वास करै छेलै जे अध्यात्मबादके योगाभ्यास रितके अभ्यास करलासे कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्रता प्राप्त करैमे सक्षम हैछै; तहै माध्यमके अभ्यास करलासे प्राप्त फलाफलके अनुभव सन्तपुरुष आपनै से करैले सक्षम हैछै। यज्ञबालक्यद्वारा प्रतिपादित सत्तधुरुष सिद्धान्तके अख्यानसे द्वैत बादके नकार करैत अद्वैत बादके सन्तपुरुष सिद्धान्तसे उ वडा प्रभावित भेल रहै। कपिल आ ललकु हरदम यहैद्वैत बाद एवं अद्वैतबादके वातचितमे दोपहैरिया क्यादै।

जव सिद्धार्थ कपिलके मुहसे ललकुके विषयमे सुनलकै त वोकरसे भेट करैके इच्छा जाहिर क्यादेलकै। तै दोसर बेरिया जाव कपिल सिद्धार्थ लग भेटकरे गेलै त ललकुके आपन संगे ल्यागेलै। बेरू लगाइर जाव कपिल आ ललकु सिद्धार्थलग गेलै त देखलकै जे सिद्धार्थ आपन घरवाली यशोधरा संगे हवैलिके बगैंचाके एकटा ब्रिचमे बैठल वातचित क्या रहल छेलै। बगैंरिया मेजमानके आवैत देखलकै त यशोधरा आपन जगहसे उठलै आ सिद्धार्थके आपन बगैंरियासवसे बातचित करैले छोईडके हवैली दिसर बिदा भ्या गेलै। एकेछनके बात चितसे सिद्धार्थ ललकुके

बातचित पसिन करे लागलै । उ वडा सौम्य श्रा हंसमुख व्यक्तित्वके सरलचित व्यक्ति रहै। ललकुके बात बिचारके सुइनके जाव बुझहलकै त सिद्धार्थ योग पद्धतिके श्राध्यात्मिक विषयमे खुसी भ्याके मन दौडवे लागलै ।

"योगभ्यासके सम्बन्धमे हमरा एक दुइटा बात कह ।" सिद्धार्थ श्रनुनय कैलकै । "प्रारम्भिक श्रबस्थामे यै पद्धतिके कोन प्रकारसे श्रभ्यास प्रारम्भ क्याल जेतै । बास्तवमे यै प्रकारके योगसधना रतहैके बास्ते तोराऔरके कथी करै चिही ? श्रा ऐ सधनाके लक्ष कथी हैछै ?"

"ऐ सधनाके वास्ते सबसे पहिने श्रा सवसे श्रावश्यक विषय साधकके चारूकताके वातावरण हैछै । ऐ प्रकारके श्रध्यात्मिक सधनामे लीनहैके बास्ते सबसेश्रसलका स्थान जंगल हैछै ।"

सिद्धार्थ बावहन जिवनके चाइरटा श्रबस्थासे वाकिफ छेलै । पहिनका-एकटा बावहनके छात्र-जिवन व्यतित क्याके बेद-बेदाङके श्रध्ययन करनाई श्रावस्यक छेलै । दोसर-श्रबस्था-गृहथाश्रममे प्रबेश । तेसर-सन्यास श्रा चारिम-वानप्रस्थ माने सांसारिक क्रीया कलापके श्रभित्याज्य । बभनौटी परम्पराके श्रनुसार ऐ प्रकारके जिवन पद्धतिके ग्रहण करैके वास्ते उमेर एवं समयके ज्ञान श्रावश्यक छेलै । एकटा व्यक्ति तैं श्रापन गृह त्याग क्याके बानप्रस्थ हैले श्रापन पहिनका परिवारकि श्रभिभाराके सवटा जिम्मेवारी पूरा क्याके सवकामसे उऋण भेलहा श्रा उमेरमे सेहो खौ पकठी भेलहाके वास्ते मात्र श्रसल मानल जाई छेलै । लेकिन ललकु जे ऐखैन भरखर छात्र जिवनसे श्रगामाथे चलल छेलै श्रा जे एखनी तलिक परिवारिक जिवनके श्रधारभूत जिम्मेवारी जेनङ बियाह क्याके घर बसेनाई श्रादिके पलः कहा परल छेलै तैयो ललकुके करबाही देखके सिद्धार्थके शंका भेलै जे बभनौटी परम्पराके ई दोसर पक्ष कतैसेएलै जैमे ललकु एखैनिए तमतैयार भ्यागेलछै । तै वोकरा एकर सप्रसंग व्याख्या जानैके लौलसा जागलै श्रा ललकुके ऐ सम्बन्धमे प्रश्न पूछलकै ।

"कथी त ई जरूरी छै, जे ऐ प्रकारके श्रध्यामितक योगके श्रभ्यास करैके वास्ते जंगलके निवास हवैके चाही ?" सिद्धार्थ प्रश्न कैलकै ।

ललकु हाफी उठैवला एकटा वडका भाषण छाटै लागलै ।

श्रापन पारिवारिक जिवनमे रहैत ऐ प्रकारके श्रध्यात्मिक श्रभ्यास करलासे उच्चतम संतुष्टिके उपलब्धि प्राप्त करैले वढिया बातावरण नै मानल जाइछै । पारिवारिक जिवनमे रहैत श्रनुभव जन्य व्यवधान झंझटसे दुरौग रहैके जे कोशिशमे

समय गम्याल जतै तकर बदला आश्रममे ऐ प्रकारके कोनो झंझटके झमेलानै रहैछै। समाजिक क्रिया कलाप त बेसी ढकोसलासे भोरल रहैछे। हमरासबके अधिकसे अधिक काममे रित बिभूत एवं परम्पराके मानैले बाध्य हेवे परैए। हमरासब समाजके कोनो भी व्यक्तिके ई कँहके नै रोइक सकैचिऐ जे ध्यान लगेलहा समयमे हमरा कोई टोक टाक नै करिहे अथवा हमर घर दिसर नै आबि हे। लेकिन आश्रमत एहेन जगह नै है छे; वोई स्थानमे रहै बला सबगोडे ई जानै छै जे कोई भी व्यक्ति आश्रममे ध्यान लगावैकँ भक्ति करैले मात्र आबैछे। दोसर दोसर पेशा आ व्यबसायके लोकसब वोई स्थानमे नै जाइछै। एकटा आश्रम सधारण तया जंगल वा जंगलके सटले रहैछै। ध्यानके वास्ते ऐहेन जगहमे प्राकृतिक बाताबरण कायम भेल रहैछै। ऐ प्राकृतिक शान्त बाताबरणमे प्रत्येक व्यक्तिके आपन प्रकृति-प्रदत्त योग्यता अनुसारके ध्यान भक्तिके विकास करनाई वडा असान भ्या जाइछै।

ललकुके भाषण सुनलाके बादमे सिद्धार्थ महशूस करे लागलै जे बावहनसवके चलेलहा समाजिक जिवनके चारू आश्रमके निर्माण करैके हेतुसे फकिरी जिवन जेकरा बावहन बाहेक क्षेत्री एवं दोसर बर्गके व्यक्तिसव ऐ पद्धति दिसर प्रवेश क्याके जाव वाभनेसवके मुहमोरैले तैयार भ्यागेलैत एकरा संकिर्ण करैके वास्ते उ सव ऐ चारू आश्रमके निर्माण करलकै। सन्त महात्मा सबत सच्चाईके खोजीमे लागल रहै। ऐ प्रकारके क्रान्तीकारी पद्धतिके प्रारम्भिक कालमे उमेरके कोनोटा बन्देज नै रहै। कोन उमेरमे लोक गृह त्याग क्याके फकिरीजिवन पद्धतिके अपनैतै तकर वास्ते सवके छुट छेलै। सत्यके खोजिनिहार सन्त फकिर जाव समाजमे आपन प्रतिष्ठाके बहौत उपर उठया लेलकै जैसे बावहन सबके आधिकारीक पुरहिती काममे वडका भारी व्यवधानखडा भ्याके वोकर ऐ संसारिक लाभप्रद कामके अभेला हेवे लागलै त ऐ कान्तिकारी पद्धतिके आपन धार्मिक बरवर्ताके तहत फेरसे नियमके तोइड मोइडके आपन दिसर घुमलकै जैसे कि वोकरा सवके अधिकाधिक रूपमे दान दछिना भेंटैत रहै। वोकरासवके उद्देश्यत एतबेहेक रहै जे पारिवारिक जिवनमे लोकसव अधिकसे-अधिक समयतक फासल रहे आ तकरा सवके विभिन्न प्रकारके धार्मिक अनुष्ठानमे लग्याके दान दछिना असुल क्याके आपन भरण भोषण चलबैत पुरहिती पद्धति के मायाजाल फैलावैके काममे लागल रहै। यहै धतुभतुके बदौलत समाजिक जिवनके ई चारूटा आश्रमके निर्माण क्याल गेल रहै। सिद्धार्थ ई सब बिचार क्याके खुसी भेलै जे बाभनेत्तर जाइतके युबक सवमे ऐ प्रकारके चेतनाके प्रादुर्भाव भ्याके वभनौटी परम्पराके पन्छावे चाहै छै। लेकिन अभाग्यवस उएखैन ऐ स्थिती मे नै छेलै जे

सत्यके खोजीके वास्ते चललहा ऐ कान्तीकारी हवामे उछैंडके सामिल भ्या जेतिए। एखनी यशोधराके वोकर वडा खाचो छेलै किएकत यशोधराके टाङ्ग भारी भ्या गेल छैले ।

योग भक्तिके अभ्यास करैके सिद्धान्त बर्णका करेसैं पहिने ललकु ई कहे चाहै जे लोकसव कथिले ऐ पद्धतिके अभ्यास करतैं ।

ज्ञान आ अज्ञानमे व्यासान्तरके फरक रहैछै। जहिनङ इजोत आ अन्हारमे रहैछै । जै ठाम इजोत रहै छै तते अन्हार नहिए हेतै आ तहिनङ जैठाम अन्हार छै तैं ठाम प्रकाशके गमन नै रहैछै। ज्ञानत विश्वासपूर्ण हैछैं; लेकिन अज्ञान शकांस्पद है छै । ज्ञान सत्य चिऐ आ अज्ञान वकमफुस है छैं। ज्ञान बरदान चिऐ जावकी अज्ञान दुःख पूर्ण हैछैं। ज्ञान अमरत्व प्राप्त करवैं छै लेकिन अज्ञानता मृत्युके निमत्रंण दे छैं ।

सिद्धार्थ बिचैंमे ललकुके टोकलकै ।

ज्ञान आ अज्ञानता दुनु मानव मात्रमे निहित बिषय चिऐ। मानबके कोन अंग ज्ञानसे सम्बन्धित रहैछैं आ कोन अंगमे आज्ञानता आपन घर वन्याके बैठल रहैछैं ।

अज्ञानता मनुष्यके पंचभूत शरिर आ ईन्द्रिय जन्य बियषसे सम्बन्धित रहैछै जावकी ज्ञान मनुष्यके आत्मा अथवा दैवी पुरूषमे समाहित रहैछै। ऐ दैवी पुरुष जेकर शांस जिनगी चिऐ, स्थुल शरिर बुद्धिके काम करैछैं, आकार-प्रकार प्रकाश चिऐ आ आइख मन मस्तिष्कके काम करैंछैं सेह्या ऐ शरिररूपि घरके मालिक चिऐ; वह्या शासन करैंछैं। ई त उ एसगरूवा उजराहांस चिऐ जे सुसुप्ता अवस्थामे ऐ शरीरके त्याग क्याके बहऱ्या जाइछैं आ आपन इच्छा अनुसार भ्रमण करैत रहैछैं आ आपन पसिनके चिज सबसे आनन्द प्राप्त करैत रहैछैं आ जाव निन्द्रा भगन भ्या जाईछैं त फेर से घुइमके आपन वास स्थान स्थुल शरीरमे प्रवेश भ्या जाइछैं ।

ई त बिल्कुल स्वप्नअबस्थाके बात भेलै। सिद्धार्थ आपन कैंफियत देलकै ।

लेकिन ई देवी पुरूष केनङ्के भ्या सकैछै ? कपिल शंका व्यक्त करलकै।

एकर प्रतिउत्तरमे जे ललकु जवाव देलकै तैं मे ककरो चिन्त नैं बुझलै। तैंयो सिद्धार्थ पूछलकै ।

एकटा व्यक्ति कोन प्रकारसे मनुष्यमे निहित दैविक आत्माके पूर्ण रूपसे स्वतन्त्र क्यालैंछैं ?

ध्यान भक्तिके उद्देश्य यहैंमे लक्षित क्याल गेलछै। हम तहैले हरदम आश्रममे ध्यान भक्तिकरे जाइ चिऐ। यहचा एकटा ऐ प्रकारके अध्यत्मिक अभ्यास चिऐ

जेकरा भक्ति करलासे एक ने एक दिन हमरा स्वतंत्र क्याके अमरत्व प्रदान करबे करतै । जाग्रत अवस्थामे अपनासव आपन इन्द्रियद्वारा व्यवधान उत्पन्न कऱ्याके आपन रस्ताके बिसैर जाइछिऐ । इन्द्रिय जन्य अनुभूति बिना लगामके वोई घोडा नहाइत चिऐ जे हमरा सबके रस्तासेभरम्याके एने आ वोने लजबैए । लेकिन हमरा सव एकटा साधहल सवार लखा आपन आपन इन्द्रिय जन्य विषय सुखके हरदम काबुमे राखैले सक्षम हेवे परतै जसै कि उ कोनो मनोमानी नै करे सकै । आपन इन्द्रिय बिषय सुखके नियंत्रण करलाके वादमे आपन मन मस्तिष्कके नियंत्रण करे परतै । यहै मन मस्तिष्कके उच्चतम ध्यानाभ्यासके उपरान्त हमरा सव ऐ सिमित या रूप अकारके दुनियासे निरंकार एवं असिमित दुनियामे पुईग सकै चिऐ । ऐ निरंकार दुनियामे लोकसव आपन सवटा एन्ताके परित्याग क्या देलाके बादमे पूर्ण शान्तिके प्राप्ति करैछै । ई एकटा एहेन दुनिया चिऐ जैमे असल आ खरावके भेद भावना नै रहैछै । ये निरंकार तत्वके हरदम अभ्यास रत रहैके विषयके हमरा सव आपन जिवनके दिनचर्या बनबे परतै ।

ललकुके देलहा अध्यात्म अभ्यासके व्याख्यासे सिद्धार्थके खौ चित्त बुझलै आ उ खुसी भ्यागेलै । अध्यात्म जिवनके सम्बन्धमे और बेसी बात चित करैले वोकर मन बहौत लागे लागलै । लेकिन आव वड अनहार भ्यागेल छेलै आ दुनटा बगैरिया आपन आपन घर जाइले तैयार भ्या गेलै । उ सव उठलै आ आपन आपन घोडा दिसर बिदा भ्यागेलै । सिद्धार्थ वोकरा सव संगे गेलै । जाव उ सव जाई वला भेलै त सिद्धार्थ कपिलके कहलकै ।

"अपनासव गाम दिसर ज्याके गामके लोकसवसे बात चित क्याके वोकरा सवके बिषयमे जानैके कोशिस करै छेलिऐ ।

लेकिन कि आव तो ई बिचार नै करैचिही जे एक दिन ललकु संगे एकटा आश्रममे जेतिऐ ?"

अगर तो यशोधरासे अनुमति प्राप्त क्या लेवही त हम कोनो परबाह नै करवै । कपिल मुसु मुसु हांसतै सिद्धार्थके छेडलकै आ आपन आपन घोडाके एंडिया देलकै ।

१० – दशम

पुर्वनिश्चित दिनमे सिद्धार्थ, कपिल आ ललकु तिन् व्यक्ति आपन आपन घोडामे सवार भेलै आ कपिलवस्तु नगरके वहार जङ्गलमे अवस्थित एकटा महात्माके

आश्रममे जाइले बिदा भ्यागेलै । यशोधरा सिद्धार्थके वोहेन जगहमे जाइले कोनो प्रकारके विरोध नै करलकै । उ जानेछैले जे सिद्धार्थके उ खौ प्रीय छै तै वोकरा कोनो प्रकारके शङ्का नैछेलै जे एखनी एहेन समयमे वोकरा छोइड देतै आ एतहेक जल्दी वैरागी भ्या जेतै ।

आपन घरवालीके लार-दुलार कैलकै आ तुरन्ते घुइमके चैल एवं से कैहके सिद्धार्थ चैलगेलै । यशोधरा बिदा करैले बहार तलिक एलै आ जाव सिद्धार्थ घोडाके फरदुवाल पकडैलकै त घुइमके आपन कोठलीमे एलै । आपन कोठलीके एकटा आरम कुर्सीमे बैठके कनकिरवा बच्चाले एकटा पोशाक तैयार करे लागलै जेकरा उ आव थोरवेहेक अठवारमे आसरकरे लागल छेलै । वोकर हाथ त पोशाक तैयार करेकै धुइनमे छेलै लेकिन वोकरमन सिद्धार्थके पाछे पाछे उडल छेलै ।

"एखनी हमर एहेन समय छै । ऐ समयमे की हम कोनो शङ्का क्या सकै चिऐ जेसिद्धार्थ हमरा एखैनिऐ छोइडके चैले जेतै आ वैरागी जिवन पकैड लेतै ?" परम्परासे परिवारमे चैल एलहा रित विभूतसवके माइनके तदनुरूपके कार्य सञ्चालन करैले सिद्धार्थ खुसी नै हैछै । वावहन पुरहितसव आपन स्वार्थ सिद्धिके वास्ते समाजमे प्रचलित धर्म आ विश्वासके कायम राखैले जे शासक वर्गके हथियार बन्याके प्रयोग करै छै से वोकरा पसिन नैछै । शासकवर्ग जे जनताके शोषण करै छैसेहो वोकरा पसिन नै छै । बडाकाबडका सेठ साहुकार जे आपन लाभके मात्र विचार क्या के अन्यायी माध्यमसे धन दौलेतके अमार लग्यादेने छै से हो अन्याथी तरिका वोकरा पसिनेटा नै परै छै वलिक कला कारितामे कार्यरत युवक युवती सवके जेकरा धनिकहा लोकसव शोषण करै छै तकर उ कट्टर विरोधी चिऐ । सबसे बेसित गाममे रहै वला समाजके बाल बच्चा एवं शहर बजारमे निवास करै वला सवके नोकर-चारकर, वैहिया-गुलामसवके बाल बच्चा शिक्षा दिक्षाके अवसरके एकदम अभाव देखके उ उदास भ्याजाइछै । वोकर वास्ते उ बच्चासवत जङ्गलमे फुलेलहा फूल नहाइत चिऐ जे फूल्याके सुइख जाइछै । न्याय आ सच्चाई विषयके प्रश्न वोकर मनके हरदम औढने रहै छै । गरिव आ खड्गहटल सवके वास्ते उ खौ करूणा राखैछै ।"

"लेकिन" यशोधरा आपन विचारमे मगन रहैत बिचार करै, उ हमरा खौ असलसे प्रेम करैए आ बोहो जानै छैजे वोकरा हम खौ प्रेमकरै चिऐ । कोनो ने कोनो दिनत सिद्धार्थ घर छोइडके चलिए जेतै लेकिनएखनीतुरन्तेउनै जाइ बला छै। जे किछ भी होई आदमीके जिवनमे एहेन महत्त्वपूर्ण समय आवै छै जहिया घर छोडैछै तकरा असल मानल जाइछै । लेकिन वर्तमान समयमे उ हमरे सङ्गेरहतै ।"

जखनी यशोधरा आपन एहे सव विचारमे मगनभ्याके वैचारिक कल्पनाके उडान भोरैत रहै त अनजानैमे शुद्धोधन वोकर लग एलै। सिद्धार्थके यशोधरा संगे वैवाहिक सम्बन्ध करैके पक्षमे यध्यपि उ नै छेलै लेकिन आव उ यशोधराके वडे माने लागल छेलै। उ देखै छेलै जे लापरवाह सिद्धार्थ यशोधराके सङ्गहैतसे वदैलके आव एकटा जिम्मेवार युवकलखा आपन परिवारमे भीजल रहैछे। उ क्यावेर तनकी करने छेलै जे सिद्धार्थ केहेन असलसे आपन यशोधरा संगे समय व्यतित करै छै। "तोहे असलै से रहै चहकने बहौरिया ?" शुद्धोधन पूछलकै

"ह, वावु, हम असले चिऐ।" ठाडहैके कोशिस करैत उ जवाव देलकै।

"नै, नै, उठैके कोनो जरूरत नै छै, तो वैठले रह" शुद्धोधन कहलकै आ आपनौ एकटा पलङ्गमे वैट रहलै।

सिद्धार्थ एखनी कतै गेलछै ?" उ पूछलकै

"सिद्धार्थ त आपन बगैरिया कपिल आ ललकु सङ्ग वहार गेलछै। उ कहै छेलै जे एकटा ववाजीके आश्रम देखे जेतै। उ आव तुरन्ते लौटके चैल एतै।"

शुद्धोधन जे एखनी सुनने रहै तै मे वोकरा विश्वास नै भेलै। वोकर मनमे धक्का लागलै। वोकर मुह कारी भ्यागेलै। उ टकटकी लग्याके विछेलहा सत्तरङ्गी दिसर ताके लागलै।

यशोधरा किछोने बाजलै। लेकिन उ बुझ्झ गेलै जे शुद्धोधनके मनमे दुःख भेलै। एकक्षणके वाद शुद्धोधन यशोधराके पुछलकै।

"की तोहे वोकरा आश्रममे जाइके सलाह देलहक ?"

"हम कोनो प्रकारके प्रतिकार नै करलिए" ई जानैत जे शुद्धोधन वोई वुनुटामे तामस करतै त यशोधराके जवाव देवे परलै।

"कि तो नै जाने चहक जे वोकरा आश्रममे जाइले दैके वास्ते तो वडा नै निक काम कैलहक ?" कपिलत आपन जिवनके वास्ते वडा निराशावादी छै। उ एखनी तलिक वियाह नै करने छै। वोकरा जिम्मेवारी वहन करैके कोनोटा ज्ञान नै छै। कि तो आपन घरवालाके वोहिनङ्ग हेवे देवहक ?" आपन तामसके कम करैत शुद्धोधन वोकरा पूछलकै।

"नै हमनै बुझहै चिऐ जेसिद्धार्थ कपिलके विचारसे प्रभावित छै। यदयपि कपिल वोकर वहौत दिनका बगैरिया चिऐ। उ त ललकुके विचारके वेसी असलसे मानै छै। सिद्धार्थ त कपिलसे वेसी ललकुके प्रशंसक भ्यागेलछै। उ विचार करै

छै जे कपिल त एक किसिमसे भौतिक वादी चिऐ। कतौ किछ हेवौ एखनी सिद्धार्थ हमरा छोईडके कतौ नै जेतै। उ हमरा असलसे प्रेम करैए आ उ जानै छै जे हमहु वोकरा असलसे प्रेम करै चिऐ। सिद्धार्थ सवदिन हमर लग रहतै से आस हम नै करै-चिऐ। सत्यके खोजैले एक दिन हमरा आ पारिवारिक जिवनके त्याग क्याके वैराग भ्याजेतै। वावहन-पुरहितसवके सिफारिस अनुसार तकी जिवनके आदर्श चरित्र एहिनङ्ग नै है छै ?"

शुद्धोधन यशोधरा संगै वात चित्त नै करै सकलकै। उ जाने छेलै जे वोकरे अध्यात्मिक गुरू एवं सलाहकारके सिफारिस अनुसार जिवनके सवसे वडका आदर्श एहचा चिऐ लेकिन जावेतक सम्भव छै उ सिद्धाथके घरैमे राखे चाहै जैसे कि उ रजाके जिम्मेवारी आ कर्तव्य करतै।

"हम जानै चिऐ जे सिद्धार्थ नचैनिआ गवैयाके सव दिन साझके ऐ ठाम रैहके नाच गान करनाई ठीक नै मानतै। लेकिन ऐ वातके वावजुद हम देश भैरके असलका गवैया आ नटुवैनी सवके ऐ ठाम पठयादेवै। उ विचार करलकै जे सुन्दर युवतीसवके कनखी मटकीसे सिद्धार्थके मन वदैल जेतै"।

"नचैनिया आ गवैयाके अगर साझ खिना सिद्धार्थ देख लेलकै त फेर गजव भ्याजेतै। ऐ विचारसे त आइगमे धी खसतै। सिद्धार्थ कहियो कहियो देखै छै जे गवैया सब कार्यक्रमके वादमे निसा क्याके वेहोस भ्याके भुइयांमे सुतल रहैछै आ कहियो एकदम नङ धरङ ओङधरल रहैं छै। वोकरा सबके एहेन स्थिति देखके त उ वडा ब्याकुल भ्या जेतै। एखनी हमर एहेन समयमे कोनो एहेन क्रीयाकलाप नै हेवक चाही जैसे कि सिद्धार्थ हमरा तैजके चैलज्या।" यशोधरा आपन ससुरके विन्ती कैलकै"।

शुद्धोधन जानलकै जे उ अन्यमनस्क हालतमे एहेन वात वाजलै तै उ विचार करे लागले।

यशोधरा ठिक कहै छै। सिद्धार्थ वड चैतन्य व्यक्ति चिऐ। वोकरा उ वहौत असलसे जाने छै। हमरा एकर इच्छाके कदर करैके चाही इ त वडा साहसी आ बुधियाइर जनिजात चिऐ। ई विचार कैलकै त आपन पुतौहके प्रति शुद्धोधनके वात्सल्य और वेसी बैठ गेले। उ लगमे एले आ यशोधराके शीर छुइबके मामत जनैलकै आ आशिर्वाद वैत कहलकै, "खौ असलसे रह वहौंरिया।" एतहैक कैहके चेल गेलै।

यशोधरा अपनाके नै थामहे सङ्कलकै त एसगरे सुक सुक क्याके काने लागले। उ जानै छेलै जे शुद्धोधन आपन वेटाके वड मामत करैछै आआपन पछामे सिद्धार्थके

शाक्य सबके रजा वनवे चाहैछै। उ यहो जानैछेलै जे सिद्धार्थ उ काम कहियो ने करतै जे काम वोकरा शाक्य सबके रजा भ्याके हरदम करे परतै। सिद्धार्थके प्रति श्रोकर प्रेम श्रा मामत ततहेक वैढ गेल छेलै जे उ वोकरा कखैनियो श्रा कहियो दुःखित हैत देखे नै चाहै श्रगर ऐ के वास्ते वोकरा श्रापने दुःख सहे परै से भियाठ। श्रगर यशोधरा के कोनो प्रकारके वलिदानसे सिद्धार्थ खुसी है छैले त उ हरदम तैयार रहैछेलै। यह्मासब विचार करैत यशोधरा वडे कानलै श्रा कानैत कानैत थाइक गेलै त विछोनामे ज्याकेपेलैट रहलै श्रा निन्या गेलै। उ तखनी श्रकचक्याके उठलै जाम वोकर शरीरमे कोनो गरम सांसके संगै चुम्बनके श्रनुभव भेलै। श्राइख उघाइरके देखलकै त सिद्धार्थ वोकर उपरमे झुकल वोकरा प्रेम करैत रहै। उ श्रापन दहिना हाथ सिद्धार्थके गर्दनमे श्रोझन्याके श्रौरो झुक्या लेलकै।

"कि तोरा श्रसल ववाजीके श्राश्रम भेटलौ? सिद्धार्थके खिझहावैत घरवाली पूछलकै।

"श्रहं, सिद्धार्थ वोकर कान लगमे कहलकै। एखमी थोरहेक समयके वास्ते हमर श्राश्रम एहे ठाम छै, एखनी हम एकरा त्याग नै करे चाहै चिऐ।"

११ – एगारहम

बच्चा जनमलैके समयमे सिद्धार्थ घरैमे रहै। यशोधराके जन्मासोचके समयके बिचार क्याके कपिलबस्तुके खौ श्रनुभवी श्रनुभवी दगरिन सवके शुद्धोधन नियुक्ति करने रहै श्रा हवैलिऐ मे राखने रहै। यशोधराके समय एलै त स्वभाविक दरदके श्रनुभव हेवे लागलै त वोकरा सौरी घरमे ल्यागेलै। सिद्धार्थ सटले बगलके कोठलीमे रहै। प्रत्येक क्षण वोकर उदभिग्नता बडहल जाई।

जन्मासोचके समयमे स्वभाबिक लेकिन बहौत समयतक हेवैवला मर्मान्त दरदसे यशोधरा छटपटचा रहल छेलैसे दोसर कठलीमे बैठलहा सिद्धार्थ सुनै जे वोकरा झक झोइर देलकै। उ एक ठाममे नै रहै सकै। उ श्रापन जगहसे उठै श्रा घरे भैर एने से वोने टहलै। कनहिके कलामे उ थाइक जाई त बैठ रहै। एके क्षणमे फेर उठै श्रा बुले लागै। दोसर कोठलीमे दरदसे यशोधरा छटपटवै श्रा ऐ कोठलीमे यशोधराके दरदसे सिद्धार्थ छटपट करै। वोकर वास्ते ई समय खतम नै हेवैवला

दुःख रहै। एका एक यशोधराके किकिएनाई बन्द भ्यागेलै एक दम शान्ति भ्यागेलै सिद्धार्थके धुक धुकी जेनङ्ग बन्द भ्या गेलै। वोकरा जेनङ सर्दि छुइव लेलकै। आ कि दोसरे क्षणमे वडा मामत लागैवला चिचियाहट शुरू भ्या गेलै। ई अवाज नवजात बच्चाके छेलै जे पृथ्वीमे आपन पदारपणके सूचना द्या रहल छेलै। सिद्धार्थ जेनङ आपन ठाममे खैस परलै।

सबसे पहिने वोई सौरी घरसे गौतमी बहरैलै, जते यशोधरा बच्चाके जनम देनेरहै। "तो आब एकटा सुन्दर बालकके बाबु भेलही तकर गौरवके अनुभव नै करैचिही ?" गौतमी पूछलकै।

सिद्धार्थ किछो नै वाइजके चुपेचाप रहलै। ई सम्पूर्ण दृश्य वोकर वास्ते नै बिसरैवला दुःखपूर्ण घटना रहै। उ गौतमी दिसर एक क्षण टक टक ताकलकै आ बिहुस देलकै। गौतमी ई नै जाने सकलकै जे ई बलपूर्वकके बिहुसनाई छेलै।

"अच्छा, आव हमरा सवके बच्चाके शुभ नामकरणके वास्ते असितके सलाह लेवे परतै।" गौतमी सलाह दैके आवाजमे सिद्धार्थके सुनैलकै।

सिद्धार्थ नकारात्मक मे मुडीझारैत कहलकै, की ई जरूरी छै ! फेर उ विचार करेलागलै बावहन पुरहितके चलेलहा ई एकटा दोसर अन्धविश्वास चिऐ। उ सवके विश्वास छै ज शब्दमे मन्तर के शक्ति हैछै यहैले नवजात बच्चाके नामकरणाके शुभ अवसरमे एकटा शुभ आक्षरसे प्रारम्भ हेवक चाही आने त ई बच्चाके नोक्सान पुगैतै। हमरा सवकेजिनगी कहवी आ अन्ध विश्वाससे भोरलछै। हमरा सव कहिया ऐ सवसे फूर्सत लेवै ?"

उ आव ऐसमयमे बच्चा आ यशोधराके देखैले उताहुल भ्या गेल छेलै। वोकरा ऐ नामकरणके झंझट वला वातसे कोनो मतलव नै छेलै। लेकिन छवा आ छवैतके देखैले वोकरा साझहुलगाइर तलिक असियावे परल छेलै। ई वडा नै बिसरे वला दुःख पूर्ण असिएनाई छेलै। गर्मिके महिनामे वोकर लेखे एक एक क्षण एक एक दिन वितै। वोकर मन मस्तिष्कमे विचार धाराके एकटा कडी छुटै त दोसर उत्पैन लै आ फेर टुटै आ फेर जनमै।

यशोधरा केहेन भेलहेतै ? कथिले वोकरा असह्य दुःख आ दरद भेलै ? लोक सव कहैछै जे जन्मासोचके समयमे ऐ प्रकारके दरद भेनाई स्वभाविक है छै। लेकिन प्रकृति वोकरा ऐ दुःख दरदके वास्ते दोसर कोन चिजसे पूर्ति करतै ? एहेन कोन चिज हेतै जैसे उ आपन प्रीयतमाके दुःख बटवारा करे सकैतै ? उ नै जाने छेलै। जावेतक वोकरसे भेट नै हेतै तावे तलिक वोकरा सबुर नै हैतै।

बडी कालमे वोकरा यसोधरासे भेटकरैले सौरी घरमे जाइके सलाह् भेटलै। वोई घरमे ज्याके जे उ देखलकै से सवटा बिश्वास करै वला नै छेलै। उ विचार करै छेलै जे यशोधरा दुःख आ पिडासे बेमार आ हरदियान भ्या गेल हेतै किएक त जन्मासोचके दरदसे उ बडिकाल तलिक छटपटचा रहल छेलै। तैयो जाव उ वोकर बिछोना लग गेलै त देखलकै जे यशोधराके मुखमण्डलसे विचित्र प्रकारके सन्तोषके आभा छिटैक रहल छेलै आ वोकर वास्ते ई वडा चमत्कार छेलै। नवजात बच्चाके मुह छोईडके सौसे शरीरमे शुभ्र उजर रेसमी कपडामे लपटचाके वोकर कांख लग सुत्या देने छेलै। उ खौ असल से छवा आ छवैत दुनुके लिहारलकै आ घुईमके ज्याके यशोधराके बिछोना दिसर बैठरहलै।

यशोधराके केसके आपन अङगुरी लके रसे रसे ककहैत उ पूछलकै।

तोरा असल लागै छौ, ने, कनिया ?

"हम ठिके चिऐ।" जवाव देलकै यशोधरा।

सिद्धार्थई सुइनके ऐहेन छकपरलैज वोकरा वाजलनै गेलै।उ मनै मन बिचार करैछेलै जे यशोधरा कहतै जे वोकरा वड दरद भ्या रहल छेलै।

"हम वोई कोठलीमे छेलिऐ जखनी तोरा दरदसे छटपटयाईत सुनलिऔ।" सद्धार्थ कहलकै।

यशोधराके मनमे धक्का लागलै। उ बुझहै छैलै जे देशके गरिब गुरूवाके दुःखसे उ कतहेक दुःखित रहै छै। धनिक व्यक्तिके घरमे काम करैवला नोकर चाकर, गरिब ग्रामिण, संतिज्ञ एवं नचैनियासब जेकरा आपन भरण पोषणके वास्ते जे बडका तकलिफ उठबैछै तकर दुःख देखके सिद्धार्थ आपनै पीघलल रहै छै। तै मे आपने प्रीयतमा घरवालीके जन्मासोचके समयमे भेलहा बडका दुःखके देखके वोकरा कतहेक दुःख भेल हेतै। वोकर मन छोट भ्या गेलै जे उ वोकर छटपटेनाई सुइन लेलकै उ बिचारकैलकै जे ई घटना वोकर मनमे नै बिसरैवला छापदैत रहतै। उ वोकरा निश्चित करे चाहल कै जे जन्मासोचके बादमे जे वोकरा संतुष्टि आ आनन्दके अनुभव भेलै तकर अगामे पहैनका दुःख किछोने छेलै।

"उ त बच्चा जनम लै से पहैनका बात छेलै।" यशोधराकहे लागलै, "वोकर जनमके तुरून्ते वादमे हमरा वडा उसासके अनुभव भ्याल आ दुःख दरद सेहो हन्या ग्याल। इ त लोकसव बडका झाट बिहाइर के वाद जे अनुभव करैछै तहिनङ्गे भेलै आ जाव हम बच्चाके कोह्या-कोह्या सुनैलिऐ त उ दुःखपूर्ण छटपटि जे जन्मासोचसे पहिने हैत रहै सेहो बिसन्या गेलिऐ। हमरा जे जे आ जेनङ जेनङ दुःख

रहै सवटा हेन्या गेलै, आव किछोने बाकी छै । लेकिन हमरा लागैएजे तो वोई दुःखसे एखैनियो दुःखित भ्या रहल चिही, चिहीने ?"

सिद्धार्थ हांसै के असफल प्रयास कैलकै ।

"हम सुख आ दुःख दुनुके अनुभव करै चिऐ ।" सिद्धार्थ कहलकै ।

"लेकिन हम देखै चिआैजे तोहर सुख रसे रसे बिल्याल जाइछौ जावकी तोहर दुःख बडी जोरसे बडहल जाइछौ, की ई साचनै चिऐ" ? पूछलकै यसोधरा । जिनगी दुःखपूर्ण छै । बिचारमे डुगल सिद्धार्थ अनमनवैत कैफियत देलकै । नै, यशोधरा भिडगेल, जिनगी सुखसे भोरलछै ह, कहियो कहिये ऐ सुखमे दुःखके छोटका बादल मडडावैछै लेकिन उ छोटका दुःखके बादल त सुखके और वडका बन्या दै छै । तो जानै चिहीजे एखनी बर्तमानमे हमरा कतहेक खुसी भ्या रहल आइछ ? वडा प्रेम दृष्टीसे घरवला दिसर ताकैत यशोधरा पूछलकै ।

उ आपन प्रियतमा घरवालीके वखानके आपन प्रेमपूर्ण बिहुसनाइके मार्फत आपन समर्थन त जनैलकै लेकिन चुपचाप रैहके ऐ बातके संकेत क्या देलकै जे तोहर बातके स्वीकार करनाई बढिया बिचार नै हेतै !

सिद्धार्थ एखनी वोई लाले बच्चाके कोरामे नै लेवे चाहै छेलै । छोट चिज देखैले वड लुसुर गुजुर लागै छेलै । वोकरा डर है छेलै जे उ कहौ बच्चाके तकलिफ ने दचादै किएकत लाले बच्चाके वोकरा वोकैके ढंग नै छेलै । लेकिन उ वोकर वास्ते वात्सल्य प्रेमके अनुभव करे लागल छेलै । बिछोना लग ठाढ भ्याके उ आपन बेटाके देखे लागलै । यशोधरा आपन घरवलाके मनःस्थिती पैढ रहल छेलै । उ वेखलकै जे बेटाके वास्ते वापके मुहमे बात्सल्य आ करूणा भोरल छै से देखके यशोधराके आपन पतिके प्रति वडा गौरवके अनुभव हेवे लाग्लै आ तहिनङ बच्चाके प्रति आ आपनौ प्रति गौरवान्वित भेलै ।

सिद्धार्थ घरसे बहन्या गेलै । घरमे हल्ला खल्ला सुनलकै त बुझ्झ गेलै जे आव वडा झंझटके कार्य एलै । उ वडा एकाकीपनके अनुभव करे लागेलै । यशोधरा थोरहेक दिन आपनै कोठलीमे बन्द रहतै । वोकर बगैरिया सव आव वोकर लग तेहन नै आवै छेलै जेनङ बियाहसे पहिने आवैत रहै तै उ हवैलीसे बहार भ्याके आपन बगैरियाके ताके नै ज्या चाहै । उ विचार करै जे यशोधरा वोकरा कोनो समयमे वोल्या सकै छेलै । वोकरा एहै आखा पखा रहनाई जरूरी छेलै ।

ई एकटा शान्तिपूर्ण राइत छेलै लेकिन सिद्धार्थके मन मस्तिष्कके वास्ते कोनो वोसर प्रकारके प्रभाव नै आने सकल कै । उ अखैन तक बिहौनका हृदय बिदारक

दृष्यके बिसरे नै सकने छेलै । हवैलिके अगा बाटे गेलहा बाटमे उ आपन विचारमे निमग्न एने से ओने टहलल फिरै छेलै ।

ऐ दुनियाके दुःखके पहाडसे बहराबैके कोनो बाट नहिए छै । सुखके जतहेक चहना केल जाइछै ततहेक वडका दुःखके पहाड टुइटके आवै छै । धन कमवैले लोक कपाडके घाम एडी दने चुवावै छै । जतहेक बेसी धन कमावैछै ततबेहेक और बेसी धन हैके वास्ते दौडैत रहैछै । धनिक व्यक्तिसव धन कमवैले आपन सवटा बल वोहेमे खर्च करैत रहैछै आ कमेलहा धनके रक्षा करैले वोहीसे बेसी चिन्ता करैत रहैछै । कोई कोई आपन उ धनसे सुख खोजने फिरैत रहैछै । उ सव असल असल कलाकारके नियुक्त क्याके मनोरञ्जन करैत रहैछै । सुन्दर सुन्दर नवयुवतीसव ऐ लोकसवके मन बहलावैले गीत गावैत, नाचैत रहैछै । बेश्या प्रबृतिमे फासल नवयुवतिसवके मार्फत उ सव आपन बासनाकेसन्तुष्टिके लौलसासे सहबासमे भीडल रहैछै । सन्तुष्टि प्राप्त करके लौलसामे उ सव एहै प्रकारके पथ भ्रष्ट काममे व्यस्त रहैछै जे एक-ने-एक दिन वोकरा सवके सन्तुष्टि प्राप्त भ्या जेतै । कोई शासक हेवे चाहैछै । जाव उ शक्तिके वोई पदमे पुगै छै त वोकरा वोई पदके रक्षा क्याके राखैके चिन्ता लागल रहैछै आ उ वोकरा नै त्यागे चाहैछै । उ वोई शासनके अभिभारा आपन सन्तान जे योग्य अथवा अयोग्य, सक्षम अथवा असक्षमके मात्र सोपे चाहैत रहैछै । पुरहित वावसहनसव सवहक जिवनयापन क्रममे आपन नेतृत्व देवे चाहैत रहैछै । उ सव हकाहकी कहैत रहैछै जे ई अधिकार वोकरा ब्रह्मा से भेटल छै । वोकरे सन्तान सव मात्र एकर अधिकारी भ्या सके छै, दोसर ऐ जिम्मेवारीके चाहे उ योग्य आ करै वला छै तैयो एकरा नै निमहे सकतै । प्रत्येक व्यक्ति कोने-ने-कोनो लभ्य बस्तुके प्राप्त करैके प्रयासमे रहैछै । सवगोडे वोई इच्छित बस्तुके प्राप्त करैमे असफल भ्याके दुःखित हैछै, आने मन मनिय्याले रहै छै । ऐ दुनियामे कोई छै , जे वास्तव मे सुखी छै ? ऐ दुनियाके ई दुःख, दरद, निरासा घबराहट, आ चिन्तासे पार भ्याके स्वतन्त्र हैके वास्ते कोनो बाट छै, कि, नै ?

सिद्धार्थके उ आश्रम मन परलै जते उ कपिल आ ललकु संगे गेल रहै । वोई ठामके उ महात्मासव सवप्रकारके अरामके त्याग क्या देने छै । इन्द्रिय सुखके समन क्या ने नेछै । भौतिक सुखके चट्टक छोईड देने छै । उ सवके कथी हैछै ? की वास्तबमे उ सव सूखी जिवन यापन करैछै ?

"आश्रम वडा शान्त बाताबरण निमाह करैछै । महात्मासव आपन जिवनके बिषयमे कथी अनुभव करैत रहैछै । उसव भोजन-बसनमे बहौत कम

बस्तुके उपयोग क्याके आपन निमहता करैत रहैछै। वोकरा सवके चहना बहौत कमे हैछै। थोरबेहेकमे काम पूरा क्या लैछै। तैयो वोहोसवत कोनो चिजकेखोजिमे रहैछै। वोकरा सव जैं चिजके खोजिमे लागलछै से चिज प्राप्त नै भेलापर दुःखके अनुभव करैछै, किनै, ? पछतवा हैं छै कि नै ?"

"ऐ प्रकारके लगाव पूर्ण समिधासे छुटकारा पावैके जरूर कोनो बाट हेतैं। की, आदमी ऐ प्रकारके आपनै इच्छा पूर्ति करनाई रूपी जंगलमे घैरल रहतै ? तै यो हमत शासक वर्गके सन्तान चिऐ। की, हमरा शासक वर्गके वल नै निकालक चाही ? हमरा सवकेत कहविए छै जे लडाईमे ज्याके पीठ देखेनाई से मोईर जेनाई असल मानल जाइछ। बिश्वामित्रसे त हम यह्यासिखने चिऐ।

मैया गौतमी जाव हल्ला क्याके कहलकै त उ आपन बिचार तन्द्रा भंग क्याके अकचक्या उठलै ।

वौआ, वडका राइत भ्यागेलै तो बिचारनै करै चिहीजे आव सुतैके वेर भ्यागेलछै ?"

"ह, मैया, सिद्धार्थ जवाव देलकै आ रसे रसे घर दिसर गेलै। जाव उ आपन सुतना कोठलीमे पुगलै त यशोधरा आ बच्चा जे रेसमी कपडामे लटपटचाल महताइरके वाहमे सुडी राखने निश्चिंतसे दुनु छवा छवैत निद्रा मगन भ्याके सुतल देखलकै। सिद्धार्थ वोई ठाम सुरते लखा बच्चा आबच्चाके महताइरके टकटकी लग्याके देखैत रैह गेलै। वोई दुनुके बिहुनका मेहनैतके अनुसार अरामके सख्त जरूरी रहै। वोकर मनमे वोई दुनु प्रति स्नेह उमैड उठलै। उ बिचार करे लागलै जे वोकर जिनगी आव वोई प्रकारसे कहियोने चलतै जेनङ उ खुद बिचार क्याके चलवे चाहतै। आव त वोकर उपरमे बच्चाके लालन पालनके जिम्मेवारी चैल एलै। बेटा दिसर जतबेहेक ताकै ततबेहेक वोकर प्रति माया बडहल जाई। एतहैक तलिक जे मानबिय दुःखके बिषयमे जे उ बहौत वरिससे चिन्तन क्या रहल छेलै तहौंसे वोकर ध्यान थोरहेक समयके वास्ते वन्चित भ्या गेलै। वोई बच्चाके कनी कनी हाथ, टांग सव नै मिलल छेलै एखनी वड लुसुर गुजुर छेलै तैयो सिद्धार्थके मन मस्तिष्कके वरिस वरिसके चिन्तनके गराइस लेलकै। एहेन बिचार वोकर मनमे कहियोने पनपल छेलै। सुरूज ग्रहण लागै छै त दैनिक कार्य क्रममे भेलहा घटित परिवर्तन मनुष्य एवं पशु दुनुके सन्देह उत्पन्न क्या दैछै तहिने वोकर मन मस्तिष्कमे ग्रहण लग्याके उ बच्चा सन्देह उत्पन्न क्या देलकै। वोकर बेटा वास्तबमे ग्रहणके प्रतिनिधित्वकरे लागलै। राहु जे कहियो कहियोसुरूज आ चानके

पकैडके भ्या ल छै तहिनङ उ बच्चा वोकरबिचारके ग्रहण लग्या देलकै उ बास्तवमे राहुके छोटका रूप छेलै । राहु ।

सिद्धार्थ रसे रसे लगैमे सुतलाही नौडी दिसर ताकलकै आ कोठलीसे बहार भ्या गेलै । आदमीके अस्तित्वके कठिनतम घेराबन्दीके बुझनाई एखनी बहौत दूर चेल गेल छेलै । उ कथी बिचार करै छेलै तै मे वोकरा स्वयं शंका उत्पन्न भ्या गेलै । केनङके एकटा लाले बच्चा वोकर मनमे ऐ प्रकारके भवनाके श्रृजना क्या सकंछै । ताव कहै चिऐ जे साचे राहुल चिऐ, राहुल ।

१२ – वारहम

जिवनके कठिनतम व्यवहारिक स्थितिके सम्बन्धमे सिद्धार्थके कपिल आ नरदत्त असल बैचारिक खोराकसे सहयोग करलकै । तैयो ललकुके सहवाससे वोकर भितरमे जे अध्यात्मिक चिनगारी उठल रहै से वडका भमहूर भ्या गेल छेलै । ऐ मैमलामे वोकर गुरू वास्तवमे वोकर आपनै अनुभवके बात रहै ।

यशोधरासे वियाह करलाके फलिभूत भ्यागेल रहै । यदयपि उ अनुभव क्या लेलकै जे ऐ प्रकारके सन्तुष्टि थोरबेहेक समयके वास्ते रहैछै । उ येहो बिचार करेलागलै जे इन्द्रिय जन्य सन्तुष्टिके बदलामे आव दोसर प्रकारके आनन्दातिरेक देवैवला प्रेम एवं स्नेह आपन स्थान जम्या रहल छै । मनके उद्वेलित करै वला ए प्रकारके प्रेम रस उ यशोधरासे प्राप्त करने छेलै । राहुलके जन्मासोचके समयमे यशोधराके भेलहा दुःखके समैझके उ वडा व्याकुल भ्या जाइछेलै । उ यहो सुनने रहै जे वोकर महताइर वोकर जनमके समयमे भेलहा गडबडीके कारण स्वर्गवास भेलरहै । ई त यशोधराके राहुल जनम लै के समयमे भेलहा आक्रोसके सिद्धार्थ अनुभव करने रहै तैसे पहिने वोकरा ऐ प्रकारके खरताके कोनोटा ज्ञान नै रहै । बियाह भेलै त यशोधरा संगे उ खौ रमल छेलै आ मज मस्तिमे डुबल रहै आ तैसे ई जरूरी भ्या गेलै जे राहुलके जनम हैके करतूत पूरा भेलै । आव उ ई बिचार करे लागल छेलै जे राहुलके जन्मासोचके समयमे अगर यशोधराके किछो अनहोनी भ्या जेतिऐ त आनन्दातिरेक देवै वला प्रेम एवं स्नेहके सेहो पूर्ण रूपसे अन्त भ्या जेतिऐ ।

राहुलके प्रथम बेर देखलाके बादमे जे वोकर प्रति करूणामय वात्सल्यत उत्पन्न भेलै से त आपनै बढले चैल जाई छेलै, तकरौ अनुभव उ कैलकै । बच्चा राहुलके टाङ हाथ चलेनाई, पेटकुनिया परनाई ठेङ्गहुनिया लरनाइसे घर भैरके लोकसबके आपन दिसर आर्कषित क्याके खुसीमे कीलकारी मारैत व्यवहारके देखदेखके सिद्धार्थके मायाके वारीके टाट बिस्तार भ्यालचैल जाइछेलै । उ ज्याबेर राहुलके आपन कोरामे ल्याके दुलार करै छेलै त्या बेर एके किसिमके बात्सल्यताके अनुभव करै छेलै ।

सिद्धार्थके मोह मयाके दुनिया विस्तार भ्या रहलछेलै। सबसे पहिने मैया-बाबु ऐ बात्सल्यके दुनियामे एलै, तकरा प्रेमके नाम दयाके यशोधरा ऐ फूल-वाइरमे प्रवेश करलकै आ आव राहुल ऐमे न्याकजीके काम क्या रहलछै। जनेन्द्रिय द्वारा प्राप्त केलहा आनन्दके तुलनामे ऐ प्रकारके स्नेह एवं बात्सल्यताके प्रेम बहौत उपरका खाडीहीके हैछै। तैयो ई युग युग रहे वला त नै चिए। एक बेर ई यशोधराके जन्मासोचके आक्रोस एकर परिचय छेलै। एहेन कोन चिज भ्यासकै छै जे ए डरके भग्या सकवै ? मानव जिवन अमर नै खेने छै। ई त एकदम क्षणभंगुर एकटा पाईनके हिलोर लखाछै ।

"जिवनके कडीके जिजीर रूपी समस्याके समाधान करैके कोनोटा बाट नै भ्या सकैछै ? उ आफ्नैमे विचार करे लागलै। ए क्षणभंगुरता एवं दुःखसे छुटकारा पावैवला कोनोटाबाट हेतै जैमे लोकसब आनन्दके अनुभूति करतै? बावहन पूजारीसब दान दातव्य देलासे स्वर्गमे अमर जिवन यापन करैके प्रतिज्ञा करैत रहैछै। अजित केशम्बली एवं मवखाली गोसल सन्तसब ई दावी करैछै जे प्रकृतिके व्यवहारके बदलैमे आदमीके कोनो प्रभुता नै चैल सकै छै। दोसर दोसर सन्तजेनङ्ग यज्ञवालक्यई कहैत फिरछै जे आदमी आपन बल बुताके करतूतसे सबटा दुःख जंजालके हट्याके अमरत्व प्राप्त क्या सकैछै। साचे, अमरत्वके कोनो स्थिति भ्या सकैछै ? एहेन बुझ्झपरै छै जे भगवानके सीरजलहा ऐ दुनियामे जै ठाम असन्तुष्टि भोरलछै आ तैसे नै उवरै वला दुःखके सिरजन हैछै से कोनो बढिया बात नै चिऐ। अगर भगवान सर्वशक्तिमान रहतिऐ जेनङ्ग कोई कोई बिश्वास करैछै त ऐ दुनियाके एहेन दुःखमय नै बनैतिऐ। निश्चित रूपसे कतौने कतौ एकटा बाट देखैने रहतिऐ। वोई बाटके पकडलासे कतौ नै कतौ स्वतन्त्रता प्राप्त करतिऐ। भैरसक उ बाट अज्ञानता आ पूर्वाग्रहके जनश्रुति आ अन्ध विश्वासकेझूठ फूसके भजन किर्तन आ पावैन तिहारके अखाखोह जङ्गलमे बिल्यागेलछै।"

उ आपन घरवाली यशोधरा एवं पुत्र राहुलके प्रति आपन प्रेमके सेहो बिचार करलकैं आ वोकरा सबके लालन पालनके आपन जिम्मेवारीके सेहो असलसे बुझहलकं। ओकरा ऐ मायाजालके छोडैके एखनी कोनो बाट नै सुझ लै। वोकरा आपन पिता शुद्धोधन जे शाक्य बंशके शासनाधिकारी भ्याके शासन क्या रहल छैलै तहिनङ वोकरौ सेह्मा करे परतै।

"लेकिन ई सम्भव नै छै। उ मनै मन दुःखसे रोष्या गेलै। "हमर बाबु ऐ राज्यके एकटा शासनाधिकारी भाईयोके बहौत गोडेके भलाइके सहयोग नै करे सकलकै। ऐ ठाम बहौत वडका समाजछै जेकरा दुःख चारू कतासे घैरने छै। हमर बाबु वोई समाजके केनङ्क्याके भलाईके सहयोग करे सकतै जे आपने प्रीयतमा रानी, हमर मैयाके नै बचवे सकलकै? तहिनङगे हम आपन कनिया यशोधरा आ पुत्र राहुलके केनङ्ग क्याके भलाई करे सकवै। हम आपने बाबु नहाईत वेवस चिऐ। ऐ के वास्ते कोनो दोसर बाट नै छै वल्कि ऐ जिजिरके दुःख पूर्ण अस्तित्वके समस्याके समाधानके रास्ताके खोजी करै परतै। अगर हम ऐ समस्याके समाधानके बाटके खोइज लेवै त हम, प्रीयतमा यशोधरा आ पुत्रके भी सहयोग क्या सकै चिऐ। आपन पिताके गौरव बडहृचा सकै चिऐ दुनियाके दुःख आ चिन्तासे छुटकारा दिया वैके सहयोग कैर सकै चिये। हम ऐ सम्पूर्ण मानवताके दुःख पूर्ण जंजालसे छोडा बैकेबाटमे सहयोग क्या के सुख दैके स्थितिमे बन्या सकै चिऐ आ आपनै हम अपनाके बच्या सकै चिऐ।"

पति परायणता मानिनी यशोधरा बुझ्झ गेलै जे वोकर प्रीयतम घरवाला आपन जिवनके सम्बन्ध मे वडा कठिन मनःस्थितिके बिचारमे डूगल रहैछै। वोकरा आपन प्रति घरवालाके प्रेम भवना सम्बन्धमे कोनो प्रकारके सन्देह नै छेलै आ तहिनङ पुत्र राहुलके सेहो बहौत मामत करै छेलै। राहुलके जन्म लैके समयमे भेलहा घटनाके विषयमे उ हरदम चिन्तामगन रहै छेलै आ फेरसे वोई प्रकारके जालके फेरामे नै परवै लैके वास्ते हरदम सतर्क रहै छेलै। तैयो यशोधरा प्रतिके वोकर प्रेम कहियो कमनै भेलै। उ औरो वोकरा बेसी स्नेह करे लागल छेलै आ बच्चाके सेहो वड मामत करे लागल छेलै।

रजा शुद्धोधनके पुरहित जे सिद्धार्थके विषयमे भविष्यवाणी करने छेलै तैसे रजा आपन वालक पुत्रके सम्बन्धमे हरदम ङेन्याल रहै छेलै आ वियाहो भेलाके वाद डर नै हत्याल छेलै। वोकरा डर है छेलै जे वोकर एसगरुवा पुत्र राजशाही सुख भोगके त्याग क्याके बैरागी ल्यालेतै आ एसगरे जङ्गलमे तपस्या करे चैल जेतै। लेकिन राहुलके जन्म लेलाके बादमे ऐ प्रकारके परिस्थितिमे पूर्ण रूपसे परिवर्तन

हैत देखलकं । उ देखैं छेलैं जे पुत्र भेलाके बादमे सिद्धार्थ यशोधराके और लगमे चैल एलैं । दुनुके प्रेममे प्रगाढता एल छेलैं । ई बात रजाके खुशिके बास्ते बहौत वडका चिज छेलैं जे वोकर पुत्र सिद्धार्थ आव आपन घर व्यवहारमे लाइग गेलैं आ उ आपन घरसे बहार हैके बिचारमे कोनो सहमति नैं राखे छै । उ आपन पुतौह यशोधरा आ पौत्र राहुलके प्रति मनैंमन वडा कृतज्ञ भ्या रहलछेलैं । ऐसे बेसी वोकर पुत्र सिद्धार्थ एवं पुतौह यशोधराके सम्बन्धके विषयमे जनकारी प्राप्त करैंके दोसर माध्यमनैं छेलैं जे वास्तवमे खोला कोन दिसर हुडके चाहैं छेलैं। राहुल त रजा शुद्धोधनके वात्सल्यताके सबसे वडका खेलौना भ्यागेल छेलैं उ त आपन पौत्र संगै रैंहके वोकरा मामत करैले आपन सरकारी काम काजके सेहो अनठयादैं उ आपन पौत्र एवं पुतौहके आराम एवं सुखदैंके खातिर ऐहेन कोनो चिज उठयाके नैं राखैं जैंसे उसबके मनसे कोनो प्रकारके दुःख पुगैं ।

एकर बिपरीत,पिताके देखैंजे उ आपन पौत्र एवं पुतौहके आइखमे बैठने रहैछै त सिद्धार्थ मनैं मन खुशी हेवैं जे हमर पुत्र आ घरवालीके असलका गाछके छहाईर भेटगेलैं । वोकरा डर हेवैं जे घर त्याग करलाके बादसे वोकर घरवाली यशोधरा एवं पुत्र राहुलके वडका दुःख हेतैं । उ सब दुःखसे हृदिया जेतैं । ई सब बिचारके बुझ्झके उ घर त्याग करैंके बिचार छोईंड देने छेलैं । लेकिन जाव देखलकैं जे पिता शुद्धोधन आपन पौत्रले बेहाल रहैछ आ पुतौहके मामत करैं छैंत, ओकर डर दुर हेवे लागलैं । वोकरा आव पूर्ण विश्वास भ्या गेलैं जे रजा शुद्धोधन वोकर घरवाली यशोधरा आ पुत्र राहुलके सब प्रकारसे मामत कयाके पालन पोषण करवे करतैं । अगर उ तपस्याके बलसे कोनो समाधानके पत्ता नैं लगवे सकतैं त लौटके फेरो घर एतैं आ पिता रजा शुद्धोधन एवं शाक्य राज्य कपिलवस्तुके जनताके इच्छानुसार आपन राजकाज चलबे लागतैं । लेकिन अगर उ आपन लक्षके हासिल क्या लेतैं तावत कोनो बातेने रहतैं । उ खालीआपने अथवा आपन परिवारेटाके भलाई नैं करतै वलिक संपूर्ण मानब जाइतके वास्ते ई वडका काम हेतैं। ई सब बिचार करैंत उ दुनु हाथसे लड्डु देखैं जे वोकर परिवारके कोनो प्रकारके नोक्सान नैं भ्या रहल छेलैं । यशोधरा एवं राहुलके भविष्यके निर्माणमे वोकर अध्यात्मिक परपूर्तिके बाटमे एकटा असलका गलीके देखैं जैसे वोकर विश्वासमे दृढता आइव जाईं छेलैं ।

पति सिद्धार्थके मनमे कोनबात बिचारके खैलबैला भ्या रहलछै से बात जानैले यशोधराके देरी नैं लागलैं । वोकरा उ खोईंघ खोईंघ के पूछै । वोहो आपन बबाजी हैके बिचारके नैं घोसाईरके सबटा बात आपन घर वालीके कहेले नैं

चुकै । जाव उ अनुभव करे जे सिद्धार्थ कखनो बबाजी हैके आ कखनो घरैमे रहैके दोसाधी बिचारमे डुगल रहैछैं त यशोधरा आस लग्याके वोकरसे वहस करे लागैजे आपन घरवलाके भूल्याके घरैमे राखम जैसेकी घरवला बबाजी नै भ्या ज्या । लेकिन जाव उ देखैं जे घरवलाके मन घरछोडैल एकदम उताहुल भ्यागेलछै त उ ऐ बिषयमे वहस करनाई छोइड दैं आ एकटा कोनमे ज्याके सुकुर सुकुर काने लागैं ।

रजा शुद्धोधनके पुरहित आ सिद्धार्थके गुरू असित कालदेवल तेरासी बरीसके पाकल उमेरमे स्वर्गीय भेलैं । ऐ समयमे रजा शुद्धोधन आपन राज काजके कामसे आपन राज भ्रमणमे गेल रहै । रंजा शुद्धोधन कपिलबस्तुसे दुरोग भेलाके कारणे राजकुमार सिद्धार्थके वास्ते जरूरी भ्या गेलैं जे उ आपन गुरू असित कालदेवके कठुबाहीमे जाई । असित कालदेवके मूर्दा देहके एकटा उजरा नौआलके असलसे बाईह्लके एकटा खाटमे सुत्याके रोहिणी लदीके घाट जेकरा वडा पवित्र मानल जाई छेलैं तते ल्यागेलैं आ लदीके जलमे मूर्दाकि डूग्याके स्नान कन्याकेदेहसे पाइन बेरबैले एक क्षण उपरमे छोइड़ देलकैं । लदीके घाटके कातैमे मध्यम प्रकारके काठके एकटा अछिया तैयार क्याल गेल छेलैं तैं मे वोई मूर्दाकि सुत्या देलकैं । अपरजात घी आ सैंरसो वोई अछियामे देलकैं । आइग दैबै वलाके हाथे पहिने मूर्दाकि मुहमे आ पाछे अछियामे घुईम घुईमके तीन फेरा उक नेसलकैं । उक नेसैं खला बाबहन सब संस्कृतके बेदध्वनि उच्चारण क्याके मन्त्र पढहै ।

सिद्धार्थ पुरूष वर्गके कठुबाही समूहमे रहै आ असितके अछियासे उठलहा घुईंग्नाके देखैत रहै । उ आपन गुरूके मृत्युसे उदास एवं दुखित रहै । वोकर गुरू स्वर्गीय भेल रहै तैं से उ उदास रहै आ मृत्यु कथिले हेछै तकर नैं सोझरावैवला जालके छगुन-छगुन भ्याके आपन अज्ञानतासे दुःखित भेलरहै । असित कालदेवल कपिलवस्तुके संगे चौगमामे सबसे बडका व्यक्तित्वके पुरुषमे गनल जाई छेलैं । लेक्निन तैयो वोकर मृत्यु एकटा सधारण व्यक्तिके मृत्युसे कोनो प्रकारके फरक नैं छेलैं । त कथी अछियासे उठलहा घुइग्ना महान व्यक्तित्वके गर्दामि मिल्या देलकैं ? वोई नासनै हेवै वला अत्माके कथी भ्यागेलैं ? मृत्यु भेलाके बादमे कथी उ देहके छोइड देल कैं ? अछियासे उठलहा घुईंग्नासंगे वोकर अत्मा भैरसक स्वर्ग दिसर उपर माथे ज्या रहल छैं ? यैं सब बातके बिचार करैंते करैत वोकर मन उचैटगेलैं उ वोई ठाम नै रहे सकलकैं आ दाह सस्कारके अन्तिम परव नैं देखके बिचैमे छोइडके घर दिसर बिदा भ्या गेलैं ।

घर दिसर आवै खना सिद्धार्थ एकदम अनहोनी दुःखद घटनाके मुहैमे परलै। लोक सबके एकटा भीड एकटा जनिजात जे करिब करिव नाङगटे रहै तकरा ढोङ्गा पाथर, लाठी-पराटिसे मारैत खिहारैत हल्लाकैर रहल छेलै। उ जल्दी वोई ठाम पुगलै आ जाव भीडके लोक वोकरा देखलकै आ चिह्लकै त बहौत गोडे वोई ठामसे भाइग गेलै आ बहौत गोडे दुरोगमे ज्याके ठाड भ्या गेलै। थोरहैक लोकसब ठामै छेलै। वोई जनिजातके कपडा फाटल चिटल आ महाक मैल छेलै। उ वडा कठिनसे आपन देहके झापने रहै। सिद्धार्थ घोडासे हेठ भेलै आ वडा छकित हैत वोई जनिजात लग गेलै जे वेहोस भ्याके भूइआमे खसल रहै। लोकसबके फेकलहा ढोङ्गा पाथरके चोटसे उ खैस परल छेलै। कपाडमे लगलहा ढोङ्गाके चोटसे ओकर कपाड फुइट गेल छेलै आ लहु रीसै छेलै।

सिद्धार्थ मनै मन तामससे भेर भ्या गेलै।

"ई जनिजात कथी करने रहै जे एकरा ऐ प्रकारसे दुःख देलगेलै ?"

वोई ठाम रहलहा लोकसबके पूछलकै।

सरकार, इ जनिजात वडा खेलाईड़छै; नङिने अवस्थामे ई सौसे गाम भेल फिरैत ज्याह स्याह बाजैत फिरैत रहैछै। गामके जवाइन जहानके घरसे बहरा-बैले मस्किल क्या देने छै। ई एकटा पागल जनिजात चिऐ। हमरा सब एकरा खिहाईरके गामसे भगवे चाहै चिऐ।

"तोरा सबमेसे कोई ई जाने चाहलिही जे ई जनीजात कथीले पागल लखा करैछै ? की तोरा सब एकरा कोनो प्रकारके सहायता करैके चेष्टा कैलही ?"

"जी, नै, सरकार।" एकटा पुरुष जवाव देलकै।

"तोरासबके लाज नै है छौ ? सिद्धार्थ पूछलकै। वोकर तामस बडहल जाइछेलै। "अगर ऐ हालतमे तोहर महताइर बहैन अथवा कोनो आपन कुटुम रहतियौ त कथी करतीहै ? की तो वोकरौसे एहै प्रकारके व्यवहार करतिहै जेनङ्ग ऐ जनिजातेसे क्या रहल चिही ?" वोई ठाम जे दुई चाईर गोडे ठाढ भेल रहै सेसव सिद्धार्थ दिसर डरसे नै ताँके सकलकै। उ एकटा अघेड मरदके लगमे चालकैलकै।

"तोहर घर लगेमे छौ ?"

"जी, सरकार !" आदमी जवाब देलकै

"की तो ऐ जनिजातके वास्ते एकटा कपडाके जोगाड क्या सकै चिही ?"

"जी, सरकार !"

"तो आपन संगे आपन घरबाली अथबा कोनो दोसर जनिजात के नेने आविहे ।

"जी सरकार, हेतै ।" आदमी जवाव देलकै आ आपन घर दिसर बिदा भ्यागेलै ।

कनहिके कलामे उ आदमी थोरहेक कपडा आ आपन घरवालीके ल्याके वोईठाम एलै ।

"की तो ऐ जनिजातके सहायता करैके बिचार करै चिही जैसे उ असलसे कपडा पिनहै ? सिद्धार्थ वोई जनिजातके पूछलकै ।

उ जनिजात आपन रजाके बेटाके इच्छाके दुःखति नै करे चाहै । तै, बातके स्वीकार क्याके मुडी हिल्या देलकै ।

जाव उ जनिजात असलसे कपडा पिनहलकै त सिद्धार्थ वोकर लगगेलै । "तो ऐ प्रकारसे वताहि लखा कथिले गाम भरमे घुमल फिरैत रहै चिही । कयी, तोरा आपन घर नै छौ ?" प्रश्न करलकै सिद्धार्थ–

उ जनिजात बुझ्झगेलै जे ई युवक कोनो वडका बलगरहा लोक चिऐ उ वोकर जवाब दैलैकोनो प्रकारके हान छिन नै करलकै ।

"हमरा आपन घर नै आइछ । आपन गुजर करैले किछो ने आइछ । उ जनिजात कनमनाईत कहलकै ।

"तोरा घरवला नै छौ ? आपन महताइर-वाप, भाई-बहैन अथवा कोनो सगा सम्बन्धी नै छौ ?"

"जी, नै छै । हम जै पुरुषसे प्रेम करै छोलऐ तकर संगे घरसे भाइग गेलिऐ । हमरा एकटा वेटभ्याल । उ दुई वरिसके भेलै । हमरा दोसर वच्चा हैवला छेलै त हम घुइमके आपन घरमे मैया बाबुके देखे चाहै छेलिऐ ।"

आपन मुडी उठयाके वडका वडका आइख दने सिद्धार्थके देखे लागलै । कानैत कानैत वोकरसुखलहा आइखमे सिद्धार्थ वोकर दुःख आ तकलिफके सोझहे देख रहलछेलै ।

"ताव कथी भेलौ ?" पूछलकै सिद्धार्थ ।

"उ सवटा चैल गेलै । हम आपन घर वलासंगे मैया वाबुसे बडी दुरौगमे रहै छेलऐ । जाव हमरा औरके मैयाबाबु लग घुइमके आवै छेलिऐ त वाटैमै हमरा दरद उमडल । हमर घरवला दगरिनके ताकैले गाम दिसर गेलै । वाटैमे वोकरा

एकटा करिया साँप डाइसलेलकै आ उ मोइर गेलै तकर तुरून्त बादमे बडी जोरसे बरषा हेवै लागलै ।" हमर बेटा ....।" कीलहाइर-माइरके उ जनिजात काने लागलै ।

अनकर दुःखसे तुरन्त द्रवित हेवै वला सिद्धार्थ आपनै उन्त्तेजित भ्या गेलै । वोकरा वेसी बातपूछैके साहस नै भेलै । लेकिन एके क्षण वादमे उ जनिजात आपनै कहे लागलै ।

हमर बेटा आपन बापले किलोलकरे लागलै आ दौडे लागलै । एकटा नढिया कोने भरसे एलै आ हमर बेटाके उठ्याके ल्या गेलै ।

"ऐ बेर उ और वेशी जोरसे सुक–सुक क्याके काने लागलै ।

"लेकिन की तोहर महताइर बाप तोरा नै राखलकौ ।"

"नै ।" उ जनिजात कहलकै । "जाव हम घुइमके घर पुगिलिऐ त वोहे राइतके हमर घर आइग लाइग के सुडाह भ्या गेल रहै आ हमर मैया बाबू घरैमे झरैकके मोईर गेल रहै । हमर दोसर पुत्र जन्मा सोच भेलाके तुरन्ते वादमे मोइर गेलै । हमरे जिनगी एहेन कथीले भेलै"?

"दैया गै," सिद्धार्थे वोई जनिजातके सम्वोधन क्याके कहे लागलै । वोई ठाम जमा भेलहा सबगोडे छक परल रहै । मृत्यु एकटा एहेन सत्य चिये जे असानी से नै छुटैछै ।

ऐ बातके जावव देलै सिद्धार्थके कोनो प्रकारके ज्ञान नै छेलै । उ जानैले त जाइन गेलै जे बहौतवेशी दुःख भेलाके कारणसे ई जनिजात बौउय्याके बातह भ्या गेलै । उ पूर्ण रूपसे आपन कंटोलसे बहार भ्या गेलै । उ वोकरा पतियावे चाहै जे मोरनके पार पावनाई वडा मस्किल छै । उ विचार करे लागलै जे एक ने एक दिन ऐ समस्याके कोनो ने कोनो समधानके पता लगैवे करतै लेकिन एखनी त ई जनिजात ऐ समम्याके विषयमे जहिनङ अज्ञान रहै तहिनङ सिद्धार्थ अज्ञान रहै । एकटा चिज उ कैर सकै छेलै जैसेउ जनिजात बुझहै जे हमरा सबके एक ने एक दिन मोरै परतै । उ एकटा उपाय बिचार करे लागलै जैसेकी ऐ जनिजातसे बिदा भ्या सकै ।

"दैया, हम रजा शुद्धोधनके वेटा चिऐ । एक अठवारके वादमे तो हमर दरवारमे आबिहे । हमतोरा सहायता करैके हर सम्भव कोशिस करवौ । लेकिद जाव तो

एबही त कपिलबस्तुके केकरौंघरसे जेकर घरसे कोई नै मोरलछै तकर घरसे एक मुठी चाउर नेने आबिहे।"

"हैतै।" जनिजात कहलकै।

"हम चाहै चिऐ जे तो ऐ जनिजातके आपन घर ल्या जो, एकरा राखिहे, एकरा खाई-पीऐले दिहै आ एकरा दवाई-दारूके बन्दोबस्त क्या दिहै।

"आ तो,' वोई मरदके कहे लागलै।"बिहानके हमर दरबारमे आबिहे त ऐ जनिजातमे भेलहा खर्चकेसवटा रकम हम फिर्ता क्याके पूरा क्या देदौ।"

उ आदमी सिद्धार्थके बात स्वीकार कैलकै। सिद्धार्थ आपन घोडामे चढलै आ एडी लग्यादेलकै। वोकर बास्ते ई वडा दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव रहै।

मगनमे भगन आ तैसे दुःख। आदमीके जिवनके सवसे वडका लक्षण चिऐ। उ बिचार करे लागलै एकटा महताइर–वाप आपन बच्चाके बिछुडन दुःखसे बताह भ्या जाइछै। आ तहिनङ्गः एकटा बच्चा आपन महताइर–वापके स्वर्गिय भेलासे बिलखैत रहैछै। एकटा भाई आपन वहैनसे बिछुडलपर आ बहैन भाईसे बिछुडलापर दुःखके लोर ढारैत रहैछै। कथी ई दुःख जरूरी छै ? यैसे पार पावैके कोनो बाट हैतै, कि, नै ?

एह्यासव बिचारमे मगन उ घर पुगलै आ आपन मनमे ई बात ठाइन नेने रहे जे उ यशोधराके कहुनङ्ग क्याके मन्यालेतै जे जिवनके जिजिरके कडीमे ब.नहल समस्याके समाधानके बाट जोहैके आवशयक्ताके बुझहै आ हमरा घरसे छुटकरा दिऐ जाव यशोधरा आपन घरवलाके कठूबाहीसे घुमइके आबैत देखलकैत देखैत मातैर बिचार क्या लेलकै जे आई फेर-घरवलाके दुनिया अनहार भ्या गेलछै। उ घरमे एने से वोनेभेलफिरै आ यशोधरासे एकान्तमेबात चितकरैके अवसर ताकैत रहै। सिद्धार्थ खौ कोशिससकैलकै जे उ राहुल दिसर नै ताकै। पहिनका बेर राहुलके कोरामे लेलाके बादमे उत्पन्न भेलाहा वोकर प्रतिके मामत वोकरा मनपरलै। उ ऐ प्रकारके ममतापूर्ण मनोभवनाके फेरसे आपन मन मस्तिष्कमे नै आवे देवे चाहै छेलै। ई राहुलके बास्ते बढिया नै भ्या सकैछेलै; ई यशोधराके बास्ते भी बढिया हेवै बलानैछेलै। ई बोकर जिवन रूपी समस्याके समधानके खोजकरैके सधनाके वास्ते सेहो कोनो प्रकारके सहायक नै भ्या सकै छेलै। यशोधरा सिद्धार्थके छटपटिके बुझहलकै। उ उठलै सिद्धार्थके हाथ पकैड लेलकै आ दोसर कोठली दिसर ल्यागेलै। ।सद्धार्थसेहो आपन हाथ यशोधराके काह्लमे राइखके वोकरा आपन दिसर तानलकै।

सुरूज पछिभरा एकटा गाछके अढमे घोसरे ज्या रहल छेलै। पुरूभरा जे अनगुतके सुरूज उगैंखिना एकदम लाल हुर हुर भ्याके दुनियाके लोभ्या रहल छेलै एखनी कारी कारी आ मन मशोइसके मुरझ्याल लागै छेलै।

"की हमर जिनगी आव एहिनङ्ग हेतै ?" यसोधरा घरवलाके बलिष्ट लेकिन पियरगर हाथके बेरहामे फासल रहै त, बिचार कैलकै।

घरवलाके बलिष्ठ लेकिन पियरगर हाथके बेरहामे वानहल यशोधरा आपन नारी सुलभ मामतसेसिद्धार्थके मनके बहलावैके असलफल प्रयास क्या रहल छेलै तखैनिऐ सिद्धार्थके एकदम नरम आवाज वोकर कानमे ठनका नहाइत वजरलै जेकरा सुनैत मातैर वोकर सवटा होस हवास गुम भ्यागेलै।

"कनीया रानी, की, आव हमरा तोहर अनुमति............."
आ सिद्धार्थआपन बाक्य पूराने करे सकलकै। उ सुनलकै जे यशोधरा हफान झफान काने लागल छेलै। वोकरो छाती फाटे लागलै।

"यशोधराके मनमे वडका चोट लागलै" उ बिचार कैलकै। ऐ मायाके त्याग करैके कोनोटाबाट एखनी नैछै। तैयो सिद्धार्थ ई सुईनके छक परलै, वोकरा आपन कानमे बिश्वास नै भेलै जाव यशोधरा आपन कननाई रोईकके बिचैमे कनमनबैत कहे लागलै।

"ह प्रीयतम हम.......तोहर अरसोठा देखैत रहवौ।" सिद्धार्थ मनके भितरसे घरवलीके-साहसके प्रशंसा करे लागलै आ वोकरा कैसके आपन छातीमे सटचा लेलकै। यशोधरा साहस क्याके कहैले त कैहदेलकै लेकिन आपन मनके नै रोकै सकलकैत हफान –झपान काने लागलै। घरवालीके कानैत देखलकैत आपनो करूणामे भोईरगेलै आ ढव-ढव लोर चुववे लागलै लेकिन घरवलीके किछो नै कहे सकलकै।

सिद्धार्थ आ यशोधराके आईतकके प्रेम पूर्ण व्यबहारिक जिवनमे ऐ प्रकारके अनहोनी वात कहियो ने कोइयो देखने छेलै। नोकर नोकरनीसव जे ऐ समय सिद्धार्थ यशोधराके विचित्र व्यवहारके प्रलाप देखलकै त छक पैरगेलै। ई वात वहोत जल्दीमे गौतमीके कानमे परलै आ वोकर मार्फतशुद्धोधन सेहो सुनलकै।

एक दुई दिन पाछे गौतमी यशोधरा लग एलै आ बात चित करैत पूइछदेलकै :

"हम सुनलिऐ जे सिद्धार्थ कथी डोडा कटवै वला छौ ?"
यशोधरा आपन सौस दिसर ताकलकै आ कननसुख हंसकी हासैत कहे लागलै "आव

वहौत दिनके बातनै हेतै जे सिद्धार्थ अपना औरके छोइडके चैल जेतै ।" यशोधरा हारल जुवाडी लखा जवाव देलकै ।

"अच्छा, वोकरा रोइकके घरैमे राखैले कथी लेने तो किछो करैं चिही ? तो तएखनी जवाइनेचिही । तोरा एखनी आपन घरवला चाहबे करौ । राहुल एखनी दुधपिया बच्चा छौ । कथीत उ बिना वापके बढतौ"? गौतमी आपन पुतौहके आँइख गुजाइर गुजाइरके वात पूछे लागलै । यशोधरा जानै छेलै जे सिद्धार्थके गृह त्याग क्याके फकिर भेनाई एकेराइतके वात बिचारके प्रतिफलकेनिर्णय नै चिऐ । ई त वरिस बरिससे असल आ खराव, ठिक आ बेठिक, साच आ झुठ, क्षणभंगुरताआ दुःख विषयके सम्बन्धमे देखैत अनुभव केलहा समस्याके अधारमे वोकरा गृह त्याग करैलेबाध्यक्या देने छेलै । खोलाके पाइन उपर माथेनै जाइछै । अगर वोकरा छेकल जाईछै त उ आपन वाट जोहे लागैछै जैसे पाइन वहैं । सिद्धार्थ तेहेन तेहेन कतहेक ने कतहेक वाट जोहने छै । उ यहो जानै छेलै जे वोकरा घरमे पकैडके रखनाई बिल्कुल बेकार भ्या जेतै । अगर वोकरा घरमे राखल जाई त वोकर ई राजकीय जिवन नारकीय भ्या जेतै । तै ऐ सम्बन्धमे वोकरा छोईडिए देनाई बढियाहेतै । उ घरसे बहार भ्याके जिवनके जिजिरके विषयमे वोकर बैचारिक मनताके अधारमे उ दुनियामे आपन समस्याके समाधान करैके कोशिष करतै । अगर उ आपन समस्याके समाधान नै करतै आ घुइमके घर एतै त वोकरा ई पछतवा त नै हेतै जे वोकरा कोनो अबसर नै भेटलै । अगर उ कोनो धरानी ऐ समस्याके समाधान करैकेबाट जोहैमे सफल भ्या जेतै त सवगोडे तकर प्रतिफलके मिठका रस चाखतै । उ ई बात आपन मनै मन बिचार कैलकै । जवाव सुनैलै अधिर भेल आपन सौसके किछोने कहलकै ।

"यशोधरा, तोई कथिलेने बुझ है चिही जे सिद्धार्थके ऐ कामके वास्ते सबटा जिम्मेवारी तोरे उपरमेथोपल जेतौ ? अन्तमे सौस पूछलकै ।

"ह बुढ़िया (मैया)"। यशोधरा कनमनबैत जवाव देलकै । "सिद्धार्थ जे काम क्या रहलछै तकर सवटा जिम्मेवारी हमरे उपरमे एतै से हम आटने चिऐ । हम सन्तोष क्या ने ने चिऐ जे सिद्धार्थकेसुखी जिवनके वास्ते हम कोनो भी प्रकारके नेछावर करैके जिम्मेवारी बोइक नेने चिऐ ।"

गौतमी वुइझगेलै जे यशोधरा से ऐ सम्बन्धी बात करनाई बेकार चिऐ । उ यहो जानैछेलै जे यशोधरा एकटा स्वतन्त्र बिचारके छेलै आ आपन उमेरके दोसर दोसर नवयुवती सवसे बहौत उपरका खाडहिके बात बिचार करे सकैके योग्यताके मैलकाईन छेलै । यशोधरावडा तिक्ष्ण एवं समाजिक नारिके रूपमे बहौत उपर

पूगल छेलै तआव ई समय चैल एल छेलैंजे शुद्धोधन आपन बेटासेआपनै बातके फरिया ल।

सिद्धार्थ यशोधरा ऐ समयमे बातचित करैमे मसगूल रहै राहुल घर भैर दौड घुप करै त, जाव शुद्धोधन सुनलकै जे वोकर बेटा धर छोडैमे तैयार भ्यागलछै त दौडल बेटाके अलङ्ग दिसर गेलै। वोकर पछा पछा गौतमी सेहो गेलै। राहुल किलकारी मारैत खेलौड क्या रहलछेलै आ एकटा नौडिया वोकरा तनकी करैत एकटा कोनमे ठाढ रहै। शुद्धोधन जाव कोठलीमे प्रवेश करलकै त सिद्धार्थ आ यशोधरा आपन-आपन ठामसे उइठके ठाढ भ्यागेलै। नौडिया वच्चा राहुलके कोरा क्याके घरसे बाहर चैल गेलै। सिद्धार्थ बुईझ गेलै जे वोकरा बाबु वोकर निर्णयके सम्बन्धमे पूछ आछ करतै। शुद्धोधन एकटा उचित बैठकामे बैठ गेलै त दोसरो सव तहिनङ्गे कैलकै।

"की तो घर छोडैकै निर्णय क्या लेलही ?" सिद्धार्थ दिसर देखके शुद्धोधन पूछलकै। शुद्धोधनकेमुह अह्नार लागै छेलै।

सिद्धार्थ कोनो जवाव नै द्याके मुसु मुसु बिहुसे लागलै। शुद्धोधन आ गौतमी यशोधरा दिसर ताकलकै जे दनु गोडेमे कोई कोनो जवाव देतै। उ खाली सिद्धार्थ दिसर देखके विहुसे लागलै जेनङ्ग कहैत रहै "एकर जवाव त आपन बाबुके तोरै देवे परतौ।"

शुद्धोधन मनै मन रिस्या गेलै। तामससे बोकर मुह लाल भ्या गेल। तामससे वोकर कपाडमेपाती पातीके रेखा उगहैर गेलै।

"पहिने पहिने लोक सव त बुढहारी बेसमे मात्र घर त्याग क्याके वानप्रथ है छेलै। तो त एखनी मात्र उन्नतिस वरिसके चिही। ऐ प्रकारके जिनगी अपनाबैले त एखनी तो एकदम काच्च उमेरके चिही। एखनी त तोहर बास्ते दोसर-दोसर जिम्मेवारीसव छौ जेकरानिमहता करनाई तोहर पहैनका कतर्व्य चिऔं।"

"बाबु अपनासव केनङ्गके जानवै जे लोकसव कहिया जवान हैछै आ कहिया बुढ है छै। कोई जवानैमे काल कवलित भ्या जाईछै; वोकरासवके बास्ते अधेड आ बुढके कोनो मतलब नैरहैछै। कोई अधेड अबस्थामे मोरै छै उ बुढहारीके मरम नै जानेसक छै। ऐ क्षणभंगुरताएवं दुःखके समस्याके समाधानके खोजी कामके कथीले बुढहारी बेसके समय तलिक स्थगित करवै ? कोई बोतहेक दिन तलिक जिएत बाचल रहतै तकर कोनो निश्चित एत्ता केनङ्गके जानेसकतै ? तो त खाली बावहन पुरहित सबके बिचारधरणाके वात क्या रहल चिही। उसव त लोकसवके

जावे तक भ्यासके घरमे रहँके वात कहै छै जैसे वोकरा वोई अमूक व्यक्तिसे दान दछिना प्राप्त हैत रहै आ एकर पेट पालल जाइत रहै। तो त बाबहन सबके बिछेलहा ब्रह्माके महजालमे फासल चिही। जे कोनो कर्मठ व्यक्ति समाजमे आपन व्यक्तित्वके बढबे चाहै छै तकरा जालमे बजह्याके फसैने रहैछे।"

तो बडा स्वार्थी चिही।" शुद्धोध न कहलकै। "तो बबाजी भ्याके जङ्गल वोगरे चाहै चिही आ-आपन जिम्मेवारीसे डेन्याके भागे चाहै चिही। तो आपना दुःखसे बचे चाहै चिही लेकिन अनकर वास्ते कोनो प्रकारके जवाबदेही नै लेवे चाहै चिही जे ऐठाम तोहर सहायता के आस लगैने छौ।"

सिद्धार्थके तामस चडहे लागल छेलै। यशोधरा ऐ बातचितसे हैवला भावी फलाफल के बुझ्झ गेलै। लेकिन उ किछो बाजतै से पहिनै सिद्धार्थ बाजे लागलै।

"नै हम घर ऐले नै छोडे चाहै चिऐ जे हम खाली आपनैंटाके बचवे चाहै चिऐ। ई समस्या जे हमरा सत्या रहलछै से त ऐ पुनियाके बहौत गोटेके साथे तोरो सत्या रहल छौ। अगर हम ऐ समस्याके समाधान क्या लेवै त हमही आ तु ही कथिले जेऐ बिषयके खोजी केरतै तकरा सबके भलाई हेतै।"

शुद्धोधन ई बातके बुझ्झ गेलै जे जाव सिद्धार्थ एक बेर कोनो निर्णय ल्या लेलकै त उ वोइसे पाछा माथे नै हटै छै। निर्णय लैसे पहिनै उ वोइ समस्याके सब दिसरसे बिचार पुऱ्याके निर्णयकरैछै। लेकिन जाव एक बेर उ निर्णयके क्या लेलकै त बोकरा अन्त तलिक निमाहै छै। उ सबके बिचार क्याके उ बुझ्झ गेलै जे यशोधरा कथीलेनै वोकर निर्णयके बदैलेले आपन जुइत करे सकलकै। यह्यासब बातके ल्याकेत उ यशोधरासे बियाह करैके समय जे आडन लेलकै त आपने क्याके छोड लकै। तैयो उ आपन बेटामे एकटा अन्तीम कोशिस करैके तहतमे बात फेकलकै।

"एउटा बबाजीके जीवनमे प्रवेश क्याके तो कोन प्रकारसे दोसरके सहायता करे सकबिही। तो कोनो बबाजीके अनकरा सहायता करैत देखने चिही ? एकर बदलामे उ बबाजी सवत समाजके वास्ते एकटा बोझ भ्या गेल छै। उ बेसी कला जङ्गलमे निवास करै छै लेकिन कोनो चिजके खाचो भेलापर उ सब चिज माडैले गाम दिसर आवैछै। जङ्गलमे तेहेन चिज उपलब्ध नै है छै। उ सब वोई चिजके पूर्ति गामके गरिब लोक सबसे माङ चाङ करैछै लेकिन तकर बदलामे किछो नै दै छै। एकरा कोन प्रकारके करुणाकर जिनगी कहविही।"

सिद्धार्थ बुझ्झ गेलै जे वोकर पिता ठिक बात कैह रहल छेलै । महात्मा-बबाजी सब जङ्गलमे रहै छै आ कोनो चिजके खाचो हेछे त उसव गाम समाजमे जाई छेलै आ खाचो फेलहा चिजके पूर्ति करै छेलै । धार्मिक एवं धर्म भिरू गरिव ग्रामीण सब ओकरा औरके उसव चिजके पूर्ति क्या दै छेलै । उसव एक बेर, दुई बेर, तीन बेर, माङल चिज त दै छेलै लेकिन पाछे दिक लागै छेलै त वोई बबाजी के गामसे बहार भग्या दै छेलै ।

"नै, बबाजी भ्याके जङ्गलमे स्थाई रुपसे धुनी रम्याके रहनाई हम आपन जिवनके लक्ष्य नै बनैने चिऐ । ई त खाली अस्थाई वास मात्रै हेतै । हम मानव जिवनसे सम्बन्धित जे समस्याके समाधानके खोजीमे लागे चाहे चिऐ आ अगर उ समस्याके समाधान क्या लेबै त ई प्रत्येक के बास्ते लाभदायक भ्या सकैछै । ई त धनिक आ गरिब जे हमरा महात्मा कैहके हमरा सहयोग करतै तकरौ आ जे हमरा अधलाह कहत तकरौ वास्ते बराबरै फलके प्राप्ति करतै ।. हमर वास्ते फकिरी जीवनके धारण करनाई त एकटा साधन मात्र हेतै साध्य नै हेतै ।"

"तो कते, जे वही आ कहिया जेबही ? शुद्धोधन आपन उमरैत दुःखके रोकैत आपन बेटाके पुछल कै ।"

"हम नै जाने चिऐ जे कोने भर आ कते चैल जाइत रहबै लेकिन जल्दिऐ चैल जेबै । यशोधरा दिसर ताकैत सिद्धार्थ जवाब देलकै । उ सिद्धार्थ दिसर नै ताके सकलकै ।

एकर बादमे बिना किछो वाजने शुद्धोधन आपन जगहसे उठलै आ चैल जाइत रहलै । आपन कोठलीमे आइबके घडाम दनी आपन बिछोनामे खैस परलै आ बच्चा नहाइत हफान झफान किलहाइर माइरके काने लागलै ।

१३– तेन्ह

सिद्धार्थ उतरायणके अखाडही पूर्णिमाके दिन गृह त्याग करैके निश्चित क्या लेलकै । पूर्णिमाके इजोरिया राइतमे जतहेक दुर ज्या सकतै ततहेक दुर जाइके मनसुवा ल्या लेने छेलै जैसे गामके लोक सवसे भेट हेतै त बिभिन्न प्रकारके प्रश्नात्मक बात जवावसे वचैत जाइत रहतै । रैतका वोई पहरमे जखनी गामके लोकसव निनमे भेर भेल रहतं तखनी घरसे बहरैवै त कोनो प्रकारके रोक टोक नै हेतै । तैयो यशोधराके मालूम भ्या गेलै, जे, आइके वोकर घरवाला घरके त्याग क्याके चैल जेतै । उ सिद्धार्थके मुहलगुवा सहिसके चाल कैलकै आ कहलकै ।

"छन्ना, आई तोहर मालिक वडका दुरके यत्रामे वहार जेतौ । वोकर वास्ते घोडा तैयार राखने रिहे आ तो वोकर संगे जते दुर तलिक ल्या जेतौ जाइहेँ । जाव उ तोरा घुमे कहतौ त फिर्ता भ्याके चैल आबिहे आ वाटके सवटा वात हमरा सुनाबिहे ।"

"जी रानी सरकार" छन्ना जे आपन मालिकके गृहत्याग क्याके जंगलके वासी हैके योजनासे बिल्कुल अनजान रहे यशोधराके आज्ञा अनुसार स्वीकारोक्तिमे मुडी हिलवैत कहलकै ।

यशोधरा साझके सवेर सकाल आपन बिछोनासे चैल गेलै । वोकरा ई आसरहे जे जाईके समयमे घरवालाके असलसे बिदा करतै । बिछोनामे ज्याके बेचारी वडे कानले । कानैत कानैत थाइकके निन्द लागलै आ सुइत गेलै । सिद्धार्थ चाहैं छेलै जे जाइके समयमे घरवालीसे बिदा ल्याके जेवै, लेकिन जाव उ घरमे प्रवेश कैलकै त देखलकै जे राहुलके काखमे ल्याके यशोधरा भेरम भेर निनमे सुतलरहै ।

"की एखनी हम एकरा जगवै ?" उ विचार करे लागलै, "आई हम विदा भ्याके जैव से उ जाने छै । अगर एकरा एखनी हम जग्या देवै त विदा भेनाई मस्किल भ्या जेतै । उ ऐ चिन्ताके विसैर सकेछै अथवा जिवनके एहेन असल मौकामे हम आपनै जाइनके सुइत रहलिऐ से समैझके मनके भरोस क्या लेतै । विना विदा ल्याके हम घरसे भाइग गेलिऐ से दोष की हमरा उ देतै ? नै, उ बात बुझहैमे वडातेजछै विदा हैके समयमे हम वोकरा कथिले नै जगलिऐ से उ बुझ्झ जेतै । किछो है, हम घर त्याग क्या रहल चिऐ किछ समय तलिकके वास्ते ई बात वोकरा किचोटतै ई बात हमर बेटाके कचोटतै इ बात हमर मैया बाबुके कचोटतै । लेकिन भविष्यके नमहरका बाटमे सबगोडे ऐंसे लाभान्वित हेतै । येहोसव आ हमहू ।"

उ देहरीके चौकेठमे ज्याके एकटा टाँग भितर आ एकटा बाहरमे राइखके देखे लागलै । उ देखलकै जे वोकर प्रियतमा आपन शिशु पुत्रके काखमे राखने रहै । उ बडी कालसे देखैत रैह गेलै । वोई क्षणके कोनो अन्त नै रहे । लेकिन चट दवर उ घुमलै आ घरसे बहार भ्या गेलै । बहारमे छन्ना घोडा तैयार क्याके राखने रहै आ मालिक साठे असिय्याल रहै । घरमे पूर्ण निरवता रहै, यद्यपि की उपरका अलङ्गमे कतौ कतौ दीपके इजोत देखल जाइ छेलै । सिद्धार्थके देखके घोडा सव कोनो प्रकारके अवाज नै देलकै । वोहो जेनङ्ग विदा है के ऐ दूःखपूर्ण घडी मे चारुकताके वातावरण के पूर्ण रूपसे बुझहैत रहै । सिद्धार्थ आपन घोडामे चढलै आ लगाम झटैक देलकै ।

उ छन्ना संगे जे सम्भवतः यशोधराके तैयार केलहा एकटा भिक्षापात्र, पहिरन आ औरो आवश्यकता के समानके एकटा पोटरी नेने आवै छेलै दखिन भराके यत्रामे विदा भ्यागेलै। उ दुनु जावे तलिक गामके बाहरी सिमा तर्फ नै पुगले तावे तलिक चुपचाप एलै। सिद्धार्थके लागलै जे आव उ ए गामकेसाथै आपन घर, मैयाबाबु, प्रियतमा घरवाली आ पुत्रके त्याग क्याके ज्या रहल छै त जै नगरमे उ जनमलै, बढलै आ वालपनसे एखैनका जवानी तलिकके सूखपूर्ण घडी के भागी ऐ गामके एक वेर देखली। आकी तुरन्ते वोकर विचार बदैल गेलै।

"हम आपन परिवारके साथे जन परिजन सवके त्याग क्याके ऐ विन्दुमे पुगल चिऐ जै ठामसे हम नया जिनगीके रस्ता पकडे ज्या रहल चिऐ। ई उ जिनगी चिऐ जैमे कोनो चिज असल छै तकर खोजीमे ज्या रहल चिऐ। हम जिवनके ए ऐतिहासिक घडीमे भावनात्मक विषयमे बहैकके जे उत्सुक्ता देख्या रहल चिऐ से जिनगीके त हम विल्कुल त्याग क्याके चैल देने चिऐ त फेर कथीले घुइमकेताकवै। आव हमर वास्ते ई उचित नै हेतै जे हम फेर वहे अज्ञान भावुकतामे परवै।"

उ ठाड भ्याके एकबेर कपिलवस्तु दिसर घुइमकेदेखलेते तकर प्रयास नै क्याके आपन बाटमे अगामाथे चलैत रहलै। लेकिन तैयो कपिलवस्तुके सम्पूर्ण रूप जेनङ वोकर मस्तिष्कमे एनङ्ग भ्याके चैलएलै जेनङ धरती घुइमके अगामे खडा भ्यागेलै आ कहे लागलै जे अगर तो निठूर भ्याके घुइमके हमरा नै देखलीही त हमही तोरा घुइमके देखार वैचिऔ।

विहान हैत हैत सिद्धार्थ आ छन्ना शाक्य राज्यके सिमा पार करै वला भ्यागेल छेलै। सिद्धार्थ सिमावर्ती खोला अनुमाके किनारमे पुगलै। खोलापार भ्याके सिद्धार्थ आपन केश आ दाडही कट्या लेलकै आ यशोधराके पठेलहा पहिरन पिह्न लेलकै।

आपन पुरना पोशाक सबके एकटा मोटरी बन्याके छन्नाके देलकै आ कहलकै जे बाबुके द्या दिहै। छन्ना आपन मालिकके साष्टाङ्ग नमस्कार करलकै। सहयोगके वास्ते सिद्धार्थ छन्नाके धन्यवाद देलकै आ विदा क्या देलकै।

भरखर सुरूज उनटल रहै त छन्ना कपिलवस्तु पुगलै। आपन मालिकके विछोडसे उ बडा दुःखित भेल रहै। घोडा सबके घोडसारमे वाइन्ह देलकै। चारूकताके चिजविजसब वोकरा आपन मालिकके स्मरण कर्‍या रहल छेलै। वोकर वास्ते ई बडा असह्य दुःख रहै। वोकरा जाव दुःख सहल नै गेलै त राजदवार जै ठाम वोकर लालन पालन भेलरहै तकरा छोईडके ककरौ कोनो समचार नै कैहके चैल जाइत रहलै आ सिद्धार्थके देलहा पुरना पोशाकके पोटरी वोकरे घोडाके काठीमे बान्हल

छोड़ड देलकै । इ त बहौत अबेरके साँझके समयमे घरके लोकसवके पत्ता लागलै जे घोडा घुइमके चैल एलै आ वोईमे वोकर पोशाकके मोटरी सेहो बान्हल रहै ।

१४– चौथ

सिद्धार्थ आपन बर्गीरिया ललकुसेउपनिषद विवयक शिक्षाके सम्बन्धमे जनकारी प्राप्त क्या ने ने छेल। यज्ञ बालक्यके पद्धति वोकरा पसिन परल छेलै। उ ललकु नहाइत वोई पद्धतिके सिद्धान्तेटा जानैके मात्र इच्छुक नै छेलै बलिक वोकर व्यवहारिकताके सेहो जानैके वोकरा बड लौलसा छेलै जैसे कि उ वोई सिद्धान्तसवके प्रयोगात्मक परीक्षण क्या सकै। ललकु वोकरा ऐ विषयके जानिफकार दुइटा बडका गुरू अलार कालम आ रूद्रक रामपुत्रके जानकारी देने रहै। ततकालिन प्रदेशमे ई दुनु वडा प्रखर बिचारक छेलै आ योगाभ्यासके बहौत वडका आसनके साधहैके कलामे दखल प्रातत करने छेलै। ई दुनुटा आन दार्शनिक लखा घुइम घुइमके अनटेटल धार्मिक वात विचारके बहसमे भागनै ल्याके आपने आश्रममे संतोषसे बैठके आपन प्राप्त केलहा ज्ञानके और बेसी प्रयोगात्मक पक्षके विस्तारमे लागल छेलै। ऐ सन्सारिक दुःख एवं क्षणभंगुरता विषयक समस्याके समाधान के खोजमे घरसे चललहा सिद्धार्थ ई बिचारकैलकै जे पहिने यहै दुनु गरूसव लग ज्याके बुझतिऐ जेऐ सम्बन्धमे ईसव कोन कोन अनुसन्धानात्मक कृतिसे वाकिफ छै। तहैले उ वडका दुरके यात्रा करैके निश्चित निर्णय क्याके अलारके आश्रम बैशाली राज्यमे पुगलै। आश्रममे पुइगके अलारके भेटकैलकै आ नमस्कार आदि औपचारिकताके उपरान्त उ कहलकै ।

"गुरू महराज, हमर नाम सिद्धार्थ चिऐ। हम अपनेके निर्देशनके तहतमे रैहके धार्मिक जिवनके अभ्यास करे चाहै चिऐ।"

अलार काचे उमेरके युवक सिद्धार्थके टक टकी लग्याके देखे लागलै। एक क्षणके बाद पूछलकै। "तो कतेसे एल चिही।"

"शाक्य राज्यके रजधानी कपिलवस्तुसे।" सिद्धार्थ जबाब देलकै ।

"तो एखैन काचे उमेरके युवक चिही आ वडा सुन्दर चिही। कथी, तोरा परिवार नै छौ कोन चिज तोरा घरछोडैले बाध्यकैलकौ", अलार जाने चाहलकै।

"हमरा घरवाली आइछ आ एकटा पुत्र सेहो। हमर वाबुके नाम शुद्धोधन चिऐ। आपन जिवन धानैके वास्ते हमरा सब प्रकारके अराम उपलब्ध आइछ।

लेकिन हम देखै चिऐ जे वोइसब चिजसे बहौतकम संतुष्टि प्राप्त हैछै। तहौमे बेसी कला असफलताके दुःख आ निरसा हाथलागैछै। हम ऐ प्रकारके दुःख आ निरसाके पहाडके वोइपार जाइके बाटताकैले अपनेके शरणमे एल चिऐ।"

अलार, शाक्य रजा शुद्धोधनके विषयमे सुनने रहै। रजा शुद्धोधनके बेटा सिद्धार्थ एहेन काच उमेरमे घर त्याग क्या देतै से वोकरा विश्वास नै भ्या रहल छेलै। उ महसुस कैलकै जे ई युवक जै विजके खोजीमे एल छै अथवा ई जे काम करे चाहै छै तै विषयके खोजीमे एकर मन भितरसे उद्वेलित भ्याके मानने छै।

"सिद्धार्थ, हम तोरा आपन शिष्य वनवैके स्वीकृति दैचिऔ। हम जै ज्ञानके दावी करैचिऐ से बडका बिद्वानसब प्रतिपादन करनेछै आ जेकरा हम आपनैसे परिक्षण करने चिऐ। हम तोरा तहै विषयके शिक्षा आ दिक्षा देवौ। लेकिन ई तोरैमे निर्भर करैछौ जे तो आपनै एकर मथन कर, आपनै प्रयोग कर जैसेतो एकरा आपनै वुझ बिही जे ई सिद्धान्त कथी चिऐ आ एकर महत्ता कथी भ्या सकैछै।" अलार खौ बर्णन क्याके सिद्धार्थके कहलकै।

"जी एहिनङ्ग हेवक चाही, गुरू महराज" बिन्ती भाव सेजवाव देलकै सिद्धार्थ। उ खौ खुसी छेलै जे जै सिद्धान्तके उसिखे ज्या रहल छेलै से खाली वैचारिक मान्यता वा कानसे सुइनके स्वीकार केलहा विदया नै चिऐ। ऐ प्रकारके परिक्षणत्मक तरिकासे दिक्षा प्राप्ति करैके ई वोकर पहैनका अवसर रहै। एतहैक बरिससे एखैनतलिक उ खाली अनकर विचारसे भरल पुरल कितावी ज्ञानके शिक्षा मात्र प्राप्त करनेछेलै। ई सब बातके तर उपर करैत विचार कैलकै जे जै दिक्षाके शिक्षाके पाठके शिक्षा प्राप्त करैले उ ज्यारहल छै वोकर मनकेबात छेलै तै विचारमे वोकर शक्ति आ उत्साह दुनु दोब्बर बैढ गैलै। अलार सिद्धार्थके दिक्षा प्रारम्भ करैले निम्न प्रकारके चेतावनी दैत व्याख्या करेलागलै।

"ध्यानस्त भेनाई जे हम अभ्यास करैचिऐ तै लक्ष्यमे पुगैके वास्ते मस्तिकष्कके (चित) स्थिर (शान्त) रखनाई आवश्यक छै। बाहरी दुनियाके चिजसव आकर्षणके (राग) पैदा करैछै जैसे उत्तेजना (मोह) के प्रादुर्भाव हैछै। तहै प्रकारसे बाहरी आकर्षण एवं आघात आ प्रतिघातसे उत्पन्न अवरोधके रोकैलै मस्तिष्के नियंत्रण रखनाई जरूरी भ्या जाइछै। ई कामकोनो सोझ आ हलूक नै छै। तै दिक्षा प्रारम्भकरैसे पहिने पाचटा फटकके तोडनाई आवश्यक छै। ए क्रममे सवमे पहिने (१) शरीर (देह) यथार्थ चिए (२) शंका उपशंका (३) नाम रूप अथवा तन्तर मन्तरके जाप (४) इन्द्रिय जन्य विषय प्रति लिप्सा (५) पाप भावना। की तो

विचार करै चिही जे उपरका पाँचो फटकके आपन मन मस्तिष्कसे बहार फेकके तोड़े सकबिही ? पूछलकै अलार ।

"जी, गुरू महराज, हम ए फटकसवके बिना कोनो वडका तरद्दुतसे तोड़ड सकै चिए ।" सिद्धार्थ विश्वास से भोरल शव्द मे जवाव देलकै । यह्यासव चिज छेलै जे वोकरा गृहत्याग करैले बाध्य कैलकै ।

"अगर तो ऐसव बधाके निराकरण क्या सकै चिही त तो ध्यान करैके प्रारम्भ क्यासकै चिही । ई तोरा ध्यानके प्रथम स्थानके अनुभव कन्या देतौ । ध्यानस्त भ्याके प्राप्त केलहा आनन्द एवं सुखके अनुभूति इन्द्रिय जन्य विषय एवं अपवित्र भवनासे उत्पन्न भेलहा आनन्द एवं सुखसे बहौत बेगल हैछै । जाव तो ए ध्यानमे मगन भ्याके विचरण करवीही त ए प्रकारके सुखानुभूति एवं आनन्दके और बेसी खोज करैके कोशिस करै परेतौ ।"

सिद्धार्थ एकटा एकान्त स्थानमे गेलै । वोकरा उपरका पाँचो फटकसे निवृत्त हैले कोनो कठिनाई नै भेलै । उ आपन मन मस्तिष्कके ऐ प्रकारसे ध्यान लगैलकै कि तुरून्ते वोकर ध्यान इन्द्रिय जन विषयके विचारसे उपर उड़ठ गेलै । अस्थायी रूपसे वोकर मन मस्तिष्क इन्द्रिय जन्य आनन्द विषय सुखसे स्वतंत्र भ्यागेलै । तुरन्ते उ दोसर प्रकारके आनन्द एवं सुखके अनुभूतिकरे लागलै । उ ऐके विषयमे बिचार कैलकै । पहिने जे वोकरा आनन्द एवं सुखके अनुभव भेलरहै तैसे ऐ सुख आ आनन्दके अनुभूतिमे दोसर किसिमके फरक देखलकै । ई वास्तवमे फरक छेलै आ ई बहौत उच प्रकारके छेलै । उ ऐ प्रकारके आनन्द एवं सुखके अनुभूति प्राप्त हैत रहे तकर वास्ते हरदम एकान्तमे ध्यानस्त भेलरहै ।

आपन ध्यान अनुभव उ गुरू अलारके कहलकै आ अलार वोकरा वोईसे उपरका ध्यान करैके दिक्षा देलकै ।

"एकान्तमे ध्यान लगैलासे तोरा आनन्द एवं सुख जे इन्द्रिय जन्य विषयसुख से फरक छै तकर अनुभूति भेलौ । तो ऐ चिजके बिचार कैलही । ऐ सम्बन्धमे निमग्न भ्याके इन्द्रिय जन्य सुखानुभूति आ एकर सुखानुभूतिमे भेलहा अन्तरके बुझ्झके दरसैलही । आव तो ऐ प्रकारके अनुभूति आ पहिनका इन्द्रिय जन्य अनुभूतिके असलसे समैझ सकै चिही । अगर आव तो यहै बिचारके जारी राखने रहबिही, यहै फरकके बिचार करैत रहबिही त तो एक प्रकारके दोसर तरहके आकर्षण (लगाव) के अनुभव करबिही किएक त तोरा ई वडका बुझ्झ परल छौ । यहैले

तोरा ,आव ऐ प्रकारके बिचार आ विचरणके हटावैके कोशिस करैछ चाही तैसे तो यहौंसे उचका दोसर प्रकारके आनन्द एवं सुखके अनुभव करे लागबिही ।"

सिद्धार्थ दिक्षाके सिद्धान्त गुरूसे लेलकै आ आपन पाठ करैके स्थानमे गेलै । उ आपन मन मस्तिष्कके ध्यान क्याके प्रथम स्थानमे पुगैके कोशिस करलकै लेकिन जखैनिए उ प्रथम स्थानमे पुगलै ऐ प्रकारके बिचार आ फरकके छुटियावैले छोडदेलकै । उ आपन मन मस्तिष्कके नया अनुभूतिमे विचरण करैसे रोकलकै आ विचारहिन भ्याके एकाग्रचितमे रहे लागलै, तैसे लगतार एकाग्रचितसे उत्पन्न भेलहा आनन्द एवं सुखके अनुभवकरे लागलै । जावे तलिकमे उ ऐ एकाग्रचित ध्यानसे प्राप्त भेलहा अनुभवके पक्का क्याके आपन मनमे नै बैठलकै तावे तलिक ऐ एकाग्रचितके अभ्यास करैत रैह गेलै ।

जाव उ आपन अनुभव गुरूके कहलकै त गुरू खुसी भ्याके कहे लागलै । "आव आनन्दके अनुभव करनाई अगाडीके दिक्षाके बाटमे अवरोध उत्पन्न क्या सकैछै । ऐमे जे कोई पूर्ण निमग्न रहैछै त उ कोनो दोसर चिजके अनुभूतिसे दुरौग भ्याके बिल्कुल अवचेतन अवस्थामे रहैछै । सन्सारिक चिजके जेहेन छै तकरा तहिनङ्ग देखैले मन मस्तिष्कके एकाग्रकरनाई अति आवश्यक छै तै आनन्दके अनुभूतिके त्याग करैके कोशिस करनाई प्रथम कर्तव्य भ्या जाइछै ।"

सिद्धार्थ गुरू अलारसे पाठके सवक लेलकै आ अभ्यास करनाई आरम्भ क्या देलकै । बहौत जल्दीमे उ आनन्द सुखके त्याग क्याके मन मस्तिष्कके विशुद्ध एकाग्रचित ध्यानके अधारमे अभ्यास पाठके तेसर दर्जाके स्थानमे पुगलै । ऐ प्रकारके एकाग्रचित ध्यानमे उ पूर्ण अचल भ्याके रहे लागलै आ वोकर संपूर्ण शरीर आनन्दमे डूगल रहै छेलै । यहै क्रममे उ ध्यान मगनके चारिस खाडहीमे आपनै मने एकाएक पुईग गेलै । जैमे उ आपन शारीरिक आनन्दके सव प्रकारके सुखानुभूति करैके माध्यामके हटावे सकैले सक्षम भ्यागेलै । ऐ स्थानमे पुगलापर उ अनुभव कैलकै जे ऐ ठाम ने कोनो प्रकारके दुःख छै आ ने सुख, ने कोनो आनन्दछै आ ने कोनो बधा, वोकर मन मस्तिष्क स्थिर भ्यागलै । वोई प्रकारसे मन मस्तिष्कके एकाग्रचितमे राखैके अभ्यास करलासे वोकरा आपनैके अचल अवस्थामे रहैके ज्ञान स्वयं प्राप्त भ्यागेलै । वोकर मन मस्तिष्क वडा शुद्ध भ्यागेलै । छल छल चमके लागलै । पघललहा सोन नहाइत डग डग भ्या गेलै । कोनो प्रकारके दागनै रहलै आ वोकर गोइद कुह्मारके खानहल माइट लखा भ्यागेलै जैसे कुह्मार कोनो वर्तन बन्या सकै छेलै । उ आपन मन मस्तिष्कके पूर्ण नियंत्रण क्यालेलकै ।

गुरू अलार आपन प्रतिभाशाली छात्रके एतहेक छोट समयमे दिक्षाके ऐ दर्जाके स्थानमे पुगल देखके बडा खुसी भेलै । तै उ सिद्धार्थके ऐसे उच्च दर्जाके ध्यानाभ्यासके शिक्षाके पाठके दिक्षा देनाई प्रारम्भ क्या देलकै ।

"एखैन तलिक जे तो अभ्यास क्याके शिक्षा प्राप्त कैलही से त इन्द्रिय जन्य विषयसे पिण्डछोडवैके वास्ते मात्र छेलै । तोहर मन मस्तिष्क एखैनियो तलिक रूप रंगके बन्धनसे मुक्तनै भेलछौ । एकरा, तै भ्रष्ट हैके बेसी सम्भवना रहै छै अन्यथा तोरा हरदम बडा कडा सवधानीसे रहे परतौ । आव तोरा ऐ रूप रंगके दुनियासे पिण्ड छोडचाके आपन मन मस्तिष्कके निरंकार दुनियामे पुगैके विकास कर परतौ । निरंकार दुनियामे पुगनाइए सबसे वडका ज्ञान चिऐ जै मे कोई पुइग सकैए आ जे एकरा प्राप्त क्यालैछै से सवसे वडका सुखानुभूतिके अनुभूति प्राप्त करैछै ।"

"हम केनङ्गके ऐ रूप रंगके दुनियासे निरंकार दुनियामे पुगे सकबै ।" सिद्धार्थ पूछलकै । उ आपन प्राप्त केलहा ज्ञानसे वडा खुसी छेलै । आव उ ज्ञानके अधारमे बिल्कुल दोसर दुनियाके अनुभवकरैके तैयारीमे छेलै । वोकर ईच्छा शक्ति ओजपूर्ण भ्या गेलै । ओजसे वोकर शारीरिक शक्तिमे बल एलै ।

"प्रत्येक रूप रंग सिमित छै, निरंकार तै असिमित छै । अपना सवके सवटा अनुभव दुनियादारीके रूप रंगमे सिमित छै । एकेटा चिजछै जे निरंकार आ अनन्त सादृश्यछै ब्रह्माण्ड, तै हिसाबसे आव तोरा ब्रह्माण्ड अपेक्षित ध्यानाकर्षणके अभ्यास जरूरी छै । तो आव ब्रह्माण्ड अपेक्षित ध्यान मगन हैके अभ्यास प्रारंभ करबिही । तोहर वास्ते ई जरूरी भ्याजेतौ जे तो बैठले बैठल चारूकता भ्रमण क्याके देखविही जे ब्रह्माण्डके कोनो ओर छोर छै कि नै । लेकिन यहो स्मरण रखनाई आवश्यक छौ जे जाव तो ऐ दर्जाके ध्यानके अभ्यास प्रारंभ करवीही तैसे पहिने प्रारंभिक चारूटा दर्जाके ध्यान मगन जे तो अभ्यास क्याके ज्ञान प्राप्त क्या ने ने चिही तकर सवटा दर्जा पार क्याके मात्र ऐ उचका खाडहीमे प्रवेश करिहे ।"

"जी, तहिनङ करवै, गुरू महराज ।" सिद्धार्थ कहलकै आ आपन स्थानमे ज्याके ध्यान लगवे लागलै । ध्यान मगन अभ्यासके खाडहीके दोहरावैत चारिम स्थानके खाडहीमे पुगैले वोकरा बेसी समय नै लागलै । जाव वोकर मन मस्तिष्क एकाग्र भ्याके खौ खानहल नहाइत भेलै त उ आपन ध्यानके ब्रह्माण्ड अपेक्षित दिशासे एकाग्र कैलकै, वोकर एकाग्रता वडा शक्तिशाली एवं गहनतमरूपसे छेदनशील छेलै । उ विचरण करैत रहलै, करैत रहलै लेकिन ब्रह्माण्डके छोरमे

पुगैके कोनो सम्भवना नै देखलकै। उः आपन ध्यानके फिर्ता क्याके सहज मनःस्थितिमे ऐले। उ अकमक्या गेलै, कर्तव्य बिमुढ भ्यागेलै।

"की ब्रह्माण्डके कोनो छोर छै ?" उ आपनै मनसे पूछे लागलै। अगर एकर कोनो ओर छोर रहतिऐ त हमरा एकर अनुभव हेवक चाहै छेलै। हमर ध्यान एकाग्रता वडा बलगर आ छेदनशिल छेलै। वोकर मन मलिन भ्या गेलै। उ गुरू अलार लग एलै आ आपन अनभिज्ञता प्रगट कैलकै।

अलार हांसे लागलै।

"की, हम कोनो गल्ती कैलिऐ ?" सिद्धार्थ पूछलकै।

"ह, आ नै।" जवाव देलकै अलार।

"ह आ नै के की मतलव ?" प्रश्न कैलकै सिद्धार्थ।

"तो इ जाइनके जे ब्रह्माण्ड अनन्त छै आ एकर कोनो ओर छोर नै छै तैमे तो कोनो गल्ती नै कैलही। लेकिन एतबहैक वुझ्झके जे तो घवडया गेलही से तोहर गल्ती चिऔ। तो ई जाइनके अकमक्या गेलही, कर्तव्य विमूढ भ्या गेलही जे तोहर कल्पनाके अनुसार ब्रह्माण्डके कोनो ओर छोर हेवे करतै। तो ई नै जाने सकलिही जे जै निरंकार ब्रह्माण्डके छोरमे पुगैके अभिज्ञान प्राप्त करैके वास्ते तो एकाग्र भ्याके ध्यान मगन भेलही से वास्तवमे ब्रह्माण्ड विषयक तोहर आपनै अवचेतनता चियौ। तो जो आ फेरसे सवटाके एकमना भ्याके ध्यान लग्याके देखही। जाव तोहर मन मस्तिष्कके एकाग्रता अनन्त ब्रह्माण्डके अवस्थामे पुगतौ त तो दोसर दर्जाके ध्यान लगविहे ताव तो देखबिही जे "ब्रह्माण्ड" कोनो दोसर वस्तु नै चिऐ वल्कि "चेतनात्मा" मात्र चिऐ। जाव तोरा एकर ज्ञान प्राप्त भ्या जेतौ त तो ताकिहे जे चेतनात्माके छोरमे पुगे सकै चिही किनै ?"

सिद्धार्थ आपन स्थानमे ज्याके ठिक वोहिनङ्ग कैलकै जेनङ वोकरा आपन गुरूसे निर्देशन भेटल छेलै। उ आपन मन मस्तिष्कके दोहन्याके एकाग्रकैलकै आ ब्रह्माण्डके छोरमे पुगैके चेष्टा कैलकै। लेकिन वोई विचरणमे वोकरा तुरन्ते ज्ञान प्राप्त भ्या गेलै जे ब्रह्माण्ड अवचेतनता मात्र चिऐ। उ आपन ध्यान अवचेतनताके एकाग्र कैलकै जैसे कि उ वोकर छोरमे पुगै लेकिन हरेक प्रकारसे आ हरदम वोकरा अनुभूति हैत गेलै जे वास्तवमे अवचेतनता नामके कोनो रूप रंग भेलहा तत्व वस्तुनैचिऐ जेकर अकार प्रकार हेतै। उ आपन गहनतम प्रयासके माध्यमसे अनन्त अवचेतनता अवस्थाके वहौत उपरका खाडहीके ध्यानमे पुगलै आ ई अभिज्ञान प्राप्त क्यालेलकै जे ई पूर्ण रूपसे निरंकार छै।

उ आपन गुरू लग एलै आ आपन सवटा अनुभव सविस्तार गुरू अलारके कहलकै । आपन प्रतिभाशाली शिष्य सिद्धार्थके क्षमताके बात सुइनके अलार खूसीसे गद गद भ्यागेलै । दोसर खाडहीके ध्यान अभ्यासके विचारणमे केलहा त्रुटि नहाईत सिद्धार्थ तेसर खाडहीके ध्यानाभ्यासके बिचरणमे कोनो प्रकारके त्रुटि नै करने रहे । ऐ प्रकारसे सिद्धार्थ विना गुरू दिक्षाके दोसरसे तेसर दर्जा के ध्यान बिचरणमे पुगल रहै ।

"बहौत बढिया, बहौत बढिया कैलही सिद्धार्थ" गुरू अलार खूसी हैत कहलकै । एकाग्र चित भ्याके ध्यान मगनके वहै दर्जामे तो पुइग गेलही जते तक हम पुगल चिऐ । आवतोरा सिखबैले हमरा कोनो चिज बाकी नै रहलै । तो आ हम बराबैर भ्या गेलिऐ । आव दोसर दोसरके शिक्षा दैले तो हमर संगे यहै ठाम रह आ तोरे नहाइत ध्यानके उचका दर्जामे पुगैके वास्ते अभ्यासरत चटियासवके दिक्षा दैत रहै ।"

सिद्धार्थ कुछोने बाजलै । उ आपन छोटका कुटीमे एलै जते उ रात्रि विश्राम करै छेलै । उ आपन पटहा बिछोनामे पलैट रहलै आ बिचार करे लागलै ।

"की, एकरसे एतबेहेक शिक्षा ल्यासकै चिऐ ? ध्यान मगन हेवैके ऐ दर्जाके स्थानतलिक पुगैके सार्थकता कथी भ्या सकैछै ? ई साच चिऐ जे जावे हम ध्यान मगन भ्याके वोई स्थानमे पुगल रहै चिऐ तखनी कोनो प्रकारके दुःखके अनुभूति नै है छै लेकिन कोनो दोसर प्रकारके सुखानुभूति सेहो त ने है छै । वोई स्थानसे फिर्ता भेलाके बादैमे ककरौ कोनो प्रकारके सुखानुभूति है छै। लेकिन ई अनुभूति सेहो वडा छोट समयके वास्ते है छै । फेर आदमी ध्यान मगनके वोई निरंकार स्थानसे फिर्ता भ्याके आपन सहज मनःस्थितिमे आवै छै त उ ऐ पार्थिव दुनियाके एकटा सपना नहाइत बुझहे लागेछै । ऐ दुनियाके असार बुझहे लागै छै । लेकिन यहौ किसिमके बिचार बडा क्षणिक आ क्षणभंगुर है छै । थोरबेहेक समय पश्चात उ ऐ दुनियाके जालके इन्द्रिय विषयमे वोझन्या जाइछै । तै ऐ प्रकारके समाधान जेकरा हम खोजने फिरै चिऐ से ई बिल्कुले नै चिऐ ।"

उ आपन गुरू अलार लग एलै आ सत्कार क्याके एकटा स्थानमे वैठ गेलै । "तो कथी निर्णय कैलही सिद्धार्थ? की तो हमरासव संगे रहैके निर्णय क्या लेलही ?" अलार पूछलकै ।

"जी, नै गुरू महराज, हमर उद्धपनाके क्षमा केल ज्या । हम समस्याके जै प्रकारके समाधानके खोजीमे चिऐ से ठीक वोहै प्रकारके दिक्षाके अभाव लागैए ।

हम अपनेके प्रति बडा कृतज्ञ चिऐ जे आपने हमरा आपन शिष्य बन्याके दिक्षा देल गेलै । ई दिक्षा प्राप्त करनाई हमर जिवनके बडका उपलब्धि चिऐ । तैयो हमर निवेदन जे हमरा और बेसी खोजके वास्ते अज्ञा भेटतिऐं त हम अगुग्रिहित हेतिऐ ।"

"सिद्धार्थ, एखंन तलिक जतहेक शिष्यके हम शिक्षा दीक्षा देलिऐ तैंमे तो सवसेवेसी प्रतिभाशाली आ असल अनुशासनके शिष्य मेलही । हमरा, तोरा जाइत देखके वडका दुःख भ्या रहल आइछ लेकिन हम तोरा ऐसे वेसी कोनो प्रकारके शिक्षा नै द्‌या सकैचिऔ । अगर तो ऐसे उचका दर्जाके कोनो चिज प्राप्त करविही त घुइमके आविहे आ हमरा शिक्षा दैके कृपा करिहे । बिना बाधा बिरोधके तोरा आपन असलका लक्ष हासिल भ्या जाउ तकर हम कमना करै चिऔ ।"

"अपने दिर्घायु एवं सकुशल रहव से हमर कमना ।" सिद्धार्थ गुरू अलारके भक्ति कैलकै आ आपन वाट पकडलक ।

सिद्धार्थ सुनने छेलै जे दुनु अलार कालम आ रूद्रक रामपुत्र दोसर दोसर स्थानमे आश्रम बन्याके रहै छेलै लेकिन पाठ अभ्यासके प्रयोग एके सिद्धान्त सूत्रके अनुसरण करै छेलै । तैयो उ पता लगवे चाहलकै जे रूद्रक रामपुत्र कतहेक अभ्यास पुरा करने छै । उ, तै रूद्रकके आश्रम जे अलारके आश्रमसे बडी दुर नै छेलै तते गेले ।

रूद्रक सिद्धार्थके शिक्षा दैके वास्ते आपन शिष्य बन्यालेलकै आ दिक्षा पाठ दैके आरम्भ क्या देलकै । थोरवेहेक दिनमे सिद्धार्थ बुझ्झ गेलै जे रूद्रकके शिक्षाके अधार बोकरे शिक्षासे मिलान के छै । तैंमे अलारसे एकटा वेसी स्थानके फरक रहै । जै ठाम अलारके शिक्षा शून्य निरंकारमे ज्याके समाप्त भ्या जाइ छेलै तैंमे रूद्रक एकटा उचका स्थान प्राप्त करने छेलै । एकरा उ "ने त प्रत्यक्ष" छै एवं "ने त अप्रत्यक्ष" छै के संज्ञा देने छेलै । सिद्धार्थ बिचार करे लागै । एहेन कोन चिज छेलै जे रूद्रक अलारसे ध्यान विचरणमे एकटा उच स्थानके प्राप्त करैमे सक्षम भेलै जावकी सिद्धान्ततः अलार आ रूद्रकके पहँनका दुइटा तरिका एके किसिमके छेलै । जावकी अलार शुन्यताके सवसे उच स्थान दयाके एकरै सवसे वडका मानने छेलै रूद्रक वोई शून्यताके स्वयं जाच क्याके ऐमे कोनो सारतत्व छै कि नै तकर ज्ञान प्राप्त करैके माध्यम बनैने छेलै । ऐ प्रकारके ध्यान बिचरणके माध्यमसे कोनो प्रकारके सारतत्वके अभिज्ञानके प्राप्ति नै हेवे सकलकै त उ ऐसे एकटा दोसर उच स्थानके ज्ञान प्राप्त करलकै जेकरा उ ध्यान विचरणके सवसे अन्तिम एवं उचका स्थानके सञ्ज्ञा देलकै जे ने त कोनो प्रकारके प्रत्यक्ष चिऐ आने कोनो प्रकारके अप्रत्यक्ष चिऐ । यहे सव धतुमतुसे उ एकरा सवसे वडका मानने छेलै आ

जेकरा उ सधारण ज्ञानसे बहौत बहारके बिषय कहै छेलै जे वास्तविकता सेहो रहै ।

सिद्धार्थ रूद्रकके सेहो वोहिनङ बिमूढ अवस्थामे त्याग क्याके आगा बढलै आ जाइत जाइत मगहके उरूवेल नामके छोटका बजारमे पुगलै । तै समयमे मगह राज्यमे सन्त फकिरसव लोकसवके विभिन्न प्रकारके धार्मिक सिद्धान्तके शिक्षा दिक्षा दै छेलै आ आपनौ आपनौमे एहिनङ्ग धार्मिक दिक्षाके अभ्यास करै छेलै । ऐ सबमे एकटा अभ्यासके सिद्धान्त वडा ख्याति प्राप्त करने रहै जेकरा लोकसव अत्यन्त कठिनतम स्वयं शरीर सधना कहै छेलै । ई देखके सिद्धार्थ आपनै आपनै बिचार करे लागलै ।

"हम गुरु अलार आ रूद्रकके शिष्य भ्याके धार्मिक अनुष्ठानके ध्यान विचरण पाठके अभ्यास करलिऐ तैयो स्वतंत्रताके ख्यालसे उ अभ्यास वडा क्षणिक आ क्षणभंगुर है छै। हमर अनुभव अनुसार उ स्वतंत्रता जखनी हम ध्यान विचरण रहै चिऐ तखनी आ फिर्ता भ्याके सहज मनःस्थितिमे एलाके थोरबेहेक समयतलिक कायम रहैछै । सहज मनःस्थितीमे फिर्ता भ्याके एलाकेथोरबेहेक समयके अन्तरालमे हमरा फेर आपन इन्द्रिय जन्य विषय आ आनन्दोतसव विषय उद्वेलित करे लागै ए । तै सन्त फकिर सवके अभ्यास करैवला स्वयं शरीर सधनाके अभ्यास हमर ऐ खोजीके काममे वडका महत्वपूर्ण भ्या सकैछै । अगर शरीरके संतुष्ट करैवला चोटगर भोजन प्राप्त हैत रहै आ इन्द्रिय सवके उत्तेजनापूर्ण आनन्दके वढवैके माध्यम कायम रहतै त मन मस्तिष्क केनङ क्याके आपन बसमे नियंत्रित रहे सकतै ? पाइनमे भिजल एकटा काठके दोसर तितल काठमे रगडलासे आइगके चिनगारी केनङ क्याके उठे सकतै ? असल आ पुष्टिकारक भोजन प्राप्त कैलहा शरीर आ इन्द्रिय बिषयमे लिप्त मन त बोहिनङ भिजलहा काठ नहाइत है छै ।"

उरूवेलमे घुमैत फिरैत उ एकटा निर्जन पहाडके फेंदीमे पुगलै । ऐ पहाडके चारूकता खेते खेतके मैदान छेलै आ एक दिसर निरंजरा खोला प्रवाहित भ्या रहल छेलै । चारू कता एने वोने ताकैत चैलत सिद्धार्थ देखलकै जे पहाडके हेठानीमे खौ वडका वडका असल गफा सव छै, जैमे महात्मा सव निवास क्या रहल छेलै । उ गनलकै त पाचटाके देखलकै । उ फकिर सव सवटा आपन आपन स्वयं शरीर सधानमे रत छेलै । सिद्धार्थ एकटा धनगहरा गाछके छहाइरमे बैठके देखे लागलै जे कोन प्रकारके सधना भ्या रहल छेलै ।

किछ समयके वाद उ फकिर सव जे स्वयं शरीर सधनाके आध्यात्मिक

अभ्यासमे ध्यान मगन छलै आपन आपन ध्यानके भंग कैलकै आ आपन आपन जगह त्याग क्याके निरंजरा खोलामे गेलै ।

वोते ज्याके उसव स्नान मज्जन करलकै आ घुइमके एकटा गाछके छहाइरमे जम्मा भेलै। सिद्धार्थ वोकरासव लग पुगलै त सिद्धार्थके सव गोडे नमस्कार कैलकै ।

"अपने सव आपन अध्यात्मिक अभ्यासके वास्ते वडा बढिया स्थान पसिन क्याके निवास क्या रहल चिऐ ।" वोकरा औरके बातचितमे शामिल हैके खातिर सिद्धार्थ आपन गप छोडलकै ।

"अपने ठिक कहल जाइछै ।" एकटा महात्मा कहलकै । "हमरासवके अध्यात्मिक अभ्यास करैके ई वडा ठीक स्थान छै । नजदिकमे लदी प्रवाहित भ्या रहल छै जैमे वडा सफा आ शीतल जलके बहुतायत छै । थोरवेहेक दुरमे गामछै जैमे कृषक परिवारसव निवास क्या रहलछै । उसब वडा भवगर आ दयावान छै । हमरासवके भिक्षा प्राप्त करैमे कोनो प्रकारके भाङठ नै हैछै ।

सिद्धार्थके व्यक्तित्वमे, गालके हाड एक रति उठल रहै आ नाकमे एकेटा ऐहेन स्पष्ट रेखा गेलरहै जे वोकरा वोई समाज से वहारके देखावै छेलै, तैयो अप्रतिम सुन्दरताके प्रतिनिधित्व क्या रहल छेलै । लेकिन उ वोई समाजके नै छेलै जै ठाम एखनी वर्तमानमे छेलै । वोकर मुखाकृति देखके छक परैत एकटा महात्मा पूछलकै ।

"अपने के चिऐ ? अपनेके शुभ नाम की भेलै आ अपने कतेसे पदार्पणकरने चिऐ ?"

"हमर नाम सिद्धार्थ चिऐ । हम थारू जाइतके शाक्य परिवारसे सम्बन्धित चिऐ। हम मानवोचित दुःख दरदके समस्याके समाधानकरैले उद्दत भ्याके तकरे खोजीमे चलल चिऐ । बृद्ध अवस्था, जरा, मरण, क्षणभंगुरता आदि सवके जक डनेछै । एकरसे पार पावैके जरूर कोनो बाट हेतै । एकरसे छुटकरा पावैके जरूर कोनो साधन हैते ।"

"साधु, साधु, हमहूसव आपन अध्यात्मिक अभ्यासके माध्यमसे यहै सव चिजके प्राप्तिके आश करने चिऐ ।" तेसर फकिर कहलकै ।

"महात्माजी, की, अपने हमरासवके सङ्गहैतमे पङहैत क्याल जेतै ?" उ सिद्धार्थके पूछलकै आ आपन वातके समर्थन प्राप्त करैले आन फकिर साथीसव दिसर ताके लागलै । वोहोसवटा आपन आपन मुडी डोल्याके समर्थन जनैलकै ।

सिद्धार्थ खौ मनगर भेलै । वोकरा यहिनङ साथीसवके खाचो छेलै । उ नै

जानै छेलै जे कोन प्रकारके धार्मिक सिद्धान्तमे संलग्न भ्याके अभ्यास करतै ।

"बहौत बढिया, अगर आपने मण्डलीके सलाह हैछै त बहौत बढिया हैतै ।" सिद्धार्थ तुरन्ते जवाव देलकै । सिद्धार्थ वोकरा सबके नामसे परिचित भेलै उसब कैन्डिन्य, भादिया, वापा, महानाम आ अश्वजित रहै ।

पूर्वाह्नीबेर भ्यागेल छेलै । फकिरसबके गाम दिसर ज्याके भिक्षाटन करैके समय भ्यागेल छेलै । उ सब पाली पाली क्याके एके गोडे भिक्षाटन करे जाई । एकटा फकिरके भिक्षाटनसे प्राप्त भेलहा खाद्य सामाग्रीसे सब गोडे सन्तोष पूर्वक भण्डार चेतवै छेलै । उ सबके बहौत भोजन सामग्रीके आवश्यक्ता नै रहै छेलै । स्वयं शरीर सधनाके अभ्यासमे रत रहलासे उ सब बहौत अल्प भोजन करैके अभ्यास सेहो कैर रहल छेलै । कहियो कहियो एकटा महात्माके भिक्षाटनसे प्राप्त भेलहा सामग्री पाँचो व्यक्तिके वास्ते बेसी भ्या जाइछेलै । भिक्षाटन करैके अजुका पाली महानामके रहै । उ सिद्धार्थके आपन संगे भिक्षाटनमे जाइके आग्रह करलकै जैसे कि उ गौवां लोकसबसे परिचित हेतिऐ आ आनदिन आपन पालीमे एकसरे जेतिऐ ।

भिक्षाटनसे प्राप्त भेलहा सामग्री सबगोडे मिलके भोजन कैलकै । एहेन सधारण भोजन सिद्धार्थ आपन जिवनमे आई पहैनकाबेर प्राप्त करने रहै । भोजनोपरान्त सिद्धार्थ आपन साथी महात्मा सबसे अध्यात्मिक अभ्यासके सिद्धान्त विषयक जनकारी प्राप्त करलकै । अपराह्नमे उ एकटा एकान्त ओडार (गुफा) मे ज्याके स्थान पसिन कैलकै आ तकरा सफा सुघर क्याके अध्यात्मिक सिद्धान्त के अभ्यास करैले ठिक जगहके विचार क्याके बैठले ।

"हमरा पहिने आपन शरीरके सघनाई जरूरी छै ।" उ आपनै विचार कैलकै । आपन शरीरके कोन विन्दु (अङ्ग) से अभ्यास प्रारम्भ करैक चाही ।शीर (मस्तक) सधना आवश्यक छै । प्रत्येक कामकरवाहीके प्रारम्भिक स्थान (केन्द्र विन्दु) एह्या चिऐ । लेकिन हमर शरीरके ऐ शिर्षस्थ स्थानमे एहेन कोन अङ्ग छै जेकरा हम साधवै । गुरू अलार एवं रूद्रकसे हम आपन इन्द्रियके नियन्त्रण करैके अभ्यास सिखलिए लेकिन तैसे हमरा ततहेक लाभ नै भेटल । आपन शरीरके, विना आइखके फोड्ने, विना कानके बुजने, आ विना नाकके छेदके गहने हम केनङ्गके नियन्त्रण क्याके साधवै । वोनङ्ग करलासे त ई अङ्गसव सबदिनके वास्ते नष्ट भ्याजेतै । आपन शरीरके नियन्त्रण क्याके साधहैके जरूरकोनो बाट हेतै ?"

उ आपन दातके कट कट्याके बैठलकै आ आपन जीहके तौरमे सट्याके उपारमाथ बल करे लागलै । एनङ्ग करलास उ दवावके अनुभव करेलागलै । वोई

दबावके और बढवे चाहलकै आ जीहके तौरसे सट्याके उपरमाथे बल करैत रहगेलै। अभ्यास रत भेलासे वोकर कनपैट दने लुह लुह घाम चुवे लागलै। लेकिन उ आपन सधनामे लागल रहलै। तैयो वोकर शरीर स्थिर वा शान्त नै भेलै बल्कि वोकर सर्वाङ्ग शरीरमे बडी जोरसे दरद हेवे लागलै। लेकिन उ वोई विनासकारी दरदके पीडासे आपन मन मस्तिष्कके संदिग्ध नै हेवे देलकै। जाव उ ऐ सधनाके साइधके समाप्त करलकै त वोकर गलफर, कण्ठके लकलकी आ कानमे वडका घा भ्या गेल छेलै।

तदुपरान्त उ आपन शरीरके गर्दनसे लिचला अङ्गके सधना अभ्यासमे रत भ्यागेलै। उ आपन सांसके रोकैके निर्णय कैलकै। उ आपन सांसके नाक आ मुहके द्वारसे बहार भितर जाइके रोक लग्या देलकै। जखैनिऐ उ आपन सांसके रोकलकै कि एक प्रकारके बहौत कडा अवाज वोकर कानमे आवे लागलै। उ अवाज कमियाके भाथिसे वहरेलहा अवाजके सदृश्य छेलै। वेदना वोकर शीरमे व्याप्त भ्या गेलै जेनङ कोनो बडका वलिष्ट व्यक्ति एकटा तरूवाइरके टिप टिपार नोक (टुपी) लके वोकर गोइदलगके खप्परमे जोरसे गाथैत रहै। तैयो उ आपन सधना जारी राखलकै। लेकिन जाव उ एनङ करै त वोकर वेदना कम नै हेवै बल्की बढले चैल जाई। तैयो उ नै छोडलकै आ वेदनात्मक अनुभूतिके आपन मन मस्तिष्कमे व्याप्त नै हेवै देलकै।

एकरबादमे उ आपन पेटके साधहैके विचार कैलकै। उ बहौत कम भोजन करे लागलै। उ एतबहैक भोजन करै जत्तहेक एकटा हलुक मुठीमे आवै। वोकर शरीर बडा दुब्बर भ्या गेलै। उ लैटके सैंट गेलै। वोकर बैठलहा जगहमे एकटा उटके थाप वराबैरके चिह्न मात्र आवै छेलै। वोकर रिढके हाड घरके धरैन नहाइत लागै छेलै। वोकर छातीके हाडसब झाटसे उजरलहा घरके कोरो लखा लागै छेलै जेनङ छाइह्तके सवटा खडहीके झाट उडया देने रहै। वोकर आइखके ज्योति बडका गुड गुड गैहर इनारमे छटकैत पाइन लखा धसलहा आइखके खाइधमे छटकैत रहै। वोकर शीरके केश आ छला जेनङ सीमरके आठीके रौद मे सुखे देने रहै तहिनङ्ग उडल जाइत रहै। जाव उ आपन पेटके छुवै छेलै त वास्तवमे उ आपन रिढके हाड छुवै छेलै। तेनङ भ्याके वोकर पेटके छला पिठमे सैंट गेल छेलै। जाव उ आपन कोनो अङ्गके छुवै छेलै त कपाडके केश आपनै मने झरे लागै छेलै।

उ पाँचोटा फकिर साथीसब सिद्धार्थके सधना अभ्यासके तौर तरीका देखके छक पैर गेल छेलै। उ सब सिद्धार्थके बडा सम्मानित नजैरसे देख रहल छेलै। उ सबके यहो आस छेलै जे सिद्धार्थ वहौत जल्दीमे आपन लक्षके हासिल क्या

लेतै । सिद्धार्थ हिल डुल करैले असमर्थ भ्यागेल छेलै । तै उ फकिर साथीसब वोकर आवश्यकताके सामग्री–पिऐके वास्ते पाइन लाइब दै छेलै आ समय समयमे वोकर धुरी-धुसर शरीरके सफा क्या दै छेलै जैसे की वोकर देह बेसी गन्दा नै हेवें ।

सिद्धार्थ आपन उपवास बलमे रत रहलै । वोकर शरीर कलान्त एवं जर्जर कमजोर हैत चैल गेलै । यद्यपि कि वोकरअन्तरबल आ उत्साह द्विगुणित बडहल गेलै । एक दिन जाव वोकर शरीरके बल वोकर शरीरके नै थामहे सकलकै त उ मूर्छित भ्याके धरतीमे खैस परलै । एकटा गैवार जे आपन गाई वोहे ठाम भजैने रहै सिद्धार्थके मूर्छित भ्याके खसल देखलकै । उ दौडैत घरगेलै आ आपन महताईर वापके जे धार्मिक प्रवृतिके छेलै आ साधु सन्तके सेवा क्याके अपनाके धन्य बुझहै तकरा कहलकै "बाबु बडका बबाजी त मोईर गेलै ।" उ धरमाहु दौडल वोई स्थानमे एलै जते सिद्धार्थ भूइयामे खसल रहै । घरमाहु वोकरा देखलकै आ विचार करलकै जे सिद्धार्थ एखनी नै मोरल छेलै हुक हुकी बाकी रहै । उ दौडल आपन घर एलै आ गरम गरम दुध लज्याके सिद्धार्थके मुहमे देलकै । सिद्धार्थके पेटमे दुध गेलै त एकछनमे सुग बुगैले । ऐ प्रकारसे उ घरमाहु किसान सिद्धार्थके आपन घर ल्या गेलै आ सेवा करे लागले । वोकरा बढिया भोजन प्राप्त हेवे लागले । ई देखके वोकर फकिर साथी सब वड निरास भेलै जे सिद्धार्थ आपन अध्यात्मिक सिद्धान्तके अभ्याससे भरैमके भरैठ गेलै । तै वोकरा वहे ठाम छोइडके उ पाचो चैल जाइत रहलै ।

जावे तलिक सिद्धार्थ फेरले स्वास्थ्यलाभ नै करलकै तावे तलिक वहे गाममे रहलै । ऐ समयमे उ विचार करै । उ सन्त फकिर आ जावहनसब जे सन्त कर्मके अभ्यास करैछै आ हम जै प्रकारसे आपन सधना कैलिऐ तैसे बेसी नै करनेछै । साच कह त हम आपन साथीसब जे एखनी हमरा परित्याग क्याके चैल गेलै तै सबसे बहोत वेसी आ वडका सधना कैलिऐ । हम करीब करिव मृत्युके प्राप्त भ्या ने ने छेलिऐ तैयो तक हम कोनो प्रकारके मानबेत्तर ज्ञान वा दिव्य दृष्टिके एको झलक जे उत्तमोत्तम लक्ष आ जे दुखानुभूति से परे छै तकर सक्षत्कार प्राप्त नै करे सकलिऐ । ई वास्तवमे बाट नै चिऐ एकर तुलनामे गुरू अलार आ रूद्रकके शिक्षा बहोत बडका आ महान छै । हम आपन बाट विसेर गेलिऐ । हमरा फेर फिर्ता भ्याके आपन वोहे बाटके पछुवावे परतै ।

१५—पन्द्रहम

ए प्रकारसे सिद्धार्थ छ बरिस तलिक एकटा सिद्धान्त सिखै, तकर प्रयोग करै, तकरा त्याग क्याके दोसर परम्परामे जाई तकरा परिक्षण करै, फेर तेसर मे जाई

दुष्करचर्या (बुद्ध)
तक्षशिला पेशावर, द्वितीय शताब्दि ईसा

ग्रा घुइमके फेर पहैनकामे ग्रावै । एवं किसिमसे प्रयोग करैत करैत भटकैत भटकैत उ मगहके रजधानी राजगीर पुगलै ।

राजगीरके बाहरी सिमामे निबास करैत सिद्धार्थ एक दिन रजधानीके बिचला हिस्सामे भिक्षाटन करे गेलै । ग्रावश्यक्ता ग्रनुसारके भिक्षाटन प्राप्त भेलाके वाद सिद्धार्थ ग्रापन छोटका कुटीमे फिर्ता ग्रावैत रहै । जाव उ राजदरबारके लगंदने जाइत रहै त रजा बिम्बीसार जे ग्रापन महलके उपरका ग्रलङ्गमे ठाढभेलरहै सिद्धार्थके जाइत देखलकै । उ एकटा सिपाहीके चाल क्याके सिद्धार्थके इंगित क्याके कहेलागलै "ग्रोई योगीके देखही । हम मगहमे ग्राई तक जे योगी फकिरके देखलिऐ तैसे ई बहौत फरक छै, एहेन महात्मा हम कहियो ने देखने छेलिऐ । तो एकरा पछुवा ग्रा एकरा नै बज्याके एकर पाछे पाछे जो । ई जते रहैछै से पत्ता लग्याके ग्राबिहे ग्रा हमरा तुरून्ते जनकारी दीहे ।"

"सरकार, तहिनङ्ग करवै ।" सिपाही जवाब देलकै ग्रा दौडके बबाजी के पिछोड धैलकै । पिछोड करैत उ सिद्धार्थके छोटका कुटी तक गेलै जते उ पाण्डव नामके छोटका पहाडी स्यानमे रहै छेलै । सिपाही फिर्ता भ्याके एलै ग्रा जे देखने छेलै से सवटा रजा बिम्बीसारके कहलकै । एकटा रथमे सवार भ्याके रजा तुरन्ते सिद्धार्थके कुटी जते उ भोजन करैके तैयारी क्या रहल छेलै दिसर बिदा भ्यागेलै । रजा पुगलै त देखलकै जे सिद्धार्थ भोजनमे व्यस्त छै त उ थोरहेक दुरमे ठाढ भ्यागेलै । जाव सिद्धार्थ भोजन समाप्त कैलकै त वोकर लग गैलै ।

"तो एखैनियो वहौत कॉच उमेरके चिही देखैमे सुन्दर ग्रा ग्राकर्षित युवक चिही । तोहर वास्ते जिवनके ई रवैया ठिकनै बुझ्झ परैछै । एहेन कोन कारण भैलौ जे तो घरत्याग क्याके ऐ जिवनमे प्रवेश कैलही घरके वरवादी, परिवारके का्ट तो ई जिवनके छोड ग्रा हमर लग चल, हम तोरा तोहर सब ग्रावश्यकत्ताके पूरा करबौ । तो हमर मगहके राजकाजमे बहौतप्रकारसे सहायक भ्या सकै चिही । तो पारिवारिक जिवनके प्रत्येक सुखके भोग क्या सकै चिही ।"

सिद्धार्थ रसे रसे ग्रापन भुडी उठैलकै ग्रा ग्रापन सामनेमे खडा भेलहा व्यक्ति जे ग्रपनाके मगहके रजा घोषित कैलकै ग्रा जेनङ्ग उ राजशाही पोशाकके पहिरनमे छेलै त वोकर पदके विचारकैलकै ग्रा वोकरा पहचाइनके वडा कोमल लेकिन गनगनबैत ग्रवाजमे कहलकै ।

"ग्ररे महाराज, हम जे ई जिवनके परिवेशमे एलिऐ तै मे हम ग्रापन सर्वस्व नास क्याके नै एल चिऐ; बल्कि हम देखलिऐ जे धनसे प्राप्त केलहा सुख एवं

आनन्द कतहेक असंतुष्टि दायक एवं क्षणभंगुर हेछै। हम आपन परिवारमे भेलहा मृत्युके अनुभव कैने चिऐ। कोनो एहेन परिवार छै जै ठाम कि मृत्यु आपन स्थान नै ने ने हेवै। ई महशूस करैत जे धनसे कोनो प्रकारकेस्थाई सुख प्राप्त नै भ्या सकैछै आ मरणशीलता जिवनके एकटा अभिन्न अङ्ग चिऐ त हम ओई सब हेतुमे जे हमरा कोनो प्रकारसे स्थायी संन्तुष्टि प्रदान नै क्या सकैए त आपन जिवनके अकारणमे कथिले वेरवाद करबै। हमरा धन सर्वस्वसे कोनो लगावनै आइछ आ इन्द्रिय विषय सुख जे प्रायःधन दौलतसे खरिद क्याके भोग चलन क्या सकै चिऐ तहौमे कोनो प्रकारके आकर्षण नै देखैचिऐ। हम शुद्धोधन जे शाक्य सबके रजा चिए तकर पुत्रभ्याके जनम नेने चिऐ। हम स्थिर आ स्थायी शान्ति, सर्व कल्याण आ अमरत्व के खोजीमे निकलल चिऐ।"

इ बात बिचार सुइनके रजा बिम्वीसार अवाक भ्यागेलै। वोकरा बिश्वासनै भेलै जे ई रजा शुद्धोधनके पुत्र सिद्धार्थ चिऐ। यँ ठामत शाक्य सबके भबिष्यके कर्णाधार रजासे भेट भेलै। वोकरा आपन आइखमे सिश्वास नै भ्या रहल छेलै उ आश्चर्य छकित छेलै आ बिचार क्या रहल छेलै जे हमरा कोनो प्रकारके निशात ने लागल आइछ। उ आपन चारूकता ताकलकै आ आपन अङ्गरक्षकके देखलकै। उ आपन एखेनिए बितेलहा समय सब के एकटा कडी बन्याके बिचार करे लागलै जे उ कोनो दोसर प्रकारके सपना त नै देखरहलछै। उ आपनै आपनै कहे लागलै सपना अथवा निसामे ककरौ ऐ प्रकारसे पछुव्याके पता लगेनाई हल्क बात नैहैछै। भविष्यके पत्ता लगेनाई सेहो हलुक नै हैछै। हम एखनी सपना नै देखै चिऐ। हमरा कोनो प्रकारके मन मास्तिष्कके खराविके कारण नै भेल आइछ आने एखनी कोनो प्रकारके निसाके व्यबाहार कैने चिए। इ त वास्तवके बास्तविकता चिऐ।

औक बौक हेन्याके उ एक क्षण सिद्धार्थ दिसर ताकैत रैह गेलै। होस एलै त कहलकै।

'गुरू महराज, जाव अपने सत्तके बोध क्या लेवै आ आपन लक्ष हासिल क्या लेवै त कृपाक्याके राजगीर अवश्य पधारल जेतै। अपने हमर अध्यात्मिक गुरू हेवै त हम वडा आनन्दित हेवै। हम अपनेके सवचिज प्रदान करव।"

सिद्धार्थ कुछने वाजलै वोकर दुनुगालके हाड एहेनसे उठलै जे बिहुसनाई के एकेटा रेखा बहरैलै।

रजा आदरपूरवक वोकरा नमस्कार कैलकै आ आपन अठपहरियाके साथमे बिदा भ्याके चैल गेलै।

पछिम दछिन दिसर आपन यत्रा प्रारम्भ क्याके सिद्धार्थ फेरो उरूवेल पुगलै जैंठाम उ स्वयं शरीर संधनाके अभ्यासमे दक्षता प्राप्त कैने छेलै । छोटका पहाड पार क्याके वोई स्थानमे पुगलै जते वोकरा पहैनका पाचो फकिर साथी सबसे भेट भेलरहै । तै स्थानसे उ चललै त एकटा आश्रम भेटलै जैंमे कश्यप नामके महात्मा अग्नि बलिदानके अनुष्ठानमे अभ्यासरत रहै । कश्यपके छोटका आश्रम जैंमे अग्नि अनुष्ठान हेवै आ तकर चारूकता वोकर शिष्यसबके छोट छोट आश्रमसब रहै । वोकर शिष्यसबसे वोई स्थानके अनुष्ठान सम्बन्धके विषयमे जनकारी प्राप्त कैलकै आ जाव बुझहलकै जे ई वोकर आपन अनुष्ठानके विषयसे तुच्छ छै त कश्यपसे भेटैके कोनो प्रयोजन नै बुझहलकै आ आपन रस्ता अगा क्याके एकटा पहाडी ढिस्का पार क्याके एकटा वडका वरके गाछके लग पुगलै जे खौ सितल छाह दैत रहै । वोई ठामसे खेतके हरियर मैंदानी भाग बडा सुन्दर आ मनमोहक दृश्य उत्पन्न क्यारहल छेलै । सिद्धार्थ गाछ के जैंडमे बैठ गेलै आ आपन पिठ गाछ के धैंरमे सटचा देलकै । वोईठाम बठैके उ मनुष्यके प्रकृति जन्य अस्तित्वके विषयमे आपन बिचारके दोहऱ्या तेहऱ्याके विचार निमग्न भ्यागेलै ।

"मनुष्य ऐ दुनियामे जनम लैछै । उ केनङ जनम लै छै, कहिया जनम लै छै, कथिले जनम लै छै से उ नै जानै छै तैयौ उ फेर फेरसे जनम लैकै वाटमे अरसोठा लगैने रहैछै जे कोन प्रकारसे जनम भ्या सकैए ।"

"मनुष्य जिर्ण भ्याजाइछै । उ नै बुझहै छैजे जिर्णता केनङ एलै; तैयौ उ जिर्णता केनङ्ग एतै तकर बाट जोहैत रहैछै ।"

"मनुष्य जनम मरणसे सम्बन्धित छै । उ नै जानै छै जे मृत्यु कथिले हेछै तैयौ फेर उ मृत्युसे सम्बन्धित कारणी सबके निमन्त्रणा दयाके चालकरैत रहैछै बिनाशके लिला आपनै गडहैत रहैछै । मनुष्यके दुःख बेदना आ निरसा हरदम हैतरहैछै । तैयौ उ कोन चिजसे दुःख हेतै, कोन चिजसे बेदना उठतै आ कोन चिजसे निरसाहेतै तकर सम्बन्धित कारणीसबके बाट पछुवाबैत रहैछै ।"

"जाव हम जानै चिऐ जे हम जनम लेने चिऐ, त, हम जनम कथिले लेलिऐ तहै चिजके खोजी करवै से हमरा उचित नै लागए । हमरा त ई ज्ञान प्राप्त करैक चाही जे कोन कारण ऐहेन भ्या सकैए जैसे कि फेर हमरा जनमनै लेवे परे माने 'अजन्मा' भ्या जाई । जाव हम जानै चिऐ जे हम जिर्ण भ्या जेवै त कथिले जिर्ण हेछै तकर खोजकरनाई कोनो लक्ष्य प्राप्तिके विषय नै चिए, बरूस एहेन कोन कारण भ्या सकैए जैसेकि जिर्ण हेवे नै करवै । हम जानै चिऐ जे हम एकदिन

मृत्युके हाथमे जेवे करवै विनाश हेवे करवै । त हमरा मृत्यु आ बिनासके कारणके पतालगेनाई ततेहेक लौलसापूर्ण बात नैजचैए; एकर बदलामेत अमरत्व, अबिनाशके खोज केनाई बढिया बात भ्या सकैए। हमत जानै चिए जे हमरा दुःख बेदना आ परतंत्रता चारू दिसरसे घैरने आइछ त, हम ए दुःख, बेदना आ परतंत्रताके कारणसे सम्बन्धित विषयके जनकारी लेवै से कोनो ज्ञान बस्तुपरक विषय नै भ्या सकैछे बल्कि हमरा त निष्काम, सुरक्षित एवं बेदनारहित कारणसे सम्बन्धित विषयके ज्ञान प्राप्त करक चाही ।"

जाव उ ऐ प्रकारके बिचारमे पूर्ण रुपसे निमग्न छेलै तखनी ओकरा आपन बाबुके पहिने पहिने गवलैके अबसरके कर्मक्याण्डके सम्झना भेलै । वोकरा स्मरण भेलै जे ऐ अबसरमे वोकर पिताके साथै वोकर प्रजास्मेतके केहेन प्रकारके अनाहकके तकलिफ भेल छेलै । वोई समयमे सिद्धार्थ वोई प्रकारके काममे सहभागी नै छेलै वोकरा वोई दुःखपूर्ण परिस्थितिके काममे घिसियाके ल्यागेल छेलै । सबसे बढिया जिवन पद्धती तहेले, यै प्रकारके भ्या सकैछै जैसे ने अपना कोनो प्रकारके दुःखके अनुभूति हेवै आने आपन केलहा कामसे दोसरके कोनो प्रकारके दुःख पुगै । की यै प्रकार के जिवन यापनके पद्धति कोनो व्यक्तिके वास्ते सम्भव भ्या सकैछै ? अगर कोनो सम्भावना छै त कोन प्रकारसे प्राप्त भ्या सकैछैं ।

जेनङः उ आपन विचारमे निमग्न छेले से उनै जाने सकलकै जे कखनी बिहान भेलै । चतुर्दर्शी इजोरियाके चान, राइतके दिन सरिखा क्या देने छेलै ।

बडका भोरे उ देखलकै जे एकटा वडा सुन्दर जनिजात वोहिनङ्ग सुन्दर दुइटा नोकरनीके साथमे ल्याके वोकर दिसर आईव रहल छेलै । उ तीनु जनिजात सेहो सिद्धार्थके दुरौगैसे देख लेलकै । उ सब वोकरा देखके अवाक भ्या गेलै । उ सबके आपन आईखमे विश्वास नै भेलै । उ जनिजात एकटा वडका धनिक व्यपारीके पुत्री सुजाता रहै । उ पूर्ण मासिके दिन अनगुतिऐ वोई वडका चतर-रहला वरके गाछमे निवास करैवला देवताके आपनै हाथसे वनेलहा खीरके पूजा करैके नियम बन्या नैने छेलै । गाछके तर मे बैठलहा सिद्धार्थके सुन्दर व्यक्तित्वके देखके उ विचार कैलकै जे हो न हो आईके देवता प्रशन्न भ्याके व्यक्तिगत रुपमे वोकर अरधना स्वीकार करैके वास्ते आपनैसे प्रगट भ्या गेलछै । तैयो डरसे उ वोकर लगमे न ज्या सकै ।

अन्तमे उ बहौत साहस क्याके सिद्धार्थ लगगेलै आ सवधानी मगर सादरपूर्वक आपन अनलहा खीरसे पूजा कैलकै ।

ई तीनु जनिजात आवैके असलका कारण एवं खीरके पूजा पाठके सम्बन्धमे पूर्ण अनभिज्ञ सिद्धार्थके सन्देह भेलै जे हो न हो वोकर पत्नी यशोधरा आपन रुप बदैलके दुइटा नचैनिया छौडीके ल्याके वोकरा आपनघर घुम्याके ल्याजाइके आसमे एल छेलै। उ वोकर दिसर विना ताकनै सामग्रीके स्वीकार क्या लेलकै। उ वोई प्रकारके भावुकतामे नै आवे चाहे।

वोई गाछमे निवास करै वला देवताके पूजा अरधना क्याके उ तीनु सुन्दरी आपन रास्ता नापलक। सिद्धार्थ आनन्दपूर्वक खीरके भोजन कैलकै आ भिक्षा पात्र हाथमे ल्याके निरंजरा खोला दिसर विदा भ्याग्याल। गर्मिके कारण खोला बौलके रेगिस्थान भ्यागेलछेलै आ एकेटा ठेङ्गहुन भैर पाइनके धार बहै छेलै। वालुआही हिस्सा पार क्याके उ पाइनके धार मे एलै जेकर रेत खौ कडगर छेलै। उ किनारमे ज्याके आपन हाथ गोड आ मुह धवैलक। उ भिक्षापात्रके सफा करैके खातिर धारमे छोइड देलकै। उ डुगलै नै बल्कि भठा माथे भसियावे लागलै उ वोकरा पकैड लेलकै।

"फेर यहोठाम" उ बिचार कैलकै। मानव जिवन यहै निर्जिव भिक्षापात्र सरिखा छै। ई खाली धार संगे भसियावैत चैल जाइत रहैछै। मानव मात्र कोन कारणसे निर्जिव भिक्षा पात्र सरिखा हेछै? की उ सब कोनो भिन्न प्रकारके नै भ्यासकैए? की उसव धारके बिरूद्ध कोनो गति नै उत्पन्न क्या सकैए?"

तुरते वोकर स्मरणशक्ति एकटा पहैनका घटनाके सम्बन्धमे उखडलै। उ याद कैलके जे यशोधरा से बियाहके प्रस्ताव राखैके सम्बन्धमे कपिल संगे सर सलाह के बातचित करैले रोहनी लदीके किनारमे वनेलहा बेगैचामे गेल छेलै। उ यहो स्मरण कैलकै जे खोलाके कडगरहा रेत छोटका ढोङ्गहरी सबके आपन संगे एक दोसरमे बजारैत भसिऐंने ल्या जाइछेलै, चिमटी सदृश्य छोटका करिया जिव जोलहैनी धारके उपर माथे जाइके हर प्रयासकरैं लेकिन रेतके एकेझोकमे दहचाके फेर आपन स्थानमे फिर्ता भ्याके आवै; सेहो वोकरमानस पटलमे एलै वोकरा यहो स्मरण भेलै जे वडका रेतमे वडका वडका पाथर सव आपने जगहमे कायम रहलै वोकरासवके रेत एको रती ने घुस्कावे सकलकै।

उ यैसब समयमे कथि करैत रहलै? ई नमहरका ६ बरिषमे कथि कैलकै? ई साच छेलै जे आपन पछामे आपन परिवार, जन, परिजन सबके त्याग क्याके घर छोड्ने छेलै, मगर कोनो प्रकारके परिवर्तन नै करे सकने छेलै। उ त एखैन तक खोलाके रेतमे भठा माथे भसिय्याल जाई छेलै। उ गुरू अलार आ रुद्रककेलग

गेल छेलै । उ त पाचो फकिरके सिद्धान्तके पछा दौडल छेलै आ आपन जिवन लिलाके प्राय: समाप्त करैके अवस्थामे पुइग गेल छेलै । लेकिन तैयो कोनो प्रकारके बिजयश्री हाथ नै लागल छेलै । छ बरिस के कठिनतम बिचरण कैलाके बादो वोकरा बेसी दुरतक नै पुगावै सकने रहै । ताव उ फेर बिचार करे लागलै ।

"हम आब परम्परामे बेसी आश्रित नै रहवै । हमरा कोनो गुरूके पछा दौडके आवश्यक्ता नै छै । मानवीय अस्तित्व के समस्याके समाधानके वास्ते हमरा आपनैसे कोनो ठोस कदम चाले परतै । हमरा एमे आपनै बिचरण करे परतै आ आपनै कर्मठताके बलसे हम कोनो लक्ष्य के हासिल क्या सकै चिऐ ।

लदीके वोई पारमे नजैर देलकै त देखलकै जे एकटा छोटका झांटी झुटीके झुरमूट रहै तकर बिचमे एकटा बडी चतरल पीपरके गाछ बिराजमान छेलै । हृदयके अकारके वडका डाट वला पता हरदम हिलैत रहै आ घनगर छाह सेहो प्रदान करैतरहै । उडण्ते चिरै सबके मधूर अवाजसे आनन्द दायक प्रकृतिक संगितके लहर चारूकता बिस्तारित भ्यारहल छेलै । पहिनका राईतमे निवास केलहा स्थानके अपेक्षा ई स्थान बेसी शान्त बुझ्झ परै छेलै । कश्यपके अग्निहोत्र अनुष्ठानके ठेलमठेल स्थानसे सेहो बहौत अलग थलग छेलै ।

उ आपनै बिचार कैलके । ध्यान मगन बिचारणके वास्ते ई वडानिक स्थान छै । ई वास्तवमे हमरवास्ते वडा उपयुक्त स्थान हेतै ।

उ ठेङ्गहुन भैर पाईनमे एक दुई डेग गेलै, रेत कडा छेलै आ तरवाके निचाके बौल भूर भूर लागै छेलै । उ बिच धारमे नि: शङ्क खडा भ्या रहलै ।

उ फेर बिचार करे लागलै । "निर्जिव भिक्षा पात्रसे भिन्न एकटा व्यक्ति आपन ईच्छा शक्तिके वलसे ए धारके बिरुद्ध आरपार भ्या सकैए एवं धारमे भठा माथैनै भसियाके एकर बिपरित दिसामे असानी से ज्या सकैए ।"

उ भिक्षापात्रके पाईनमे दचाके देखलकै, त, भिक्षापात्र धारके बिरुद्ध सिरा माथे अगुव्याल जाइछेलै ।

"ह ! हमर रस्ता यहिनङ हेवक चाही । हमर अहार व्यबहार एहिनङ्ग हेवक चाही ।" उ आपनै आपनै कहलकै ।

लदी पार भ्याके उ किनारमे चढलै आ पीपरके गाछतक एलै एवं गाछके जैरमे पूर्वाभिमूख भ्याके बैठ गेलै । जाव उ बैठेलागलै त प्रतिज्ञा क्यालेलकै जे जै लक्षके वास्ते उ घर परिवार, बन्धु बान्धव सवके त्याग क्याके एल छेलै तै लक्ष्यके

बिना प्राप्त क्याके आपन स्थानसे नै उठतै। उ एकटा भिषण प्रतिज्ञा रहै। बडा कडा कर्तव्यके बिरा रहै। वोकर सम्पूर्ण शरीर थरथर कापे लागलै जेनङ्ग धरती मैया आपनै वोकर प्रतिज्ञासे कापे लागलरहै।

वोकराज्ञान आ अन्तर आत्माके प्रष्फुरित करैंके आवश्यक्ता रहै। मानवीय जिवनके चारूकता से लगलहा चमत्कारी खोलके असलसे बुझने बिना कोनो प्रकारके स्वतंत्रताके आस नै करे सकने रहै। उ वडका सोच बिचार करैत बैठलरहलै। उ बिचार करे लागलै।

"हम ध्यान मगन हैके तौर तरीका अलार आ रुद्रक गुरूके दिक्षासे प्राप्त कैने चिऐ। ए प्रकारके ध्यान मुद्राके तहत हम कोनो प्रकारके ज्ञान विज्ञानके प्राप्ति नै करे सकने चिऐ। वोकरासबसे जे दिक्षा प्राप्त कैने चिए तैसे बेसी उपरका खाडही प्राप्त कैरके कोनो सम्भवना नै भ्यासकैछै?"

"तदनुरुप दिक्षाके प्रारम्भिक चारू प्रकारके ध्यानावस्थामे उ निमग्न भेलै। उ ऐमे जोर दैत गेलै तदन्तर ध्यानावस्थाके उचका चारिम खाडहीमे पुगलै जेकर लक्षण "ने त प्रत्यक्ष" आ "ने त अप्रत्यक्ष" के निरंकारके संज्ञासे अभिभूत छेलै। उ ध्यान मगन भ्याके बिचरण करैत रहलै, बिचरण करैत रहलै, बिचरण करैत रहलै। अन्तमे उ एकटा ऐहेन खाडहीके स्थानमे जै स्थानमे प्रत्येक प्रत्यक्ष आ न जाने कोन कोन चिजके अनुभव हैछै ज्याके पूर्ण रुपसे अवरोध भ्यागेलै। पूर्णरूपसे अबरोध खाडहीके स्थानमे रहै, खाडहीके स्थानमे निरोध मात्ररहै। कतौ बहार नै देखेसकलकै त आपन सहज मनस्थितीमे फिर्ता भ्याके चेलएलै। उ आपन गुरू अलार एवं रूद्रक से वहोतदुर एवं उच्चतम् स्थानके प्राप्त क्या लेलकै। तैयो उ लक्ष्यके प्राप्ति नै करेसकलकै। उ दुःखानुभूतिसे पूर्णतया स्वतन्त्रता प्राप्तिके सफलता नै प्राप्त करे सकने छेलै।उ लौटके आपन सहज मनःस्थितिमे एलै

सहज मनः स्थितीमे एलाके थोरबेहेक समय पश्चात वोकर मन मस्तिष्कमे सुजाताके रूपभे आपन घरवाली यशोधरा आ वोकर दुनु नोकरनी वडी जोरसे मनःस्थितीमे भवनात्मक प्रेरणादेबे लागलै। भवनाके सम्पूर्ण फौज वोकर मानसिक भवनासे लडाई करैंके वास्ते चढाई क्या देलकै। इन्द्रिय जन्यईच्छा, बस्तु प्राप्ति इच्छा, खिन्नता, भूख प्यास, निस्क्रयता, कायरता एवं अनिश्चितता, अभद्रता एवं हठधर्भि, प्रशंसा एवं दोष, प्राप्ति आ प्रतिष्ठासव एक पाति लग्याके वोकर बिरूद्ध लडाईकरैले तैयार भ्या गेलछेलै। उ एकटा लवका होस जोस एवं स्फूरणके साथ वोकरासवसे लडाई करे लागलै आ स्थिर भ्याके शान्ति

एव अचल शान्तिके प्राप्त कैलकै । ऐ प्रकारके-प्रक्रियामे उ स्वतः प्रथम अवस्थाके ध्यानमे धुगलै जेकरा इन्द्रिय जन्य विषयके परे आ अपवित्र तत्त्वके परेके सञ्ज्ञा देल गेलछै। वोकर मन मस्तिष्क एकाग्र भ्याके रसे रसे चारिम खाडहीके ध्यान मगन स्थानमे पुइग गेलै जेकरा एकाग्रता एवं स्थिर मनश्चितके रूपमे वर्णन क्याल जाइछै। वोकर मन-मस्तिष्क छल छल आ खानहल लखा भेलै । पूर्ण निरोध आ की जाने कथी कथीके अनुभव है छैं तैं दिसर आपन ध्यानके नैं लग्याके उ आपन परिमार्जित आ छल छलहा खानहल गेलाँहा मन मस्तिष्कके मानव जिवनके परीक्षण करैके हेतुमे निर्देशित कैलकै।

वोई एकत्रित एवं परिमार्जित मन मस्तिष्कके माध्यमसे वोकरा आपन बिगत जनमके स्मरणभ्याके एलै। उ आपन बिगत के बहौत जिवनके दृष्टि गोचर कैलकै; कहैके तातपर्य जे एक जनम, दुई, तीन, चौइर, पाँच, जनम, दस, बिस, तीस, पचासजनम, सकैडा जनम हजार जनम आ लाख जनम, ऐसंसारके कैएक बेरके विकासके सवबात विचार वोकरा स्मरण भ्याके चैल एलै । वोकरा याद भेलै जे फलना जगहमे हम फलना नामसे जनम ने नेछेलिए, हम फलना जाइत के छेलिऐ, हम एहेन रूपरङ्गके छेलिऐ, एहेन भोजन प्राप्त करै छेलिए आ दुःख सुखके ऐप्रकारके अनुभव करै छेलिऐ; एतहैके हमर औरदा छयाल वोइठाम मृत्यु भेलाकेबाद उ स्मरण कैलकै जे दोसर जगहमे केनङ्ग क्याके फेर हमर जनम भेलै आ वोई जिवनके सम्पूर्ण जिवन घटना सेहो सबिस्तार स्मरण भेलै । यै प्रकार उ आपन बिगतके अस्तित्त्वके सव बात एवं घटनाके सविस्तार स्मरण क्या लेलकै। ई पहैनका ज्ञान प्राप्ति छेलै जे उ राईतके पहैनका पहरमे प्राप्त कैलके ।

वोई प्राप्त केलहा ज्ञानके माध्यमसे उ आपन जिवन अस्तित्त्वके चारूकतासे घैरलहा अदभूत समस्या रूपी टाटके तोडैके समाधान करैमे सक्षम भ्यागेलै । ताव उ फेर आपनै बिचारकरे लागलै की एहै प्रकारसे दोसरौके जिवन लिला छै ? उ ए बातके निश्चित करै चाहलकै ।

ऐ प्रकार दोसर दोसर जिव जन्तुके जिवन क्रम वुझहैके वास्ते उ आपन एकाग्र भेलहा चितएवं परिमार्जित मन मस्तिष्कके वोईदिसर निर्देशितकैलकै । वोकर दैवी शक्ति सम्पन्न नेत्र जे मानवीय आईखसे बहौत बहौत दर्जामे उच छेलै देखलकै जे जिव जन्तु सव मरनोपरान्त नया स्थानमे छोट आ उच, सुन्दर आ कुरूप, सुखी आ दुःखी भ्याके पुनर्जनम भ्यारहलछै। उ लख काटलकै जे जिव जन्तु सव आपन आपन चरित्रसे प्रभावित गतिके प्राप्त करैछै ।

वोकरा दृष्टी गोचर भेलै जे कोन प्रकारसे जन्तुसव आपन दोषपूर्ण शारीरिक कार्य, बाचा एवं मनसाके अभिभूत भ्याके वलबती इच्छाके अपवित्र कार्यरूप देलाके फलाफलसे शारीरिकमृत्युके उपरान्त दोसर स्थानके जनम दुःख दारिदपूर्ण, दैवि शक्ति बिपन्न अबस्थाके नरकमे हैछैः वोहै अनुरूप उ सेहो देखलकै जे कोनो कोनो जिव जन्तुसव आपन मनसा, वाचा कर्मणाके असल आ पवित्र भवनासे प्रेरित भ्याके असल काम केलापर मृत्युप्रान्तके पुनर्जन्म कोनो बढिया अस्तित्त्व भेलहा स्थानमे अथवा स्वर्गमे स्थापित है छै। यै प्रकारसे उ आपनै कर्मके बसिभूत भ्याके-असल आ खराब अस्तित्त्वमे जिवन लिला करैत रहैछै। ई वोकरा दोसर प्रकारके ज्ञान प्राप्तभेलै आ ई ज्ञान उ राइतके दोसर पहरमे प्राप्त कैलकै।

मानव जिवनमे प्रकृतिसे सम्बन्धित ई दुनु प्रकारके ज्ञानसे वोकरा बहौत आवश्यक जनकारीप्राप्त भेलै। उ कोन प्रकारसे एल छै आ कोन प्रकार से लगतार आइव रहलछै। उ देखलकै जे मानवीय दुःख त स्वयं मानव, आपन व्यवाहारिक गति बिधिसे अभिभूतभयाके जिवनमे अधिकतम सुखभोगके अतृप्त लिप्साके पाछे दौडैत आपन जिवनके पुनर्स्थापना करैके अथक एवं असफल प्रयासके कारणसे है छै। उ यहो महसूस कैलकै जे मानव जे इच्छा करैछै तदनुरूपके कर्मके अधारमे वोकरा वोई फलाफलके वस्तुके प्राप्ति हैछै लेकिन और अधिक प्राप्त हेबैकेचाही तै लिप्साके वसिभूत भ्याके पुनः दौड लगावैछै जैसे असन्तुष्टि आ बेदनाके प्राप्ति हैछै।

उ आपन मन मस्तिष्कके एकाग्र क्याके मानवोचित अपबित्र भवनाके प्रकृतिसे अवगत हैके प्रयास कैलकै। वोकरा थाह भेलै जे इन्द्रिय जन्य वलवती इच्छा अपवित्र भवना चिऐं, अस्तित्त्व कायम करैके इच्छा अज्ञानता एवं दोषपूर्ण मनोबेगसव अपवित्र चाहत चियै।

उ देखलकै जे मनुष्यके व्यबहारिक गतिबिधि आपन पसिन आ नै पसिनके कारणसे अभिभूतरहैछै। यै प्रकारके व्यबहारिक गतिबिधिसे प्राप्त केलहा वस्तु व्यबहारिक चाहतके बसिभूतभ्याके असन्तोष आ असन्तुष्टिके श्रृजना करैछै जैसे दुःख वेदना आ निरसा उत्पन्न हैछे। यैप्रकारके पसिन एवं नापसिन राग, द्वेषके त्याग केलासे व्यबहारिक गतिबिधिके चाहत पूर्णरूपसे शान्त भ्याजाइछै। यकरै पूर्ण स्वतन्त्रता कहैछै।

जाव उ जानलकै आ ए सव चिजके देखलकै त आपन व्यबहारिक गतिबिधिके चहानाके शान्ति (त्याग) करैके दृढ प्रयास कैलकै। वोकर आपन मानस पटलमे

घर बन्याके बैठलहा मानसिक प्रवृत्ति अनुसार राग द्वेष आ सङ्का सम्पूर्ण दुःखके मूल कारणीतत्त्वके बिनासकारी तत्व तेहेन नमहर भ्या गेलछेलै जे स्वचालित यन्त्र नहाइत वोकर मन मस्तिष्क अपवित्र भवनासे बिल्कुल स्वतन्त्र भ्यागेलै। उखाली स्वतंत्रेटा नै भेलै वलिक वोकरा ज्ञान भेलै जे उ स्वतन्त्र भ्यागेल छै।

सिद्धार्थ राग द्वेष आ शङ्कासे स्वतन्त्रता प्राप्त क्यालेलकै। उ निर्वाण प्राप्त क्या लेलकै उ महसूस कैलकै जे ए जिवनमे मनुष्य यहे प्रकारके स्वतन्त्रता मात्र प्राप्त क्या सकए। यैसे अन्यथा किसिमके स्वतन्त्रता प्राप्ति त मात्र आस बाहेक कोनो ठोस बस्तु नै हैछे। उ यहो अनुभव कैलकै जे इच्छाके नास भेलासे भविष्यमे जनम लेनाई के हेतु (कारण) निरंकार भ्यागेलै। वोकरा ज्ञातव्य भेलै जे उ धार्मिक जिवनके सवसे वडका लक्ष्यमे पुगलै। आव ऐसे बेसी बिचरण करैके कोनोटाबाट नै रैहगेलै। उ आपन कर्तव्यके बलसे प्राप्त केलहा स्वतन्त्रताके फलाफलके रसास्वादनसे आनन्दित, प्राप्ति फलके और बेसी घनीभूत करैके वास्ते वोहे पिपर गाछके तरमे बहौत दिन तक बैठलरहलै। वोकर स्वतन्त्रताप्राप्तिके अभिज्ञान एवं सुखानुभूतसे वोकर स्वास्थय लाभमे पूर्णपरिबर्तन भ्या गेलै आ भौतिक शारीरसे एक प्रकारके अभा छिटके लागलै जे सूर्योदय समकालके अभासे मात्र तुलना क्याल ज्या सकै छेलै। उगैत सुरूज चराचर गजतके जग्या देनेछेलै बनफूलसे बिखरल सुगन्ध एवं चिरैंचुटकुनके अवाजमे भोरलहा गीतसे आनन्दमय बाताबरणकेभृजना भ्याके नवजिवन सञ्चारित करै छेलै। सिद्धार्थ तैयो यै प्रकारके प्राकृतिक प्रत्यक्ष सम्वेगके पराभव से कोनो प्रकार अभिभूत नै भ्या सकलै। वोकरा ऐहेन अनुभव हेवे लागलै जे सात छतर वलानाग आपन छतर बहारक्याके वोकर सम्पूर्ण शरीरके चारू कतासे बाईह्नेने छै लेकिन वोकरा कोनो प्रकारके विष उगैलके नोकसानी पुगबैमे असमर्थ छै।

१६– सोलह

बुद्ध स्वयं दिक्षित पुरुष सम्पूर्ण विषयादि अपवित्रतासे स्वतन्त्र निरंजरा नदीमे गेलै, स्नान कैलकै आ आपन शारीरिक अङ्ग प्रत्याङ्गके सफा सुघर क्याके फेर घुइमके वोई पीपर गाछ जे वोकरा बिचरणके समयमे आश्रय आ छाह देने छेलै तते एलै। उ वोई गाछलग खडा भ्याकेवोकरदिसर टक टकी लग्याके देखै लागलै। ई वोह्या गाछ छेलै जे वोकरा अराम देने छेलै, जे वोकर वोकरा लक्षतक पुगैके सहरा भेल छेलै। उ दिक्षित कर्मके वृक्ष छेलै, उ बोधि बृक्ष छेलै। उ वोई वृक्षप्रति-कृतज्ञ छेलै। तैयोवोई बृक्ष प्रति अनावश्यक रूपके भावुकता देखेनाई आवश्यक नै रहै। उ रागके दुरौग क्या वने छेलै।

वोई स्थानसे उ एकटा दोसर बरके गाछ लग गेलै जे वोई बोधि बृक्षसे दुरौगमे नै रहे। उ वोई स्थानमे बैठके आपन सिद्धी विषयमे सोचबिचारकरे लागलै। संसारिक चिजके प्रकृतिके विषयमे सोचबिचार करंत थोरहेक समय व्यतित कैलकै। उ आपन पूर्वाग्रह, पसिन एवं नापसीनसे बिजय प्राप्त क्यानेने छेलै। पूर्वाग्रह रहित भ्याके उ देखलकै जे कोन प्रकारसे संसारके एकटा चिज दोसरमे आश्रित (ओड्गठल) छै। उ देखलकै जे ऐ संसारमे स्थाई कहैवला वा कहाई वला कोनोचिज नै छै। प्रत्येकचिज जेकर अनुभव भ्या सकेछै, सबटा अस्थाई, बदलैवला एवं परिवर्तनशीलछै।

व्यक्ति यै मरतभूवनमे आवै छै उ सुझहै-बुझहैके प्रयास करैछै जे दुनियादारी कोनप्रकारसे काम क्या रहलछै। लेकिन मात्र बुझनैसे उ व्यक्ति सन्तुष्ट नै हैछै। उ त वोकरा सङ्गठित, एकत्रित क्या के आपनसे क्रीयाशील करे चाहै छै। वडका आस लग्याके काम करै छै जैसे उ सवसे नीक भ्या जाई। कहियो कहियो उ सफल भ्या जाइछ आ कहियो असलफ सेहो भ्या जाइछै। जाव उ असफल है छै त दुःखि, निरास एवं खिन्न भ्या जाइछै। जाव उ सफल है छै त वोकर सन्तुष्टि क्षणिक है छै। उ औरबेसी प्राप्तिके आसमे फेरसे सङ्घर्षमे सामिल भ्या जाइछै। वोकर खोज अनबरत भ्या जाइछै। उ थाइक जाइछै, तङ्ग भ्या जाइछै आ असन्तुष्ट भ्या जाइछै। सव वस्तु जे ब्यवहारिक गति बिधिके मार्फत प्राप्त है छै असंतुष्टके जननी है छै।

उसव जे अस्थायी छै, फेर वदल हेवै बलाछै आ परिवर्तन शीलछै एवं उसव जे असन्तुष्टिदायक छै कोनो प्रकारके सार नै भ्यासकैछै; कोनो प्रकारके आवश्यकीय नै भ्या सकै छै, कोनो सत्त्व नै भ्या सकैछै, कोनो आत्मा नै भ्या सकैछै। उ ई नै भ्या सकैछै जेकरा सव गोडे सारतत्त्व कहैछै।

दुनियाके प्रकृति एहिनङ्ग छै। दुनिया एहिनङ्ग क्याके बनल छै। जाव एकर अस्तित्व छै त उ हेवे करतै। अगर एकर उदयहैछै त ओहो उगवे करतै। जाव एकर अस्तित्त्व नै छै त उ एनङ्ग नै हेतै। एकर अडलासे ओहो ऐड जेतै।

एकटा जिव ऐ दुनियामे वहौत कारणी सवके जोड-तोड मिल्याके आबैछै। मैया आ बाबु ऐ जिवके ऐ दुनियासे आबैके कारणी मध्ये एकटा है छै। उ तैयो एकटा तुच्छ जिवे रहैछै; व्यक्तित्त्व नै कहावै छै। जिवके चेतनशीलता आवै छै। मैया आ बाबु मिलके चेतनशीलता जगावैके सकभैर प्रयास क्याके कारणी जुटावै छै। ई सवटा एकेसाथमे मिलके जिवके व्यक्तित्त्वके विकास है छै। चेतनशिलताके

प्राप्ति अस्वभाविक नै हैछै; अकारण नै हैछै। ई गत बिगतके व्यवहारिक गतिबिधिके अनुभवसे सम्बन्धित रहैछै; गत बिगतके अनुभवके पाछे दौडनाई, गत बिगतके कैसके पकडनाईसे सम्बन्धित रहैछै। ई त मरणशील व्यक्तिके व्यवहारिक गतिबिधिके लक्षण चिऐ; मरणशील व्यक्ति जिवनके वास्ते सङ्घर्ष करैत रहैछै; मरणशील व्यक्ति आपन अस्तित्त्व कायम करैले सङ्घर्षरतरहैछै । ई व्यवहारिक गतिविधि जे दुनियाके चलन चल्तीसे छै व्यक्तिके चेतनशीलताके भगन क्या दै छै। बहैत धारमे आपन अस्तित्त्वके बचवैले ई सवटा एक दिसर भ्या जाइछै।

एकटा व्यक्ति ऐ दुनियामे जनम लैछै। उ एकटा व्यक्ति चिऐ किएकत वोकरा शरीर आचेतना छै। वोकरा वात बुझहैके ज्ञानेन्द्रीय सव छै। उ वोई ज्ञानन्द्रियके माध्यमसे ऐ बाहरी दुनिया के सम्पर्कमे आवैछै। वोकरा सुख, दुःख एवं असंलग्न भावके सम्बेदन हैत रहैछै। उ आपन व्यवहारिक गतिबिधि अनुरूप सुख दुःख एवं असंलग्न भावके प्रगट करैछै। उ सुखानुभूति दिसर आकर्षित हैछै दुःखानुभूतिसे मुह मोइर लैछै आ असंलग्नतामे चुप चाप रहैछै। जैमे आकर्षण देखैछै तकरा कैसके पकडे चाहै छै, मुहमोडै वला चिजके त्याग क्या दैछै। आकर्षणके अनुसार पसिनेके तहत आ व्यववहारिक गतिबिधिके मिलान अनुसार उ आपनके एहेन बनवे चाहैछै। उ एकर बास्ते सङ्घर्ष करैछै, पुगैके प्रयास करैछै आ अडलरहैछै। उ जे वने चाहै छै तकरा प्राप्त क्या लैछै। ई वोकर जन्म सिद्ध अधिकार चिऐ। तैयो उ सन्तुष्ट नै हैछै। उ और बेसी प्राप्त करैके आश लगैने रहैछै; उ और बेसी चाहतके बसीभूत रहैछै। आपन जोसमे सङ्घर्ष करैत उ थाईक जाइछै त खिन्नता, निरसा, हतोत्साह आ दुःख वोकरा चारू कातसेघैर लैछै! यहया दुःखके पहाड चिऐ।

ई सवटा अज्ञानताके प्रतिफल चिऐ–ई त अज्ञानताके फलाफल चिऐ जे अनन्त लिप्सा एवं अतृप्त भोगसे कहियो स्थाई सन्तुष्टिके प्रप्ति नै हैं छै। ई सव चरित्रके समैझके, बुइझके ज्ञानी व्यक्ति लिप्साके मेटच्या दैले, भोगसे पिण्ड छोडबैले एकटा दृढ प्रयास करैछै। उ दुनिया दारीके नै पकडैछै। उ श्रुति अनुसार मनता प्राप्त स्थाई एवं अविनासी सत्वके नै मानैछै। उ अनकर विचारमे पैरके नै वहकै छै। दुनियदारी मे नै दौडला से उ अपवित्रहैसे वचल रहैछै। उ वोई फूलके समानहैछै जे थाल पाइनमे जनम लैछै लेकिन थाल पाइनसे उपर उठैछै आ ऐसे बिल्कुल अछुत रहैछै। यहै कमल सरिखा उ ऐ दुनियामे रहैछै। उ दुनियासे बाहर नै रहैछे। मात्र उ ए दुनियाके गन्दा, राग, लोभ, घृणा, द्वेष, अज्ञानता एवं शङ्कासे तीन लाठी फराकैमे रहैछै।

मानवीय जिवन प्रकृतिके कारणी स्थितिमे दृष्टि दैत, "व्यक्ति आपन स्वयं सहयोगके बलसे वोई कारणी स्थितिके दुःखपूर्णजंजालके हट्याके स्वतंत्रता प्राप्त क्या सकैए" से विचार करैत शाक्य मुनी बुद्ध बहौत अठवार वोई बरके गाछतरमे निवास करैतरहलैं । आपनै कल बलसे प्राप्त केलहा सिद्धिके आनन्द पूर्वक उपभोग करैत रहलैं । अन्तमे उ आपनै बिचार करे लागलै।

जिवनके आहुतिद्याके दुःखपूर्ण जंजालसे स्वतन्त्रता प्राप्तिके बाट हम आपनै खोजलिऐ । मगह निवासीसवके काह्लमे एखैनियो तलिक वभनौटी जुआ लादहल छै । पहिनका गुरूउद्दालक आ यज्ञवालक्य जाव उ सव महग पुगलै त वोकरा दुनुके बाबहन सवके प्रभावमे आवे परलै । केशम्वली, मखाली गोशल, निगन्था नातपुत्र सरिखा सन्तसवके ऐ मगहमे बहौत परिचय पात नै भ्यालछै । वोकरा सवके शैक्षिक सिद्धान्त चाहे नीक छै वा बेज्या छै ऐ ठाम महत्त्वहीन क्या देने छै । बाबहन सवत परजीवी फतिङ्गा चिऐ । उ कोनो नया विचार धराके वास्ते अनकरमे आश्रित रहैछै आजाव वोकरसेवोई नया विचारके सार तत्त्व प्राप्त क्या लैछै त बिना कोनो समय नष्ट क्याके वोकरा बिनास लिला देख्या देछै । हमर वास्ते त ऐ ठामके समाजमे आपन शिक्षाके प्रचार करनाई त मात्र आपन समयके वेरवाद करनाई बुझहै चिऐ । कि हम फिर्ता भ्याके आपन जनम स्थान कपिलबस्तु जेवँ वोईठाम बभनौटी परम्परा शक्ति शाली आ प्रभावकारी नै छै । वोई स्थानमे ऐ जगहके अपेक्षा वेसी लोकसव के आपन शिक्षा द्यासकै चिऐ।

तखनिए वोकरा स्मरण ऐलै जे गुरू अलार आ रूद्रक वोकरा अनुनय कैने छेलै जे अगर उ कोनो लवका सिद्धान्तके पत्ता लग्यालेतै त वोकरासव लग घुईमके जेतै आ सवटा जनकारी देतै । वोकरा सवके विषयमे विचार कैलकै आ तुरन्ते पत्तालागलै जे उसवके स्वर्गबास भ्यागेल छेलै । उ वोई पाँचो फकिर भित्रसव जेसव बोकरा स्वयं शरीर सधनाके अभ्यास करैके समयमे सहयोग कैने रहै तकर विषयमे बिचार कैलकै ।

"उसव हमरा खौ सहयाक भेलछ्याल ।" उ बिचार कैलकै । "हमरा वोकारा सवसे भेट करैक चाही आ हम जे अनुसन्धान क्याके पत्तालगैने चिऐ से सवटा जानकारी वोकराऔर के देवैं । उ सव बढिया आ तिक्षण बुद्धके व्यक्ति सब चिऐ । उसव हमर कथनके बुझहैमे सक्षम छै आ वात बिचारके सराहे सकतै ।"

उ स्मरण कैलकै जे वोकरा त्याग क्याके उ सव बाराणसीके रास्ता पकडने छेलै । उ वोकरा सवके पत्ता लगवैके बिचार कलकै आ बाराणसी दिसरके यत्रा प्रारम्भ क्या देलकै ।

वाराणसीके रस्तामे एकदिन दोपहैरियामे बुद्ध एकठाम एकटा घनगरहा गाछके छाहमे अराम करे लागलै। अजिवक पन्थके एकटा महात्मा जेकर नाम उपक छेलै से बुद्धके देखलकै। जाव उ ऐ महात्माके देखलकै त एकर से बात चित करैके खातिर उ रस्ता काइटके एकर लग एलै। उ बुद्ध लग एलै त देखलकै जे बुद्ध वोइसब महात्मा जेसबके उपक आई तक दर्शन कैने छेलै सबसे भिन्न छेलै। वोकर अङ्ग प्रत्यङ्ग सुधर आ चमकैत रहै। वोकर शरीर के छला विशुद्ध आ सफा छेलै।

वोकर मुखाकृति भव्य आ शान्त छेलै आ ओकर व्यक्तित्वसे एक प्रकारके ज्योतिपूर्ण आभा प्रकट भ्या रहल छेलै।

"दुनिया दारीके त्याग केलाके उपरान्त आपने कोन पथके अपन्याल गेलै छै, मित्र।" प्रश्न उपकरण केलकै। "आपने के गुरूके चिऐ आ आपने केकर सिद्धान्तके स्वीकारल गेलछै ?"

"हम अपनाके दुनियाके सब अपवित्रतासे स्वतन्त्र भ्या गेल चिऐ। लिप्सा आ लौलसा बिसैर गेलिए। आपनै कल बलसे प्राप्त केलहा ज्ञानके प्रभावसे हमर मन मस्तिष्क सब प्रकारके बन्धनसे मुक्त भ्यागेलछै। केकरा हम आपन गुरू कहैके दावा क्या सकै चिऐ। मित्र, संसार हमर गुरू चिऐ। हम ऐ दुनियामे एसगरे चिऐ आ हम ऐ दुनियामे एसगरे रहवै।"

परस्परा, जैमे परम्परासे अवस्थित क्रियाकलाप वा वडका गुरू वा बाबहन वा अविनासी वास्तविक्ता वा ब्रह्मा जेकरा श्रृष्टी कर्ताके सज्ञा भेटलछे आ जे सब प्रकारके धार्मिक कृत अनुसारके भक्ति प्रदान क्याके मानवीय चोलाके स्वतन्त्र वा सुरक्षित क्या सकिछै; तैं पन्थके सिद्धान्त अनुसरणकरै बला उपक शाक्य मुनीके सन्देशके कोनोटा अर्थनै बुझहे सकलकै।

"ह, एहिनङ्ग हेतै।" उ कहलकै आ मुडी हिलवतै आपन बाट नापे लागल।

वडी दुरके यात्राके पश्चात बुद्ध बाराणसी पहुचलै आ साधु सन्तसबके निवास करैवला स्थान जेकरा लोक सब ईसीपतन नामसे जानै छेलै पत्ता लगैलकै। मध्यम उच्चाइके गाछ बृक्षसे भोरल पूरल झाटी झुटीके जङ्गल वडा आनन्ददायक स्थान रहै जैमे सन्त फकिरके बाहेक नोक्सान नै पुगवैवाला जानवर हरिन आ मृगसब सेहो पर्याप्त मात्रामे निसाव करैत रहै। भोजन अथवा मन बहलावैके वास्ते शीकार करैवला व्यक्ति सब सेहो सन्त सबके आश्रम भेलाके कारणे वोई स्थानमे नै आवै छेलै। मनुष्य आ जानवर दुनु डर भरसे दुर आपन आपन एके स्थानमे निवास क्याके सहअस्तित्वके वडा बढिया उदाहरण पेश क्या रहल छेलै।

ईसीपतन पहुचलाके बादमे बुद्ध पत्ता लग्या लेलकै जे वोकर पुरना पाचो मित्र वोहै स्थानमे आपन स्वयं शरीर सधनामे रत्त रहैके अभ्यास क्या रहलछेलै। वोहो पाचोटा फकिर सिद्धार्थके चिह्न लेलकै

"उ ! कमजोर मन मस्तिष्कवला सिद्धार्थ ज सन्तकर्मके पद्धतिके त्याग क्याके भोग विलासमे लागलै से आइवरहलछै ।" दोसर के ध्यान आकर्षित करैत एकटा फकिर कहलकै । "अपनासबके वास्ते ओकरा जे पुरुष सन्तके अध्यात्मिक कार्यके कठिनतम पद्धतिके बाट देखके त्याग क्या देलकै आ दोसर रस्ता पकडलकै तकरा कोनो प्रकारके आदर देखेनाई उचित नै हेतै ।"

तैयो, जाव बुद्ध नजदिकमे एलै त वोकर शारीरिक परिवर्तनके देखके सब सोचमे पैर गेलै । वोकर मुखाकृतसे प्रगट भेलहा अभा एवं शान्तिके देखके उ पाचोटा अवाक भ्या गेलै । उ सब महशूस कैलके जे ई उ सिद्धार्थ जेकरा पाचो उरुवेलमे त्याग क्याके एल रहै से नै चिऐ । उ पूर्ण रुपसे परिवर्तन भ्या गेलछेलै । तैयो, उ सब वोकर अध्यात्मिक प्राप्तिके कोनो भेद नै बुझहे सकलकै । जाव बुद्ध उ सबके लग पुगलै त बुद्ध प्रति कोनो प्रकारके आदर नै देखावैके पहैनका निर्णयके बावजूद पाचो विना ककरो किछो पूछने आपन आपन ठामसे उठलै । कोई वोकर भिक्षापात्र थामहलकै, कोई वोकर झोला झाभर लेलकै, कोई पैर पखारैले जल आनलकै, कोई आसन ल्याके दौडलै । जाव बुद्ध आपन आशन ग्रहण कैलकै त एकटा फकिर वोकरा सम्बोधन केलकै ।

"मित्र, तो त अध्यात्मिक जिवनके कठोरतम अभ्याससे भ्रष्ट भ्याके सुखि जिवनसे प्रवेश क्या ने ने छेलही । तैयो तोहर मुखाकृति एकटा शान्त सन्त एवं सुखी जिवन व्यतित करै वाला व्यक्तिसे बहौत वेगलछो। तोरा कोन चिज ऐ भिन्नताके दर्शैलिकौ ।

बुद्ध बिहुसे लागलै ।

'बन्धु वर्ग, हम ए दुनिया दारीके सत्यके पता लग्या लेलिऐ । ई गैहर आ गुढ छै । बुझहैमे वडा कठिन छै । खास क्याके वोहेन व्यक्ति जे इन्द्रिय सुख लिप्सामे पूर्णरूपसे अनहार टाटके घेरामे फासलछै । आपन अस्तित्वके बनवैके लोलुपता त इन्द्रिय विषय सुखके लिप्सासे बेसी हानिकारक हैछै । दुनियादारीके प्रकृतिके विषयमे इच्छा करनाई अज्ञानता चिऐ, जे दुःखके मूल कारणी हैछै । हम तै प्रकारके प्रत्येक अज्ञानताके खतम क्या देने चिऐ आ हम पूर्ण रुपसे स्वयं प्रकाशित

िचिऐ । हम बुद्ध भ्यागेलचिऐ । हम सब प्रकारके भोग लौलसाके परित्याग क्या देने चिऐं आ हम सबप्रकारके दुःख से स्वतन्त्र भ्या गेल चिऐ ।"

फकिरसब सशंकित भ्यागेलै ।

"एकटा पुरुष जे भोग सुखके जिवन ग्रहण कैलकै, ए प्रकारके ज्ञान केनङ्ग प्राप्त करेसकतै आ पूर्ण निशंक केनङ्ग क्याके हेवे सकतै ।" एकटा फकिर पूछलकै।

ऐं दुनियामे दुई प्रकारके गलत धरणा छै । दुनुके ऐ दुनियाके लोग सब पकैडके राखने छै । पहैनका अविनासी सत्य आ दोसर विनासी सत्य । फकिर-सब जे ई विश्वास करैछै जे दुनियामे एकटा स्थाई आ कहियो नास नै हेवै वाला सत्य वा आत्मा छै उ सब यै आससे स्वयं शरीर सधनाके कठिनतम अभ्यास करैछै जैसे आत्मा शरीरके बन्धनसे मुक्त भ्या जाई । उसव जे कोई ई विश्वास करैछै जे मृत्युपरान्त व्यक्ति पूर्ण रुपसे नष्ट भ्या जाइछै सुखपूर्वक के जिवन पद्धति दिसर आपन मनके ल्या जाइछै । तहैमे अपनाके व्याप्तराखै छै ।

"मित्र वर्ग, कतौ कोनो स्थाई आ अविनासी सत्व नै छै" । बुद्ध कहैत गेलै । "स्थाई आ अविनासी सत्वके अनुपस्थितिमे ई कथिमपि नै है छै जे मृत्यु परान्त व्यक्ति पूर्ण रुपसे नष्ट भ्या जाइछै । अपवित्र चहनाके परित्यागक्याके, इन्द्रिय विषयसे परे भ्याके, पूर्वाग्रह रहित सफा दृष्टीके फलाफलके प्रतापसे हम अविनासी आ बिनासी तत्वके बिचला वाट अनुसन्धान क्याके पता लगैने चिऐ । ई बिचला रस्ताके कार्य कारण सम्बन्ध कहल जाइछै । दुनियादारीके प्रकृति यहैमे अवस्थितछै । ई गैहर छै । देखैमे कठिनछै । अनुकरण करनाई मुस्किल छै । शान्तछै । सबसे नमहर छै । काल्पनिक तर्क बितर्क से उपर छै । गुढछै आ ज्ञानी सब मात्र प्राप्त करे सकै छै ।"

"कार्य कारण । कार्य कारण । कथी ई कार्य कारण चिऐ कहियो ककरो मुहसे यै प्रकारके सिद्धान्त नै सुनने छेलिऐ" एकटा फकिर जेकर नाम अश्वजित छेलै, बिरोध कैलकै ।

"हम अपने सबके सवटा वर्णका करवै । मन लग्याके सुनल ज्या ।" बुद्ध कहलकै । "अपना सब एखैन तलिक जे अनुभव प्राप्त कैने चिऐ से वहौत बहौत कारणी सबमे आश्रित (भर परल) छै । अपना सब खेतिहर चिऐ आ धानके खेती करै चिऐ । धानके खेती करैले हमरा सब बिया, बिचहन, खेत पटवैके सुविधा, खेतके माइट आ धानके सहारमे आश्रित चिऐ । जाव धानके सहार असल हैछै त हमरा सब कारणीके वर्णका करे लागे चिऐ आ कहै चिऐ जे एनङ एनङ कैलिए

आ एनङ्ग एनङ्ग भेलै ताव धानके सहार असल भलै। अगर धानके सहार असल नै है छै तहौमे हमरा सब कारणीके वर्णका करे लागै चिऐ जे या त बिया असल नै छेलै अथवा पटवी के अभाव भेलै अथवा खेतके माइट बढिया नै छै आदि । तै धानके सहार असल नै भेलै। कार्य कारणके सिद्धान्त एहया चिऐ। जाव एकर अस्तित्व छै त उ एवे करतै। अगर ई उगै छै त वोहो उगवे करतै। अगर एकर अस्तित्व नै छै त वोहो नै एतै। एकर अडलापर वोहो ऐड जेतै। दुनिया भैरके चिजके प्रकृति जै तरिकासे आपन अस्तित्व कायम कैने छै एहिनङ्ग छै। यै प्रकारके ज्ञान यहै ज्ञानके संज्ञा दैचिऐ जेनङ्ग भ्याके उ यै दुनियामे एलछै।"

"अगर वुनियाके चिज सब जे अपना सब अनुभव करै चिऐ आ जे कार्य कारण सम्बन्धमे आश्रित छै त हमरा सब कोन प्रकारमे वुनियादारीसे स्वतन्त्र हेवै।" प्रश्नकैलकै अश्वजित ।

"कार्य कारण सम्बन्ध जे हम पता लगैलिऐ, मानवके आपन व्यवहारके गति विधिसे वहारके वस्तु नै चिऐ। मनुष्यके व्यवहारिकगति विधि सेहो कार्य कारण सिद्धान्तसे पूर्णरूपेण आवद्ध छै। लेकिन एकर मतलव इ नै जे उ सब अकरमण्य छै। उ सब क्रीयाशील आ रचनात्मक छै। कोशलके मज मस्ती देखही। कोशलके रजाके आनन्दमय सुख भोगके देखही। आलीशान राजदरबार, कीडा स्थल, कमल पोखैर और सबसुख देवै वला आनन्दके उद्गम। ई सवटा मात्र प्रकृति प्रदत्तनै चिऐ। उ त मनावके आपन व्यवहारिक गति बिधिके उत्पादन चिऐ। ई व्यवहारि गति विधियो त दुःख निरास आ वेदनाके कारण चिऐ।"

"मित्रवर्ग,आव जे फेरो हम कहै चिऔ से सधारण मनुष्यके वुझहैले वडा कठिन छै। जेनङ्ग व्यवहारिक गति बिधिके नियन्त्रण, लौलसाके परित्याग, लिप्साके अन्त एवं जोसके होसमे अनलासे स्वतन्त्रता प्राप्त हैछै।"

"लेकिन जै सिद्धान्तके ल्याके तो स्वतन्त्रताके वर्णका कैलही से त सिमित छै, अधुरा छै।" कौनडिन्य पहैनकावेर आपन कैफियत देलकै ।

"ह, तो ठिक कहै चिही।" बुद्ध जवाब देलकै। "जाव एकबेर मनुष्य तनमे जनम ल्याके ऐ अस्तित्वमे एलै त मात्र यहै प्रकारके स्वतन्त्रता प्राप्त क्या सकैछै। जे राग द्वेष आ शङ्कासे बहार भ्या गेलछै जिवन पर्यन्त उ और कोनो दोसर प्रकारके स्वतन्त्रता नै प्राप्त क्या सकतै। उ आपन उमेरके नै रोके सकतै, जिर्ण-तासे नै बचे सकतै, बेमारी पछुअवे करतै आ एकदिन मोरवे करतै । तै यो उ निशंक भ्याके विना निराशल आ बेदना रहित भ्याके आपन जिनगी प्रशस्त

क्या सकैछै। अगर वोकरा राग नै छै शंकाकेहट्या देनैछै। ए प्रकारके स्वतन्त्रता व्यक्ति आपन मनोबैज्ञानिक भौतिक शरीरके अन्त भेला पर्यन्त उपभोग क्या सकैए। जावे तक व्यक्तिके आइख, कान, नाक, जिह, शरीर आ मन मस्तिष्क नासनै है छै तावै तलिक एसे बेसी दोसर प्रकारके स्वतन्त्रताके अपेक्षा नै क्या सकैए । लेकिन उ सब व्यक्ति जे ऐ मनोबैज्ञानिक भौतिक शरीरके कायम राखने दोसर प्रकारके पूर्ण स्वतन्त्रताके लिप्साके पाछे पाछे दौडैत रहैछै से वास्तवमे गलत धरणाके शिकार भेल रहैछै। उ सब ऐ शरीरके स्थाई आ अबिनासी जिवनके प्राप्तिके स्वतन्त्रता कायम रखैके चहना करैत रहैछै । ई त स्थाई जिनगीके अस्तित्वके प्रति लिप्साके प्रतिनिधित्व करैछै ।"

राग बिगत भेलासे, द्वेष हैट गेलासे आ शंका निर्मूल भ्या भेलासे हमरा आपन अस्तित्वके प्रति मोह आ लौलसा नै भेलासे हम आपन जिनगीके नै पकडे चाहै चिऐ। हमर ऐ नाशवान पार्थिव शरीरके अन्त भेलाके बाद हम फेर दोसर शरीर नै धारण करवै। हम फेर जनम नै लेवै जनम नै ल्याके हम भूख, प्यास जिर्णता आ मत्युके प्राप्त नै करबै। यह्या दिर्घ जिवन चिऐ। यह्या अमरत्व चिऐ। यह्या पूर्ण सिद्धी चिऐ। एकरै टुटनाई कहैछै।

अश्वजित ऐ लवका सिद्धान्तसे बडा प्रभावित भेलै। कार्य व्यूत्पन्न सिद्धान्त कहियोने सुनन गेल छेलै। उ बहौत समयतक सोच बिचार करैत रहलै। जतवेहैक बेसी उ यै विषयके बिचार करै ततबेहेक बेसी वोकरा ई सिद्धान्त मन मस्तिष्कमे बैठलजाई जे बास्तवमे ई दुनियादारीके प्रकृतिके प्रतिनिधित्व करै छेलै।

ऐ सिद्धान्तके बलसे लोक केनङ्ग सिद्धी प्राप्त करैछै से जानैले कौनडिन्यके वड चाइख लागलै। तै उ बुद्धके पूछलकै।

'तोहर ई कार्य व्युत्पन्न के सिद्धान्त एकदम लवछौ। ई अविनासी आ बिनासी दुनुटा छोरके समाप्त क्या देने छौ। ई विचला वाट चियौ। मगर उ विचला वाट कोन आ केहेन छौ जे ऐ दुखपूर्ण दुनिया से उपर उठ्याके सिद्धि प्राप्त कन्या दै छौ। "ई बेदनात्मक, त्याज्य आ अनुपयोगी है छै। मित्र आपनै सुखं सम्पन्नताके जिवन व्यतित करनाई एकटा छोर चिऐ। ई छोट, विचित्र, सधारण त्याज आ आनुपयोगी हैछै। दोसर छोरमे आपनै के साधहे परै छै।"

"ऐ दुनियामे दुःख आ बेदना छै। दुःख आ बेदना ककरा कहैछै।" बुद्ध कहैत गेलै। "जनम लेनाई दुःख चिऐ। बृद्ध भेनाई दुःख चिए, रोगी भेनाई दुःख चिए, मृत्यु दुःख चिऐ। बेदना, चिन्ता, निरासा दुःख चिऐ। नै चाहै बला चिजसे सम्पर्क भेलापर दुःख है छै। चाहै वाला चिज से बिछुरन भेलापर दुःख है छै। जे चिजके

इच्छा करैं छैं से नै भेटलापर दुःख है छै। छोटकरीमे व्यक्तित्वके पाचोटा सम्पूरक लौलसा-रूप रङ्ग: सोच, बिचार, दृष्टि अधिकारीक क्रीयाकलाप आ चेतना जेनङ्ग: हम, हमे, हमर, इ सब दुःखके घर चिऐ।

ऐ दुःखके कारणीछैं। उ ई लिप्सा जे पूनर्जनम दिसर फेरसे धकलैछैं एवं आनन्द आ भोगके लौलसामे एने वोने खोजैत दौडैत फिरैछै। ई लिप्सा इच्छित वस्तुके वास्ते हैछैं। लौलसा आपन अस्तित्व के वास्ते हैछै। चाहत छुटपनके है छैं।

ऐ दुःखके बिनाश क्या सकै चिऐ। ई वोई लिप्साके तोडनाई चिऐ। वोई लौलसाके परित्याग केर्नाई चिऐ। वोई चाहतके मटिया मेट केनाई चिऐ। ओई इच्छासे छुटकरा प्राप्त केनाई चिऐ। एकरा बितराग कहैछै।

वोई मोड दिसर जाइके बाट, सिद्धि प्राप्त करैके बाटके बिचला बाट कहैछै। ई आठ किसिम के छैं (१) सम्यकसुझबुझ (२) सम्यक संकल्प (विचार) (३) सम्यक वचन (५) सम्यक कर्म (५) सम्यक आजिबन (६) सम्यक कर्मण्यता (७) सम्यक मानसिक (८ सम्यक ध्यान।

"दुःखके सच्चाइके बुझहे परतै। दुःखके कारणी सबके परित्याग करे परतै। कारणी सबके रोकैके उपायके साधन वनवे परतै। दुःखके कारणी सबके परित्याग करैवला साधित बाटमे असलसे चले परतै।"

वन्धुवर्ग, साच बात यह्माया चिऐ जेकरा हम ऐ दुनियादारीके परिपेक्षमे अनुसन्धान क्याके पत्ता लगैलिऐ। यहै सत्यके महसूस कैलाके फलाफलसे हम पूर्ण रुपसे सिद्धि प्राप्त कैलिऐ। हमरा ज्ञान प्राप्त भ्याल। हमर अन्तरआत्मा जाइग गेलै। हमर मन मस्तिष्क सबके परित्याग क्याके अचल भ्यागेलै। ई हमर अन्तिम जनम चिऐ। आव हमर वास्ते दोसर जनम नै छै।

बुद्धके ऐ मार्मिक उपदेश जेकरा धर्मचक्र परिवर्तनके नामसे संसार जानै छै तकरा कौनडिन्य सुनतै सुनतै सिद्धिके प्राप्त कैलकै। शाक्य मुनी बुद्धके उ सबसे पहिनका शिष्य (चेला) भेलै। बाकी चाइरटा उपदेशके बुझहैले संघर्षरत विचरण करैत रहलै। उ सबके मन मस्तिष्कमे बैठलहा स्थाई सत्वके विश्वासके आपन मन मस्तिष्कसे हटावैके क्षमता नै छेलै। बुद्ध वोकरा सबके सम्बोधित क्याके कहलकै।

मित्रवर्ग, ई शरीरके कोनो सत्वनैछै। अगर एकरा कोनो सत्व रहतिऐ त ई बेरामी के घर नै हेतिऐ आ ए कारण से ए शरीरके सम्बन्धमे ई कहल ज्या सकै

छेलै। हमर देह एनङ्ग भ्या जो, हम हमर देह एनङ्ग नै हो।' आव ई शरीर कोनो प्रकारके सत्व नै मेलासे आ ई शरीर वेरामी के घर चिएे तँ एकर सम्बन्धमे कहियो ईं नै कहल ज्या सकैए जे हमर देह एनङ्ग हो आ हमर देह एनङ्ग नै हो। ई शरीर तँ कोनो प्रकारके सत्वमे अधारित नै छै किएक त एकरा कोनो प्रकारके एकाधिकार नै छै। तहिनङ्ग सोच बिचार, रुप-रङ्ग दृष्टि, क्रीयाकलाप आ चेतनाके विषयमे हैछै।"

"मित्र वर्ग, खौ बिचार क्याके कह जे ई शरीर स्थाई चिएेवा अस्थाई चिए?"

"महाभाग, बिल्कुल अस्थाई चिएे।" एके बोलीमे चारुटा फकिर जोरसे चिचियाके कहलकै। उ सब आव पूर्णरुपसे बुझ्झ गेलै जे सिद्धार्थ कौनो सधारण व्यक्तित्वके व्यक्ति नै चिएे। वोकरा सबके जवाबके सम्बोधनसे बुद्ध-बुझ्झ गेलै जे वोहो सबआव आपन उद्धतपनाके त्याग करैले तैयार भ्या गेलछै।

"लोकिन, की ई अस्थाई शरीर सुख अथवा दुःखके उदगम स्थान चिएे?" लगले मनोवैज्ञानिक बुद्ध प्रश्न कैलकै।

"महाभाग, ई त विलकुल वुखःके घर चिएे" फकिर सब जवाव देलकै

"की ई कोनो उचित बिचार भ्या सकैए जे अस्थाई, जे परिवर्तन हेवै वाला छै आ जे बिलकुल दुःखके घरचिए तकरा अपनासब स्थाई, सत्व, हम, हमर, हमरा आत्मा कहवै। "महाभाग ! नै वास्तवमे नै चिएे।"

"अगर तोरासब सांचे चिह्न गेलही, मित्र वर्ग, जे उपादान यह्माया चिएे त आपन शरीरके, बिचारके, दृष्टिके, क्रीया कलापके आ चेतनशीलताके ई कैहके जे सत्व यहे मे छै पकडने रहबिही किनै ?"

"जी, महाभाग।" जवाव देलकै फकिरसब

"अच्छा, ई कहत, तोहर शरीरसे अलग, तोहर बिचार से अलग, तोहर दृष्टिसे अलग, तोहर चेतना से अलग आ तोहर क्रीया कर्मसे अलग कोनो तेसर चिजके कल्पना क्या सकै किही ?" बुद्ध प्रश्न कैलकै।

फकिरसब अवाक भ्या गेलै आ कोनो तहरके जवाब नै देवे सकल कै।

बुद्ध कहैत गेलै।

"तोरासवजे स्थाई आ अबिनासी अत्माके भरमे परल चिही सेत मात्र तोहर आपन कल्पना चिऔ। उ कल्पना जँमे तो आपन अस्तित्व कायम राखँके वास्ते कैसकं भिरल चिही। तोरा सब त वोई कामी व्यक्ति सरिखा चिही जे कतौ

सौन्दर्यके रानीके नाम सुनने छेलै आ तकर पछा बेहाल छेलै । लेकिन दर्शन नदारथ। ''

उ चारू फकिर थर थर कापे लागलै आ निन्द्रावस्थासे जाग्रत अवस्थामे एलै । बुद्धके उपदेशके बिचारकरैत उ फकिरसव थोरबेहेक समयमे आपन शरीर, बिचार दृष्टी, क्रीया कर्म आ चेतना प्रतिके चहना हिन भ्यागेलै । चहना हीन भेलासे राग सुख्या गेलै । रागके सुखेलासे वोकरा औ र के मन मस्तिष्क दौडैले छोडड देलकै त सहजै पूर्ण सिद्ध प्राप्त क्या लेलकै ।

आव मिल्या जुल्याके संसारमे ६टा संत भेलै । एकटा स्वयं शाक्य मुनि बुद्ध आ पाँचटा वोकर शिष्य । पहिनका बेर बुद्ध वोई पाँचोके महात्मा कँहके सम्बोधन कैलकै । ठीक तहै समयमे बनारसके एकटा सबसे वडका धनिक व्यापारीके बेटा यस जे हरदम सुरा सुन्दरीसे मगन रहै छेलै तहै राइतके सुरा पान क्याके सुन्दरीसे रास बिलास क्याके सुतलै आ ऐकेछनमे निन भगन भेलै त वेरवलकै जे सौझका रमेलहा छौडीसब बोहैठाम वडा विभत्स रुपमे ओङघरल भेर निनमे सुतल रहै । उ सब दृश्य देखके यसके मन वदैल गेलै । उ तुरन्ते आपन घरसे बहरैलै आ शान्तिके खोज करे लागलै । राइतके चारिम पहरके बिहुनका पख रहै । बुद्ध आपन स्थानमे चंक्रमण करैत रहै । कते से यस वोकरा देखलकै त लगमे एलै आ आपन मनके वात कहलकै । बुद्ध आपन मनसे वोकर मनके बात जानलकै वोकरा आपन शिष्य वन्याके दिक्षा देलकै । यस पुत्र अरहत भ्यागेलै । ई बात के समचार सुनलकै त वोकर चौवनटा साथी सबसेहो भगवान बुद्धके शिष्य भ्यागेलै । वोहो सब महात्माके उचका पदवीके प्राप्त कैलकै । आव सम्म मिल्या के साइठटा महात्मा संसारमे भेलै ।

"महात्मा जन, करुणाकर भ्याके खौ बहौतके भलाई करैके वास्ते, खौ बहौतके सुख प्रदान करैके वास्ते ये संसारमे भ्रमण करैके प्रारम्भ कर ।दुई गोडे मिलके एके डिसर ने जो । जाव ई सुभ समचार चारू कता विस्तारीत हैतै त ई संसार निवास करैले बढिया स्थान भ्याजेतै ।

१७– सत्रहम

पहिनका पहिनका शिष्यसब सिद्धी प्राप्त क्याके बुद्धके निर्देशन अनुसार जाव दुनियामे डेग बहार कैलकै त चारूकता शोर भ्यागेलै जे थारू जाइतके शाक्य वंशमे जनम लेलहा एकटा बबाजी आपन परिवार त्याग क्याके पवित्र जिवन पद्धतिके बाटमे चलल छेलै आ आपनै कल बलसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त करलकै आ तकर बाट सेहो खोललकै । वोकर देलहा उपदेश बडा असल हैछेलै । धार्मिक जिवनके सम्बन्धमे जे उ सिफिरिस करैछेलै से पूर्ण एवं विशुद्ध रहै । ई समचारसे योगी फकिर

आ वावहनसब बुद्धके दर्शन करैले झुण्डके झुण्ड इसिपतन दिसर दौडे लागलै। वहौत बहौत योगी फकिरसब जे कंकटाकिर्ण जीवन समस्याके समाधान हेतु निरर्थक भेम रहल छेलै, शाक्य मुनि बुद्धके सन्देश त बडका अकाल पश्चातके स्वागत योग्य वर्षा समान भेलै। योगके अभ्यास आवश्यकीय सम्पूरक भेलाके कारणसे आ अधिक समय वोई कार्यमे रत रहलासे सन्त फकिरके वास्ते बुद्धके उपदेश ग्रहण करैले बडा सोझ है छेलै; तै वोकर दिक्षाके अनुशरण क्याके शान्ति आ एकाग्रभ्याके सिद्धिके प्राप्ति करै छेलै। बुद्धके उपदेशके सम्बन्धमे वावहनसबके प्रतिक्रिया मिश्रित छेलै। थोरहेक गोडे वोकरसे बडा प्रभावित भेलै आ वोकर शिष्य भ्या गेलै। दोसरसब कोनो नया युक्तिके खोजमे छेलै जैसेकि उ आपन धार्मिक कृत जेकर मन्तर तन्तरके प्रभावके विश्वासनीयता समाजिक परम्पराके मनतामे उन्टा किसिमके प्रभाव द्यारहलछेलै तकर, पुर्नस्थापना करैके मनसाय ल्याके आवै छेलै। गार्हस्त जीवनके व्यक्तिसब आपन पारिवारिक दुःख तकलिफके समस्याके समाधानके वास्ते समाजके कोनो जाईत, वर्ग आ स्थितिके पुरुष आ जनिजात दुनु बेधडक बुद्धके नजदिक आवै छेलै।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ भ्यागेलै तै बुद्ध आपन मातृभूमि कपिलवस्तु दिसरके यत्रा स्थगित क्या देलकै। फेर वोकर सन्देशके प्रति उत्साहित प्रतिउत्तरके मद्धे नजैर राखैत उ थोरहेक समयके वास्ते आपन घर दिसर नै ज्याके देखिने भर रहलै।

जाव बुद्ध इसिपतनके मृगदाहमे निवास क्या रहल छेलै त अश्वजित बडीदुरके रस्ता समाप्त क्याके राजगीर एलै जते उ बुद्धके उपदेशके बिस्तारकरे चाहै छेलै। प्रथमे दिन जाव उ भिक्षाटनके वास्ते राजगीरके शहरमे भ्रमण क्या रहलछेलै त एकटा युवक महात्मा जेकर नाम उपातिसा छेलै आ जे संजय बेलाथिपुत्रके शिष्य रहै वोकरा देखलकै। संजय किछ दगहा छेलै। कोनो प्रकारके प्रश्नके निश्चयात्मक प्रतिउत्तर नै देके इच्छा करै छेलै किएकत मानव ज्ञानके अनिश्चितता एवं दार्शनिक व्याख्याके दुई अर्थक विषयसे उ वाकिफ छेलै। उपातिसा आ वोकर मित्र कोलिता वहौत वरिससे संजयके शिष्य भ्याके अध्ययन कैने छेलै लेकिन आव उसव वोकर शिक्षासे भ्रमित भ्या रहल छेलै। उ दुनु मित्र आपनमे सलाह कैलके जे अगर दुनुमे कोइयो कोनो असलका विचारके जनकारी प्राप्त करतै त गुरूके अगाह करैसे पहिने दोसर मित्रके अगाह क्या देतै।

उपातिसा अश्वजितके व्यक्तित्व, वोकर शान्त प्रकृति एवं चाइल ढाइलसे वडा प्रभावित भेलै। तै अश्वजित जावेतक शहरसे भिक्षाटन पूरा क्याके एकटा शान्तपूर्ण स्थानमे ज्याके आपन भोजन ग्रहण कैलकै तावेतलिक उ वोकरा पछु-

आबैत रहलै । जाव उ आपन भोजन समाप्त कैलकै त उपातिसा वोकर लग गेलै आ पूछलकै ।

"मित्र, एखैन तक हम जतेक सन्तके दर्शन कैने चिऐ तैंमे तो सवसे अलगे लागैंचिही । तो केकरा अनुशरण करैं चिही ? तोहर गुरूके चिऔ आ तो कोन पन्थमें चलै चिही ?"

"मित्र, शाक्य बंशके पुत्र बहौत वडका सन्त चिऐं । उ स्वयं सिद्धछै । उ हमर गुरू चिऐ आ ई वोकरे प्रतिपादन केलहा सिद्धान्त चिऐ जै पन्थमे हम चलै चिऐ ।" जवाव देलकै अश्वजित ।

"वोकर दिक्षाके कथी कहै छै आ दोसर वडका धार्मिक गुरू सवके दिक्षा से कोन प्रकारे वोकर दिक्षा फरक छै ?" उपातिसा पूछलकै ।

उ कार्य कारण सम्बन्धके शिक्षा दैछै । स्थाई आ अविनासी सत्वके बादक्याके उ वर्णका करैछै जे सवप्रकारके अनुभवमे कार्य कारण सम्बन्ध छै । वोकर धार्मिक पद्धति सेहो कार्यकारण सम्बन्धके सिद्धान्तमे अधारित छै । हम वोकरै बाटके अनुसरण कैने चिऐ आ सवप्रकारके राग आ लिप्साके परित्याग क्या देने चिऐ । हमदुनियामे उ चिरैंजे बन्धनके डरसे मुक्त छै तहिनङ्ग भ्याके ऐ दुनियामे विचरण क्या रहल चिऐ ।

उपातिसा उत्साहित भ्या गेलै । ई बास्तवमे कहियो ऐसे पहिने नै सुनलहा लवका सिद्धान्त छेलै । उ वोहै वडका महात्मैंसे दिक्षा प्राप्त करे चाहै छेलै ।

"उ कते निवास करैछै ।" उपातिसा पूछलकै । "बाराणसीके इसीपतन मृग-दाहमे ।" जवाव देलकै अश्वजित । "अपनेके कुशल होई ।" उपातिसा कहलकै आ अश्वजितके अभ्यर्थना क्याके आपन मित्र कोलिताके भेटैले हडवडयाल चैल गेलै । उ दुनु गुरू संजयके त्याग क्याके वाराणसी दिसर प्रस्थान करैके निर्णय कैलकै । संजय जाव सुनलकै जे वोकर सवसे असलका दुनुटा शिष्य वोकरा छोड्ड रहलछै त संजयके दुःखसे छाती फाटे लागलै । कानैत कानैत उ दुनुटा शिष्यके बिदा कैलकै ।

"तोरासवके जाइत देखके हमरा वडा दुःख भ्या रहल आइछ । कोनो गुरूके अनुसरण कर सुखिरह से हमर कमना ।"

कोलिता आ उपातिशा बुद्ध लग पुगलै आ दर्शन कैलकै आ क्रमशः मोग्दल एवं सारिपुत्रके नामसे वोकर शिष्यमे दिक्षित भेलै । संजयसे शिक्षा प्राप्त क्याके अबिश्वसनीय ज्ञानके आधारमे दृढ केलहा मन्तव्य बुद्धके उपदेशके बाबजुद भी वोई दुनुके वास्ते सिद्धि प्राप्त केनाई कोनो हलुक कामनै भेलै ।

एक दिन जाव बुद्ध सरिपुत्र आ मोग्दलके साथमे रहैं त एकटा फिरन्ते जेकर नाम दिर्घनख छेलै बुद्धके दर्शन करे एलै आ बहस करे लागलै। बुद्धके सम्वोधन क्याके उ कहलकै।

''मित्र, सन्त आ बावहनसव सवचिजके प्रकृतिके विषयमे सिद्धान्त प्रतिपावन कैने छै, लेकिन हमर विचारसे सव चिजके प्रकृतिके विषयके सिद्धान्त संतोषप्रदनैछै।''

बुद्ध एक क्षण विचार करे लागलै। सिद्धि प्राप्तिसे पहिने उद्दालक आ कपिल सरिखा दार्शनिकसव जे सवचिजके प्रकृतिके सिद्धान्तके विषयमे प्रागएतिहासिक तत्वके परिपेक्षमे वर्णन करैके प्रयास कैने छेलै तँ विषयके उ ज्ञातव्य छेलै। दोसर दोसरसव ऐ सिद्धान्तके नकारात्मक रूपसे प्रतिक्रिया जनैने छेलै। उ दिर्घनख दिसर ताकबकै, बिहुसलै आ प्रश्न कैलकै।

''दिर्घनख, तो दावा करै चिही जे तोहर बिचारमे सवचिजके प्रकृति विषयके सिद्धान्त संतोषप्रद नै छै, किलो विचार करै चिही जे तोहर आपन विचारधारा संतोषप्रदछौ''?

दिर्घनख महशूस क्या लेलकै जे बुद्ध नकरात्मक स्थितिके अस्फुट मनतव्यके स्थिति दिसर धकेलैके कोशिस कैर रहलछै। साफ साफ नै बुझहैं वला मनतव्यके स्थिति विषयमे उ खुसी नै भेलै तँ उ जवाव देलकै।

''अगर हमर आपन बिचार हमरा संतोषप्रद छै तैंसेत कोनो फरकनै परतै।''

बुद्ध दिर्घनखके उद्धतपनके बुझ्झगेलै। दिर्घनखके अधिकारीक घोषणाके तार्किक सम्बन्ध एवं असमान्य फलाफलके विश्लेषण करैले उ सवधान छेलै। उ कहलकै।

''दिघनख ये दुनियामे दुई प्रकारके दार्शनिक (विचारक) हुँछै। बहौत दार्शनिक सव ए दुनियाके चिजमे भेलहा तत्व वा प्रकृतिके सम्बन्धमे विचार करैछै। तँ मे कुछ व्यक्ति वोई सिद्धान्त से, वोई विचारसे सहमत भ्या जाइछै। तँ वोईमे उसव भिड्न जाइछै वोईसे सम्बन्धित भ्या जाइछै। दोसर दोसर गोडे वोई सिद्धान्त आ विचारसे तुष्ट नै है छै तै उ सव वोईमे नै भिड्नैं छै। वोईसे सहमत नै है छै।'' ई सुइनके दिर्घनख वडा खूसी भ्या गेलै। उ ई कहैत बुद्धके प्रशंसा करे-लागलै।

''वहौत बढिया, सक बहौत बढिया, तो सर्व सिद्ध चिही तो हमर विचारके बुझ्झगेलही आ तो हमर विचारके सिफारिस क्या देलही।'' बुद्ध रसे रसे मुक्कुरावे लागलै।

"दिर्घनख, असलसे सुन । जाव कोनो सन्त वा बावहन ऐ दुनियाके चिजके तत्व वा प्रकृतिके विचारकरैछै आ जाव उ वोई विचारसे, वोई सिद्धान्तसे संतुष्ट भ्या जाइछै त वोकरा हठपूर्वक पकडने रहैछै आ ई कहैत फिरछै जे ई मात्र सत्य चिए और सव झूठ । ऐ प्रकारसे उ यै सम्बन्धमे कट्टर भ्या जाइछै। ठिक तहै प्रकारसे जाव कोनो सन्त आ फकिर ऐ दुनियाके चिजके प्रकृति वा तत्वके सिद्धान्त वा विचारसे चितनै बुझहैछै त उ वोई सिद्धान्तसे असन्तुष्ट भ्या जाइछै। त वोहो हठपूर्वक आपन अडलहा वातके पकैडके केहे लागछै इ ठिक चिए और सव गलत छै। तै वोहो कट्टर है से नै वचल रहैछै। दुईटा कट्टर कट्टरके बिरोधके असानीसे नै सुलझ्याल ज्या सकैऐ । बिरोधसे झगडा आ झगडासे लडाई आ लडाईसे दुःखके शृजना हैछै। अगरऐ प्रकारसे बातके नै पकड लज्या, अगर ए प्रकारके विचारधराके परित्याग क्या देलज्या, त शान्ति रहतै, आनन्दी रहतै।"

"अपनासवके सव प्रकारके अनुभव, दिर्घनख, अस्थाई, व्यवहारिक क्रीया कलापके कारणी से जकडल, व्युत्पति क्रममे आश्रित, वन्द भ्याजाइके प्रकृति वला, समाप्त हेवैवला आ विपरीतार्थ वोधक हैछै। एकटा ज्ञानी व्यक्ति ऐ दुनियाके चिजके प्रकृतिके विषयमे आपन विचारधराके सम्बन्धमे कोनो प्रकारसे सम्बन्धित नै रहैछै। वोकरा कोनो प्रकारके सम्बन्धमे कोनो प्रकारसे राग नै रहैछै। उ उवार भ्या गेल रहैछै आ हठधर्मिके परित्याग क्याके सवके चित बुझहैं वाला वोल वचनके प्रयोग करैछै।"

सारिपुत्र आ मोग्दल बुद्धके नजदिकमे खडा भ्याके बेना हुइक रहल छेलै। दिर्घनखके सैद्धान्तिक दावाके सम्बन्धमे बुद्धके प्रतिउतरसे उ दुन छक पैर गेलछेलै। दार्शनिक विचारधाराके मत मतान्तर के सम्बन्धमे बुद्धके बर्णन करैके तौर तरिका देखके उ दुनु वडा खूसी भेलछेलै। यखैन वहौतवरिससे उसव संजयके नियंत्रणमे रैहके हरेक प्रकारके आधिकारीक विषयके प्रश्नके मात्र झंझटके बलसे नकार करैके विदया सिखने छेलै। उसवके मानसिकता तेहेन वतकटु स्वभावके भेल छेलै जे सव प्रकारके आधिकारीक विषयके गल्ती बन्याके झगडाके बिचहन छिट्दैछेलै। तै उ दुनु देखलकै जे कोनो प्रकारके बहसमे चितनै बुझहैबला वोली वचनके व्यवहार केनाई उचितनै हेछै। दिर्घनखके दार्शनिक सम्बन्धमे भेलहा बातचितसे उ दुनुटा ई बुझहे लागलै जे बहस करैके समयमे खाली वोली वचनके शाब्दिक प्रयोगके बलसे मतमतान्तरके सोझिएनाई सम्भवनै भ्याके विचारधराके कट्टरपनाके सैद्धान्तिक अडानकेहटबे परैछै। इत सिद्धान्तके विचारधराके शाब्दिक प्रयोगसे सम्बन्धित फलाफल चिऐ जैसे बहसमे मतमतान्तर हैछै। बुद्ध

इन्द्रिय विषयजन्य सुखके मात्र परित्याग नै कंने छेलै वल्कि उत विचारधरासे सेहो सम्बन्ध विच्छेद क्यानेने छेलै। उ स्वतन्त्र विचारधरा के नै छेलै वल्कि विचारधरासे स्वतंत्र छेलै ।

बुद्ध ग्रा दिर्घनखमे भेलहा सैद्धान्तिक बातचित उ दुनुटा सारीपुत्र ग्रा मोग्दलके ग्राइख खोलै वला छेलै । बुद्धके बातचित सुइनके मोग्दल सश्रम ध्यानस्त हैके ग्रभ्यासकैलकै ग्रा उच्चतम ज्ञानके प्राप्त कैलकै । मनोवैज्ञानिक कलबलमे उ प्रथम शिष्य भ्याके निकललै । ऐ उचतम प्रकारके ग्रन्तिम ज्ञानके प्राप्त भेलाके वाद उ सव ग्रपवित्रताके परित्याग क्या देलकै त सिद्धी प्रात कैलके ।

लेकिन सारिपुत्र एखैनियो ऐ प्रकारके ग्रन्तरवल ग्रथवा सिद्धि प्राप्त करैके स्थितिमे नै पुगल छेलै । उ ई बुईझगेलै जे बुद्धके कार्य व्युत्पन्न सिद्धान्त पुनर्निर्माणके सिद्धान्त छेलै । मानवीय ग्रनुभवके सव प्रकारसे ग्राबद्ध क्या नेने छेलै । संसारमे जिवित सवटा सन्तके प्रकृति ग्रा व्यवसहार कार्य व्युत्पन्न सिद्धान्तके ग्रधारमे वर्णन क्याल ज्या सकै छेलै, परन्तु सन्त सव मृत्युपरान्त कथी हेछै, यै विषयमे कोनो वास्तविकता कहल ज्या सकैए? चलन चल्तीके शव्दिक भाषाके व्यवहारसे मृत्यु परान्त सन्तसवके प्रकृति सम्बन्धमे कोनो वर्णन भ्यासकैए? ऐ प्रकारके शंका ग्रापन मनमे हरदम खेलबैत सारिपुत्र ग्रस्तित्वके बाह्लके ग्रापन मन मस्तिष्कसे नै हटावे सकने छेलै । तै सारिपुत्र सन्तके मृत्यु परान्त स्थितिके सम्बन्धमे बुद्धसे प्रश्न करैके निर्णय क्यालेने छेलै ।

वोकरा जाव ग्रवसर भेटलै त बुद्धके सामने ग्रापन मनतव्यके प्रश्न राखलकै

"गुरूमहाराज, "मृत्यु उपरान्त की सन्तके ग्रस्तित्वरहैछै ?"

"सरिपुत्र हम ए प्रश्नके ग्रनुत्तरित छोईड दैचिग्रौ" बुद्ध जवाव देलकै

"त, कथी उ ग्रस्तित्व बनैने नै रहैछै ?"

"एकरौ हम ग्रवर्णित छोइड दैचिग्रौ ।"

"की, त, एकर मतलव भेलै जे मृत्युपरान्त सन्तके ग्रस्तित्व रहवो करै छै ग्रा नहियौ रहैछै ?"

"हम यहौ विषयमे किछो वाजै बला नै चिग्रौ ।"

'कीत, इनै भ्या कैए जे मृत्युके बाद सन्तके ग्रस्तित्व रहवो करैछै ग्रा नहियो रहैछै ?"

"सारिपुत्र एहो एकटा एहेन प्रश्न छै जकरा हम ग्रवर्णित छोईड देलिऐ ।"

सारिपुत्र ग्रकमक्या गेलै । ग्राखिरमे ई एकटा ऐहेन विषय उपस्थित भेलै जैमे बुद्धके स्वीकार करे परलै जे वोली चालीके भाषामे एहेन शव्द नै छै जे ऐ विषयके वर्णन करतै । बुद्ध सेहो संजय नहाइत ग्रग्रस्फुट मनतव्यके ग्रधार ग्रपना बैछै । उ प्रश्न कैलकै ।

'गुरू महाराज, हम मानै चिऐ जे अपनेके सिद्धान्त हमर पहँनका गुरू संजयसे वेगल आइछ । मगर सन्तके मृत्युपरान्तके स्थितिके सम्बन्धमे अपनेके देलहा जवाव संजय महराजसे वेगल नै छै ।

"सारिपुत्र, तो जे सजयके प्रश्न कैने हेवही तै सवके जवावमे कि उ अग्रस्फुट मनतव्यके अधारमे देछेलौ ?" बुद्ध प्रश्न कैलकै ।

"जी, गुरू महाराज" ।

"त, ऐमे फरकछै सारिपुत्र । हमर समक्ष जे प्रश्नसव राखल जाइछै तै सवके जवाव हम एहिनङ क्याके नैदेंचिऐ। कोनो कोनो प्रश्न एहेन हैछै जकरा हम अनुत्तरित छोईड य दैंचिऐ । थोरहेक एहेन प्रश्न आवैछै जेकरा हम प्रश्नोत्तर माध्यमके अपन्याके तार्किक विधिसे स्पष्ट करै चिऐ। फेर एहिनङ्गो प्रश्न सव आवैछै जेकर उत्तर हम छुटियाके दै चिऐ । आव कहजे तोहर पहँनका गुरूसे कोनो फरक छै, किनै ?"

"जी, वास्तवमे छै, गुरू महराज ।"

"सन्तके एम्वन्धमे दुई प्रकारके प्रश्न उइठ सकैऐ, सारिपुत्र । पहिने ई कहल ज्या सकैए जे मृत्युके समयमे सन्तके कथी हेछै आ दोसर मृत्यु परान्त सन्तके स्थितिके सम्बन्धमे कथी भ्या सकैछै । पहँनका प्रशनके जवाव हम तर्कके अधारमे छुटियाके द्या देने चियौ। चुके सन्तसव आपन अस्तित्वके कमनासहित कोनोआनो प्रकारके लिप्साके बन्धनमे नै रहैछै तै उ पुनर्जनमके सव प्रकारके कारणीसे मुक्त रहैछै आ उ फेरसे नै जनमैछै । ई वर्णका हमर प्रतिपादन केलहा कार्य व्युत्पतिके सिद्धान्तमे अधारित छै जे हम घोषण कैने चिऐ । लेकिन अगर तो ई प्रश्न करबिही जे मृत्युके उपरान्त सन्तसव कथी हैछै अर्थात वोकर पुनर्जनम नै हैछै तै सम्बन्धमे हम कोनो प्रकारके जवाव दैके पक्षमे नै भ्या सकै चिऔ । येकर कारण ईछै जे एहेन प्रकारके प्रश्न समसामियक नै हैछै "

बुद्ध आपन वर्णकाके जारी राखैत कहे लागलै ।

बहौत व्यक्ति जे अस्तित्व जोगावैके फेरीमे रहैछै ऐ बातसे सहमत भ्या जाइछै जे मृत्युके बाद सन्तसव सत्य लोकमे आनन्दपूर्वक विचरण करैत रहैछै आ फेरो, उ व्यक्तिसव जे अस्तितव के कल्पनाके नै मानै छै, से, ई विश्वास करैछै जे मृत्यु परान्त सन्त सव पूर्ण रूपसे नष्ट भ्या जाइछै । यै प्रकारके विषयके ज्ञानके सम्बन्धमे माध्यमके अभावके कारणसे हम चुपेचाप रहे चाहै चिऐ ।

"अच्छा सारिपुत्र, तो की विचार करै चिही ? जाव प्रकाश दै वला टेमही प्रकाशित भ्याके चैल जाइछै त अगर ई प्रश्न क्याल जाई जे उ टेम कोने गेलै पुरूव की पछिम, उत्तर की दछिन ?

"एहेन प्रश्न करैके कोनोटा औचित्य नै छै गुरू महराज" जवाव देलकै सारिपुत्र ।

"कथिले, नै ?"

"किएकत, प्रकाशित भ्याके चैल गेलहा वोई टेमके जानैले कोनो माध्यमनै छै । विना कोनो आवश्यक कारण से उ टेम नै एतै ।"

"ठीक एहिनङ्ग सारिपुत्र, एकटा सन्त जे आपन पाचो गुणक (इन्द्रिय) रूप, रंग, दृष्टी, कर्म आ चेतनात्से मुक्त छै, वोकर सम्बन्धमे अस्तित्व आ विना अस्तित्वके प्रश्न उठेनाइके कोनो प्रकारके औचित्य नै राखैछै । जावतो कार्य व्युत्पन्न सिद्धान्तके अनुसरण क्याके जिवान सन्तके प्रकृतिके वर्णका करै चिही त मृत्यु परान्त सन्तके स्थितिके विषयमे ऐ प्रकारके प्रश्न नै करैक चाहै छेलौ ।"

"कितो ई जाने चाह बिही जे हम कोन कोन आ केहेन प्रश्न के अनुत्तरित छोइड देवै, आ कथी ले ?" वुद्ध पूछलकै ।

"एना भेलासे हमर शंकाके पूर्ण रूपसे समाधान भ्या जेतै, गुरू महराज ।"

"सारिपुत्र अगर तो हमरा ई प्रश्न करबिही जे दुनिया अविनासी छै कि नै ? दुनियाके अन्त छै किनै ? अत्मा शरीरसे भिन्न छै अथवा अत्मा शरीरसे भिन्न नै छै ? त हम ई सव प्रश्नके अनुतरित अवर्णित आ अघोषित छोइड देवै । कथिले ?

"किएकत ।" बुद्ध कहतै गेलै । "आपन अनुभवके आधारमे हम ऐ प्रश्नमेसे सवटाके त कोनबात एकोटाके जवाव नै देवै सकवौ । हम असाधारण दृष्टीके प्राप्त कैने चिऐ जेनङ्ग दिव्य दुष्टि आ सर्व दर्सी एवं हम त्रिकालदर्षिके उच्चतम ज्ञानके हासिल क्या नेने चिऐ तैयो, नेत हम ए व्रह्माण्डके प्रथम उत्पतिके दृष्टीगोचर करे सकने चिऐ, आने कोनो स्थाई आ अबिनासी तत्वसे भेट भेल आइछ एखैन तलिक हम कोनो वास्तविकता वा अनन्तके दर्शन नै करे सकने चिऐ । जेकर कोनो अनुभव प्रात्त नै भेल छैतै विषय मे तोरा केनङ किछो कहे सके चिऔ जे ई छै मगर अनन्तछै वर्णन से वहारछै तेनङ्ग कहलासे त चुप चाप रहनाई बढिया । अगर कोइ विना अनुभवके कोनो चिजके विषयमे वहस करे लागैछै त तेहेन अवस्थामे खाली तार्किक अधारके बहस है छै जे कोनो प्रकारसे लाभादायक नै हैछै । ऐ प्रकारके तार्किक बहस त व्यक्ति आपन पूर्वाग्रहके तहत पसिन आ नै पसिनके बात मात्र करैछै जे दोसरके विचारसे मेलनै खाइछै । ये प्रकारके विषयान्तर वला सिद्धान्त से त मताण्तर हेवे करै छै एहेन मे के ठिक आ के वेठिक कोन असल आ कोन

खराब छुटियेनाई असम्भव भ्याजाइछै। तै हम वोई प्रकारके प्रश्न के उत्तर दैके प्रयास नैकरै चिऐ जे वास्तविकताके नैदर्शाबैछै आ जे वास्तवमेनै छै। यै प्रकारके प्रश्नके उत्तर नै देलासे हम कोनो प्रकारके झंझट मे नै परै चिऐ।

दोसर ऐ प्रकारके प्रश्नात्मक समस्याके समाधान भेलैसे दुनियाके समस्या जे आपना सव एखैन भुगैत रहल चिऐ तकर परिपेक्षमे कोनो प्रकारे युक्ति संगत नै वुझ्झ परैए। ई दुनिया अबिनासी छै कि नै, अनन्तछै किनै ? इ सवके अलावा हमरा सवके दिन चर्याके प्रत्येक डेग दुःख से भोरलछै।यै दुःखके कारणीछै। दुःखके कारणी मेटवैके रास्ताछै जे वोई दिसर ल्या जाइछै।"

सारिपुत्र आव हमरा एकटा प्रश्न और करेदे।

"जी, गुरू महराज, हेतै।"

'तो तै समयमे कथी करबिही , जाव कोनो विषधर तीर तोहर शरीरके कोनो अंगमे लाइग जेतौ ? कि, तो ऐ बातके पत्ता लगवे चाह बिही जे तिर कोन दिसरसे एलै ? तिर के फेकने छेलै ? तिर फेकनहार कोन जाइत के छेलै ? उ गोर छेलै कीकारी छेलै ? उ वडका कुलके छेलै कि छोटका छेलै ? गरिव छेलै, कि धनिक छेलै ?"

"नै, हम वोई प्रकारके प्रश्नके जवावके खातिर कोनो अरसोठा नै करे चाहवे। सारिपुत्र जवाव देलकै।"

"तो, कथी करे चाह विही ?"

"हम आस करवै जे कोई जल्दी से तिरके बाहर क्या दै"

"कथिले ?"

"किएकत, वोई प्रकारके प्रश्नके जवाव प्राप्त करैके अरसोठामे त हम मृत्युके प्राप्त क्यालेवै।"

"ठिक तहिनङ्गे।" बुद्ध जवाव देलकै। "ब्रह्माण्डके उत्पति विषयके सम्बन्ध आ एहिनङ्ग औरो औरो प्रश्नसवके जवाव हमर सामने मुह विथारने खडा भेलहा समस्याके समाधानके परिपेक्षमे कोनो प्रकारे युक्ति संगत नै भ्या सकैए। वास्तवमे लोकसव अगर एहे प्रश्नके पछा दौडल फिरैत रहे त जावे तक उ वोई प्रश्न सवके हल प्राप्त करतै तावे तक मोईर गेल रहतै। मनुष्यके आदिम उत्पतिसे ल्याके आई तलिक कोइओ ऐ प्रश्न सवके समुचित आ संतोषप्रद जवाव नै प्राप्त करे सकनेछै। तु हु एहैमे आपन समय गमावे चाहै चिही ?"

"नै, गुरू महराज, आब बेसी नै।" सारिपुत्र जवाव देलकै आ थोरवेहेक दिनके अनवरत मेहनैत क्याके उ आपन काम, क्रोध, लोभ आ मोहके वसमे क्या लेलकै। स्वयं प्रकाशित भ्याके सिद्धि प्राप्त सन्तके उपाधि धारण कैलके।

१८–अठारहम

एखैन तलिकमे बुद्ध एकटा बहौत वडका जनसंख्याके फकिर आ वावहन सवके वोकर विचार अनुसारके विचारकरै वलामे परिवर्तन क्या देलकै। वोकर उपदेश तन्तकालिन समाजमे प्रचलित तन्तर मन्तर एव अन्धविश्वासमे जकडल वभनौटी जुवाके तोडैमै एकटा वडका असाके संचार क्या देलकै। वोकर उपदेशके महत्व बहौत जल्दीमे कोशल आ मगह राज्यमे बिस्तार भ्यागेलै। वाराणसीमे आपन उद्देश्यके फलिभूत देखके बुद्धआपन घरदिसर जाइके विचार परिवर्तनक्या देलकै। उ पहैनका वर्षा वाराणसीमे व्यतित कैलकै आ मगह दिसरके यात्राके विचार करे लागलै।

मगह राज्यमे फिर्ता भेलाकेवाद उ उरूवेल गेलै जते वोकरा पांचोटा फकिर जे एखनी वोकर पहैनका शिष्य छेलै भेट भेल छेलै। पहिनका वेर जाव उ उरूवेलमे रैह रहल छेलै त एकटा फकिर जे आपन केशके पिढिया वनवे छेलै आ जेकर नाम कश्यय छेलै तकर विषयमे सुनने छेलै। उ अजगुतके लिलासव प्रदर्शन करैछेलै। छोडा छेहर जे वोकर अजगुत प्रदर्शनसे प्रभावित हैछेलै, से सव झुण्ड के झुण्ड वोकर लग जाई आ बोहिनङ्ग अदभूत लिला प्रदर्शन करैके तौर तरिका सिखैके लौलसासे वोकर शिष्य भ्याजाई। पारिवारिक जिवन व्यतितकरै वला वावहन जे धार्मिक आ अध्यत्मिक जिवनमे चमत्कारी ज्ञानके वडका महत्व दैछेलै से सव वोकर ऐ अजगुत से छकितेटा नै छेलै बलकि वोकर शक्तिके डरसे हरदम भयभित रहै छेलै। उ ऐ प्रकारसे आपन शिष्य सवके असिमित अराध्य भक्ति एवं ग्रामिण सिधा सदा व्यक्तिके डच्याल भक्तिके आनन्दमे हमेशा मस्त रहैछेलै। ऐ कार्यमे वोकर शिष्य आ काम परलहा यजमानसव वडका आल ढालके खचिला पूजा पाठके आयोजना करै छेलै तैमे अग्नि देवताके पूजा पाठ चढौवा बढौवा आवश्यक छेलै। प्रत्येक प्रकारके पूजनमे धनके नजराना भेनाई आवश्यक छेलै। ऐ रित विभतसे कश्यप अलेल सम्पैतके मालिक एवं मान प्रतिष्ठासे जग जहिर भ्या गेलछेलै। तन्तर मन्तरके बलसे आपन शक्तिके प्रदर्शनसे आर्जन केलहा सम्पैतसे उ खौ भोग मस्ति के जिवन निर्वाह करै छेलै।

कश्युप, बुद्धके प्रभावके सुनने रहै लेकिन वोई विषयमे ततहेक ध्यान नै देने रहै। उरुबेल पहुचालपर बुद्ध एकदिन कश्यपके भेट करैके विचार कैलकै। कश्यप

बुद्धके आगमनके असल नै मालनकै। कश्यपके मनमे शंका उठलै जे अगर बुद्ध सेही वोई प्रकारके तन्तर मन्तरके ज्ञान प्राप्त क्या नेनै छै आ तहिनङ्ग चिजके प्रदर्शन क्या सकतै त उ आपन शिष्य एवं सधारण व्यक्ति सवसे कमेलहा प्रतिष्ठा गम्या देतै। तै जतेहक जल्दी भ्यासकतै उ बुद्धसे पिण्ड छोडबैके प्रयास करतै। जाव रात्रि विश्रामके वास्ते बुद्ध कोनो स्थानके विषयमे कश्यपके पूछलकै त उ एकटा छोटका खोपडी देख्या देलकै जैमे उ पहिनैसे एकटा विषधर साँप राखने छेलै। अनजानमे बुद्ध खोपडिमे प्रवेश करलकै त साँप फुफूव्याके उठलै। स्वयं प्रकाशित बुद्ध साँपके भयानक मुद्राके देखलकै आ शान्त रहलै। वोकरा कोनो प्रकारके उत्तेजना नै भेलै किएकत उ सबप्रकारके रिस रागसे उपर भ्यागेल छेलै। बुद्ध कलमच आपन पुआरके विछोनामे आरामकरे लागलै। विषधर जेकरा कोनो प्रकारसे खललनै पुगलछेलै आपन बैठलहा कोनमे फेरो भिडिया गेलै आ राइतभैर भिडीथ्याले रहलै।

अनगुतके बुद्ध जागलै आ रसे रसे घरसे बहार भ्यागेलै। कश्यप जे देहरीमे पहिनैसे ठाढ छेलै ई देखके आपन आईखमे विश्वास नै करे सकलकै जे बुद्ध केवाड खोईलके बाहर भ्याजेतै। वोकर शिष्य सब सेहो तैयार छेलै जे बुद्धके मुर्दा शरीरके कतौ फेक देतै। ई दृश्य त वोकर शिष्यसबके वास्ते आई तलिकके देखलहा सवटा चमत्कारीदृश्यसे वेसी अजगुत छेलै। कश्यप बुद्धके प्रश्नकैलकै।

"मित्र, तो कोन ऐहन अजगुत मन्तर कैलही जे ई विषधर तोरा कुछने कहे सकलकौ ?"

"कश्यप, हम आपनैके साधहैके मन्तर कैने चिऐ। जे अपनाके साइध नेनै छै तकरा वोसरके साधहैले कोनो प्रकारके कठिनाई नै हैछे चाहे उ विषधर हेवै, कि बाध, कि हाथी आकि सबसे बदमास व्यक्ति।" बुद्ध जवाव देलकै।

कश्यप महशूस करेलागलै जे वोकरा आपन शिष्यसबके सामने अपमानित हेवे परलै। वोकर कपाडसे घाम चुवे लागलै। उ बुद्धके मार्मिक कैफियतके बुझहलकै आ विचार करे लागलै।

"एकटा बडका विषधर जेकरा विचार करैके कोनो क्षमता नै हैछे सेहो जाव बुद्धसे मित्रवत व्यवहार कैलकै त हम एकटा आदमी चिऐ आ एतहेक शिष्यके संगठन चल्या रहल चिऐ से यै ज्ञानी व्यक्तिके वोई साँपौसे वेसी खरावी क्याके नास करैके प्रयास कैलिऐ।"

तै लाज आ डरसे वोकरा वडा पश्चाताप भैलै आ उ बुद्धके पैरमे खैसके माफि माङ्गलकै "महामान्यवर, हम घमण्डमे चूर छेलिऐ। की अपने हमरा आपनै स धहैके ज्ञान दया सकबै"।

बुद्ध वोकरा मनबोचित दुश्चरित्र प्रवृत्तिके नियंत्रण करैके सवटा तौर सारिकके दिक्षा देलकैं। उ वोकरा ईच्छाके मारैके, लोभके परित्याग करैके आ शंका हटवैके सवटा पाठके ज्ञान देलकैं। कश्यप जे आपन शिष्य सवके अग्निहोत्र सम्वन्धमे प्राप्त कैलहा चमत्कारी शक्तिके शिक्षामे पारंगत क्यादेने छेलैं तैंमे बुद्ध असलका अग्नि होमके पाठके दिक्षाके वर्णका करे लागलैं।

"सव चिज अग्निमे समर्पितछै, मित्र। कोन कोन चिज अग्निमे समर्पित छै। आँइख अग्निमे छै। दृष्टिगोचर हेवैं वला रूप अग्निमे छै। चेतना दृष्टि अग्निमे छै दृष्टिके सम्पर्क अग्निमे छै। अनुभव जन्य-सुखान्ति, वेदनात्मक आ असंलग्न-जे गोचरहेछै सवटा अग्निमे समर्पित छै। ताव ई अग्नि कथि चिऐ? इ त कामके, घृणाके आ मोहके अग्नि चिऐ। काम, घृणा आ मोहके अग्नि हमरा सबके सब प्रकारके चेतना आ चेतनाजन्य वस्तु एवं अनुभव जे कि ऐ ईन्द्रिय जन्य एवं इन्द्रिय सम्बन्धी सम्पर्कसे प्राप्त भेलछै सवटा अग्नि होममे स्वहा भ्यागेलछै।"

'ई सब विचारके मद्धे नजैर राखैत जे अपना सबके इन्द्रियजन्य सवटा अनुभव अग्नि होममे स्वहा भ्यागेलछै, एकटा ज्ञानीपुरुष आपन आइखके प्रति, देखैंवला वस्तुके प्रति, देखैंके चेतना प्रति, आ देखैंके सम्पर्कमे आवैं वाला सम्पूर्ण अनुभवके प्रति वितराग भ्या जाइछै। वितराग भेलासे वोकर काम इच्छा सुख्या जाइछै। काम इच्छा मोरलासे वोकर मन मस्तिष्क उदार भ्या जाइछै। जाव वोकर मन मस्तिष्क उदार भ्या जाइछै त उ बुझ्झजाई छै जे आव हमर पुनर्जनम रोक्यागेलै। उ बडा शानके जिवन व्यतित करैं छै। मानुषतन प्राप्त क्याके जे करैके उचित छेलैं क्या लेलकैं। आव फेर यहै कामके वास्ते ऐ मरतभूवनमे नैं ऐतै।"

बडा जल्दीमे कश्यप आपन शिष्यसहित अग्निहोत्रमे स्वहा भ्यारहल आपन मनके नियन्त्रण क्याके बुद्धके दिक्षा अनुसरण कैलकैं आ सिद्धि प्राप्त क्या लेलक। उ शिष्य सहित महात्माके उत्तम पदवीसे बिभूषित भेलै।

आपन सवटा शिष्य सहित कश्यपके धर्म परिवर्तन तत्तकालिन समाज मे एकटा भूमकौन आनलकैं। बुद्धके शिक्षा से दुख आ वेदना के समुद्रमे डूगल कश्यप आ वोकर शिष्य सव वोई दुःखके समुद्रसे पार हैवैं बला उपदेशके सफलताके अलावा वोकरासवके परिवर्तनसे मगह राज्यके समाजिक क्रियाकलाप जैंमे धार्मिक विश्वसनीयताके बभनौटी बाह्न छेलैं तैंमे बडका दरार्ईर चिहैक गलैं। थोरहेक समयतक मगहके लोकसबके विश्वासेने हेवै जे कश्यप सनके शक्तिशाली व्यक्ति केनङ्ग क्याके बुद्धके

धर्म अनुशरण क्याके वोकर शिष्य भ्या गेलै कश्यपके धर्म परिवर्तनके बात मगह राज्यमे वोनैया आइग नहाइत विस्तार भ्यागेलै आ रजा विम्बीवारके कानमे पुगलै ।

"जाव वोकरा हम थोरहेकदिन पहिने देखने छेलिए तखैनिए हम शंका क्या ने ने छेलिए जे एकदिन बुद्ध अध्यात्मिक विषयमे वडका उच्च पदके हासिल करतै ।" रजा आपन दरवारी सवके सुनैलकै । "आपना सव वोकर दर्शन करैले चल ।"

रजा बहौत दरवारि आ बावहन पण्डितसवके साथमे ल्याके उरुवेल जते बुद्ध आपन शिष्य संगे निवासक्या रहल छेलै हडवडयाल गेलै । महात्मासवके वडका झुण्ड जे हरदिनका पैरहनमे छैले वडा सुन्दर दृष्य उपस्थित क्या रहल छेलै । पहरनके रंग आ वोकर मुखमण्डलसे प्रष्फुटित आभा एवं शान्ति से वडा मेल ख्या रहल छे लै जे नङ विना वादलके अकाशमे हजारटा चान उइगके ठहठह इजैरिया क्या देने रहै ।

रजा विम्वीसार बुद्धके नजदिक पुगलै साष्टाङ्ग देडोत कैलकै आकहेलागलै

"पहैनका वेर जहिया हम आपनेके दर्शन करने छेलिए त हम अपनेके विन्ति कैने छैलिऐ जे जाब अपने सत्यके पत्ता लग्यालेवै त घुइमके राजगिर पधारल जेतै आ हमर धार्मिक सलाहकार भ्याके सहयोग क्यालजेतै । तै समयमे हम बडा स्वार्थी भ्यागेल छेलिऐ । आव हम देखै चिए जे अपनेके सिद्धिसे दुनियाँके भलाई हेतै । अपने आपन सम्पूर्ण शिष्य सवके साथे हमर दरवारमे पदार्पण क्याके हमर तयार केलहा भोजन स्वीकार क्याके हमरा अनुगृहित केल ज्या ।"

बुद्ध मौने रैहके निमन्त्रणाके स्वीकार कैलकै ।

रजा विम्बीसार तुरत फिर्ता भ्याके वुद्ध आ वोकर शिष्य सवके स्वागतके तैयारीमेव्यस्त भ्यागेलै। ढालढूलसे तीन लाठी फराके रहैवलाबुद्ध जे कश्यपसनके मज मस्ती वला पुरूषके निचा देख्या देने छेलै, नगरके बडका सज धज करैके मनाही क्या देलकै आ बुद्धके दर्शनके वास्ते सफाउजर पोशाक लग्याके उपस्थित हैकै उर्दि चल्यादेलकै । हरदियान पैहरनमे बुद्ध आ वोकर महात्मा शिष्यसवके वडका झुण्डसव जाव राजगीर शहरमे एलै त वोकर दर्शन करैके वास्ते रस्ताके दुनु वगलमे सफा उजर पोशाकके पहिरनमे जम्मा भेलहा नागरिकके ठठ एहेन लागै जेनङ वितलहा राइतमे बरैषके जम्मा भेलहा उजरा हेमसव अकासमे चम चम करैत सुरूजके वडका रौदौमे विलावे नै चाहै ।

राजगीरमे बुद्धके आगमन भल त अगमानी क्याके दरबारतक आनैले रजा बिम्वीसार आपन एकटा दरवारी दलके पठैलकै। दरबारलग पहुचलापर रजा एवं राज परिवारके [सदस्यसव बुद्धके सादर अभ्यर्थना कैलकै आ आपन वडका राजकीय समाजके साथ एकटा वडका पंडालमे गेलै जे यहै महोत्सवके खातिर तैयार क्याल गेलछेलै। रजा स्वादिष्ट-स्वादिष्ट भोजन जे राजकीय भन्सामे तैयार क्याल गेल छलै अतिथि सवके परोसा लग्याके स्वागत केलकै। जाब बुद्ध भोजन समाप्त क्यालेलकै त रजा वोकर नजदिकमे पुगलै आ ठेङ्गहुनिया दयाके बिन्ती कैलकै।

"गुरूबर, अजेय कश्यपसे विजय प्राप्त क्याकेअपने सवसे वडका अजगुत क्यालगेलै। अपनेके बिन्ती करै चिऐ जे कोन प्रकारसे आदर्श शासक बैन सकैए।"

"हे राजन," बुद्ध कहलकै। "जे रजा आपन हृदयसे प्रजाके भलाइके काम करैछै सेह्या आदर्श रजाहै छै। उ तरूवाइरके वलसे राज्यमे शासन नै करैछै वलिक प्रजापालन हेतु राज्य करैछै।"

"लेकिन, गुरूवर।" रजा कलहलकै। "हमर धार्मिक सलाहकारसव जे सव बाबहन चिये हमरा जानकारी दैए जे प्रजा पालन के भलाई त तरूवाइरके धारसे क्याल जाइछै तै हमरासव क्षत्रके धारण करैवला क्षत्री चिऐ।"

"उ सव जे प्रजापालनके पवित्रतम काम तरूवाइरके धारसे रक्षित हेवैके वकिली करैछै तैसवके मन साय अनुसार त पवित्रतम काम करनाई एकटा कानून चिऐ जेकरा एकटा दैवी शक्ति सम्पन्न व्यक्ति, शृजलहार ईश्वर जेकरा ब्रह्मा कहैछै। तकरे द्वारा प्रतिपादन भेल छै। वोकर सवके नजैरमे त दुनिया दारी के सत्यताके प्रतिनिधित्व करैछै। दुनियादारीके विषयमे दैवी शक्ति सम्पन्न वोई सत्यके बिरोध करैके कोनो मनुष्यके कोनो प्रकारके शक्तिनै हैछै। सत्यके जे बिरोधकरैछै सेअसत्य आ दुष्ट हैछै आ तै वोकरा तरूवाईरसे मृत्युदण्ड देवक चाही।"

वावहन, पुरोहितसव जे रजा बिम्वीसारके धार्मिक एवं अध्यामिक सलाहकार छेलै आ जेसव वोई अवसरमे वोई ठाम उपस्थित छेलै आपनैमे एक दोसरके मुह ताकेलागलै।

"हे, राजन ! हम वोई प्रकारके कोनो सत्यके पतानै लगवे सकने चिऐ।" बुद्ध कहैत गेलै।

बुद्ध आपन कहनाई जारी राखैते, कहे लागलै।" दुनियाके सम्बन्धमे जे सत्यके पत्ता हम लगैने चिऐ से कार्य व्युत्पन्नके सिद्धान्त कहल जाइछै। पवित्रतम भलाईके काम कार्य व्युत्पन्न सिद्धान्तके अधारमे बुझहल ज्यासकैछै।"

"गुरूवर, हमरा यै कार्य कारण सम्बन्धके सिद्धान्त एवं पवित्रतम भलाइके काम बुझहैमे वडा कठिनाई भ्या रहल आइछ आ एकटा शासक आपन देशमे शासन करैके मैमलामे ई सिद्धान्तके कोन प्रकारसे व्यबहारमे लागू क्या सकतै।" रजा बिम्बीसार आपन मनके वात जाहिर कैलक।

"अपनेके कठिनाई वास्तविक आइछ, अपनेके शंका बिल्कुल सहि आइछ, रजा साहेव। ई एकटा सिद्धान्त चिऐ जेकरा हम आपन परिश्रमके कल बलसे प्राप्त कैने चिऐ। हम अपनेके ऐ कार्य कारण सम्बन्धके वर्णका करव। ध्यानसे सुनल ज्या।"

"मनुष्य ने त भगवानके बान्याल चिऐ आ ने त आपनै बनलछै। उ त बहौत बहौत कारणी सवके मिश्रित प्रभाव के फलाफलसे एलछै। समाजमे रहैत जाव उ कोनो दोष पूर्ण कार्य करैछै त वोकर इच्छा आ उमंगके प्रति पूर्ति अनुसार जिम्मेवारी कहल ज्या सकैछै। प्रत्येक मनुष्यमे इच्छा आ आस भोरल रहैछै। ई त वोकरा बचपनसे देलहा शिक्षा, दिक्षाके प्रतिफल चिऐ जे उ आपन इच्छा आ आसके नियंत्रित कैने रहैछै, किएकत समाजमे वोईसव प्रकारके इच्छा आ आसके कार्यान्वियन हेवे देवैके कोनोटा अवसर नै रहैछै। अगर वोकरा समुचित प्रकारके शिक्षा दिक्षा नै प्राप्त हेवै आ समाजो अगर वोकर इच्छा आ मनसाय अनुसारके कार्य करैके छुट द्यादै त निश्चित रूपसे उ आपन इच्छा आ मनसायके बसमे भ्याके वहैक जेतै। ए मैमलामे खाली वोह्याटा आपन दोष पूर्ण कामके प्रति जिम्मेवार नै छै बलिक वोकर मैया, बाबू, शिक्षक एवं उ समाजो जैमे उ निवास क्या रहलछै बरावैर रूपसे जिम्मेवार छै। जाव वोकरकेलहा काममे वहाँत बहौत कारणी सवके मिश्रित प्रभाव छै त एकटा वोह्या कथिले सजायके भागीदार हेतै?"

"एसे बेसी, अगर सजाय देनाई आवश्यक भ्याजाई छै त सजायके मनसाय वदला लेनाई कथिमपि नै भ्या सकैए। सजाय त एक प्रकारसे वोकर मन मस्तिष्कके दुरूस्त राखैके वास्ते मात्र देल जाइछै, तै मे तरूवाइरके व्यवाहार कोनो प्रकारसे न्यायोचित नै कहल ज्या सकैछै। सधारणतया मृत्यु दण्ड त नै सुधरै वला दुष्ट व्यक्तिके वास्ते न्यायोचित भ्या सकैछै। हम नै विश्वास करै चिए जे आदमी सुधरै वला नै हैछै। मनुष्य जे दुष्ट हैछै तकर मूल कारण त राग, द्रेष आ शंका चिऐ। ईसम्भवछैजे दुष्टताके तीनुकारण राग, देष आ शंकाके समूलफेकलज्या सकैछै।

हम ऐप्रकारके स्थिति प्राप्त क्या ने ने चिऐ आ तहिनङ्गे हमर संगे एठाम ऐलहा हमर शिष्य सव। अगर दुष्टताके तिनु कारण थोरहेक व्यक्तिसे समूल फेकल ज्या सकैछै त दोसर दोसर व्यक्तिके मनोभवनासे एकरा किएकने उखाडे सकतै।

"हे राजन, हम मानव जिवनके बिनास हैके वकिली नै करै चिऐ जे एकवेर यै वुनियामे जनम ल्या लेनेछै। ई एकटा बात चिऐ जे नया नया जिवनके आवे दैले रोक लागै आ जे स्वत: आईवगेलछै तकरा नास केनाई दोसर बात चिऐ। जे एकवेर अस्तित्वके प्राप्त क्या नेने छै तकरा नष्ट करैके अधिकार ककरौने छै वोकरा आपनौने।"

"हे राजन, एकटा काम जैसे अपनाके नोकसान हैं छै, असल चिऐ कि खराव?" अपने की कहल जाई छै।" प्रश्न कैलकै बुद्ध।

"इ त खराव चिऐ, गुरूवर।" रजा बिम्वीसार जवाव देलकै।

"उ काम जैसे अनकरा नोकसान पुगै असल हैछै कि खराव?"

"इ त खराव हैछै।"

"एकटा काम जैसे आपनौ आ अनकरौ नोकसान पुगै छै असल है छै कि खराव?"

"हम बुझहै चिए जे यहो खरावे चिए।"

" त कोन काम असल हैछै आ कोन काम खराव हैछै?" बुद्ध पूखछलकै।

गुरूवर, हमरा ई माने पड्तै जे उ काम जेकरा करलासे आपनौ असल आ दोसरौके असल है छै सेह्याकामके असलकहै चिए। तहिनङ्ग उ काम जेकरा करला से आपनौ खरावी आ दोसरौके खरावी पुगैछै तकरा खराव काम कहवै।" रजा बिम्वीसार जवाव देलकै।

"बहौत बढिया, राजन, बहौत बढिया कहलगेलै। एकरै पवित्रतम काम कहैछै। यह्या सत्य चिए आ हम एकरे पता लगैने चिए। ई सत्य कोनो दैवी शक्तिसे प्रतिपादन नै भेल छै। ई कोनो दैवि शक्तिके कानूनमे नैलिखलछै। इत आपने अनुभव जन्यबात चिए आ एकरै कार्य व्युत्पन्न सिद्धान्त कहैछै। इ तवोहैं सिद्धान्तमे अधारित छै जैमे असल आ खराव दुनुटा आपन कारणसे सम्बन्धित छै। खरावके परित्याग केनाईके इ मतलव भेलैजे खरावीके उत्पन्न करैवला कारणीके परित्याग करू तहिनङ्ग असल कामके आपनेनाईके मतलव भेलैजे असल कामके कारणी सवके गहन करू जै चिजसवसे यै असलकाके उत्पति हैछै।"

"तै, एकटा आदर्श रजा वोकरै कहल जाई छै जे संसारके कार्य कारण प्रकृतिके बुझहैमे सक्षमछै, जे सवचिज आपन कारण ल्याके उत्पन्न हैछै आजे खराव भवनासे प्रेरित रहैछै त आपनौ आ अनकरौ से त्याग क्या आ कन्याके असल भवनासे प्रेरित हैछै आ करैवो करैछै।

"गुरू महराज एकर मतलब की इनै भेलै जे एकटा आदर्श रजा क्षत्रीयेटा हेतै से जरूरी नै छै ?" रजा बिम्बीसार प्रश्न कैलकै ।

"विल्कुल ठिक । एकटा क्षत्री खाली क्षत्री कुलमे जनम भेलासे नै हैछै, बल्कि वोकर क्रिया करमसे हैछै । समाज वोकरा शासन करैके वास्ते ऐले नै पसिन कैलकै जे उ बडका परिवारमे जनम नेने छेलै बल्कि उ त आपन न्याय प्रियताके वास्ते छानल गेलै । हे राजन, की अपने, सवसे पहैनका रजाके विषयमे सुनने चिऐ?" पूछलकै बुद्ध ।

"जी, गुरु महराज । वोकरा महासामन्त कहै छेलै ।" रजा जवाव देलकै ।

"कथीले वोकरा महासामन्त कहे लागलै ?" बुद्ध पूछलकै ।

रजा विम्बिसार कुछ समय विचार करे लागलै । उ वोई नामसे परिचित छेलै लेकिन ऐ नामके असलका अर्थके विषयमे उ कहियो असलसे विचार नैकैने छेलै ।

"गुरु महराज, हमर विचारसे "महा" माने बड्का आ "सामन्त" माने स्वीकार केलहा ।"

"अपने ठिक कहल गेलै । एकर असलका अर्थ एह्या चिए । महासामन्त माने महाजन सम्मत अर्थात बहुत वडका जन समूह द्वारा स्वीकार क्याल गेल । लेकिन, की, उ येलै स्वीकार क्याल गेलछेलै जे उ वडका कुलके क्षत्रीमे जनम नेने छेलै ?"

"जि, नै, गुरु महराज ।" रजा जवाव देलकै । "उ सवसे पहिनका क्षत्री भेल आ तकरा बाद सब वोकर सन्तान भेलै ।

"विना क्षत्रीके कुलमे जनम ल्याके केनङ्ग क्याके उ क्षत्री भेलै ?" बुद्ध प्रश्न कैलकै ।

विम्वीसार एकर कोनो जवाव नै देलकै । वोकर मन मलिन भ्यागेलै । वोकर पुत्र जे भविष्यमे राजगद्दीके मालिक हेवै वाला छेलै आ जे वोकर दहिना कता बैठल छेलै, तमस्या गेलै ।

बुद्ध आपन वचन कहैत गेलै ।

"उ बहौत आदमीके समूह द्वारा छानल गेलै किएकत उ न्यायप्रीय आ ईमन्दार छेलै । किएकत उ आपन असलका व्यक्तित्वसे, आपन नैतिकतासे. आपन ईमन्दा-रीसे आ पक्षपात रहित भ्याके वोई बडका समूहके भवनाके आदर करैछेलै । तै हमर ई दावा चिऐ जे राजशाही शासन पारिवारिक अधिकारेटा मात्र नै चिऐ बल्कि

नागरिक समूहके इच्छा आ भवनाके थिचो-मिचो क्याके ककरो शासन करैके अधिकार नैं छे। तैं जाव नागरिक समूह वोकरा शासन करैके अभिभारा दैछैं त वोई शासकके ई जिम्मेवारी भ्या जाइछै जो उ खाली वोकरैटा भलाई नैं करैजे वोकरा छानलकै बल्कि सम्पूर्ण समूह जे वोकर क्षेत्रके भितरमे परैछे। जे वोकरा समर्थन कैलकै तकरा कखा आ जे वोकर विरुद्ध कैलकै तकरापखा करला से उ कहियो असलका शासक नै भ्या सकैए। तैं सब हेतुसे एकटा असलका बडका शासक वोकरै कहे सकैचिऐ जे आपन भलाईके साथें सबके भलाईके विचार क्याके काम करैछै।"

रजा बडा खूसी भेलै। बुद्धके बडप्पनके उ स्वीकार कैलकै। समाजिक परम्परामेव्याप्तभेलहा अन्धविश्वासी व्यवहारके विरूद्धमे बाजैके बुद्धके साहसके आदर कैलकै आ सबसे बेसी त मानव मात्रके प्रति देखेलहा करुणासे रजा बडा प्रभावित भेलै।

बुद्धके साष्टाङ्ग विन्ति चढवैत कहलकै।

"गुरु महराज, आइसे अपने हमरा आपन शिष्य स्वीकार केल ज्या। हमर वास्ते निवेदन जे अपने सदत मगहमे धुनी जमैने रहल ज्या जैसे किहम अपनेके उपदेशसे हरदम लाभ प्राप्त करैत रहवैं, से हमरा उचित नैं लागैए। मगर गुरु महराज, अपने ऐ स्थानमे अपनेके सबसे असलका शिष्यमे से थोरहेक शिष्यके स्थाईरूपसे धुनी जमैने रहे देल ज्या जैसे हम आ हमर नागरिक सबके लाभ प्राप्त हैत रहतै। ई वासघारी करजान हम अपने एवं अपनेके शिष्य सबके वास्ते समर्पित क्यारहल चिऐ एकरा स्वीकार क्याकेहमरा कृतज्ञ क्याल ज्या।

वोई अवसरमे वोई स्थानमे उपस्थित भेलहा बाबहन, क्षत्री आ सम्पूर्ण जनसमूहके सबक्षेत्रके व्यक्तिसब वोई लवका सन्देशके स्वीकार कैलकै। तैं मैं एकेटा व्यक्ति जे रजा विम्बीसारके पुत्र आ मगह राज्यके राजकुमार रहै तकरेटा मुह फुलल लागैछेलै।

१९–उनैसम

शाक्य वंशके पुत्र सिद्धार्थ पूर्ण सिद्धि प्राप्त क्याके बुद्धत्व प्राप्त कैलकै आ वोकर उपदेश मगह, काशी आ कोसल राज्यके चारूभर बिस्तार भ्याके मध्य भारतके सबसे शक्तिशाली रजा बिम्बीसार वोकर उपदेश ग्रहण क्याके शिष्य भ्यागेलै, तेहेन समचारसब सुइन सुइनके कपिलवस्तुके लोकसब बडा खुसी आ गौरवान्वित है छेलै। वोकरा सबके गौरव पूर्णिमाके ज्वार नहाइत उइठ गेल छेलै। तैयौ बुद्ध एखैन तलिक आपन देशमे फिर्ता भ्याके नै एलै तकर वास्ते निरास सेहो

है छेलै । शुद्धोधन ग्रापन बन्धु वान्धव सबके विचार बुझलेलकै ग्रा वोहो ग्रापन पुत्रके देखैंले छटपटवे लागलछेलै । तै बुद्ध ग्रापन घरदिसर ग्रावे कैंहके निमन्त्रण देलै वोकर एकटा मन्त्रीके पुत्र कालु दाईके राजगीर पठैलकै ।

राजगीर पुगलै त कालुदाई ई देखके जे वोई वासघारी करजानमे केनङ्ग कथी भ्यारहछलै ग्रापनै ग्रापनै छक परै । ग्रापन ग्रावैके सवटा ग्रभिप्राय बिसैरगेलै । बुद्धके बडका झुण्डके चेला चाटीसबके देखके उ छक परैछेलै । हरदम झुण्डके झुण्ड लोकसब, वबाजी सब ग्रा पारिवारिक जिवनके प्रत्येक क्षेत्रके लोकसबके ग्रावैत जाइत देखके वोकरा टाराटक लागै छेलै । शाक्य वंशके पुत्रके देखके उ बडा गौरवके ग्रनुभभव क्या रहलछेलै । तहौसे बेशी वोहेन शक्तिशली रजा बिम्बीसारके करिब करिब सबदिन बुद्धले दर्शनके वास्ते ग्रावैत देखै। बुद्धके दरबारमे जाइत पाइतके कोनो भेद भवना नैरहै । वोकर धर्मके दरबारमे सब जाइत, उच-निज, वावहन, क्षेत्री, वैश्य, शुद्र, सबके वरावैर रूपसे स्थान भेटैछेलै से देखके कालु दाइके ग्रापनै ग्रापनै वडा निराश्रित भवना जागैछेलै जेहेन उ कहियो ग्रनुभव नै करेसकने छेलै । यहै सब बिचारसे उ बुद्ध लग नै ज्या सकैछेलै, यदचपि कि उ बुद्धके परिवारसे सम्बन्धित छेलै ग्रा घर त्याग करैसे पहिने बुद्ध संगे उ व्यक्तिगत रूपसे परिचित छेलै ।

ग्रन्तमे एकदिन जाव बुद्ध उपस्थित भेलहा समूह एवं ग्रापन शिष्यसवके धर्मके विषयमे उपदेश द्याके वोई बासघारी करजानके निवासमे ज्यारहलछेलै त कालुदाईके ग्रादमीके समूहके एकटा कोनमे वैठलदेखलकै ग्रा चिह्न लेलकै त खडा भ्यागेलै । कालुदाई सेहो बुद्ध दिसर ताके लागलै जे उ हमरा चिह्नलेलक । लगमे ज्याके सादर नमस्कार कैलकै ग्रा एक दिसर चुपे चाप खडा रहलै । बुद्ध वोकरा पूछेलागलै ।

"तो कथीले राजगीर एल चिही, कालुदाई ? कितो ग्रापन बाबु संगे सरकारी कामके सिलसिलामे ए ठाम एलचिही ग्रथवा तो परिवारके त्याग क्याके सन्त हेवैके निर्णय क्याके एल चिही ?"

"सरकार, ग्रपनेके पिताजी ग्रपनेके कपिलवस्तु ग्रावैके निमंत्रण दैके वास्ते हमरा पठैने ग्राइछ । ग्रपनेके परिवार एवं चौगमाके लोकसव ग्रपनेके दर्शनके वास्ते उत्सुक भ्या गेलछै । ई वास्तवमे घर दिसर जाइके वडा वढिया ग्रवसर छै ।"

"कालु दाई, कपिलबस्तु दिसरके यात्रा करैके एखैन समय नै भेलछै । वर्षा ऋतुके पश्चात यात्राकरैके बिचार क्यारहल चिए, त सव गोडे संगैसंग ज्याम ।

कपिलबस्तुसे और कोन कोन समचार आनने चिही? तोहर परिवारके हाल चाल केहेन छौ ? हमर मैया-बाबू कुशल से छै किनै ? हमरा घर छोडलाके बाद यशोधराके हालत केहेनछै, आ हमर छोट पुत्र राहुल केहेन भेलै ?"

"सरकार, हमर परिवार आ अपनेके परिवार बढिया आइछ । यशोधरा एवं राहुल कुशलसे आइछ । अपनेके पिताके सदव्यबहार यशोधराके वास्ते बहौत बढिया भेलै । राहुल वडा सुन्दर छै; उ हरदम अपनेके सम्बन्धमे पूछ-आछ करत रहैछै ।"

हमरा ई सुइनके खूसी भ्यालजे यशोधरा आ राहुलके हमर बिछोडके बाद जेना दुःख हेबक चाही से नै भेलै। तैयो, कालुदाई, अपना सव ऐदुनियामे एसगरे एसगर जनम ने ने चिऐ । ई साच चिऐ जे अपनासवके मैया-बाबु अपनासबके जनमसे एखैन तलिक सवप्रकारके कारणीके मिल्याके अपनासव के ऐ स्थितिमे पुगैलकै लेकिन ऐ प्रकारसे कतहेक दिन तलिक मैया बाबूके असरा करैत रहबिही ? यहौमे बेसी लारदुलारसेत आपनासवके नोक्सानेटा हेछै । दोसरमे बेसी आश्रित भेलासे त अपनासव ऐ दुनियामे रैहके हेवै वला सम्भाव्य समस्यासे जुझहैके सवटाक्षमताके खतम क्या देवै । अन्तमे त सवके अ पन आपन समस्याके सुल्झाबैले आपनै तरिकासे काम करे परैछै । कोईने; एतहेक तलिक जे श्रृजलहार ब्रह्मा सेहो हमरासवके समस्या के नै सोझरावे सकैछै आ हमरा सवके सिद्धि नै प्राप्त कन्या सकैछै । लोक आपन मालिक आपनै हैछे, दोसर वोकर स्थान के छैके सकतै ?"

"कोईने सरकार ।" कालुदाई जवावदेलकै । बुद्ध जे बात कहलकै से त वोकर बिचारके वडका खोराक भेटलै । रजा शुद्धोधनके मन्त्रीके बेटा भ्याके जे एखैन-तलिक झूठ घमण्डके असराके धाखमे छाती फुलैनेरहै वला कालुदाई बिचार करे लागलै । 'सिद्धार्थ, रजा शुद्धोधनके आपन बेटा भ्याके संसारमे एसगरे हैके बिचार क्या रहलछै आ आपन मुक्तिकेवाट ताकैछै ।' ऐ प्रकारसे आपन मनोभवनाके वदैलके कालुदाई बुद्धके देलहा उपदेश सवके श्रवण कैलकै आ वोई उपदेश सवके विश्वास क्याके मनमे बैठलकै । बुद्धके शिक्षा ग्रहण क्याके कालुदाई वोई प्रकारके ध्यानमे लागलै आ दुनियादारीके राग, द्वेष आ शङ्काके चट्टक त्याग क्या देलकै । ऐ तरहे कालुदाई बुद्धके अनुसरण क्याके शाक्यमे पहैनका सिद्ध महात्मा भेलै ।

वर्षा ऋतु समाप्त भेलाके बाद बुद्ध आपन शिष्यसवके जम्मा कैलकै आ कपिलबस्तु दिसरके यात्राके बास्ते आपन इच्छा व्यक्त कैलकै । अरहन्त कालुदाई बुद्धके आगमनके जानकारीदैके वास्ते सवसे पहिने रजा शुद्धोधनके रजधानी

कपिलबस्तुके यात्रा कैलकै। जाव कालु दाई रजाके दरबारमे पुगलै त रजा शुद्धोधन वोकरा नै चिनहे सकलकै।

"हम जेना तोरा कतौ देखने चियौ ? तैयो हम नै चिनहे सकलिम्रौ जे तो के चीही ? तो कोनो सधारण फकिर नै लागै चिही ? कृपा क्याके कह जे तो के चिही?"

"हे राजन, हम कालुदाई चिऐ जेकरा तो आपन पुत्रके निमन्त्रण दैके वास्ते राजगीर पठैने छेलही। आव त हम तोहर बेटाके बेटाभ्या गेलिम्रौ तै तोहर पौत्र भेलिम्रौ। बुद्धके अमृत बचनके श्रवण क्याके हम यै संसारके परित्याग क्या देलिऐ आ संसारीक दुःखके हट्याके सिद्धि प्राप्त क्या लेलिऐ। अपनेके भद्रपुत्र कपिलबस्तु के यात्रा क्यालेनै छै आ एकटा वडका शिष्यसमूह सवके ल्याके जल्दीए आमगन भ्या जेतै।"

शुद्धोधन कालुदाईके सष्टाङ्ग दण्डोत कैलकै। पहिने आपन पुत्रके देखे चाहै छेले। उ आपन मन मस्तिष्कमे आपन पुत्रके कल्पना चित्र तैयार क्या नेने छेलै। आव उ कालुदाईके रूपमे आपन पुत्रके कल्पना चित्रके उद्धरण क्या रहल छेलै। उ आनन्द विभोर भ्यागेलै। उ कालुदाईके आदर कैलकै आ तुरन्ते बुद्ध आ वोकर शिष्यसबके आगमन तलिक वोकरा निवासकरैले निग्रोधा करजानमे स्थानके बन्दोबस्त क्या देलकै।

घुमैत फिरैत बुद्ध आपन शिष्यके साथमे कपिलबस्तु पुगलै त रजा शुद्धोधन आपन शाक्य सवके एकटा बडका समूहके साथमे वोकर स्वागत सत्तकार कैलकै। ऐ असवरमे शुद्धोधन आपन मया मोहके नै थमहे सकलकै उ खूसीसे आपन पुत्र लग ज्याके पुत्रके पैर पकैरके सष्टाङ्ग दण्डोत कैलकै। जाव शाक्यसव देखलकै जे वोकर रजा खुद आपन पुत्रके पैर पकैडके आशिवाद लेलकै त शक्योसव घमण्ड त्यागक्याके बुद्धके सत्कार देलकै, बुद्धके निवास करैके वास्ते रजा शुद्धोधन सवबन्दो बस्त त कैलकै लेकिन उत्सुकता आ खुसीमे भोजनके कोनो प्रकारके इन्त जाम करैले निठाह भ्याके बिसैर गेलै आ घर दिसर चैल जाइत रहलै। जाव उ हवेलीमे पुगलै त एकदमसे उत्सुक भेलही पुतौह आपन ससुरके पूछे लागलै।

"सिद्धार्थ केहेन छै। कि, उ बिल्कुल बदैलगेलछै ?"

"आव, सिद्धार्थ कहा रहलै जे हरदम आपन आ आपन चारूकताके बाता-बरणसे खिन्न आ विचारमगन रहै छेलै। आव उ वोहेन हडबडिया आ असहनीय नै रहलै। उ त शान्त निर्मग्न आ स्थिर भ्या गेलछै। अत्यधिक तपश्चार्यके निरन्तर

अभ्यास कैलासे जेनङ्ग वोकरा वडका भारी सिद्धि प्राप्त भ्यागेलछै तै से वोकर मुखमण्डलसे हरदम एक प्रकारके दिव्य आभा छिटेकैत रहैछै ।"

यशोधरा बुद्धके दर्शन करैले तयार नै छेलै । करिब करिब दस बरिससे भेटनै भेलहा आपन घरवलासे भेट करैले वोकरा वडा डर भ्या रहलछेलै । वोकरसे भेट भेलापर कोन प्रकरके मनःस्थिति हैतै वा कोन प्रकारके सवाल जवाव भ्यासकतै से सव बिचार करै त यशोधरा और वेशी उदास भ्या जाई । जाव उ आपन शिष्यसव संगे रहतै तखनी भेट करनाईऔर बडका कठिन वाता सवके बिचार क्याके उ वडा असमंजसके अनुभवकरै । उ एकटा भयानक अनुभव हैके कल्पना करै । हवैलीमे एतै तखैनिए हम भेट क्या सकैचिऐ अन्यथा नै भ्या सकैछै से बिचार उ कैलकै ।

वोई दिन कपिलबस्तु वडा आचरजके चिज देखलकै । जखनी बुद्ध आपन चेलासवके साथे कपिलबस्तुमे भिक्षाटनके वास्ते आपन शीर निचा कैरके द्वार द्वारे गेलै । यशोधरा तै समयमै आपन बिचारमे दोमहलामें बैठलरहै त उ बुद्ध आ वोकर शिष्य सवके भिक्षाटन करैतदेखलकै । उ दौडके शुद्धोधनके लगगेलै आ जे देखने रहै तकर वर्णका क्याके कहलकै । शुद्धोधन बडा उत्तेजित भ्यागेलै । बडा दुखित भ्या गेलै जे वोकराऔरके निग्रोधा करजानमे निवास करैके स्थान त बन्या देलकै मगर भोजनके कोनो प्रबन्ध नै कैलकै । उ हडबड्याल गाम दिसरगेलै । बुद्धके भेट कैलकै आ कहलकै ।

"गुरू महराज, थारूसव भोजनके वास्ते कहियो भीख माङ्गैले बहार नै भेलछै । भिखमङ्गनाइसे मोरनाईबढिया बुझहैछे । तो थारूसवके वंशके नाम हसवै चिही ।"

"हे राजन, उ बंशानुगत व्यवहार अपनेके हैतै, हमर नै चिऐ । हमत वोई कुलके बहौतपहिने त्याग क्या देलिऐ । हमरा वोईसवसे कुछो लेना देना नै आइछ । आव वोई बंशके कोनोटा घमण्ड हमरा नै रैह गेलछै । वोई प्रकारके घमण्ड नै भेलासे हम ककरौ जग हसाईनै करै चिऐ । हमर जे कुल चिऐ तैमे कोनो प्रकारके घमण्ड नै छै । बाबहन, क्षत्री, बैश्य आ शुद्र ई जातीय भेद त बाबहनसव आपनै बनैने छै । हम बाबहनके गुलाम नै चिऐ । हम बुद्ध चिऐ । सव लदीसव जेनङ्ग गङ्गा, यमुना आ बाग्मती महा समुन्द्रमे पुगलापर आपन आपन अस्तित्त्वके त्याग क्या दैछै तैहनङ हमर ई सन्त मडलीने एलासे आपन कुल आ जाइतिके भेद मेट्या देछै ।"

रजा शुद्धोधन आपन तर्कके कमजोरीके महसूस कैलकै आ बुद्ध एवं वोकर शिष्यसवके भिक्षाटन करैसे कोनो प्रकारके दोसर अवरोध नै खडा कैलकै । बरूस परसुका दिन हवैलीमे भोजन करैके वास्ते निमन्त्तण देलकै आ चैलगेलै ।

निमन्त्रणके दिन जाव बुद्ध भोजनके वास्ते हवैली पुगलै त वोकरा स्वागत करैके वास्ते शुद्धोधन, गौतमी, नन्द एवं राहुल सवगोडे तैयार छेलै। राहुल वडा असमञ्जसमे छेलै। उ आपन महताइरसे कैएक वेर सुनने रहै जे वोकर बाबु पारिवारिक जिवनके परित्याग क्याके फकिरी जिवन व्यतित करे लागल छेलै। बुद्धके गेरूवा पैंहरनमे देखके उ आपनैमे बिचार करे लागलै।

"हमर बाबु कथीले ऐ प्रकारके जिवन अपनैलकै वोकरा सवप्रकारके आनन्द भोगके बस्तुउपलब्ध छेलै? कथिले उ गेरूवा कपडा पिह्नके हाथमे एकटा भिक्षापात्र ल्याके भोजनके वास्ते भिक्षाटन करैत रहैछै?"

यद्यपिकी राहुल आव वोई गव लैके समयमे वैदिकलयबद्ध मन्त्रोचारणके अर्थ नै बुझ्झके आपन पिता शुद्धोधनके वोकर अर्थके वास्ते पूछलहा उमेरमे पुइग गेलछेलै लेकिन वोई प्रकारके बुद्धिके परिपक्कता आ स्वतन्त्र विचारधराके प्राप्ति नै करेसकनेछेलै। ऐ सम्पूर्ण समयमे वोकर वडवाप वोकर पिताके कर्तव्य निमह्याके पालन पोषण कैनेरहै। आव वोकरा पिता भेटलरहै, लेकिन उ वोकर लग जाइले अपनाके असक्षम बुझ्झके पश्चातप करै। उ विचार करै जे दुनु बापूतके विचमे वडा दुरकेरस्ताछै। वोकर पिता वोकर लग आइवके वोकरा दुलार नै कैलकै; वोहो आपन पिता लग ज्याके सत्कार नै करे सकलकै। वोकर वास्ते ऐ प्रकारके चिन्ता आ दुःख भेनाई स्वभाविक रहै। अगर वोकर पिता वोकरे लग रहतिऐ त ऐ प्रकारके सन्ताप नै हेतिऐ, वोकर वास्ते जिन्नगी बडा सुखमय हेतिऐ।

बुद्ध एवं वोकर शिष्यसबके वास्ते तैयार भेलहा स्थान ग्रहण केलाके बादमे बुद्ध देखलकै जे ऐ अवसरमे यशोधरा उपस्थित नै भेल रहै। उ राहुलदिसर वडा करूणमय दृष्टिसे ताकलकै। राहुल जे एखैन तलिक आपन पिता दिसर टकटकी लग्याके देख रहल छेलै चट दवर आपन नजैरके अन्ते घुम्या लेलकै, आ धरती दिसर ताके लागलै।

बुद्धके वास्ते आव जरूरी भ्या गेलछेलै जे जम्मा भेलहा समूहके आपन सिद्धार्थ जिवन एवं बुद्ध जिवनके विषयमे कोनो दुइटा उपदेश बचनसे सम्बोधन करतिऐ। उ आपन पुत्र राहुलके मनमे उठैत असमंजसताके प्रश्नके बुझहलकै। तै भोजनोपरान्त उ अस्तित्त्वके तीनटा भागके वर्णका केलकै आ वोकर पिता शुद्धोधन जे शाक्य मण्डलीके नेतृत्त्व क्या रहलछेलै पूछलकै।

"हे राजन, अपनेजे ऐ धन सम्पत्तिके एकटा रजाके हैसियतसे भोग क्या रहल चिऐ से स्थाई वा अस्थायी चिऐ?"

रजा शुद्धोधन एक क्षण बिचार केलकै तकर बाद जवाव देलकै । "अस्थाई
चिऐ, गुरू महराज ।"

"ऐ प्रकारके अस्थाई एवं परिबर्तनशील दुनियामे मनुष्य स्थाई सुख एवं सन्तुष्टिके खोजने फिरैछै । आपने की बिचार केलजाइछै, राजन, जे मनुष्य वोई प्रकारके स्थाई सुख एवं संतुष्टि प्राप्त क्यासकैए ?"

रजा असमञ्जसमे पैरगेलै आ उन्टले बुद्धके प्रशन क्या देलकै । "लेकिन गुरुवर, की, अपने घर परिवार त्याग क्याके सुख आनन्दके जिवनके आहुति दयाके, सुख शान्ति आ अमरत्वके प्राप्तीकरैके उद्धेश्य नै कैने छेलिऐ ? की अपने एखैन तलिक वोईप्रकारके सुख एवं अमरत्व प्राप्त करैमे सफलनै भेलिचिऐ ?"

"हम स्थाई सुख एवं अमरत्व प्राप्त करैएके खातिर घर त्याग केलिऐ। लेकिन जै प्रकारके सुख आ अमरत्व हम प्राप्त कैलिऐ से उनैचिऐ जैके वास्ते हम गृहत्याग कैने छेलिऐ ।"

शुद्धोधन औरबेसी असमञ्जसमे पैरगेलै । उ पूछलकै ।
"उ कथी चिऐ जे अपने प्राप्त करैमे सफल भेलिऐ ।"

हम मनुष्यके जिवन पद्धतिके प्रकृतिके पता लागैलिऐ । हम मनुष्यके जिवनमे अवश्यम्भावी दुःखके कारणके पता लगैलिऐ आ वोई दुःखके जञ्जालसे वहारहैके बाटके पता लगैलिऐ । हम जे अमरत्व प्राप्त कैलिऐ से मृत्युके परेनै छै, बल्कि फेरसे ऐ दुनिया जञ्जालमे जनम नै लैके कारणीके खतम क्या देलिऐ ।"

"गुरू महराज, सम्पूर्ण शाक्यसवके भलाईके वास्ते सम्पूर्ण थारूमे करूणा क्याके अपनेके सफलताके वर्णका क्याके हमरा सवके दृष्टी देल ज्या ।" रजा शुद्धोधन आपन सन्तपुत्रके पूछलकै ।

"हे राजन, यै दुनियामे पशु सम्राज्य छै जे मानवसे कम बिकसित रहैछै। वोकरासवके व्यक्तित्त्व वडा स्थुल एवं चलायमान नै रहैछै । तै जाव उ सव ऐ दुनियाके परिस्थितिसे मोकैवला करैछै त तुरून्त अगुत्याके उछृङ्खलता प्रदर्शन क्या दैछे। लेकिन तकर विपरित मानवसव बेसी बुधियार आ सोच बिचार क्याके मात्र आपन परिस्थितीसे मोकैबला करैमे सक्षमहैछै । उ ऐ सम्बन्धमे निर्णय करैछै आ तदनुरूपके निर्णय अनुसार आपन स्थिति बनवे चाहै छै । ऐ सृष्टिके दुनियामे आपन जिनगीके सपारे चाहैछै । ऐ प्रकारके निर्णयसे उ आपन प्रकारके दुनिया बसवे चाहैछै । ई दुनिया जे अस्थाई एवं परिवर्तन शील छै तैमे उ आपन प्रकारके बाताबरण बनवे चाहैछै । उ भविष्यके सपना देखैत रहैछै । उ सुख आ

शान्ति के खोजिमे आपन दुःख विसरलरहैछैं । उ सदा सर्वदा जिवित रहैके आस कैने रहैछैं जैसेकि उ कहियो नै मोरतै । आपन भविष्य सपारै ले उ बहौत धन सम्पैत जमा करैछैं । जाव उ धन आर्जन करैछैं त वोकरा वोई धनके रक्षा करैके वास्ते हरदम चिन्ता करे परैछैं । उ डाकू, चोरसवसे धनके रक्षा करे चाहैछैं । उ आपन एवं आपन धनके रक्षा हेतु वडा वडा घर आ गढके निर्माण करैछैं । वोई घरके भितरमे उ आपन सुख सुविधाके सवटा भोग्य वस्तु जम्मा करैछैं आ तकर भोग सेहो करैछैं । आपन सुख सुविधाके वास्ते चभचा, पोखैर, फुलवाईर आदि सवके निर्माण करैछैं । उ हरमके निर्माण करैछैं जैमे नाच-गान करैवला गबैया,बेश्या आदिके नियुक्त करैछैं । जाव उ बुढ हैछैं त असलका डाक्टर आ बैद्यके खोजने फिरैछैं जे हमर औरदा बढहल रहे हम नै मोरी ।"

"हे राजन, ई आपन प्रकारके दुनिया चिऐ, जेकरा लोक आपन सुख सुविधा वास्ते आपन व्यवहारिक गतिविधिसे तैयार करैछैं । यै प्रकारसे मनुष्य आपन क्षमता अनुसार आपनै किसिमके संसारके निर्माण करैछैं । समाजमे रहलासे एकटा शुद्र जे समाजिक तौर तरिकामे सवसे निचला स्थितिके मनुष्यके गणना मे रहैछैं कहियो कहियो आपन कर्तव्यसे सवसे वडका उच्चतम ओहदाके प्राप्त करैछैं जेनङ्ग महासुदेशन जे आपनै प्रकारके दुनियाके निर्माण कैलकै आ ईतिहास प्रसिद्ध भेलै ।"

"आपने की बिचार केल जाइछैं, हे राजन, आपन क्रीया कलापसे जम्मा केलहा चिज सवजे छै स्थाई चिऐ वा अस्थाई "

"उ सवटा अस्थाई चिऐ, गुरू महराज ।"

"की, उसव चिज जे अस्थाई चिई से सव बस्तु सन्तुष्टिदायक हैछै वा असन्तुष्टि दायक ?"

"ई सवटा, जेव्यक्ति स्थाईके खोजीमेछै तकर वास्ते असन्तुष्टि दायकहैछैं ।"

की ई उचित भ्या सकै ऐ जे जेचिज अस्थाई आ असन्तुष्टिदायक छै, तैमे कोनो सार हेतै; से कोनो स्थाई अत्माके प्रतिनिधित्व करतै; जेकरा स्थाई कहिके अपनैते?

"जी, नै, गुरू महराज ।"

"की ,ऐ शरीरके प्रति, ऐ परिवारके प्रति, ये देशके प्रति मया क्या सकैए ?"

"नै, गुरू महराज ।"

"ठीक तहिनङ्ग, हे राजन बिना इच्छाके, बिना खगुभ्याके आ आपन सवटा व्यवहारिक क्रीयकलापके शान्त क्याके, सव प्रकारके राग द्वेष एवं शङ्काके निर्मूल

क्याके हम ऐ दुनियाके दुःख एवं असन्तुष्टिके परित्याग क्या देलिऐ। हम वोई कमलके फूल भ्या गेलिऐ जे थाल पाईनमे जनम लैछै लेकिन वोई थाल पाईनसे उपर भ्याके अछुता रहैछै तहिनङ्ग हम ऐ दुनियापे जनम लेलिऐ लेकिन ऐ दुनियासे उपर उइठ गेलिऐ आ ऐसे अछुता रहल चिऐ। वोहै कमलके फूल सरिखा हम सफा चिऐ, सुन्दर चिऐ आ एक दिन फुलेलहा कमल जेनङ्ग झर जाइछै हमहु झर जेवै; हमरौ जिनगी खतम भ्या जेतै, हमहु मृत्युके प्राप्त करवै हमहु चैल जेवै। लेकिन जे पुरूष ज्ञानी हेतै, जे तिक्षण बुद्धिके हेतै, तकर वास्ते हम वडका असाके बिन्दु हेवै; प्राकृतिक सौंदर्याके चाहैवाला व्यक्तिसव कमलके वोई फूलके देखके सन्तुष्टि प्राप्त करैछै तहिनङ्ग हमहू सन्तुष्टि देवै आ वोकर दुःख दरद नास कन्–याके सिद्धि प्राप्त करैमे सहायक हेवै।

वोई उपदेशसे रजा शुद्धोधनके सवटा घमण्ड चूर भ्यागेलै आ भविष्यमे सन्त हैके वास्ते आपन मनै मन निश्चित कैलकै आ बुद्धके अनन्त भक्त भ्या गेलै।

जखनी ई सवटा क्रीयाकलाप भ्या रहल छेलै त यशोधरा आपन कोठलीमे भितरसे बिलैया लग्याके बैठल छेलै। वोकरा लोक समाजके समाने आपन पूर्व पतिके दर्शन करैके साहस नै छेलै। बुद्ध आपन आसनसे उठलै आ आपन पिता जे वोकर नजदिकैमे बैठल छेलै लगमे गेलै। बुद्ध ई बुझ्झके जे यशोधराके ऐ समाजमे हमरसे भेट करैले साहस नै भ्या रहलछै वोकरै कोठलीमेज्याके दर्शन दैले आपन पिताके अनुरोध कैलकै। आपन सवटा शिष्य सवके वोहैठाम छोडके आपन पिता माता आ पुत्र संगे बुद्ध यशोधराके कोठलीमे गेलै। शुद्धोधन अगा गेलै आ यशोधराके केवाड ढक ढकैलकै। ऐके क्षणमे केवाड खूगलै त बुद्ध जे अनकर मनके बातके वास्तवमे जानै वाला छेलै से बुझ्झ गेलै जे यशोधराके मस्तिष्कमे कथी भ्यारहल छेलै।

केवाड खोइलके यशोधरा एक दिसर खडा भ्या गेलै। बुद्ध कोठलीमे प्रवेश कैलकै आ एकटा स्थानमे बैठलै। यशोधराके लागलै जे कोठली वहौत बरिससे अह्लार आ धुइह्लमे डुगल रहै छेलै प्रकाशित भ्यागेभलै। उ देखलकै जे कोठलीके प्रत्येक वस्तु जेनङ्ग कुर्सि, सोफा, आदि सव जिवान भ्या गेलै। यै वडका नमहर समयमे वोकर वास्ते ई सवटा बस्तुमे कोनो प्रकारके आकर्षण नै रैहगेलछेलै। वोकर संगे व्यतित केलहा थोर बेहेक बरिसके जिवनके प्रत्येक सम्झना यशोधराके मन मस्तिष्कमे द्रुत गतिसे चलायमान सपना नहाइत आइखके अगाडी आवे लागलै। संगित प्रतियोगिताके पहिनका दिनके भेट, सिद्धार्थके वोकर घरमे जेनाई, तरूणी

रोहणीके हसी मजाक, विवाहके धुम धाम, सिद्धार्थके वोकर प्रतिके स्नेह प्रम एव देह भारी भेलहा समयके वात्सल्य पूर्ण व्यवहार, ई सवटा कृत कार्य यशोधराके मन परलै जे वोकरा वडा उतेजना प्रदान कैलकै ता धम्मसिनखैसके बुद्धके चरण पकैडके जोर जोरसे काने लागलै । उ तावे तलिक कानैत रहलै जावे तलिक की वोकर सवटा लोरनै सुखैलै आ वोकर मन हलुकनै भेलै ।

बुद्ध ऐ समयमे बिल्कुल शान्त आ निर्मग्न रहलै जे यशोधरा आपन मनके वह वहार क्या लेतै त बात चित करैमे वढिया हेतै । यशोधरा जाव कानैत कानैत आपनमनकेस्थिर कैलकै त मुडी उठयाके उपर माथे ताकलकै । उ देखलकै जे बुद्धके मुख मण्डल करूणामय भ्या गेल छेलै । ई देखके उ आपनैके दोषी बुझहे लागलै । एक प्रकारके डरसे वोकर पीठके रिढकापे लागलै । उ झुकलै, वोकर चरण स्पर्स कैलकै आ नमस्कार क्याके कर्नाहक दुरौग गैलै ।

शुद्धोधन, गौतमी आ राहुल जे ऐ मनोभवनात्मक गतिबिधिके देखलकै जे एकदम मुरूत नहाइत खडा भेलछेलै ।

वोकरसवके आइखसे वहलहा लोर जे गरदन दने धरतीमे खसै छेलै तहैले जिवान लागैछेलै आ नै त पूर्ण रूपसे मुरूत भ्यागेलछेलै ।

सवसे पहिने शुद्धोधन कननसुख अवाजसे मौनताके भङ्ग क्याके वाजलै ।

"गुरू महराज, एतहैक वरिससे जाव आपने वहार छेलिऐ यशोधरा एकटा फकिरके जिवन व्यतित कैलक । आपन सवप्रकारके ज्ञातव्य सुखके परित्याग क्याके हवैलीके भितरै मे रहल । कहियो कहियो मात्र वहार जाईछ्याल । वोकर वास्ते राहुलके जवान भेनाइएटा सवसे वडका सुख छेलै ।"

"ज्ञातव्य सुख, हे राजन, वडी कालतक नै रहैछै । ऐ सुखसे भेलहा सन्तुष्टि त बहौत जल्दी असन्तुष्टिमे वँदैल जाइछै । असन्तुष्टि त इच्छा आ चहनाके अवश्यम्भावी प्रतिफल छिऐ । पारिवारिक जिवन व्यतित क्याके व्यक्तिसव ऐ दुनियाके रङ्ग रभस से दुर रैहके संतोष करैवला व्यक्ति ज्ञानी हैछै ।" आपन पूर्व पत्नीके देखके बुद्ध कहलकै ।

"यशोधरा, तो त हमरा गृह त्याग करैले वडका साहस आ सचरित्रताके वडका प्रमाण देलही । तहैं साहस आ वलके फेरसे जोर लगा आ आपन जिवनके सुखि करैके रस्ता सफाकर आ भूत, भविष्य के कल्पनाके चट्टक त्याग कर । इ हमर आपन उपदेश छिऔं ।"

यहै प्रकारके एक दुईटा शब्द कहके बुद्ध आपन स्थानसे उठलै । शुद्धोदन, गौतमी आ राहुल पहिने आगा गेलै । यशोधरा बुद्धके सत्कार कैलकै त बुद्ध आपन शिष्यसब लग हवेलीके प्रांगणमे गेलै ।

बुद्धके धरम भाई नन्द जे बुद्धके भिक्षापात्र हाथमे नेने खडा छेलै वोकरसे भिक्षापात्र नै ल्याके निग्रोधा करजान दिसर बिदा भ्या गेलै । नन्दके भिक्षा पात्र दैकै साहसनै भेलै त संगै संग करजान तक गेलै । जाव नन्द बुद्धके पछापछा ज्या रहल छेलै त वोकर हेवै वाली कनिया वोकर कानमे कहलकै ।

"नन्द जल्दी आबिहे ।"

नन्द आपन कनियाके डरके नै बुझहे सकलकै

नन्द निग्रोधा करजानमे पुगैसे पहिने आपन कनियाके भेलहा डरके नै बुझहे सकलकै । वोते पुगलापर भिक्षा पात्र बुद्धके सौंपैके उद्धेश्यसे वोकर लग गेलै ।

बुद्ध विचारकरे लागलै ।

नन्द एकटा कमजोर चरित्रके पुरूष चिऐ । हम वोकरा बच्चैसे देखने चिऐ । बच्चैसे वोकरा वडा दुलार भेटलछै; इन्द्रियजन्य सुखसे एकरा वड माया मोह भ्या गेलछै आ राज परिवारमे काम करै वलासवसे ई विल्कुल भिन्न भेलै । आपनैमे मगन रहै वाला व्यक्ति नन्द अगर हमर पिताके राज्यके उत-राधिकारी भ्याके शाक्य राज्यके सञ्चालनके भार लेतै त राज्यकेअनेक प्रकार के दुःख आ झण्झटके समना करे परतै । भ्या सकैए जे वोकरा हम घर त्याग करैके वहाना देखैवै ।

"नन्द!"उ आपन घरम भाईके सम्वोधनकैलकै । "अच्छा तो की इ नै विचार करै चिही जे राजपरिवारसे कोनो एकटा व्यक्ति ऐ सन्त समाजमे भागीदार हेवक चाही ?"

नन्द मुडी निच्या कैने धरती दिसर ताकैत रहलै । वोकर बडका भाई कोनो प्रकारके कहा सुनी नै क्याके ई मन्तव्य प्रकट कैने रहै । समर्थन क्या देलकै ।

ये विषयके कोनोफलाफलके नै सोचे लागलै । आपन भाईके कृपापात्र हेंके वास्ते मात्र कोनो प्रकारके स्व इच्छा बेगर नन्द आपन मुडी हिल्याके वडका भाईके वात मानैले तैयार भ्यागेलै ।

२० – वीसम

नन्दके योगी भ्याकेसन्त मण्डलीमे सामिल भेनाई हवैलीमे खलबली मच्या देलकै । यद्यपि शुद्धोधनके ई कारण बुझहैमे वडा कठिन भेलैजे कोन कारणसे बुद्ध

नन्दके डोडा कट्या देलकै आकोन कारणसे नन्द डोडा कटबैले स्वीकार कैलकै। उ चुपचाप शान्त रहलै आ बुद्धलग ज्याके ऐ सम्बन्धमे कोनो प्रकारके प्रश्न नै करे चाहलकै। फेरो नन्द एकटा वयस्क मरद भ्या गेलछेलै। शुद्धोधन वोकरमे कोनो प्रकारसे कोनो बातमे आपन विचार प्रकट क्याके अवरोध नै खडा करे चाहै, किएकत वोकर जेठका बेटा बुद्धके विषयमे यहै प्रकार केलाके फलाफल भेट रहलछेलै जे उ बबाजी भ्या गेलेछेलै।

एकटा व्यक्ति जे नन्दके फकिरीसे बेसी सोच विचारमे परल छेलै से राहुल छेलै। उ आपन महताइर लगगेलै आ पूछेलागेलै।

"मैया, कनकी बाबुके कथी भेलै जे हमर बाबु संगै बबाजी भ्यागेलै"।

"तोहर कनकी बाबु भैरसक आपन भाईके सम्पैत्त लैंके ईच्छासे डोडा कटैल कौ। भैरसक एकदिन तुहु वोई प्रकारके अंश बण्डा खोजविही"। जे सुख आ शान्ति सिद्धार्थ आपन वास्ते प्राप्त कैलकै आखिरमे राज परिवारके सवव्यक्ति वोई सर्वसके अंश बण्डा क्याके भोग करैके विचारसे यशोधरा जवाव देलकै।

राहुल आपन महताइरके वर्णका केलहा बातके खौ विचार कैलकै। उ विचार करे लागलै।

"हमर बाबु राजकीय सम्मानके सबप्रकारके धन आ सुख भोगके परित्याग क्याके ऐसे कोनो बढिया जिवनके खोजीमे गेलै। आब कनकी बाबुसेहो वोहिनङ्ग कैलकै। हमरौ त वोई सम्पैतमे बण्डा लैंके हक आइछ।"

उ आपन बाबुके फेरसे देखैंके विचार प्रकट कैलकै। यद्यपि नन्दके फकिर भेनाई शुद्धोधनके एकोरतिने पसिनछेलै तै यो उ ई नै विचार करे सकलकै जे बचकुन राहुल सेहो वोहै पातिमे आपन पिता संगै बैठे जाइछै। बबाजी हैके सम्बन्धमे राहुल एखनी वड बच्चा छेलै। उ कल्पना कैलकै जे राहुल आपन बाबुके फैरसे देखैंके ईच्छा प्राकृतिक चिऐ जे सबपुत्र के रहैछै। तै उ मात्र एकटा अङ्गरक्षकके साथमे पठ्याके राहुलके निग्रोधा करजानमे ज्याके आपन पिताके दर्शन करैके स्वीकृति द्यादेलकै। हवेलीके ऐंकेटा नोकरके संगे जाव राहुल निग्रोधा करजानमे पुगलै त नन्द लगायत वहौत सन्तसब आर्चाजित भेलै। सधारणतया उ आपन महताइर यशोधरा आनै त वड बाप शुद्धोधनके संगे आवैक चाहै छेलै। जाव राहुल बुद्धके नजदिक पहुचलै त खाली हमरा देखैंके वास्ते राहुल एल हेतै ऐसे बेशी कोनो प्रकारके विचार बुद्धके मनमे नै एलै आ कोनो प्रकारके माँग राखैके विचार सेहो नै कैंने छेलै जे की राहुल अनुरोध कैलकै।

बुद्धके नजदिकमे पहुचके राहुल कहलकै :

"बाबु, कनकी बाबु तोहर सम्पैतके भागीदार भलौं। हमरौ वोई सम्पैत मे हिस्सा लैके अधिकार छँ। हम बोह्या हिस्सा लैके वास्ते तोहर लग एलिऔ।

बुद्ध विहुसे लागलै। उ ई कहैके राहुलके विमुखनै करे चाहै।

"पुत्र, हमर सनके बबाजीके कोनो सम्पैत नै रहैछे जे पितासे पुत्रमे वाटलजेतै।" उ कनहिक काल विचारकरे लागलै।

नन्दके ऐ सन्त मण्डलीमे प्रवेश कैलाके बाद राहुल शाक्य राज्यके उत्तराधिकारी हैवैंके सवटा अधिकार प्राप्त क्या लेलकै। लेकिन उ हमरसे कोन प्रकारके सम्पैत बण्डा लेवे चाहै छै। भैरसक वोकरा थाहछै जे वोकरा दैके वास्ते हमरा कोनो प्रकारके पार्थिव सम्पैत नै छै। तै यो मनुष्यके चोला ल्याके एलहा राहुल सवसे बडका सम्पैत आर्जन करैले भैरसक सफल भ्या जेतै आ वोकरै सुख कहैछै। तैं हेतु वोकरा विमुख क्या देलासे हम बडका गल्ती क्या सकै चिऐ।

यै प्रकारसे अगा पछा करैत उ सारिपुत्रके चाल कैलकै आ राहुलके प्रवज्या करैके आदेश देलकै। सारिपुत्र राहुलके ल्यागेलै आ कपाड खौरके गेरूवा पैहरन पिनह्या देलकै।

डरसे भयभित भेलहा राज अङ्गरक्षक कोनो प्रकारके अवरोधनै करे सकलकै। उदौडल हवैली गेलै आ सवटा बात शुद्धोधनके कहलकै। शुद्धोधन सुनलकै त वोकरा विश्वास नै भेलै। सवसे पहिने जेठका सिद्धार्थ ताव छोटका नन्द आ आव राहुल सवटा बबाजीके अखडहा पकैड लेलकै। यद्यपि बुद्धके पहैनका उपदेश वचनके श्रवण क्याके शुद्धोधन आपन सवटा कोह मोह दुर क्या देने छेलै आ बुद्धके सिद्धि प्राप्त देखके खौ खुसी भेल छेलै परन्तु वोकर खुसी आव रसे रसे दुःखमे बदैल रहल छेलै।

वोकर पाछे शाक्य राज्यके राज्याधिकारी हैके वास्ते वोकर बंशमे कोईने रहलै। कानैत खिजैत उ बुद्ध लग दौडलगेलै आ विन्ति करेलागलै जे महताइर बापके आज्ञा विना कोनो बच्चाके प्रवज्या नै करलज्या। बुद्ध स्वीकार क्या लेलकै। लेकिन एकर मलतव इ नै जे राहुलके सम्बन्धमे उ आपन निर्णयके बैदैल देतै किएकत उ वोकर पिता छेलै।

नन्द आ राहुल बाबजी भ्या गेलै से बात रजधानी भैर तुरून्त विस्तार भ्याके सब सुनलकै आ शुद्धोधन ऐसे बडा दुःखी छैसेहो बुझहलकै। वोकरा सवके गौरवसे आनन्दित भेलहा मन रसे रसे भयभितहेवे लागले जे आब कोन परिवारके कनियाके आपन घरबलासे बीछुडन भ्या जेतै अथवा कोन महताइर-बाप आपन पुत्रके गुम्या

देतँ। फकिरी शाक्यसवके वास्ते कोनो असलका जिवनके द्योतकके रूपपे प्रख्यात नै छेलँ। ऐ सब बात विचारसे बुद्ध बुझ्झ लेलकै जे आव कपिलवस्तुमे वेसी दिन निवास करनाई युक्तिसंगत नै हेतँ।

यशोधराके पिता दण्डपानी सुनलकै जे बुद्ध कपिलवस्तुसे विदा हैके तैयारी क्या रहलछँ। सिद्धार्थ वोकर पुत्रीके त्याग क्याके फकिरी जिवनमे प्रवेश कैलकै त दण्डपानी बडा क्रोधित भेलरहे। लेकिन वोकर पुत्री एवं दोहित्रके प्रति शुद्धोधनके बात व्यवहारसे उ खुसी भ्या गेलछेलँ। उदार भवनाके दण्डपानीके आपन जमाई बुद्धके विचार आव बडा असल लागँ छेलँ। तँ उ निग्रोधा करजानमे गेलँ आ बुद्धके दर्शन, अभ्यर्थना सत्कारके बाद पूछलकै।

"भगवान, हम सुनलिऐ जे सन्त सव महात्माजीके वास्ते पहिरन तैयार क्या रहलछँ आ महात्माजीके वडा जल्दी कपिलवस्तुसे यत्रा हैके तैयारी भ्या रहलछँ। भगवान, हमरा सवके वास्ते सवसे असलका बाट कोन हेतँ जे लोकसव आपन परिवारके त्यागनँ क्याके भक्ति करे चाहे छँ।"

शाक्यसवमे बुद्धके विचार प्रति मिश्रित भवना भेल रहे। काशी आ मगहमे बुद्धके उपदेश बड सफल भेल रहे तँसे उ सव बडा आनन्दित एवं गौरवान्वित भेलरहे। लेकिन जाव उसव स्वयं बुद्धसे मुखा मुख भेलँ त ततहेक असल नै लागलँ। आव वोकरा सवके मनोभवनामे बडका परिवर्तन भ्या गेल छेलँ। वास्तवमे उ सव बुद्धके उपदेशके नँ चाहे लागल छेलँ यद्यपि कि वोकर अन्तेका सफलताके उ सव खौ मानँ छेलँ। ऐ समयमे दण्डपानी के प्रश्न से वोकरा यँ सभ सामयिक विषयमे एक दुई शब्द बाजैके बडा बढिया मौका देलकै। उ दण्डपानीके सम्बोधित क्याके कहे लागलँ।

"एकटा भगत, दण्डपानी, उ चिऐ जेकरा विश्वासछँ, उ नै चिऐ जेकरा विश्वास नै छँ। भगत, जे विश्वास क्याके काममे लागँछे, आ उ भगत नै चिऐ जे आलसी छँ। एकटा भगत मन मस्तिष्कके सन्तुलित क्याके काममे लागँछँ, उ भगत नै चिऐ जे असमन्जसमे रहैछँ। एकटा भगत उचिऐ जे ध्यान लग्यासके, उ नै चिऐ जे आपन मनके चारू दिसर दौडवैत रहे। एकटा भगत उ चिऐ जे ज्ञानी चिऐ आ भगत उ नै चिऐ जे अज्ञानी छँ। तो की विचार करँ चिही दण्डपानी जे व्यक्ति विश्वास, कार्य संलग्नता, सन्तुलित मन मस्तिष्क, ध्यानस्त आ ज्ञानके पकडने छँ से अन्नहा धुन कोनो वातमे पैरसकै छँ?"

नै, भगवान जवाव देलकै दण्डपानी।

दण्डपानी, विश्वास, कार्य संलग्नता, सन्तुलित मन मस्तिष्क, ध्यानस्त आ ज्ञान ईपाँचटा जीवनके खमहा चिऐजैसे कोनो व्यक्तिआपनजिनगी रूपी घरके सफलता

ग्रा खुसी पूर्वक निर्माण क्या सकतै। यै पाँचोके विना कोनो व्यक्ति खुशहाली प्राप्त नै क्या सकैछै। एकर बेगर व्यक्तिके जीवन दुःखपूर्ण कण्टकाकिर्ण ग्रा ग्रसफल एवं सवसे वेसी दरिद्र रहैछै।"

"भगवान ! एकटा ग्रज्ञान व्यक्ति कोन प्रकारसे विश्वास, कार्य संलग्नता, सन्तुलित मन मस्तिष्क, ध्यानस्त ग्रा ज्ञानके प्राप्त क्या सकैऐ।" दण्डपानी प्रश्न कैलकै।

"हम बुझहै चिऐ दण्डपानी जे यैकामके प्रारम्भकरै वला एकटा व्यक्ति एकेबेर एकाएक चट्ट सितके ऐ सम्बन्धमे सन्तुष्टिनै प्राप्त क्या सकैए। ई त रसे रसेके क्रियाकलाप, रस रसके बाट ग्रपन्याके रस रसके ग्रभ्याससे मात्र ए विषयमे सन्तुष्टि प्राप्त क्यासकैछै। ठिक ज्ञान प्राप्तिके दुईटा सिद्धान्त के लक्ष्यमे निर्भरछै, पहिनका बाहरी दुनियाके ज्ञान ग्रा दोसर वोई प्राप्त केलहा ज्ञानके ग्रधारमे संसारिक वस्तुके उत्थान पतनसे ग्रापन सोच विचार।"

'भगवान ! हम केकर वात विचार सुनवै ग्रा तकरा कोन प्रकारसे सोच विचार करवै ?" दण्डपानी पूछलकै।

"सवसे पहिने, दण्डपानी, एकटा ज्ञान प्राप्त सिद्धके वचन सुनैक चाही। वोकर कहलहा वातके विभिन्न दृष्टिकोणसे ऐ प्रकार विचार करक चाही। की ई कहैवला व्यक्ति पूर्ण सिद्ध, ग्रसल ज्ञान ग्रा व्यवहार दुनुटासे भरपूरछै? सचरित्र ग्रा दोसरके प्रभावित क्या सकैछै ? लेकिल प्रभावित करैलै कोनो प्रकारके ट्रिक नै लग्याके ग्रथवा मनोवैज्ञानिक तन्तर मन्तरके शक्तिके प्रयोग नै क्याके ग्रथवा दुनिया दारीके विषयमे ग्रजगुत ग्रजगुत चिज सव जानैके दावी नै क्याके एकटा सधारण रूपसे ग्रापन सचरित्रताके प्रभावसे प्राप्त केलहा ज्ञानके प्रभावसे प्रभावित क्या सकैए। जाव दण्डपानी एकटा व्यक्ति वोई सर्व सिद्धके विषयमे ऐ प्रकारसे विचार करैछै ग्रा देखैछै जे वास्तवमे उ एहेन छै ग्रा वोकर मन मस्तिष्क कोनो प्रकारके लोभ, घृणा ग्रा शंकामे नै फासलछै त वोकर मन ग्रापनै वोई सर्वसिद्ध दिसर ग्राकर्षित भ्या जाई छै। ग्राकर्षित् भेलासे उ व्यक्ति सर्वसिद्ध व्यक्तिके कहलहा उपदेश वचनके गुढ ग्रर्थ एवं महत्वके ग्रसलसे बुझहैछै। वोई प्रकारसे ग्रसलसे समैझके व्यक्ति वोहे भवना से उत्प्रेरित हैछै। वोई उत्प्रेरणासे व्यक्ति ग्रानन्द प्राप्त करैछै। ग्रानन्दित भेलहा मन शरीरके शान्त बनवैछै। जाव वोई व्यक्तिके शरीर शान्त भ्या जाइछै त उ सुखके ग्रनुभव करे लागैछै। खुसी व्यक्तिके मन मस्तिष्क ग्रसानीसे ध्यानस्त भ्या जाइछै। एहिनङ्ग पुरुष सुखी रहैछै ग्रा जेकर जीवन वोई व्यक्तिके जीवनसे जे ग्रापन

सवटा पूर्ण रूपसे गम्या देनेछै बढिया है छै। वोई व्यक्तिके जीवनसे जे घृणासेभोरलछै। पूर्ण मित्रवत है छै।"

"दोसर, वोकर सिद्धान्तके श्रवण क्याके ऐ प्रकारसे विचार करक चाही। कि ई सिद्धान्त सरल रूपसे वर्णन क्याल गेलछै ? कोनो प्रकारके पक्षपात त नै छै ? कोनो खास समयके वास्ते त सम्बोधन नै क्याल गेलछै ? वदलैवला लक्षित ग्रा ज्ञानी व्यक्ति द्वारा मनन केलहा त नै चिऐ ? जाव महानाम, कोनो व्यक्ति ऐ प्रकारसे मनन करैछै ग्रा देखैछै जे वास्तवमे सिद्धान्त ऐ प्रकार छै त उ व्यक्ति वोई संपूर्ण बात विचारके तहत ग्रानन्दित हैछै जे पहिने वर्णका क्याल गेलैछै।

"तेसर, वोई सर्वसिद्धके शिष्यमंडलीके दृष्टिगोचर क्याके ऐ प्रकारसे मनन करक चाही। की सर्व सिद्धके मण्डली सचरित्रवानछै ? छल कपट रहित सोझ साझ ग्रा सदव्यवहार करैमे सदत तैयार रहै छै ? की वास्तवमे उसव ग्रनुकरणीय एवं सत्कार करैके योग्य छै ? की उसव ऐ दुनियाके वास्ते ग्रतुलनीय नैतिकता एवं ग्रध्यात्मिक मनोयोगके विस्तारित करैवलाछै ? जाव व्यक्ति सर्व सिद्ध के मातहतके ई सवमे विचार करैछै ग्रा ई सवके नजैर लग्याके पतिय्या जाइछै त व्यक्ति उपरका कहलहा सव प्रकारके लाभसे लाभान्वित हैछै।

चारिम, व्यक्तिके ग्रापन नैतिकता दिसर ग्रापनै ताकैक चाही की हमर नैतिक जीवन टुटल फुटल त नै छै ? कोनो दाग त नै लागलछै ? कोनो कारणी त नै पैंसलछै ? कोनो दोष त नै लागलछै ? कोनो ग्रवरोध त नै छै ? ज्ञानी लोक सव ग्रसल कहैए कि नै ? कट्टरपन त हमरा नै ग्राइछ ? ग्रादि। जाव व्यक्ति ग्रापनैके ऐ प्रकारसे विचारकरैछै ग्रा देखैछै जे वास्तवमे हम एहेन चिऐ त वोकर मन प्रफुल्लित भ्याजाइछै ग्रा उपरमे वर्णन केलहा सवटा फलाफलसे परिपूर्ण हैछै।

पाचम, व्यक्तिके ग्रापन उदारताके स्वयं विचार करक चाहीः "की हमर जिनगी लोभ जे नारकीय जिवनके सवसे वडका कारणी चिऐ, जेकरा व्यक्ति ग्रापन· ग्रा ग्रनकरजिवनके दुःखी वनवैले ग्रापनैसे रैचके दुनिया जंजालमे फासल रहै छै तहैमे भीजल चिए किनै? की हम ग्रापन ग्रावश्यकताके कमीमे संतुष्ट रहै चिऐ ? हमरा भेलहा ग्रापन धनसे जथाशक्ति निमाह करै चिऐ ? जाव व्यक्ति ग्रपनाके ऐ विचारसे निर्मग्न भ्याके सोचै छै जे हम ठिकचिऐ त उ उपरका कहलहा सवटा गुणसे स्वयं विभूषित है छै।

ग्रन्तमे, दण्डपानी व्यक्तिके दैवी शक्ति वा मनता प्राप्त देवता सवके विषयमे ऐ प्रकारसे विचार करक चाहीः जे देवता सव भेलछै से सवटा वोकर ग्रापन ऐ प्रकार के विश्वास, ऐ प्रकारके नैतिकता, ऐ प्रकारके शिक्षा दिक्षा, ऐ प्रकारके उदारता

आ ऐ प्रकारके ज्ञानके प्रारब्धसे मात्र देवताके जनम प्राप्त कैने छै। जाव व्यक्ति ऐ प्रकारसे विचार करैछै आ एकरा ठिक बुझहै छै त उ उपरका वर्णन केलहा सव प्रकारके फलाफल प्राप्त क्याके आनन्दित हैछै।

ऐ प्रकारके मननसे, दण्डपानी, एकटा सधारण व्यक्ति धिरे धिरे सम्झैत कार्य संलग्नताके अपन्या के आपन जिवनके रस्ताके प्रसस्त करैछै। ए प्रकारके काम कर्तव्य आ आचरणसे व्यक्ति आपनौ के आ दोसरौके सुखी बनवै छै।

बुद्धके हितोपदेशसे दण्डपानी बहौत खूसी भेलै। गार्हस्थ जिवनके सम्बन्धमे उ बुद्धके औरो बेसी बात सव पूछैवला छेलै लेकिन उ एक गोडेके देखलकै जे बुद्धके दर्शनके वास्ते अरसोठा क्या रहलछै आ जेकरा उ पन्छया नै सकै छेलै त बुद्धके नमस्कार कैलकै आ एक दिसर खडा भ्या गेलै।

बुद्धके सतमाहताइर गौतमी खौ असलमे तैहिय्याल पहिरन कपडा आपन हाथमे बोकने एल छेलै। बुद्ध लग आइवके वोकरा सम्वोधित क्याके कहे लागलै।

"बड़का वौआ! हमरा समचार प्राप्त भेलैजे सन्तसव वौआके वास्ते पहिरनके बन्दोबस्त क्या रहलछै आ से वन्दोबस्तके काम समाप्त भेलाके तुरून्ते वादमे बड़का वौआ कपिलवस्तुसे बिदा ल्या लेतै। वौआ, आव तो पारिपवारिक जिवनके परित्याग क्या देने चिही तै हम आपन हाथसे धगा काइटके आपनै हाथसे तोहर वास्ते ई एकजोड पहिरन तैयार कैने चिऔ आ तोरा भेट चढवे एल चिऔ। बड़का वौआ तो ऐ पहिरन चढौआके स्वीकार करहक।"

"मैया, कृपा क्याके ई पहिरन सन्त मण्डलीके चढह्वा दहै। जावतो वोई मण्डलीके चढहैबिही त उ मण्डली आ हमर सेवा भ्याजेतै।"

गौतमी बुद्धके तीन वेर अनुरोध कैलकै आ सववेर बुद्ध उतवेहेक जवाव देलकै। दण्डपानी जे वोईस्थानमे खडा भ्याके सववात देख सुइन रहलछेलै बुद्धके मनसायके सवटा कारण बुझहलकै, त उ बुद्धके बिन्ती करे लागलै।

महाभाग! कृपा क्याके ऐ पहिरनके जे गौतमी आपन हाथसे तैयारकैने छै स्वीकार क्यालेल ज्या। गौतमी अपनेके मैया आ मौसी दुनु चिऐ। महात्माके मैयाके मृत्युके वाद महताइर भ्याके वालक कालसे पालन पोषण कैलक। उ अपनेके सव प्रकारसे सुस्रूषा क्याके जिवन दान कैने आइछ। महात्माजी, आपनौ एकरा वडका अवलम्वन भेलिऐ। ई स्वयं अपनेके सिद्धान्त आ शिष्य मण्डलीके शरणगत भ्याके एलछै। ई त भगवान स्वयं के कृपा चिऐ जे एखैनतलिक गौतमी आपन जिवनमे जिवनके वास्ते कोनो प्रकारके दुर्व्यवहार, इन्द्रिय जन्य इच्छा, झुठमुठके राजकीय

मवके घमण्डसे दुरे रहलछै । इ त पूर्ण रूपसे महात्माजीमे, महात्माजीके सिद्धान्तमे आ महात्माजीके शिष्य मण्डलीमे विस्वास क्याके पधारलछै। बुद्धके उपदेशमे ई कोनो प्रकारसे शंका नै करै छै । ई पहिरनके उपहार त वोहे आपसी समझदारी, आपसी सहयोगके दर्शावैछै ।

वोई पहिरनके स्वीकार नै केलासे बुद्ध आपन शिष्य एवं भगत दुनुके ई दर्श्यके महसूस करैलकै जे सन्त सवके आपन नामके कोनो प्रकारके सम्पैत नै रहक चाही । लेकिन दण्डपानीके समालोचना से गौतमी एवं शिष्यसव जे ऐ अवसरमे उपस्थित भ्याके देख रहलछेलै सेसव आपन महताइर मार्फत देलहा पहिरनके स्वीकार करै मे कोनो हर्जा नै बुझहै छेलै से सवके वास्ते वोकर समालोचना युक्ति संगत लागलै । तै उ गौतमीके देलहा पहिरनके स्वीकार कैलकै आ भगत मार्फत प्राप्त भेलहा वस्तुके पवित्रताके सम्बन्धमे एकटा उपदेशके वर्णका कैलकै ।

"भगत मार्फत दान वस्तुके पवित्रता आ अपवित्रता मे चाइर किसीमसे गुणानुवाद भ्या सकैए । एक प्रकारके दातव्यके दता स्वयं पवित्र कैने रहैछै प्राप्त करैवलाके कोनो प्रकारके पवित्रताके खाचो नै रहैछै । एक प्रकारके दातव्य के प्राप्त करनहार पवित्र बनबैछै, दताके कोनो मतलव नै रहैछै । आ एक प्रकारके दातव्यमे दता आ प्राप्त करनहार दुनुमे कोई वोकरा पवित्र नै बनबे सकैछै । एवं एक प्रकारके दानमे दता आ प्राप्त करहनहार दुनु मिलके दातव्यके पवित्र बन्या देछै ।"

जाव दता असल व्यक्ति आ वोकर व्यवहारिक क्रयालकलाप मित्रवत है छै आ दान प्राप्त करै वला खराब व्यक्तित्वके व्यक्ति रहैछै त वोई दानके दता पवित्र करैछै, प्राप्त करनहार वोकरा किछो नै क्या सकैछै । जाव दता खराब व्यक्तित्वके रहैछै आ उ आपन खराब मनोभवनाके क्रीयाकलापसे आर्जन केलहा धनके दान करैछै आ प्राप्त केनहार असल व्यक्तित्व आ सचरित्रतामे वानहल मित्रवत व्यवहारके व्यक्ति रहैछै त दान देलहा वस्तुके पवित्र क्या दैछै । तखनी दान देलहा बस्तुके पवित्रता दतामे नै भ्याके प्राप्त केलहा व्यक्तिमे भर परैछै । जाव दताके साथे प्राप्त केनहार व्यक्ति दुनु खराब मनोभावनासे प्रेरित रहैछै त दान केलहा वस्तु आपनै अपवित्र भ्या जाइछै लेकिन जाव दता एव प्राप्त करनहार व्यक्ति दुनु असल रहैछै आ असल मनोभवनाके क्रीया कलापसे आवद्ध भ्याके मित्रवत रहैछै त दुनु दिसरसे दातव्य बस्तु और पवित्रतम भ्या जाइछै । ए प्रकारसे दुनु व्यक्ति दान आ प्राप्तिके उत्मोतम फलाफल प्राप्त करैछै ।

बुद्धके शिक्षा उपदेश से वुनु, दण्डपानी एवं गौतमी कृतार्थ भेलै। वुनुटा वोकर सावर अभ्यर्थना कैलकै आ चैल गेलै। थोरबेहेक दिनमे बुद्ध कपिलवस्तुसे धुनी उठयाके राजगीरके यात्रा प्रारम्भ क्या देलकै।

२१–एक्स्कैसस

शाक्य वंशके युवकसब जे बुद्धके शिष्य मण्डलीमे उत्साहित भ्याके सामिल ह्वेवे चाहै छेलै आ जे सबके महताईर- बाप एनङ्ग करैले बिरोध करै छेलै सेसब बुद्धके कपिलवस्तुसे आकस्मिकरूपसे बिछुडनकेयत्रासे हतोत्साही भ्या गेलै। वोई युवक समूहमे भादु, अनरूद्र, आनन्द, भागु, किम्बील आ देवदत्त प्रमुख रहैं। वोई सबमे कोई कोई त सिद्धार्थके लंगोटिया बगैरिया छेलै। उसब शाक्यके नयाँ परम्परामे सामिल हैके अवसर ताकै छेलै लेकिन बुद्धके निर्णयसे निरास भेल छेलै।

उ सब आपन चतुरंगीनी-हाथी, घोडा, रथ आ पैदल सेना सबके ल्याके जेनङ्ग टुडी खेलमे कवाइत करे जाइछै तहिनङ्ग क्याके घरसे भागलै। जाव उसब दोसर राज्यके सीमामे पुगलै त आपन सेनासबके फिर्ता हैकै आदेश देलकै आ संगमे एलहा एकटा लौआ जेकर नाम उपाली छेलै तकरा ल्याके श्रावस्ती दिसर के बाट पकडलकै। आपन आपन अलह कारण उताईरके एकटा मोटा बन्याके उपालीके देलकै आ कहलकै।

"उपाली घर घुइर गेलासे तोरा बढिया हेतौ। ऐ मोटामे बहौत धन छै तैसे तो आपन जिनगी भैर असलसे निर्वाह क्या लेवही।"

उपाली उ धन ल्याके फिर्ता घर आवे लागलै लेकिन बिचै बाटमे बिचार करै :

"ई शाक्य सब बडा रुच्छ स्वभावके है छै। हमरा देखत उ सव ई बिचार करतै जे राजकुमार सबके भागै ले हमही सहायता कैलिये त उ सब तमस्याके हमरा दण्ड देत आ भैरसक जानसे मारत। ई शाक्य राजकुमार सब धनिक छै, जिवनके सबटा सुख भोग करैमे समर्थमान छै से सब आपन सुखके तिलांजली दयाके आपन परिवारके परित्याग क्या देलकै। हमरा अपना कथी हेतै ? हमरौ त आव जिवनमे कुछोने रहलै। तै बुद्धके अनुसरण केनाई सबसे बढिया हेतै। वोकर दरबार त बावहन आ क्षत्रीसबके वास्ते मात्रै नै छै वलिक सबके वास्ते हरदम खुगलछै। उ त जाइत आ परजाईतमे कोनो प्रकारके भेदभाव नै करैछै।"

वोई मोटाके खोललकै आ बहुमूल्य अलह-करणके एउटा गाछमे लटक्या देलकै। उ आपनै कहे लागलै जे कोई एकरा देखतै से एकरा दान कैहके ल्या जेतै। एतहेक कैहके उपाली फेर फिर्ता भ्याके वोई शाक्य राजकुमार सब लग गेलै।

वोकरा घुमल देखके उ सब पूछलकै । "तो कथीले घुमलिही उपाली ।"

"हम फिर्ता भ्याके कपिलवस्तुनैं ज्या सकलिऐ । सेनामे एलहा सिपाहीमे कोइयो अपने सबके महताइर वापके कैह् देतैं जे अपने सबके देशसे वहार हैले हमे सहयोग कैने छेलिऐ त उ सब हमरा दण्ड देवे करतै। तहैले हमे फिर्ता भ्याके चैल एलिऐ ।"

"आवतो कथी करैके बिचार करै चिही ?" "देवदत पूछलकै । "अपने सबके सलाह हेतै हम बुद्धके देखे जेबै आ अगर वोकर दया हेतै त हम सामिल भ्या जबै ।"

"तो घर नै ज्याके वडा असल काम कैलही" आनन्द कहलकै। "शाक्य सब वडा क्रुर हैछै अगर उ सब के ई थाह भ्या जेतिऐ जे तो हमरा सबके गृह त्यागमे हथियार बनल छेलही त तोहर जिनगी खतम क्या देतिऔ । आव हमरा सब संगे चल आ महात्मा बुद्धके दर्शन करम ।"

उ सब राजगीरके रस्तामे अनुपिया नामके स्थानमे बुद्धके दर्शन कैलकै। शाक्य वंशीय राजकुमारसबके जे उपाली लौआ संगे एल छेलै देखके वडा खुसी भेलै । उ सब आपन राजकीय अलह करणके परित्याग क्याके एल छेलै आ तैं बुद्ध बुझहलकै जे उसब मंडलीमे सामिल हैके मनसाय ल्याके एल छेलै । बुद्धके नमस्कार आदि अभ्यर्थना कैलकै; त आनन्द बाजलै ।

"महामान्यवर, हमरासब मंडलीमे सामिल हैले अवसर ताकै छेलिऐ लेकिन महामान्यवर, बडा जल्दी कपिलवस्तुसे यत्रा क्या देलगेलै। उपालीके सहयोग से हमरासब बडा भाग्यसे कपिलवस्तुसे वहार हेवे सकलिए । हमरा सब महामान्यवर निवेदन करै चिऐ जे मंडलीमे स्थानप्राप्त भ्याज्या; सबसे पहिने उपालीकें सामिल भेनाई उचित हेतै। ऐहे प्रकारसे उ हमरासबले जेठ भ्या जेतै आ हमरा सबके वोकरा आदर देवे परतै । एनङ्ग कैलासे हमरासबके भितरमे रहलहा शाक्य वंशीय राजकुमारके घमण्ड दूर भ्या जेतै ।"

शाक्य राजकुमार सबके मनोभवना बुझके बुद्ध खुसी भेलै। आपन घमण्डके वसमे करैके बुद्धिमता पूर्ण तरीका आ सन्त मण्डलीमे सामिल भ्याके आपन समाजिक स्थितिके बिसर जाइके बात बुझ गेलै । आपनसे जेठके आदर देनाई बुद्ध बडा असल बात मानै छेलै । बचपनमे वोकर सतमहताइरके कहलहा एकटा कथा वोकरा मन परलै जैमे बडकाके आदर दैवला बातके उल्लेख छेलै । उ शाक्य वंशीय कुमारसबके संबोधन क्याके कहेलागलै ।

"जठके आँदर देनाई बढिया अभ्यास चिऐ। ई कोह-मोहके भग्या दैछै आ आपसी भेल मिलाप बढबैछै। तीनटा साथीसब के विषयके हमरा एकटा पुरना कथा मन परल। उ तीनु हिमालयके एकटा जङ्गलमे रहै छेलै। वोईमे एकटा चोचा एकटा बानर आ एकटा हाथी छेलै। उ सब एकटा बर गाछके तरमे रहै छेलै। आ बडा रूछ स्वभाव के छेलै। दोसरके प्रति कोनो प्रकारके आदर भावके बर्ताव नै क्याके रहै छेलै। उ सब आपनैमे एक दिन बिचार कैलकै। अगर हमरा सब ई जाने सकतिऐं जे अपना सबमे सबमे जेठ के छै त हमरा सब वोकरा प्रतिष्ठा देतिऐ, आदर करतिये आ सम्मान करतिऐ एवं वोकर अज्ञाके मानतिऐ।" चोचा आ बानर मिलके हाथीके पूछलकै:

"कतहेक दिनके बात तोरा स्मरणमे छौ।"

"जाव हम बच्चा छेलिऐ त ऐ बरगाछदने लरै छेलिऐ त ई बरके गाछ हमर दुनु टाङ के बिचमे रह जाई छेलै आ सबसे उपरका फुनगीसे हमर पेटमे खरकीच लागल छ्याल।"

ताव चोचा आ हाथी मिलके बानरके पूछलकै।

"तो कतहेक दिनका बात याद कने चिही।"

"जाव हम बच्चा छेलिऐ त धरतीमे बैठके ऐ बर गाछके फुनगीके लवगोजा पत्ताके तोडके खाई छेलिऐ।" बानर कहलकै। अन्तमे बानर आ हाथी मिलके चोचाके पूछलकै।

"तो कतहेक दिनके बात कहेसकै चिही।"

"एकटा कोनो स्थानमे बडका बरकेगाछ छेलै। हमर ओकर फल खेलिऐ आ यहि ठाम आईबके नेडी क्या देलिऐ। तहैसे ई गाछ भेलछै।"

बानर आ हाथी वोई चोचाके कहे लागले :

"तो हमरा दुनु गोडेसे जेठ भेलही। हमरा सब दुनु गोडे तोरा सम्मान देबौ, आदर करबौ आ तोहर कहल करबौ।

ए प्रकारे वोई दिनसे उ तिनटा आपसी भेल मिलापसे रहे लागलै।

वोकरा सबके चेहरामे लक्षित खसीके देखके कोईओ कह सकै छेलै जे उ सब कथाके आनन्द से श्रवण कैलकै आ आपन घमण्डके परित्याग क्या देलकै। बुद्ध सेहो हासैत आनन्द के पूछलकै:

"तो कथी विचार करै चिही आनन्द। एकटा छोटका लडाकु बच्चा, सांपके

पिहुवा आ चिनगीके पन्छावै सकबिही; किएकत उ सब छोट आ कोनो काम नै करै बलाछै, तैं?

आनन्द कनहिक बिचार कैलके आ जवाब देलकै।

"नै, महामात्यवर, ई उचित नै हेतै।"

"कथीले" बुद्ध पूछलकै।

पूछलहा प्रश्नके जवाब देले आनन्दके वडा कठिनाई भ्या रहलछलै। यद्यपि उ जाने छलै जे सापके पिहुवा आ आइगके चिनगारीके कथी ले नै पन्छाबैछै लेकिन उ बच्चा लडाकूके सम्बन्ध मे छकित छलै जे एकर कोन जवाब भ्या सकैए। बुद्ध आपनै जवाब देवै लागलै।

"आनन्द, कोनो व्यक्ति बच्चा लडाकूके, जे एखनी बालकछै से कँहके चितनै बुझवै पडैछै। भरसक उ बच्चा पाछे जवान भेलापर अत्यन्त शक्तिशाली भ्याके निकलै सकैए आ वडका बहादुरीके काम क्या सकैए। उ राजकीय बदला ल्या सकैए। तहिनङ्ग सापके पिहुवा आ चिनगारीके बातछै। सब चिज बराबर भेलाके खण्डमे उमेरके जेष्ठताके अधार बन्याके आदरदेनाई बढिया तरिका चिऐ लेकिन उमेरके जेष्ठता मात्रसे आदरके पात्र भनाई सबसे बढिया बात नै है छै। एकटा व्यक्ति जे आपन नैतिक चरित्र, ध्यान मनन एवं ज्ञानी छै तकरा आदरके पात्र बनावैले बडका हाथ रहैछै। उ जेष्ट वा कनिष्ट छै, उ उच्च जाइत वा छोट जाइतके चिऐ, उ धनिक वा गरिब छै तकर कोनो मतलब नै रहैछै।"

"ई वास्तवमे सत्य चिऐ, महान्यावर।" आनन्द जवाब देलकै। उपाली सङ्ग उ छवोटा राजकुमार सब संत मंडलीमे प्रवेश कैलकै। लोआ बेसी समय बुद्धसे उपदेश ग्रहण करै लागलै एवं पवित्र जिवन पद्धतिके अभ्यास करै लागलै। सिद्धि प्राप्त कर बलामे सबसे पहिने उपाली भेलै जे बुद्धमे बहुत विश्वास क्याके धामिक जिवन पद्धति अपनैलकै। भादु जे आराम तलबके जिनगीमे मस्त छलै आ जकर आगा पछा हरदम सशस्त्र अङ्ग रक्षक रहै छलै आ सुखमे डुबवैले सुन्दरीसब भोरलरहै छलै तकर वास्ते ई लवका जिवन जेमे डर, त्रास, शंका आ उपसकाके लेश नै छलै बडा उन्टो भ्या गेलछेलै। ए फकिरी जिवनमे जङ्गलके वास, भिक्षाटनसे प्राप्त भेलहा कन खुदीके एकछाकी भोजन, गुदरी मोटियाके बनल पहिरन; वोहिन बदशाही केल मज मजा आ ई हालतसे वोकरा सिद्धि प्राप्त करमे देरी लागलै लेकिन जाव वोकरा मनसे वोई प्रकारके बिचार खतम भेलै त उ अस्तित्वके सिमासे पार भ्या गेलै आ सिद्धि प्राप्तक्या लेलकै। अनुरुद्ध सागु आ किम्बील भादुके अनुसरण कैलकै आ सिद्धि प्राप्त क्या लेलकै।

देवदत आ आनन्द बिना सिद्धि प्राप्त कँने बुद्धके शिष्य वनल रहलै। देवदत देखँ छेलै जे वोकर चारूकताके लोकसब बुद्धके केहेन आदर, सत्कार करैछे। यद्यपि उ बुद्धके बडे मानै छेलै आ बालक कालसे वोकर बगँरिया भेल छेलै, वोकर पितिऔत भाई छेलै लेकिन भितर अत्मामे कतेसे वोकर मनमे बुद्धप्रति हरदम इखके भवना आवँ जैसे उ आपन धार्मिक जिवनमे कोनो प्रकारके ध्यान नै लगवे सकै आ तहैसे उ सिद्धि के प्राप्त करे नै सकलकै। फेर आनन्दके समस्या दोसरे रहे। बुद्धके उपदेश कहैके शैली वोकरा ततेहक असल लागै छेलै जे उ सिद्धि प्राप्त करैले आपन ध्यान मगन छोइडके खाली उपदेश सुनैत रहै आ हरदम बुद्धके नजदिक रहैके कोशीस करै जसैकि उ बुद्धके बचन सुनैतरहे। तँ बुद्धके जिवन पर्यन्त आनन्द वोकर सेवक भ्याके रहलै।

जाव बुद्ध फिर्ता भ्याके राजगीर एलै त वोकरा मगहके रजा-प्रजा दुनुटा वडा उत्साहके साथ वडा भव्य स्वागत सत्कार कँलकै। बुद्धके अनुपस्थितिमे बुद्धके शिष्यसबजे अहैठाम रहल छेलै तकर संरक्षणमे बहौत व्यक्तिसब सन्त मंण्डली मे सामिल भेल छेलै। मगह वडा जोरतोरसे बुद्धके उपदेशके प्रभावमे भ्या गेलछेलै। वडका वडका ज्ञानी-ध्यानी बावहन सब आपन आपन सिद्धान्त जे बुद्धके उपदेशमे बहौत पाछा छेलै आ जे उपदेश देशभैरमे विस्तारीत भ्याके समाजिक परम्परा कायम क्या रहल छेलै से वडा चिन्तित भेलै जे आव बभनौटी नै चलतै।

तँहनङ्ग एकटा उपदेशक जेकर नाम जानुसोनी रहै। आपन बहौत संगी साथी नहाइत वोहो दुनियाके चिजमे भेलहा सत्वके समस्याके समाधानके खोजीमे छेलै। ई एकटा प्रश्न रहै जे वडका वडका ज्ञानी उपदेशकके चक्कर मारने छेलै आ जानुसोनी ऐ विषयमे बुद्धके उपदेश, व्यवहारके मार्फत बुझहैके मनसाय ल्याके गेलै। राजगीरके बाँसघारी करजानमे निवास करैवला बुद्ध लग गेलै आ स्वागत सत्कारके बाद जानुसोनी पूछलकै।

"मित्र, कोनो कोनो महात्मा आ बाबहनसब सत्वके विषयमे बाजैत रहैछे। अपनेके यँ सत्वके सम्बन्धमे केहेन बिचार छै।"

बुद्ध सिद्धि प्राप्त करै से पहिने आपन भित्र कपिल आ ललकुसे ऐ विषयमे बहौत वतकहा सुनने छेलै। तकरा उ खौ उच निच ताकलकै आ महशूस कँलकै जे उसब यँ सत्वके वर्णकामे प्रागऐतिहासिक विषय अथवा चित्यसे सम्बन्धित कँने रहै। उ जाइन गेलै जे ई त मात्र काल्पनिक बिचार चिऐ आ दार्शनिक जानुसोनी वोकरा दार्शनिक जालमे ओझरावे चाहै जैसे जल्दी छूटकरा पाबैले मुस्किल हैछै। तँ उ आपन जवाब वडा सोझसाझ रूपसे देवे लागलै।

"मित्र, हमर ज्ञानके अनुसार त सत्व इन्द्रिय रुप एवं इन्द्रिय जन्य रूप चिऐ, आइख-रूप, कान आवाज, नाक-गन्ध, जिह-स्वाद, शरीर-आकर्षण, मन मस्तिष्क बिचार धारा। ऐके अलाहित हम कोनो चिज ने देखै चिऐ, ने सुनै चिऐ, ने गन्ध लैचिऐ, ने स्वाद लैचिऐ, नै स्पर्श करै चिऐ, आ नेकोनो प्रकारके बिचार बन्याके अनुभव करै चिऐ।"

"अगर कोई व्यक्ति बिना आइख, कान, नाक, जिह, शरीर आ मन मस्तिष्क के एकर सम्भावनाके विषयमे कहैछै तै मे अपनेके बिचार कोनेमाथे।" जानुसोनी पूछलकै।

"ककरौ वास्ते ई सम्भव भ्या सकैछै जे आपन पांचोटा ज्ञानेन्द्रिय अथवा छवोटाके अनुपस्थितिमे कोनो प्रकारके ज्ञान प्राप्त हैत हेतै-एकटा विशेष प्रकारके माध्यमसे ई जानल जाइत हेतै जे बोई ठाम कोनो प्रकारके कर्ता आ कर्मके द्वैधता नै रहतै। हम बोई प्रकारके कोनो तेहेन क्षमता एखैनतक नै प्राप्त क्या सकने चिऐ जे आपन ज्ञानेन्द्रियके अनुपस्थितिमे देखवै आ जानवै तै ओकरा सबके बिचार मे एलहा "सत्व"के विषयमे कोनो प्रकारके आपन धरणा बनवैले असक्षम चिऐ। हमर वास्ते ऐ प्रकारके "सत्व" अनुभवसे बहारके बात चिऐ।!"

"लेकिन, ज्ञानी महात्मा, बावहन आ फकिर सब ई दावा करैछै जे कोई ऐ योगाभ्यासके माध्यमसे ध्या भ्याके सर्व सिद्धिभ्यागेलछै वोकरा सबके विशेष प्रकारके जननाई आ देखनाईके बिकास भ्यागेलरहैछै।

जानुसोनी अडान लेनै छेलै।

"जानुसोनी, मन मस्तिष्कके प्रशान्त क्याके ध्यानयोगके माध्यमसे हम सबसे उचका स्थान प्राप्त क्या ने ने चिऐ जै ठाम सब प्रकारके अनुभूति समाप्त भ्या जाई छै आ जे चिज हम जानने चिऐ देखने चिऐ से तोरा कहवौ त वोईसे कोनो फेदा नै हेतौ। उ हम करने चिऐ, हम जानने चिऐ, उ चिज अनकरा देखेलासे नै देखल जाई छै; आपनै करे परैछै तैयो हम कहै चिऔ से कोनो चिज एहेन नै छै जेकरा "सत्व" कहल जाई; हमरा ऐ प्रकारके कोनो ज्ञान प्राप्त नै भेल आइछ। थोरहेक व्यक्तिके वास्ते ई सम्भव हैतै जे ऐ प्रकारके "सत्व" के दृष्टि गोचर कैने हेतै आ तेहेन ज्ञानो प्राप्त कै नै हेतै एवं एहो सम्भावना छै जे कोई ऐ तथ्यके नकार क्याके ऐहेन दिव्य दृष्टि आ ज्ञानके नै मानैत हेतै ऐ प्रकारके दृष्टि आ ज्ञान नै भेलासे हम ढाल नै जमवे चाहै चिऐ। हमरा ऐ प्रकारके ज्ञान नै छै त दोसरौ के नै हेतै सेहो हम नकारे न सकबौ। ऐ सब विषयमे हम चुपेछाप रहे चाहै चिऐ।

चुपचाप रहके हम दुनियांके लोक सबसे झगडा नै बेसाहै चिऐ; यद्यपि दुनिया हमरसे झगडा बेसाहें चाहतै।"

जानु सोनी बुझ्झ गेलै जे उ बुद्धसे कोनो प्रकारसे असलका बात नै बहार करे सकतै त चुपेचाप रहलै तै उ बुद्धके नमस्कार कैलकै आ आपन घरके बाट धैलकै।

बुद्धके एकटा शिष्य कात्यायन जे ईसब बात बतकहा सुइन रहलछेलै, जानुसोनीके गेलाके बादमे बुद्धलग एलै आ पूछलकै।

"गुरू महाराज, हम, भरसक बुझहै चिऐ जे जानुसोनीके "सत्व" सम्बन्धी प्रश्नके समुचित जवाब, महामान्यवरसे नै भेटलै लेकिन, गुरू महराज, येकर वास्तविक बिचारधरा कथी भ्या सकैऐ?"

ऐ दुनियाके आदमी सब दुई प्रकारके बिचारधरामे आबद्धछै जेकरा अस्तित्व आ बिना अस्तित्व कहल जाइछै। ऐ विषयमे कोई ढाल जमवेसे पहिने एकर अर्थ आ तार्किक अवधरणाके बहुत सुक्ष्म दृष्टिसे विश्लेषण क्याके एकरा स्वीकार आ अस्विकार करे परैछै। अस्तित्वके मनता देके सम्बन्धमे विभिन्न प्रकारके दीचारधरा अपन्याल ज्यासकैऐ। पहैने ईकोनो प्रकारके वस्तु हेतै जे अनुभव जन्य भ्यागेलछै। दोसर अस्तित्व शब्दके आपन एकटा अर्थ छै। तेसर कोनो प्रकारके सत्व वा सारके अस्तित्वके सम्बन्धमे बतकहा क्या सकै चिहो। अच्छा, कात्यायन, तुही कह, जो ऐ तिनुके माने ऐके हेतै वा फरक छै?

"ऐ सबके माने त फरक फरक छै; गुरू महराज।"

"कि तो, अस्तित्वके पहैनका अर्थके उदाहरण द्या सकै चिहो।?"

"जी, गुरू महराज," कात्यायन जवाबदेलकै। "जाव हमरा सब कहै चिऐ जे आईखके अस्तित्व छै त आईखके वास्ते हेवै वला शरीरके एकटाभागके अस्तित्वके स्वीकार करै चिऐ। एकर बाद हमरा सब अस्तित्व शब्दके व्यवहार करै चिऐ जे आईखछै आ ऐ लके दृष्टी गोरचके काम है छै जे अनुभव जन्य चिऐ। दोसर शब्दमे आईखके अस्तित्व आईख हेवै वला भागके अस्तित्व आ आइखसे देखलहा अस्तित्व।"

"अस्तित्व शब्दके दोसर अर्थ कोतो वर्णका क्या सकै चिहो?"

"ई, त कठिनछै गुरू महराज।" कात्यायन कहलकै।

"ई वास्तवमे कठिन छै, कात्यायन! ऐ सम्बन्धमे दार्शनिक सब अस्तित्व शब्दके अर्थ लागै वला भावके कोई सम्बन्धित वस्तुसे बहार क्याके लोकके चित्त

बुझवे लागै छै। उसब अस्तित्व शब्द जे भाववाचक संज्ञा चिऐ तकरा वास्तविक स्थानदशाके अस्तित्व कायम करनाई जे एकटा क्रीया पदकें अवधरणामे राखल गेलछै तकरसे सम्बन्ध स्थापित करैके विचार व्यक्त करैछै। कत्यायन, तो की एकटा कोनो बस्तुसे अस्तित्वके अलग क्या सकै चिही ?"

"जि, नै गुरु महराज, कोनो चिज जे अस्तित्वमे छै तेकरसे स्वतंत्र (तकरा नै देखके) मात्र अस्तित्वके कल्पना नै क्या सकै चिऐ।"

"की, त एकर मतलव भेलै जे हमरा सव कोनो वस्तुसे अस्तित्वके अलग नै क्या सकै चिऐ आ अपने मने "अस्तित्वके" व्यक्त नै क्या सकै चिऐ त कोनो बस्तु "अस्तित्व कायम क्या रहलछै" से बात चित करनाई छोड़इदिऐ ?"

"गुरु महराज, देखल ज्या ई धरती चिऐ से कहवै त सब बुझतै लेकिन अगर ई कहवै जे अस्तित्व आपन अस्तित्व कायम कनैछै त एकरा कोईने बुझतै आ वास्तवमे ई बुझहौ वला कोनो चिज नै चिऐ।"

"बिल्कुल ठिक कहे चिही, कात्यायन। यहैसे वैदिक समयके एकटा नामी सन्त जेकर नाम प्रजापति परमास्तिन छेलै जे "अस्तित्व आपन अस्तित्वके कायम केन छै" अथवा अस्तित्व आपन अस्तित्वके कायम नै करने छै" से स्वीकार करैले नकार क्या देलकै। परमास्तिन पद्धयपि वोई समयमे अस्तित्व सम्बन्धी ऐ दुनु बखेडाके नकार क्या देलकै, एखन वर्तमानमे उद्दालक आरुणी नामके एकटा दोसर सन्त माने छै जे अस्तित्व आपन अस्तित्वके कायम करनेछै। दुर्भाग्यवस परमास्तिन जेकरा दुर करे चाहै छेलै तहे जालमे फासले तै उ कहे लागलै जे ऐ दुनियामे जल सब चिजके सत्व चिऐ। यहैसे सबके जनम है छै। ऐ प्रकारसे उ हमर कहलहा उपरका बातके दोसर खण्डके त नै मानलकै लेकिन अस्तित्वके तेसर खडके बात स्वीकार करने छै।"

"लेकिन, की, त अस्तित्वके सम्बन्धके पछलका दुनके अर्थ एकेठाम जुटल नै छै।" कात्यायन पूछलकै।

"हं, उ सब एके चिऐ।" बुद्ध जवाव देलकै। जाव कोनो व्यक्ति अस्तित्वके भाववाचक संज्ञा हैके विश्वास करैछै त ऐ से कोनो वेसी फरक नै है छै जे कहै छै "सब बस्तुके अस्तित्व छै।" किएक त ई दुनुटा विचारधरा, एकटा स्थाई वा कोनो प्रकारके सत्वके अस्तित्वके स्वीकार करैछै। जाव कोनो व्यक्ति अस्तित्वनै हैके बात भाववाचक संज्ञामे लगावै छै तहौसे ई कहलासे कोनो बेसी फरक नै रहै

छै जे कोनो बस्तुके अस्तित्व नै छै किएकत दुनु विचारधरामे बस्तुके पूर्णतया नष्ट भ्या जाइकै संकेत छै "।

ऐ दुनु ओर छोरके जालमे बिना फासने, बुद्ध कहैत गेलै, हम त देखलहा बात कहै चिऔ जे ऐ दुनियामे कोनो बस्तु जनम लैछै आ जनम लेलाके बाद परिबर्तन हेवे लागैछै आ एकदिन समाप्त भ्याके मृत्युके प्राप्त करैछै। जाव कोनो व्यक्ति ऐ दुनियामे कोनो चिजके जनम लैत देखैछै त अस्तित्व नै हैके सवाले नै छै; मगर जाव ओहै चिजके मृत्युके प्राप्त करैत सेहो देखैछै त अस्तित्व कायम केनाईके सिद्धान्तके भेनाई त अस्तित्व एकदमे नै छै से कहनाई बिल्कुल गलत भ्या जाईछै। वोकरै ऐ निदुनियामे मृत्युके प्राप्त करैत देखके स्थाई अस्तित्वके मानैले कोई स्वीकार करतै से बाते नै छै। तहैले हमर कार्य व्युत्पन्न बिचला बाटके सिद्धान्त चिऐ, जेकरा हम प्रतिपादन क्याके दुनियामे चलैने चिऐ जे ऐ दुनु ओर छोरके बिचै दने उचित बाट बनैलकै ।

ऐ बातचितके समयमे उपीस्थत शिष्य मध्ये एकटा शिष्य खडा भ्याके प्रश्न उठैलकै ।

"गुरु महराज, कार्य व्युत्पन्नके हमरा सब कोन प्रकारसे जाने सकवै। हमर सवके ज्ञानके उदगम कथी भ्यासकै छै ?"

"सन्त लोकैन, ज्ञान दुई किसिमके हैछै। एकटा परिचयात्मक ज्ञान ,आ दोसर प्रमाणसे आगम केलहा ज्ञान। परिचयात्मक ज्ञानसे हमरा सव ऐ दुनियाके बस्तु वा जिवके जनम हैत, परिवर्तन हैत, आपन्न अस्तित्व कायम करैत, एक दिन अटैक जाइछै, मृत्युके प्रात क्या लैछैसे जानैचिए। जाव हमरा सब कोनो बस्तुके अस्तित्वमे आवैत देखै चिए त कहेलगै चिए ज फलना फलना कारणसे ई चिज एलै फलनासे सहयोग भेटलै त भेलै। ओई चिजमे फेर कोनो परिवर्तन है छै तहो मे हमरा सव कारणी सब फलाके लागै चिए जे एनङ भेलै ताव वोनङ भेलै। मृत्यु प्राप्त केलापरभी हमरासब कारणी बखानैले नै छोडै चिए। यकरै परिचायतमक ज्ञान कहल जाईछै। बुद्धके जनम ए दुनियामे भेलै, तैयो, नै हेनिए तैयो, उपरका बात सव घटित हेव करतिए। ई सब कारणी रहवे करतिए, ई कार्य व्युत्पन्न छे वे क्याल छलै ए प्रकारके अधारसे प्रमाणसे, परिचयसे, प्राप्त केलहा अनुभवके अधारमे हमरा सव भूत आ भविष्यके विषयमे बात जोडै चिए; तकरै आगम ज्ञान कहल जाइछै ।

ते, हेतुसे, सन्त लोकैन, ई कार्य व्युत्पन्न सिद्धान्तके अनकरमे अश्रित भेलहा

वस्तुसे अलग नै छुटियावे सकविही। जाव कोई व्यक्ति कार्य व्युत्पन्न के विषयमे बहस करैछै त वोकरा अनकरमे आश्रित भ्याके जनलहा वस्तुके भावेटा दयाके कोनो प्रकारके अभिव्यक्ति व्यक्त नै क्या सकैछै। अगर कोई व्यक्ति कार्य व्युत्पन्नके एसे अलग छुटियावैछै त उ अस्तित्वके भाववाचक संज्ञा एवं सत्व से सम्बन्धित आगम ज्ञान दुनुटा बिसैर जाइछै। हम जे कात्यायनके सलाह देलिए से विरोधाभास भ्याजेतै ।

आव अगर सन्त सवके कोनो दोसर प्रश्न पूछैके रहै तैयो उ सब पूछेनै सकलकै; किएकत एकटा वडा प्रतिष्ठित देखै वला व्यक्ति जकर संगे और बहौत व्यक्ति सव छैलै ओई ठाम पुगलछेलै ।

२२– बाइसम

श्रावस्तीके एकटा धनी व्यापारी जेकर नाम सुदत्त रहै लेकिन जेकरा अनाथ पीण्डक "गरिबके पालन कर्ताके" नाम से वहौत लोक जानैछैलै ए समयमे व्यापारके सिलसिलामे राजगीर एल रेहै। उ राजगीरमे आपन ससुराइरमे निवास क्याके व्यापारी काममे जुटल रहै त बुद्धके विषयमे सुनलकै। जाव बुद्धके ख्यातिके सुनलकै त अनाथपीण्डक बासघारीके करजानमे गैलै आ देखलकै जे बुद्ध आपन शिष्य सब संगै वर्तालाप क्या रहलछै। वोकर आगमनसे वर्तालापमे खलल पुगलै से बिचार क्याके अनाथपीण्डक मलिन भ्या गैलै। बुद्ध अनाथपीण्डकके खिन्नता के बुझहलकै त वोकरा खूसी करैके खातिर कहे लागलै ।

"तो बडा ठिक समयमे पुगलीही सुदत्त। हम भरखरे एकटा वडा महत्वपूर्ण विषयके वर्तालाप समाप्त करने छेलिए।"

अनाथपीण्डक बात वुझइके मनगर भ्या गलै जे वास्तवमे उ वर्तालापके भगन नै कैने छैलै लेकन वोकरा आरचज लागलै जे वोकर नाम बहौत गोडे नै जानैछै आसे बुद्धके थाह भ्यागलै। उ बुद्धके साष्टाङ दंडोत कैलकै आ कलहकै।

हमरा बिश्वास आईछ जे वावा सकुसल हेतै। एहेन कोनो बात छै जे हमरा, वावा एवं शिष्यसवके सेवा करैके मौका भेटतै ?

अनाथपीण्डकके कहलहा सकुसल शब्दके प्रश्न बाचक चिन्हके बुद्ध बुझहलकै जे हमरा कथी पूछैए ।

"हे सुदत्त हम कुसलसे चिऐ। एकटा व्यक्ति जे इन्द्रिय निग्रह क्याके, अस्तित्वके लौलसाके परित्याग दयाके, मनके कोह मोहके दुर क्याके आ निरसाके भरोसासे अलग भ्याके पूर्ण सिद्धि प्राप्त क्या नेने छै उ निचितसे निद्रा सगान हैछै जाग्रत हैछै जे काम करे चाहै छै असलसे करैछै आ हमेशा अरामके जिनगी बसर करैं छै ।

अनाथपीण्डकके प्रश्न जे बुद्ध एवं शिष्यसवकेकोनो प्रकारकेसेवाके अबसरके प्रसंगमे बुद्ध बुझहलकै जे उ कोनो पार्थिव दानके सहयोगके विषय चिऐ । तै बुद्ध कहे लागलै ।

सुदत्त, हमरा आ हमर शिष्यसवके उ व्यक्ति सवसे बढिया सेवा क्या सकैछै जे नैतिकतासे प्रभावित भ्याके आपन जिवन बसरके प्रसस्त करछै । हम अष्टाङ्गिक मार्ग प्रतिपादन कैने चिऐ - आ जे व्यक्ति ऐ मार्गके असलसे भक्ति करतै से आपन आ वोकर चारुकता रहैवाला समाजसवके कल्याण करैत रहतै ।

गार्हस्थ जिवनमे रैहके सवसे असल जिवन व्यतित करैके सम्बन्धमे बुद्ध, अनाथपिण्डके उपदेश देवे लागलै ।

पारिवारीक जिवन व्यतित करैवाला व्यक्ति आपन सवप्रकारके इन्द्रिय सुखके भोग करैत समय समयमे आनन्दित एवं संतुष्ट भ्या सकैऐ । ऐ के बास्ते वोकरा चाइर प्रकारके संतुष्ट दायक काममे लागे परतै ।

ई बचन सुनइके अनाथपीण्डक खौ उत्साहित भेलै । एखैन तक बुद्धके शिक्षासे उ एतबहैक बुझने रहै जे दुःख निवारण क्याके, सिद्धी प्राप्तिके वास्ते घर परिवारके परित्याग आवश्यकछै । लेकिन आव उ दोसर प्रकारके भवना क्या रहल छेलै । उ बुद्धिके प्रश्न कैलकै ।

"बबा महराज, उ चाइर प्रकारके कोन कोन संतुष्टिके भक्ति चिऐ जेकरा गृहस्थ सव अपन्याके भक्ति करतै ? "

"सुदत्त, एकटा गृहस्थ जे आपन कामसे आपन कल बलसे, आपन नैतिकतासे परिश्रमसे कमेलहा धन दिसर देखके उ व्यक्ति ऐ प्रकारसे विचार करैछै जे हम ऐ धनके आपन पसिनासे, आपन कल बलसे, आपन नैतिकतासे आर्जन कैने चिऐ। ऐमे ककरो किछो नै लागलै छै ए प्रकारके मनोभावसे बिचार केलापर उ व्यक्ति मनै मन खौ खुसी भ्याके संतुष्टि प्राप्त करैछै । आपन नैतिकता बचैने आपनै कमेलहा धनके माध्यम देखके उ खुसी प्राप्त करैछै ।"

जाव उ आपन साथीसव संगे जेसव आपन धन वोहै प्रकारसे आर्जन कैने रहैछै, तकरसे बात चित करैत आ कोनो शुभ अबसरमे यथाशक्ति दान दातव्य दै छै त दोसर प्रकारके संतुष्टि आ खुसीके अनुभूति करैछै ऐ प्रकारके खुसीसे उ बड आनन्दित है छै ।

"तेसर प्रकारके खूसी वोकरा उऋणा भलासे है छै। उ मनमे गुनै छ जे हम ककरौ कथियो नै धारने चिएै आ तै प्रकारसे उऋणके भवनासे खूसी है छै।"

"अन्तमे एकटा गृहस्थ आपन बेदागके जिनगीके बिचार करैछै। हमरा समाजिक वा राजनैतिक तौरसे कोनो प्रकारके दाग नै लागल आइछ एवं हमर मनसा, बाचा आ कर्मणा सव बेदाग आइछ ई सवटा समैझ समैझके गृहस्थ आपनै बेदागीसे खूसी हैत रहै छै।"

एतहेक सुइनके अनाथ पिण्डकके खूसीके परावार नै रहलै। उ जाइन गेलै जे बुद्ध पूर्ण सिद्ध छै आ वोकर सिद्धान्त बिल्कुल नया गति प्रदान करैछै। उ यहो सुनने छेलै जे बुद्धके उपदेश बहौत परिवारमे दुःख पुगैलकै। कोनो युवती आपन घरवलासे बिछुड गेल छेलैत कोनो महताईर वाप आपन असगरूवा बेटा गम्या देने छेलै किएकत बुद्धके अनवरत उपदेशके समैझ बुझ के उसव आपन आपन पारिवारिक जिवन परित्याग क्याके सन्त मण्डलीमे सामिल भ्याके फकिरी जिवन अङ्गालने छेलै। ऐ सवके अलैहदा जे बहौत गोडेके डर भ्यारहल छेलै से बुद्ध त आपन परिवारौमे रैहके पारिवारिक सुख भोगैत सुखी एवं संतुष्ट भ्या सकैए तेकर शिक्षा उपदेशके सन्देश दै छेलै। ई वास्तवमे बिचला रस्ता छेलै। फकिरी जिवनमे प्रवेश केलासे मात्र सुखके प्राप्ती है छै तै मे कोनो जरूरी नै छेलै, तै उ कहलकै:

"ववा महराज अपनेके सिद्धान्त वास्तवमे बहौत बडका छै। अपनेके उपदेश दैके पद्धति सेहोवड उच किसिमके छै। आई हम अपने सिद्ध पुरूषके सरनागत भ्याके भगतीके चहना ल्याके निवेदन करै चिएै जे हमरा आपन शिष्य वन्या लेल ज्या। ववा महराज एक वेर चरण हलुक क्याके शिष्य सहित श्रावस्तीके भ्रमण भेलासे हमरासव कृतार्थ हेतिऐ। अपने सर्वसिद्ध पुरूषकें बचनामृत उपदेशसे श्रावस्तीके समाजसव विश्वास प्राप्त क्याके लाभान्वित हैवै।"

बुद्ध मौनरूपसे अनाथपीण्डकके अनुरोध स्वीकार क्या लेलकै। अनाथपीण्डक बुद्धके स्वीकारोक्ति मनोभवना बुझके खुसी भेलै जे बुद्धके श्रावस्ती दिसरके यत्राकरैमे कोनो उजुर नै छै तै उ आपन स्थानसे उठलै बुद्धके साष्टाङ्ग दण्डोत कैलकै आ बिदा भ्या गेलै। एखैन तलिक उ धन आर्जन क्याके अमार लग्या देने छेलै। धन आर्जनके बहौत साधन आर्जन क्या ने ने छेलै। एखैन तुरून्ते वोकरा धन आर्जन करैके ततेक आवश्यकता नै छेलै। तै उ आपन व्यपारी यत्राके स्थगित क्या देलकै आ घर दीसर बिदा भ्या गलै। रस्तामे लोक सवके अनुरोध करैत कहै।

"मित्र, सर्वसिद्ध पुरूष बुद्ध एहँ रस्तासे यत्रा करैत एतै। बाट घाटके सफा राख, बगैंचाके सुधार कर, घर द्वारके सजैने राख, दानके वास्ते अन्न तैयार राखने रह।"

धार्मिक प्रवृतिकेलोकसव वोहिनङ्ग कैलकै जेनङ्ग कि वोकरा सवके अनुरोध क्याल गेल रहै। जाव अनाथपीण्डक श्रावस्ती पुगलै त बुद्ध आ वोकर शिष्यके निवास करैके वास्ते शहरके चारू कात वढिया स्थान खोजने फिरै त अन्तमे जेत नामके राजकुमारके एकटा बढिया बगैंचा वोकरा पसिन परलै। उ राज कुमार जेत लग गेलै आ। बगैंचा किनैके मनसाय जाहिर कैलकै लेकिन जेत वोकर दाम वहौत ज्यादा राखलकै। अनाथपीण्डक खरिद करैले तैयार भेलै आ आपन घर एलै लेकिन मूल्य बमौजिमके रकम वोकर घरमे तुरून्ते उपलब्ध नै छेलै। बुद्धके सलाह अनुसार जे एकटा गृहस्थ व्यक्ति कर्जासे उऋण रहक चाही वोकरा कर्जा काडहैमे वडा अवरोध खडा क्या देलकै। बुद्धके आगमनसे पहिने निवास स्थान तैयार रहक चाहैं छेलै से विचार क्याके अनाथपीण्डक दुःखित भेलै। राजकुमार जाव सुनलकै जे अनाथपीण्डक त बुद्धके अखडहाके वास्ते जगाके बन्दोवस्त कैर रहल छेलै त वोकरौ मनमे वडा दुःख भेलै जे अनाथपीण्डक वोकरा वडका सोम बुझतै। राजकुमार जेत अनाथपीण्डके समचार पठैलकै जे अगर बुद्धके वास्ते जमिन के बन्दोवस्त क्या रहल छै त उ विना मूल्यके बगैंचा द्यादेतै।

समचार प्राप्त भेलै त अनाथपिण्डक खौ खूसी भेलै। उ आपन सवटा रकम ल्याके राज कुमार जेतके हवैलीमे पुगलै। राज कुमारके सम्बोन्धित क्याके कहे लागलैः

"हे राज कुमार, हम विना मूल्यके बगैंचा लैके इच्छा ल्याके नै एल चिऐ। यद्यपि की बर्तमान मे हमरा सवटा रकम उपलब्ध नै हेवे सकलछै तैयो हम बगैंचाके बिक्री मूल्य चूकावे एल चिऐ।"

ठिक छै, सुदन्त। हमर कहलहा मूल्यके अदहा रकममे तो बगैंचा खरिद सकै चिही। बाकी अदहा मूल्य हम बुद्ध आ वोकर शिष्यसवके वास्ते दानस्वरूपमे दया रहल चिऔ। एकर वाद तोरा जे रकमके बचत हेतौ से तो सन्तसवके निवास करैके स्थानके निर्माणमे खर्चा क्या सकैचिही।

अनाथपीण्डक आनन्दित भ्यागेलै । राजकुमार जेतके उदारतासे वोकरा बुद्ध एवं वोकर शिष्यके निवास स्थान निर्माण करैमे वडका सहयोग प्राप्त भेलै । वोकरा एकटा ऐहेन पुरूष भेटलै जे वोकर कडा परिश्रम से कमेलहा धन पवित्र कामके वास्ते हिस्सेदारी वोकलकै । एहै प्रकारके सुख आ संतुष्टिके अनुभूति के विषयमे बुद्धके उपदेश छेलै ।

अनाथपीण्डक खौ मनलग्याके निवास स्थानके निर्माण, फूल गूल लगवैले छोट छोट कियारी, स्वागत द्वार, बसघरा, धुनीके स्थान, भण्डार घर, विश्रामघर, रस्ता, बाट आ प्रसाधन प्रकोष्ठके निर्माण कैलकै । जेत राजकुमारके प्रति आपन कृतज्ञता प्रगट करैले अनाथपीण्डक वोई स्थानके नाम जेत करजान राखलकै ।

कुछ समयके बाद जाव बुद्ध आपन शिष्यसवके साथमे कोशल राज्यके रजधानी श्रावस्ती पुगलै त अनाथपीण्डक एवं राज कुमार जेत वडा धुमधामसे वोकर स्वागत सत्कार कैलकै । ऐ समयमे कोशल राज्यके रजा प्रसेनजित रहै जे मगहके रजा बिम्वीसारके आपने बैहिनो छेलै । रजा प्रसेनजित बुद्धके दर्शन करैके वास्ते नै गेलै लेकिन वोकरा खबैर भेलै जे बुद्ध श्रावस्तीमे निवास क्या रहलछै ।

रजा प्रसेनजितके पटरानी मलिका जाव आपन भाई मगहके रजा बिम्वीसार लग किछदिन पहिने गेल रहै त बुद्धके उपदेशके महत्व असलसे बुझने रहै ।

बुद्धके एकटा शिष्य पाहि उ बुद्धके उपदेश मानने छेलै आ वोकर धरममे सेहो विश्वास कैने छेलै जेकरा बुद्ध कपिलवस्तु दिसर यात्रा करैके समयमे राजगीरमे छोइडकै गेल छेलै । रानी मलिका हरदम बुद्धके उपदेश आ वोकर शिष्यसवके बखान करैत रहै लेकिन रजा प्रसेनजित बुद्धके उपदेशके मैमलामे ततेक दिलचस्पी नै देखवै ।

जाव बुद्ध अनाथपीण्डक निर्मित जेत करजानमे निवास क्यारहल छेलै त श्रावस्ती के एकटा नागरिक जेकर एकेटा पुत्र मृत्युके प्राप्त क्या ने ने छेलै बुद्ध लग एलै । बुद्ध जाव देखलकै जे नागरिक आपन मनः स्थितीमे नै छै त पूछलकै जे तोरा कोन दुःख सत्या रहलछौ । उ जवाव देलकै ।

"हमर मनःस्थिती आ शारीरिक शक्ति केनङ्ग आपन सधारण स्थितीमे रहतै । हमर एकेटा मयाके पुत्र स्वर्गबास भ्या गेलै । वोकर मृत्यु के बाद हम कोनो काम काजमे ध्यान नै देने चिऐ आ आपन अस्तित्व बचवैके कोनो उपाय नै देखैं चिऐ । हम सवदिन वोकर संस्कार केलहा स्थानमे जाई चिऐ आ आव हमरा कोनो चिजके प्रति कोनो प्रकारके आकर्षण नै रहलछै ।"

"यहिनङ्ग छँ गृहस्थ।" बुद्ध जवाव देलकै । "आपन प्रीय बस्तु जे सवसे प्रीय भेल रहैछै से बेदना, दुःख आ चिन्ताके आनैछै ।

गुरू वावा, एनङ्ग के बिचार करतै ? जे प्रीय बस्तु हैछै सेत सुख आनन्दके आनै छै ।

बुद्धके उपदेशसे उ और तमस्या गेलै आ चैल गेलै । रस्तामे जुवाडीसव जुवा खेलैत भेटलै त उ सवके बुद्धके कहलहा उपदेशके बात कहलकै । जुवाडीसव कहे लागलै ।

"मित्र, ववाजीसव विचार करैछै जे दुनियाके सवचिज दुःख मयछै । तकर बचनके लफडामे नै परै । ई वोह्रा उल्टा बिचारधरा चिऐ जैसे उसव दुनियाके सवटा आनन्द देवै वाला बस्तुके त्याग क्याके फकिरी जिवनके फेरामे परलै ।"

"हम तोहर बातसे सहमत चि औ ।" उ आदमी कहलकै आ आपन घरके बाट पकडलकै ।

बुद्धके बिचारधराके ई आलोचना अन्ततः राज दरबार पुगलै । रजा प्रसेन जित आपन रानीके कहलकै ।

मलिका, हमरा मालूम भेल जे बुद्ध एकटा कैफियत बचन बाजलै ।

"आपन प्रिय वस्तु जे सवसे प्रिय भेल रहैछै वेदना दुःख आ चिन्ताके निमन्त्रण दयाके आनै छै" ऐसे उ कथी कहे चाहै छै ?

"प्रिय, अगर इ बात खूद महात्मा आपनै कहने छै त ई सत्य हेवे करते ।" मलिका जवाव देलकै त रजा तमस्या गेलै ।

एकटा योगी जे कहैछै तकरे तो बखान करे लागै चिही । तो योगीसवके अह्लर भगत भ्या गेलही ।

एतहेक कैहके उ रानीके असमन्जस अवस्थामे छोइड देलकै आ चैलगेलै ।

पाछे दिनमे जाव रजाके मन ठिकभेलै आ तामस ओन्या गेलै त रानी रजालग गेलै आ बातचितमे अलमल्या गेलै । वोकरासवके पुत्री राजकुमारी बजिरी एखनीभरखर खरपतैर उमेरके छेलै । आपन सखीसवसंगे दरबारके पछुवारके जङ्गलमे धन फूल तोडे ज्या चाहै छेलै । रजा एकटा सिपाहीके खटैलकै आ वोकरा सवके संगे ज्या कहलकै। रानीके वास्ते रजा के फेरसे प्रश्न करैके ई एकटा बडा बढिया अवसर प्राप्त भेलै ।

"प्रिय, बजीरीके संगमे एकटा अङ्गरक्षक कथिले पठवे चाहैछै ?"

रजा ऐ प्रश्नसे आचरजमे पैर गेल ।

"एकर की मतलव ?" रजा रानीके पूछलकै । "जङ्गलके खतरासे रक्षा करैंबला व्यक्ति बेगर वोकरा वोकर जनि साथी सव संगे जङ्गल दिसर पठवे चाहै चिही ?"

"कथीले, नै ?"

"तोरा जेनङ्ग वोकर वास्ते कोनो प्रकारके चिन्ता नै छौ ?" रजा जवाव देलकै ।

"प्रिय, बजिरी ऐहेन प्रिय वस्तु भेलछै जे अगर वोकरा कोनो प्रकारसे कुछ घटित भ्या जेतै त सरकारके बडा दुःख, वेदना आ चिन्ता हेतै ।"

"सेत हेवे करतै" रजा कहलकै ।

रानी हासे लागलै । रजाके लाज भ्या गेलै । रजा आपन गल्ती बुझ्झ गेलै । उ आपन स्थानसे उठलै आ घरैंमे एने वोने चहल कदमी करे लागलै आ बडका विचारमे डूईग गेलै । उ खडा भेलै, रानी दिसर ताकलकै आ बडा नरम अवाजमे कहलकै ।

"अपना सव बुद्ध लग चल, वोकर दर्शन करवै आ भोजनके वास्ते निमन्त्रण देवै ।"

रानी मलिका आनन्द विभोर भ्यागेलै । बुद्धके दर्शन करैंके वोकर लौलसा पूरा हेवै वलाभ्यागेलै । बुद्धके उपदेश कोसल राज्यमे सफलता प्राप्त करैंके वास्ते रजा प्रसेनजितके सहयोग आ समर्थनके बडा खाचो रहै । दोसर दिन रजा-रानी एकटा बडका सेना के साथ ल्याके अनाथपीण्डक निर्मित्त अखडहामे गेलै । रजा आपन सत्कार देलकै आ आदर द्याके एक दिसर बैंठगेलै । रानी मलिकाके खुसी के ठेकान नै रहै । पहिने बुद्धके उपदेश त खाली कानेटासे सुनलहा श्रुति छेलै । आवत व्यक्तिगत रूपसे आपनैंसे बुद्धके उपदेश वचनके श्रवण करैंके अवसर प्राप्त भ्या गेलछेलै । जाव सव आपन आपन स्थान ग्रहण क्या लेलकै त रजा बुद्धके पूछलकै ।

"महात्माजी, हमरा मालूम भेलै जे महात्माजी घोषणा कैंने छेलै जे आपन प्रिय वस्तु जे सवसे प्रिय हैछै दुःख, तकलिफ, वेदना आ चिन्ताके निमन्त्रण द्याके आनै छै । की ऐ दुनियाके ऐकोटा ऐहेन सुख नै छैजे लोक ऐ दुनियामे प्राप्त क्या सके ? की यहै सव कारणसे महात्माजी आपन घरपरिवारके परित्याग क्याके ई फकिरी जीवनके अङ्गालगेलै ?"

"हे राजन, ई सत्य छिऐं जे आपन प्रिय वस्तु जे सबसे प्रियतम है छै दुःख तकलिफ वेदना आ चिन्ताके निमन्त्रण क्याके आने छै। लेकिन एकर मतलब इ नै जे ऐ दुनियाके सबटाचिज दुःखके उत्पन्न करै छै। वास्तवमे परिवारके पत्नी एवं बच्चासबके गृहस्थी जम्याके लोक सब सन्तुष्टि प्राप्त क्या सकैछै। लेकिन अगर कोई ऐ सन्तुष्टिके अस्थायी आ असार बुझतै त ई सन्तुष्टि असन्तुष्टिमे परिवर्तन भ्या जेतै। एकटा व्यक्ति जे सन्तुष्टि के स्वभावके ज्ञान प्राप्त क्या लैछै से परिवारमे मजासे जीवन यापन प्रसस्त करैछै आ कहियो असन्तुष्टिके फेरामे नै परैछै। लेकिन हम आपन घर परिवारके त्याग क्याके उपरका खाडहीके स्वतन्त्रता आ सुख प्राप्त करलिऐं आ ई क्रमिक पूनर्जन्मके स्वतन्त्रता छिऐं।"

"महात्माजी, हम आपन रानी मलिकाके प्रति कृतज्ञ भेलिऐ जेअपने महात्माजीके उपदेशके महत्व एवं उपयोगिता बुझहैले हमर आँइख उघाइर देलक। कुछ महीना पहिलेई राजगीर गेल छेलै तैहिऐसे, ई अपनेके धर्म एवं सन्त मण्डलीमे पूर्ण विश्वास करे लागल छेलै। आई से जीवन पर्यन्तके वास्ते, महात्माजी, हमरा आपन शिष्य स्वीकार करल ज्या। कौल्का दिनके भोजनके वास्ते, महात्माजी, आपन शिष्यसबके साथे हमर राजमहलमे पधारैके स्वीकृति प्रदान केल ज्या।

बुद्ध रजा प्रसेनजितके निमन्त्रणाके मौन रहैत स्वीकृति देलकै।

रजा प्रसेनजित, अनाथपीण्डक एवं राजकुमार जेतके बुद्धधर्ममे परिवर्तित भेलासे कोसल राज्य भैरमे बुद्धके प्रभाव पूर्णरूपसे विस्तारित भ्यागेलै। बुद्ध अधिक समय श्रावस्तीके अनाथीपीण्डक निर्मित अखडहामे निवास करैत रहलै आ ई वोकर स्थाई निसावके स्थान भेलै। परम्परा ई कहै छे जे बुद्ध आपन उपदेश विस्तार करैके पैंतालिस वर्षा मध्ये १९ वर्षा ऋतु एहै श्रावस्तीके अनाथपीण्डक निर्मित जेत करजानमे रहलै। विशाखानाम के एकटा धनीक महिला बुद्ध धर्मके विश्वासी भेलै। उ वोहै करजानमे पुरूभरसे एकटा दोसर अखडहा निर्माण क्याके सन्त सबके देलकै। ई कहल जाइछै जे उ महिला रजा प्रसेनजितके दादी रहै। यै प्रकारसे कोशल राज्य बुद्धके सम्राज्यमे सामिल भ्यागेलै।

२३–तैईसम

रजा शुद्धोधनके मृत्युसे के समचार श्रावस्तीमे बुद्धलग पुगलै। उ सन्तानवे बरिसके पाकल उमेरमे परलोक भेल छेलै। आपन सतमइगइरके बोल भरोस देनाई उचित समैझके बुद्ध फिर्ता भ्याके कपिलवस्तु आवैके विचार कैलकै। आनन्द

एवं किछ दोसर शिष्यसवके साथमे बुद्ध कपिलवस्तु पुइगके निग्रोधा करजानमे आपन निवास स्थान बनैकलकैं। उ थाकलछेलै। उ करजानै मे रहलैआ दुई–चाइर दिन आपन सतमहताइरसे भेट करैले देरी क्या देलकैं।

बुद्धके कपिलवस्तु आगमनके समचार गौतमी लग जल्दिए पुइग गेलै। ई समचारसे वोकरा आपन दुःख विसरैमे बडका सहयोग भेटलै। उ विचार करे लागलै।

"आव हम ऐ दुनियामे एसगरे चिऐ। हमर प्रिय स्वामीनाथके मृत्यु भेलै आ परलोक चैल गेलै। हमर सत पुत्र जेकरा आपन पुत्र सरिखा पालन पोषण कैलिऐ आपन राजकीय धनसम्पैत के परित्याग क्याके फकिरी जीवनमे चैलगेलै। नन्द जे राज्यके झण्डा उठैतिऐ आपन वडका दाजुके अनुशरणक्याके डोडा कट्या लेलकैं। आ यहिनङ्गे हमर दुलरूआ पौत्र भ्यागेलै। आव त हमर जिनगी विल्कुल दिशाहिन भ्या गेलै। हमरा आव जिनगीके एकटा कोनो वाट पकडनाई जरूरी छै। ये के वास्ते हमर पुत्र बुद्ध मात्र सहायता क्या सकै ऐ।

ई सव विचार करैत उ निग्रोधा करजानमे गेलै। वोकर मुख मण्डलमे दुःख आ वेदना भोरल छेलैसे बुद्ध वोहिना प्रष्ट देखलकैं। बुद्धके यथोचित सत्कार क्याके उ एकदिसर बैठेगेलै आ कहे लागलै।

"भगवान बौआ, जनिजातो सव अगर पारिवारिक जीवन परित्याग क्याके ऐ मण्डलीमे सामिल भ्याके भगवान बौआके निर्देशनमे भक्ति करैके स्वीकृति भेटतिऐ त वडा असल हेतिऐ।"

जवाव देलै बुद्धके एकक्षण असलसे विचार करे परलै। उ ऐ विचारसे विल्कुल अनभिज्ञ छेलै जे वोकर आपने सतमहताइर बडका समस्या खडा क्या देतै। तैं, हेतु, यै प्रकारके समस्याके समाधानके जवाव तुरुन्त प्राप्त करनाई कठिन छेलै।

समाजिक पुनरनिर्माणके ऐ साहसिक कदममे, भविष्यमे हेवैवला अवश्यम्भावी फलाफलके चारु ओरसे विचार केनाई बडा आवश्यक छेलै आ बुद्धसे विचारमे मगन भ्यागेलै। बभनौटी परम्परामे पूर्णरूपसे डुगल तत्कालिन भारतके दार्शनिक, धार्मिक, समाजिक आ राजनैतिक क्रियाकलापमे बुद्धके सदुपदेश एकटा वडका क्रान्ति आननेछेलै।

सत्व वा आत्माके मानैके अस्वीकृति, तन्तर-मन्तरके पाठके वहिष्कार, जाइत–पाईतके भेद भावसे दुर, राजकीय प्रशासनके क्रिया कलापमे दैवशक्ति प्रदत्त ऐन

नियमके कडा समालोचाना वभनौटी समाजमे वडका भूमकौंनमे मचलहा कुहराम माच्या देने छेलै। एहै कुहराम मचलहा समयमे जनिजातसवके सन्त मण्डलीमे सामिल करनाई त समाजिक धगाके बुनलहा कपडामे और वडका भयानक धक्कालागतिऐ जै मे खाली बाभनेटा नै भ्याके दोसरो दोसरोसव जे वभनौटी पुर्हिताई विचारसे प्रभावित छेलै आ जे सव ई विचारमे डुगल छेलै जे जनिजातसव वास्तवमे पारिवारिक सूत्रके मजबूत राखैके मात्र एकेटा अधार चिऐ उ सव त मिलके ऐ साहसिक एवं ऐतिहासिक कामके विल्कुल प्रतिकूल भ्या जेतिऐ। अध्यात्मिक जिवन सम्वन्धी विषयमे मरद आ मौगी दुनुके समान अधिकार प्रदान करैके सम्बन्धमे बुद्ध नै चाहै छेलै जे उ एतहेक वडका क्रान्तिकारी भ्याके समाजिक नियमके खण्ड पखण्ड क्या देतै। समाजिक परम्परामे ऐ प्रकारके क्रान्तिकारी परिवर्तन आनैले उ आपन उपदेश शिक्षाके समाजिक परिस्थितिमे पकठी हेवे दैके विचार करै छेलै।

वोकर मैया आपनै वोई मण्डलीमे प्रवेश करैके अनुमति त नै माङ्गने छेलै, लेकिन बुद्धके वोकर अन्तर मनोभाव बुझहैमे कोनोटा संका नै रहलै। ऐ विषयमे वोकरा दुई प्रकारके समस्या खडा है छेलै जे वोकरै समाधान करे परै छेलै। पहैनका त वोकरा आपने महताइरके दुःखसे उवारैके छेलै, दोसर वोकर आपने स्थापना केलहा संघके सधारण भलाई एवं स्थायित्वके गहनतम जिम्मेवारीके सवाल छेलै। इ त नैतिक द्वैधता छेलै जे ठेल पेल केलासे समस्याके समाधान नै हेवै बला छेलै

मैया गौ, कृपा क्याके जनिजात सवके ऐ संघ मण्डलीमे प्रवेश करैके अनुमतिके विचार नै करै।

उ यै विषयमे दुई, तीन बेर अनुमति माङ्गलकै आ सवबेर बुद्ध वोकरा नकारैत गेलै। उ वडा दुःखित आ निराश्रित भेलै। उ निग्रोधा करजानसे बिदा भ्या गेलै, लेकिन वोकर मनमे एक प्रकारके शान्ति एवं वड़का प्रतिष्ठान छेलै। एहेन लागै छेलै जे उ कोनो निश्चित निर्णय क्या ने नेछै।

जाव गौतमी चैल गेलै त आनन्द बुद्धके लगमे एलै आ पूछलकै।

"महामान्यवर, अपनेके मैया, महिला वर्गके मण्डली मे सम्मिलित भ्याके अध्यात्मिक जिवन व्यतित करैके वास्ते महामान्यवरसे अस्वीकृत प्रदान भेलाके कारणेवडा दुःखित एवं निराश्रित भ्याके चैल गेलै। महामान्यवर, एहेन कोनो कारण भ्या सछकैछे जे महिला वर्गके मण्डलीमे सम्मिलित नै कयाल ज्या? की उसव सिद्धि प्राप्त कयाके स्वतंत्रता प्राप्त करैमे असक्षम है छै?"

"आनन्द, महिला सब सिद्धि प्राप्त क्याके स्वतंत्रता प्राप्त करेले असक्षम है छै से हम कहा बिचार करैं चिऐ। लेकिन बहौत पुरूष शिष्यसब जे भरखर मण्डलीमे सम्मिलित भेलैं आ एखैनतक आपन लक्ष मे नै पुगल छै आ वोई मे बहौत गोडे एहेन छे जे एखैन तक इच्छा आ कमनाके बन्धनसे मुक्त नै भ्या सकलछै। उ बहौत व्यक्तिसब जे भविष्यमे ऐ संघमे सामिल हैतैं वोहोसबके आपन कमनाके बन्धनके तोडैलेसमयके जरूरी परतै। कमनाके बन्धन तुरून्ते नैंटुटैछै। ई त खाली एकटा संयोग भेलै जे हमर शिष्य पहिने पुरूष भेलै। तै ई आवश्यक भ्या गेलै जे वोकरा सबके वास्ते एहेन वातावरण रहै जैसे उसबके सिद्धि प्राप्त क्याके स्वतंत्र है मे कोनो भाङठ नै परै।"

बुद्ध कनहिक काल जिरवे लागलै।

"आनन्द, दुनियामे महिला बाहेक एहेन कोनो प्रकारके रूप हम नं देखै चिऐ जे पुरूषके आकर्षित क्याके बसमे क्या लेतै। कोनो प्रकारके अवाज, कोनो प्रकारके गन्ध, कोनो प्रकारके स्वाद आ कोनो प्रकारके स्पर्श पुरूष वर्गके ततेक आकार्षित नैं क्या सकैछै जतेक महिलाके रूप, गन्ध, स्वाद, अवाज आ स्पर्श आर्कार्षित क्याके वसमे करैछै। ठीक यहै किसिमसे, आनन्द, हम पुरूषके अलवा एहेन कोनो प्रकारके रूपनै देखैचिऐ जे स्त्रीके आर्कार्षित क्याके बसमे करतै। कोनो प्रकारके अवाज, कोनो प्रकारके गन्ध, कोनो प्रकारके स्वाद, कोनो प्रकारके स्पर्श स्त्री वर्गके ततेक आर्कार्षित नै क्या सकैए जतेक पुरूषके रूप, गन्ध, स्वाद, अवाज आ स्पर्श आर्कार्षित क्याके बसमे करे सकैछै। आनन्द, स्त्री के पुरूषसे एवं पुरूषके स्त्रीसे एहै प्रकारके आकर्षण हैछै। पुरूष आ महिला शिष्यसब जे सिद्धि प्राप्त नै करे सकने रहतै आ साथैमे रैहके निवास करे पैरतै त ई बुझहीजे आइगमे घी राखल जेतै जे कखैनियो पघैल सकैए।"

बुद्ध एकछन मौन रहलै आ ताव फेर कहे लागलै,

"हम एखैन तक एहेन सूत्रके प्रतिपादन नै कैने चिऐ जे संघमे सामिल भेलहा सदस्य सबके आवश्य रूप से पालन करे परतै। हम मात्र नैतिकता के शंकेत कैने चिऐ जेकरा हमर शिष्य सब आपनै युक्तिसे पालन करैछै। एखैन ऐ स्थितिमे अगर हम महिला वर्गके घर परिवार त्याग क्याके फकिरी जिवनके वास्ते स्वीकृति दया देवै त मण्डलीके पत्येक सदस्यसबके आवश्यक रूपसे प्रतिपादन केलहा सिद्धान्तके अनुसरण क्याके प्रत्येक काम करे परतै। जैसे कि हमर आपनै स्थापना केलहा पुरूष एवं महिला संघके स्थायीत्व कायम रहे।"

आनन्द चुप चाप रहलै ।

यद्यपि शाक्यसव फकिरी पन्थके जिवन जेकरा थोरहेक योगी सब अभ्यास करै छेलै आ जैसे शाक्य सव भिज्ञ छेलै वोई पन्थके बढिया नै मानै छेलै । तै जाव बुद्ध पहिनका बेर कपिलबस्तु गेलै त वोकर उपदेशके प्रति लोकके धरणा नकारात्मके रहै । लेकिन जाव बुद्ध वोहै सिद्धान्तके सरलीकरण क्याके उपदेश देवे लागलै त समाज तकरा खौं पसिन करेलागलै । वोकर उपदेश जे पारिवारिक जिवनके महत्व देवे लागल छेलै तकरा समाज खौं पसिन करे लागल छेलै एवं समाजिक तथा राजनैतिक दर्शनमे बभनौटी पुरहिताइके अधिकारके बिरूद्ध भ्याके कासी, मगह आ कोशलमे आपन जैडगाडैले सफल भ्या गेल छेलै, शाक्य समाजमे सेहो आपन सत्ताके झण्डा फर फरवे लागलै। तै बुद्ध जाव दोसर बेर कपिलबस्तु एलै त शाक्यसव वडा उत्साह पूर्वक धुम धामसे वोकर स्वागत सत्कार कैलकै ।

शाक्य सव एकटा वडका दिक्षान्त समारोह के आयोजना करैके बास्ते एकटा दिक्षान्त गृहके निर्माण कार्य सम्पन्न कैलकै । दिक्षान्त समारोहके उदघाटन बुद्धके कर कमलसे हेवक चाही से विचार क्याके वोकरा निमंत्रण देलकै । समुदघाटन समारोहके वास्ते दिक्षान्त गृहके वडा सुन्दर से सज्याल गेल छेलै । बुद्ध आ वोकर शिष्य सवके वास्ते असल स्थान छुटियाल गेल छेलै । बुद्धके आगमन भेलापर वोकरा वडा प्रतिष्ठा एवं आदरसे स्वागत केल गेलै । उदघाटन भाषण बुद्ध के उपदेश से प्रारम्भ भेलै ।

जाव शाक्य समूहके सम्वोधन दैले समय भेलै त बुद्ध बेसी नै वाजे सकलकै । उ आनन्दके कानमे कहे लागलै ?

"आनन्द एकाएक हमर पिठमे वडी जोरसे दरद शुरू भेलै हम बाजैमे असमर्थ चिऐ । हमर कहलहा भाषणके की तो असलसे सप्रसंग व्याख्या करे सकविही ?"

आनन्द स्वीकार क्या लेलकै । दिक्षान्त गृहके अन्दरैमे बनलहा एकटा कोठलीमे बुद्ध अराम करे चैल गेलै । तकराबाद "भक्ति करैके रस्ता" सम्बन्धमे आनन्द एकटा वडा असलका शव्दमे उपदेश के बात कहलकै जैमे व्यक्ति आपनै से आपन नैतिकता, ध्यान एवं ज्ञान प्रप्ति के विषय छेलै । उपदेश भाषण के अन्तमे आनन्द घोषणा कैलकै:

"बर्तमानमे कुलके सम्बन्धमे बात उठलापर क्षत्री सव आपनके सवसे पवित्र

फूलके मानैछै आ गौरवान्वित है छै। लेकिल मनुष्यसे देवता तलिक जे ज्ञान एवं चरित्रमे पवित्र छै तकरा सवसे वडका मानल जाइछै।"

महात्मा आनन्दके उपदेश भवणसे शाक्य सव वडा खूसी भेलै आ प्रशंसा करे लागलै ।

छ बरिसके अत्यन्त कठिन योगाभ्यास रत भेलहा बुद्धके शरीरमे कार्य प्रभाव आव आपन प्रभाव सव देखवे लागल छेलैं। एकर बादौमे सिद्धि प्राप्तिके पाछे, बुद्ध कहियो कोनो प्रकारके आराम बिना देश-देश, गाम-गाम, शहर-शहर, यत्रा कैलकं, से केलहा हरारत आव भौतिक शरीरमे आपन करामैतके बिन्दुमे पुगे चाहै। ऐ बेरामीके समयमे बुद्ध हरदम निग्रोधाकरजानके आपन बिछोनामे आराम करैत रहलै। शाक्यसव सुनै जे बुद्धबेरामीभेलै त झुण्ड के झुण्ड बुद्धके देखे आवैं। आनन्द हरदम बुद्धके सेवामे जुटल रहै। वोकर आवश्यकताके चिज एवं दवाई दारूसे हरदम बुद्धके सेवा करैत रहलै। बुद्धके दर्शनके वास्ते एलहा व्यक्ति सवके आनन्द एकटा असल सेवक एवं रक्षकके हैसियतसे हरदम फटकलग बैठल रहै आ सवके कहै जे महामान्यबर एखैन आराम क्या रहलछै। ठिक भेलापर सवके दर्शन भ्या जेतै।"

"मित्र महामान्यबर एखैन बेरामी छै। वोकरा एखैन कोनो प्रकारके कष्टनै हेवाकचाही वोकरा आरामके खाचो छै। जाव उ तंदुरूस्त हेतैत अपने सव पधारल जेतै। अखनी वोकर सव आवश्यकता पुरा भ्या रहलछै।"

कुछ दिनके बाद जाव बुद्ध आपन बेरामीसे ठिक भ्या रहल छेलै त वोकर ससुर दण्डपानी जे आपन उमेरके बहौत वरिस व्यतित क्या चुकल छेलै आ लाठीके भरमे चलै छेलै बुद्धके देखे एलै। आनन्द वोकरा बुद्धके नजदिक भितर कोठलीमे जाइके अनुमति दयादेलकै आ अपना बुद्धके भोजन आने गेलै। जाव उ घुइमके एलै त सुनलकै जे दण्डपानी बुद्धके पूछै छेलै।

"महात्माजी, कुद्ध दिन पैहने हम अपनेके उपदेश सुनने छेलिऐ जे ज्ञान वोकरै आवेछै जे ध्यान लग्या सकै छै। वोकरा नै हैछै जे ध्यान नै लगवे सकैछै। त कि ध्यान, ज्ञान से पहिने आवै छै की ज्ञान, ध्यानसे पहिने हैछै।

आनन्द आपनै बिचार करे लागलै।

महा मान्यवर एखैन भरखर स्वाथ्य लाभ क्या रहलछै। ई दण्डपानी वोकरा वडका प्रश्न पूइछ रहलछै। ऐ समयमे महामान्यवर ऐ प्रकारके प्रश्नसे तंग नै हेबक चाही।

वार्तालाव भगन करैके खातिर आनन्द अगा बढलै । भोजनके थारी बुद्धके अगामे देलकै आ दण्डपानी के हाथ पकँडके रसे रसे बाहर ल्यागेलै । स्वास्थ्य लाभकेवाद बुद्ध कपिलवस्तुसे वज्जी गणतंत्र दिसर विदा भ्या गेलै ।

२४- चौबिसम

वज्जी सबके देश जैमे आठटा समूह मिलके संघीय गणतन्त्र स्थपना भेल छेलै, मगहके उत्तर आ उत्तर पछिममे अवस्थित छेलै । ऐ इलकामे लिछवी एवं विदेह दुइटा शक्ति शाली समूह छेलै जेकर रजधानी क्रमशः बैशाली आ मिथिलामे छेलै । ऐ राज्यमे फकिरी जिवन परम्पराके बडका प्रभाव छेलै; तै मे जैन धर्मके गुरू निगन्था नातपुत्र वा महाबिरके उपदेश शिक्षा वडा प्रसिद्धि प्राप्त कैने छेलै। फकिरी पन्थके दोसर समूह अजिवक जेकर मूलगुरूके नाम मखाली गोसल रहै ऐहो धर्म पन्थके वडा उच स्थान रहै ।

बुद्ध आपन शिष्यके साथमे ल्याके वैशाली पहुचके महावन जै जङ्गलमे हरदम सन्त फकिरके निवास रहै धुनी रम्या देलकै । साधु सन्तके निवास करके वास्ते लिछवी सब ऐ जङ्गलमे खौ नमहर नहमर घरसबके निर्माण क्या देने छेलै तै मे एकटा जेकर नाम पिनाक गृह छेलै तहैमे बुद्ध आपन धुनी जमैलकै ।

लिछवीसब लखा सुन्दर लोक आई तक बुद्ध कहियो ने देखने छेलै । उ सब जेना तवतिस्म स्वर्गके देवतासब रहै जे पृथ्वीमे अवतरित भेलछेलै । करिव करिव प्रत्येक लिछवीसब मानवीय रुपके अधिकतम सुन्दरताके सब प्रकारसे प्रतिनिधित्व क्या रहल छेलै ।

जाव चारुकता समचार बिस्तार भ्यागेलै जे शक्य वंशके फकिर जे सर्व सिद्ध भ्यागेलै आ एखैन वैशालीमे धुनी जमैने छै त जैन गुरू महाबिरके बहौत शिष्यसब धार्मिक एवं दार्शनिक सम्बन्धमे वर्तालाप बहस करैके मनसायल्याके बुद्ध लगगेलै। तैमे से एकटा महा पण्डित, धार्मिक वर्तालापमे चतुर आ बैशालीमे प्रख्यात भेलहा शत्यक नामके व्यक्ति रहै ।

एकदिन शत्यक देखलकै जे कोनो कारणसे बहौत लिछवीसब महाबनमे जमाभेल छेलै । वोई महावनमे जमा भेलहा जनसमूहमे ज्याके एलान कैलकै जे पिनाक गृहमे बुद्ध लग ज्याके धार्मिक बिषय वर्तालाप करतै । औरो औरो बहौत

लिछवी सब शत्यक आ बुद्धके बिचमे हेवै वाला धार्मिक वर्तालाप सुनेले पिनाक गृह घुगलै । बुद्धलग ज्याके शत्यक पूछलकै ।

"मित्र, हम तोरा तोहर सिद्धान्तके शिक्षाके सम्बन्धमे एकटा प्रश्न करै चिऔ जेकर समुचित जवाब भेटत से हम आस करै चिऐ ।"

"तो प्रश्न क्या सकैचिही शत्यक। तोरा जे विषयमे जे मन लागछौ तहै प्रकारके प्रश्न क्या सकै चिही ।" बुद्ध जवाब देलकै ।

"तो आपन शिष्यके कोन सिद्धान्तसे दिक्षित करै चिही ।"

"शत्यक हम बुझहै चिऐ जे ई दुनिया क्षणभङ्गुर एवं असार छै। हमर विश्लेषण अनुसार ऐ दुनियामे मनुष्यके अनुभव, रुप, गुण, गोचर कर्म आ चेतना ई सबटा अस्थायी आ असार छै। प्रत्येक वस्तु जे कीयाकलापके माध्यमसे प्राप्त हैछै अस्थायी छै। सबचिज बिना कोनो सारकेछै। जाब हम बुझ्झ गेलिऐ जे दुनिया एहै प्रकारके छै त हम आपन शिष्यसबके तहै अनुरुपके शिक्षा दैचिऐ ।"

"मित्र, हम ऐ दुनियाके दोसर किसीमसे देखे चिऐ । ऐ प्रकारके उदाहरण हम प्रस्तुत क्या सकैचिऐ ।"

"तो कोन प्रकारके उदाहरण प्रस्तुत क्या सकैचिही ? " बुद्ध पूछलकै ।

"ऐ दुनियाके प्रत्येक जिवान चाहे उ मनुष्य चिऐ अथवा बृक्ष, आपन अस्तित्व राखैके वा विकास करैले यहै पृथ्वीमे अधारित छै। ई पृथ्वी सबके सहरा चिऐ। ऐ पृथ्वीमे अधारित भेलासे प्रत्येक कर्म जे उसव करैछै आ भोगकरैछै सबटा यहै पृथ्वीमे अधारित छै। एहै प्रकारसे जाब कोनो व्यक्ति असल वा खराब काम करैछै त आपन अत्मामे अवधरणा करैछै। वोकर आपनै अत्मा अधार हैछै चाहे उ अत्मा शरीर अथवा गुण अथवा गोचर अथवा कर्म अथवा चेतना हेवै ।"

"शत्यक कितो कहै चिही जे शरीर वा रुप, अमर अत्माके प्रतिक चिऐ, गुण अमर आत्माके प्रतिक चिऐ आ एहै प्रकारसे सबटा अमर अत्माके प्रतिक चिऐ ? बुद्ध प्रश्न कैलकै ।

"ह, मित्र हम एहैले अमर अत्माके सांच मानै चिऐ आ ई अत्मा, शरीर, रुप गुण, गोचर आ व्यक्तित्वमे सब प्रकारके गुणकसे समानरुपमे अवस्थित छै। बहौत गोडेके धरणाके यहै प्रकारके सोहो छै ।"

"अनकर धरणाके छोड, शत्यक तो खाली आपनैटा धरणाके बात कर ।"

"हम विश्वास करै चिऐ जे अमर अत्मा हैछै जे मानुष्यके व्यक्तित्वके प्रत्येक गुणकके प्रतिनिधित्व करैछै ।"

"जै धरणाके अधार बन्याके जेतो वकीली क्या रहल चिही तै अमर अत्माके सम्बन्धमे कि हम तोरा एकटा और प्रश्न करे सकै चिऔ ।"

"अवश्य, अवश्य, तोरा जै प्रकारके प्रश्न करैके बिचार हौ तो क्या सकैचिही। हम आपन जानैत खुसीपूर्वक तकर प्रति उत्तर देवै ।

"मित्र, शत्यक, कितो बिचार करै चिही जे जै अमर अत्माके धरणा तो बनैने चिही तकर प्राकृतिक गुणकके सम्बन्धमे किछ और बेसी बर्णका क्या सकै चिही ?"

ऐमे त हम कानो प्रकारके समस्या नै देखै चिऐ । ई त बिल्कुल स्पष्ट छै जे ई अत्मा अमर, स्थाई आ अलौकिकछै । ई अपना सबके प्रत्येक कर्मके करैनिहार चिऐ । ई कर्मों करैछै आ कर्म अनुसारके फलाफलके रस सेहो चाखै छै । अगर ऐ प्रकारके अत्मा नै रहतिऐ त अपनासब पाप आ पुण्यके वखान कोनो प्रकारसे नै करे सकतिऐ । एनङ्ग अगर नै हेतिऐ त करै वला एकटा हेतिए आ तकर फलाफल भोग करै वला दोसर रहतिऐ । सब प्रकारके कर्मजेना हम पहैने कहने छेलिऔं अत्मामे निर्भर करैछै । ई सब प्रकारके कर्मके अधार चिऐ ।"

"एहेन बुझ्झ परैछै, जेनङई अत्मा स्वयंमे अधारित छै माने एकर कोनो विकल्प नै छै। एकरा जे मन लागैछै से करैछै आ तकर फलाफल के भोग करैछै।" बुद्ध कहलकै ।

"ह वास्तवमे एहिनङ्ग है छै, मित्र ।"

"अच्छा, शत्यक आव हमरा एकेटा और प्रश्न करेदे ।"

"कृपा तोहर, मित्र । शत्यक खुसी हैत कहलकै ।

"तो की बिचार करै चिही, शत्यक । कोसलके रजा प्रसेनजित आपन राज्य भैरमे कोनो खूनीके मृत्युडण्ड दैके आदेश वा देश निकला हेवै वलाके देश निकला करैके अधिकार वा शक्ति सम्पन्न छै कि, नै छै ?

"ह, बिल्कुल छै, राज प्रसेनजित तेहेन अधिकार आ शक्ति सम्पन्न छै आ अहिनङ्ग कोनो राज्यके शासक अधिकार सम्पन्न हैछै त ओह्याटा कथिले । उ सब वास्तवमे येहेन अधिकार आ शक्ति सम्पन्न हेवैके चाही ।"

आव शत्यक, तो कहने चिही जे शरीर अथवा रुप, अत्मा चिऐ आ अत्मा

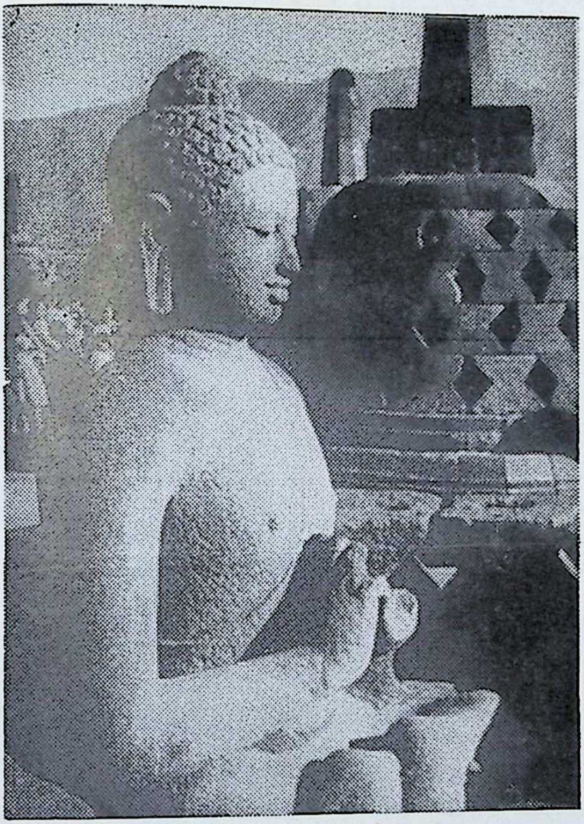

शान्तिके विहान–शाक्यमुनि बुद्ध, सातम शताब्दि
वोरोवुदुर (इन्डोनेसिया)

एकाधिकारी हैछै। तकी ई सम्भव छै जे अत्मा अगर ई कहै जे हमर शरीर एनङ्ग भ्या जो अथवा हमर शरीर एनङ नै हो ?"

शत्यक चुपे रहले।

शत्यक, कृपा क्याके हमर प्रश्नके जवाब दे।

बुद्ध दोसर बेर अनुरोधकैलकै।

शत्यकके चुपी लदलासे ओई ठाम जमा भेलहा समूहके जेनङ्ग छटपटि लागे लागलै। शत्यक एने वोने ताके लागलै। उ वोई समूहके छटपटिके बुझहलकै। आ तहिनङ्गे बुद्धहो बुझहलकै। वोकरा एहेन लागे लागलै जे वडका बडका आईख गुजारने एकटा राक्षस वोकरा खतम करे चाहै छेलै। राक्षस हाथमे अमोघ वज्र ल्याके शत्यक दिसर सोझिएने छेलै जे अगर बुद्धके ऐ प्रश्नके जवाब नै देवही त एहै बज्रलके तोहर कपाडके टुकडी टुकडी क्या देबौं।किएक त ऐ बर्तालाप बहसके बदान बुद्धके शत्यक देने छेलै। शत्यक भयभित भ्यागेलै। डरसे वोकर देहके केश ठाढ भ्यागेलै। पसिनासे वोकर देह लथ भ्यागेलै। शत्यक एहो बिसऱ्या गेलै जे बुद्ध वोकरा कथी पूछनै रहै।

"महामान्यभित्र, अपनेके प्रश्नकी फेर हम सुईनसकैचिऐ ?" शत्यक पूछलकै।

"तो कि बिचार करै चिही शत्यक, तो एलान कैने छेलही जे शरीरमे अत्मा हैछै आ अत्मा आपनैमे एकाधिकारीछै। तोरा आपन शरीरमे ऐहेन कोनो शक्ति छौं आ वोई शक्ति सम्पन्नतासे तो ई कहैले सक्षम चिही जे हमर शरीर एनङ्ग भ्या जो आ हमर शरीर एनङ्ग नै हो ?"

"नै, हजूर।'

"आव देखही, तो जे कैह रहल चिही शत्यक, तो जे पहिने दावा कैने छेलही; से वातके मिलानतनै खेलकै जे तो एखनी कहै चिही।"

'तो की विचार करै चिही शत्यक की शरीर वा रुप स्थाई चिऐ कि अस्थायी चिए ?"

'अस्थायी चिऐ, महामान्यवर।"

'जे चिज अस्थायी चिऐ से सन्तुष्टीदायक अथवा असंतुष्टिदायक दुःख अथवा सुखके देवै वाला हेतै ?'

"ई त असंतुष्टिदायक चिऐ; ई त दुःखके घर चिऐ।"

'जे कोनो चिज अस्थायी असंतुष्टिदायक है छै एवं परिवर्तनशील छै तकरा तो हमर, हम, हमर अत्मा, कहबिही से उचित हेतो।"

'महामान्यवर, हम स्वीकार करै चिऐ जे ई उचित नै हेतै।"

"शत्यक एहै प्रकारके उपदेश हम आपन शिष्यसबके सिख दैचिऐ।"

शत्यक आपन उद्धत्तपनसे बडे पछतैलै आ बुद्ध एवं ओकर शिष्य सबके आपन घरमे दोसर दिनका भोजनके वास्ते नेता दयाके चैलगेलै।

लिछवी समूह जे ऐअवसरमे ऐ स्थानमे उपस्थित छेलै बुद्धके शिक्षाके उपदेश दैके तरिकासे वड प्रभावित भेलै आ उपस्थित बहौत युवकसब बुद्धके शिष्य मण्डलीमे शामिल हैके निर्णय क्या लेलकै।

यहै समयमे एकटा फिरन्ते योगी जकरनाम वत्सगोत्र रहै बैशाली नजदिकके एकटा कमल बगैचा नामके कुटीमे जे खास क्याके फिरन्ते योगी सबके वास्ते निर्माण क्याल गेलछेलै निवास क्या रहल छेलै। बैशालीमे निवास करैत वोकरा निगन्या नातपुत्र जे अपनाके सर्व सिद्धसम्पन्न कहै छेलै आ जे सुतल, बैठल वा जाग्रत अवस्थामे सवचिजके चाहे लगमे रहै वा दुरमे रहै दृष्टि गोचर करैके दावाके सम्बन्धमे सुनने रहै आ उ अपनाके तै बिजेता कहै, से सुनने रहै। चुके बुद्ध अपनाके सेहो सर्व शक्ति सम्पन्न हैके दावी करैछेलै; वैशालीके प्रत्येक आदमी वोकरा सर्वसिद्ध कहे लागल छेलै। तै वत्स बुद्धके भेट करैके इच्छुक छेलै आ ई जाने चाहे छेलै जे वोकर कथनीमे कतहेक सत्यता छै।

अजुका दिन बुद्धके लागलै जे एखनी वस्तीमे ज्याके भिक्षाटन करैके बेर नै भेल छै; वडा सबैर छेलै त उ कमल वगैचामे ज्याके कोनो फिरन्ते योगीसे भेट करैके मनसाय ल्याके बहरैलै। वत्सगोत्र बुद्धके देखके बड खुसी भेलै। उ मनै मन बिचार करे लागलै जे भैरसक बुद्ध वोकर मनके बात आ भवना बुझ्झ लेलकै तै कमल बगैचामे वोकरसे भेट करे एलै।

पधारल ज्या, महामान्यवर। अपनेके स्वागत आइछ, महामान्यवर। आखिर महामान्यवर हमरा सबके दर्शन दै के वास्ते चरण हलुक करवे कैलिऐ। अपने ऐ स्थानमे बिराजभान भेल ज्या, महामान्यवर।

इँगित केलहा स्थानमे बुद्ध आसन ग्रहण कैलकै आ फिरन्ते वत्सगोत्र दोसर स्थानमे बैठलैत बुद्धके सम्बोधन क्याके उ कहलकै।

"हम सुनने चिऐ जे, महामान्यवर, सर्वसिद्ध पुरुष चिऐ श्रा श्रपने चाहे निद्रा मगन चाहे खडा, जाग्रत कोनो श्रवस्थामे श्रपने नजदिक वा दुरके सब चिजके ज्ञान राखलजाई छै वा दृष्टिगोचर भ्या जाइछै। महामान्यवरके सम्बन्धमे कहलहा ई बातमे कतहैकतक सत्यता भ्या सकैछै ?'

"नै वत्स, ऐमे कोनो सत्यता नै छै। जे हमर सम्बन्धमे ई सबबात बाजै छै से वास्तवमे हमर सम्बन्धमे कोनो प्रतिनिधित्व नै करैछै। ई त वडा झुठके विभूति चिऐ।"

"ताव महामान्यवरके प्रतिनिधित्व कोन किसिमसे ठिक ठिक भ्या सकैछे ?" वत्सगोत्र पूछलकै।

"वत्स, हम तिन प्रकारके ज्ञानके श्रधिकारीचिऐ। पहैनका, दिव्य स्मरण चिऐ। श्रगर हम ईच्छा करवै त हम पहैनका पहैनका क्रमिक एक जिवनके, सकैडा जिवनके, लाख जिवनके श्रापन सम्पूर्ण श्रा छुटिया छुटियाके सब बात गोट गोटके स्मरण क्या सकैचिऐ। दोसर-दिव्य दृष्टि चिऐ श्रगर हम इच्छा करवै त श्रापन दिव्य दृष्टि के वलसे ई देख सकै चिऐ जे एखैन वर्तमानमे कोई मृत्युके प्राप्त क्याके श्रापन कर्मफलके श्रनुसार कते श्रा कोन स्थितिमे जन्म ल्या रहलछै। तेसर-वत्स, हम श्रापन यहै जिवनमे श्रापन परिश्रम वलसे मनमस्तिष्कके स्वतन्त्रता एवं ज्ञानके माध्यमसे ऐ दुनियाके श्रपवित्रतासे स्वतन्त्रता प्राप्त कैने चिऐ। जे कोई हमरा श्रसलसे जानैछै सेसब हमर विषयमे ऐ तीन ज्ञानके मात्र बखान करे, ऐइसे दोसर एकदमे नै जानै चिऐ।

एतहेक सुइनके वत्सगोत्र वडा खुसी भेलै श्रा बुद्धके सुखद श्रागमनके वास्ते धन्यवाद ज्ञापनकैलकै। बुद्ध श्रापन सिद्धि प्राप्त भेलहा विषयमे वत्सके नै बुझलहा बात सबके स्पष्ट क्याके कमल बगैचासे बिदा भ्या गेलै श्रा भिक्षाटनके वास्ते रैम गेलै। जैतेहेकसे एक छाक जेतै ततहेक भिख प्राप्त भेला उपरान्त उ श्रापन निवास स्थान पिनाक गृहमे एलै, भण्डार समाप्त कैलकै श्रा श्रापन छोटका कोठलीमे ज्याके दिनका श्रराम करे लागलै।

यहै समयमे बुद्धके सतमहताईर गौतमी जेकरा गृह त्याग क्याके बुद्धके शिष्य मण्डलीमे सम्मिलित है लै मनाही क्या देलगेलछेलै से शाक्यवंशी महिला सबके एकटा समूह जेसब बुद्धके संघमे सम्मिलित हैके वास्ते दृढ भ्यागेलछैलै ऐ ठाम पुइगगेलै। तै मे प्रमुख बुद्धके सौस बिम्बा, श्रनुपमा श्रा रोहणी जे यशोधराके श्रन्तरंग छेलै। उसब श्रापन केस कट्या नेने छेलै; हरदिनका

पेहरन पिह्ल नेने छेलै आ बैशाली दिसर बिदा भ्या गेल छेलै । ई भद्र महिला वर्ग जे आपन जिनगी आराम आ मजमे व्यतित कैने छेलै; कपिलवस्तुसे वैशाली तकके यत्रा बडा दुःख पूर्ण छेलै। वैशाली पुगैत पुगैत उ सबके पैर सुइज गेल छेलै। शरीर गन्दा भ्या गेलछेलै । उ सब पूर्ण रुपसे लथैर गेलछैलै । पूछ ताछ करैत बुद्धके निवासके पत्ता लागलै त पिनाक गृहमे एलै । बुद्धके आरामकरैवला कोठलीके वहारमे रखलहा एकटा बीचमे आनन्द बैठल छेलै। बुद्धके सतमहताइरके नेतृत्वमे कपिलवस्तुके ऐ भद्र महिला समूह जे हरदिनका पैहिनरमे एलछेलै चिह्लकै । उसब गन्दा आ थाकल छेलै ।

आनन्द दुःखसे अकचक्या गेलै । वुद्ध जखनी गौतमीके संघमे सामिल हैलै मनाही क्या देने छेलै तै समयमे आनन्द वोहै ठाम रहै । वोई समयमे उ बडा दुखित आ निराश्रित भ्या गेलछेलै; एखनी आब वोकर मुख मण्डलमे दृढता छेलै। उ वोकरासबसे पूछेलागलै ।

"मैया-दैया सब, तोरा सब थाकल आ ठेंहिय्याल चिही, तोरा सब भोजन छाजन कैने चही कि नै ? एहेन कोनो सेवा क्या सकैं चिऔं जे तोरा सबके कुछ आराम भेटेतौ ?"

"आनन्द बाबा, हमरा सबके भोजनके वास्ते कोनो प्रकारके तरदुत्त करैके जरुरी नैछै । हमरा सबके आरामके वास्ते ऐकेटा रस्ता छै जे हमरा सबके बुद्धके दर्शन भ्या ज्या आ संघमे सम्मिलित हैकै स्वीकृति प्रदान भ्या ज्या ।" गौतमी जवाब देलकै ।

आनन्द वोकरा सबके यहै ठाम बैठैले अनुरोध कैलकै आअपना बुद्धके आराम करैके कोठली दिसर गेलै । बुद्ध जाग्रत अवस्थामे छेलै आ आनन्द एवं महिलामे भेलहा वर्तालाप सुनने रहै । जाव आनन्द कोठलीमे पुगलै त बुद्ध पूछलकै ।

"आनन्द, हमरा बुझ्झ परैए जे बहारमे थोरहेक महत्वपूर्ण अभ्यागत सब एलछै जे भैरसक हमर भेट करे चाहछै ?" "अपने सर्वसिद्धके मैया, यशोधराके मैया आ कपिलवस्तुसे एलहा और बहौत महिलासब वहारसे अपनेके दर्शनके वास्ते असिय्यालछै ।"

"की, उसब एरवैनियो पारिवारिक जिवन परित्याग करे चाहैछै ?"

"उ सब एनङ्ग क्या नेने छै । उ सब आपन केसकटया नेनेछै, हरदिनका पेहरनमे छै आ कपिल वस्तुसे पैदल यात्रा क्याके ये ठाम पुइग गेलछै । वोकरा

सबके पैर चलैत चलेते सुइज गेलछै। शरीर धुल घुसरित भ्यागेलछै आ थाकलसे एकदम ठेहिय्या गेलछै ।

बुद्ध आपन बिछोनामे उइठके बैठलै। एकक्षण विचार कैलकै आ आनन्दके कहलकै। आनन्द, महिला सबके आव संघमे सम्मिलित नै हेवे दैके कोनो सम्भावना नै देखै चिऐ। वोहोसबके आव ए मण्डलीमे एकटा आश्रम बनवे परतै लेकिन एकर वास्ते एकटा कडा नियम निर्माण क्याके पुरुष एवं महिला जे एखैन तलिक सिद्धि प्राप्त करैमे समर्थ नै भेलछै आ जेसब नजदिकमे एके ठाम आश्रममैमे रहतै तै दुनुके कडाई साथ अनुशासन पालन करैले हरदम निर्देशित करे परतै।

आनन्द खुसीसे आनन्दित भ्यागेलै। उ तुरुन्ते घरसे बहार भेलै। उ खुसी छेलै जे ऐ उत्साहित महिलासबके सन्त मण्डलीमे सामिल हैके स्वीकृति प्रदान करैमे सफल भ्यागेलै। बहार आइबके उ कहलकै:

"अगर, दाई-माईसबके मण्डलीमे समिल हेवैके स्वीकृति प्रदान क्या देतै त की तोरासव वोई प्रकारके अनुशासनके पालन करैले तैयार चिही ?"

"ह वास्तवमे, आनन्द बावा, हमरासबके अगर मण्डलीमे सामिल हैके स्वीकृति प्रदान भ्या जेतै त हमरा सब कोनो प्रकारके अनुसाशन मानैले पूर्ण रुपसे तैयार चिऐ।" गौतमी जवाव देलकै।

ऐ किसीमसे महिला सन्त मण्डलीके निर्माण भेलै।

गौतमी आ वोकर साथीसव वडा खुसी भेलै। वोकरा सबके हरारत आ बेदना तुरुन्त खतम भ्यागेलै आ उ सवमे स्फूर्ति सञ्चारित भेलै। वोकरा सवके मुखमण्डल खुसीसे चमके लागलै आ उ सव स्वभाविक स्थितीमे आइव गेलै। उ सव एकटा एकान्त स्थानमे ज्याके असलसे स्नान कैलकै; आपन पहिरन सफाकैलकै आ अराम क्याके सोझका उपदेशके समयमे उपदेश गृहके वडका कोठलीमे जम्मा भ्याके बुद्धके प्रबचनसुने लागलै।

अनुपमा एवं रोहणीके पहिने पहिने बुद्धके प्रबचन ध्यानसे सुनैमे वडा कठिनाई भेलै। वास्तवमे रोहणी आपन दृष्टि हरदम बुद्धसे दूरे राखैके प्रयास करै। वोकरा हरदम पहैनका बात जखनी सिद्धार्थ यशोधराके आपन पक्षमे आनैले हरसम्भव प्रयास क्या रहलछेलै आ तैमे ई जे बिपतरी करै छेलै से सवटा वात याद क्या क्याके आपनै ग्लानीके अनुभव करैछेलै। ज्या वेर बुद्धके देखै छेलै त वोकरा ई बात खटैक जाई। बडा मस्किलसे उ ऐ वातके बिसारवे सकलकै जैसे की आपन ध्यानके

नियमित क्याके बुद्धके उपदेश अनुसार सबटा अपबित्रताके परित्याग क्याके सिद्धि प्राप्त करैके कठिन तपश्चर्यामे लागलै ।

जाव ई सुनलकै जे बुद्ध आ वोकर शिष्यसव बैशालीमे छै आ महिलासव सेहो सङ्घ मण्डलीमे सम्मिलित भ्याके तपश्चार्यामे लागलै त बैशालीके एकटा अतिसुन्दर बेश्या जेकर नाम अम्रपाली रहै आ जे बैशालीके वडका धनीक धनीक व्यक्तिसवके काम इच्छाके पूर्ति क्या क्याके सम्पैत आर्जन करने छेलै एकबेर बुद्धके देखैले चाहलकै।

अम्रपाली बैशाली नगरके प्रत्येक धनीक सवके आकर्षण बिन्दु रहै । उ एहेन अतिम सुन्दरी छेलैजे आपन सुन्दर व्यतित्त्वके वास्ते प्रसिद्धि प्राप्त केलहा लिछवी देबतासवके विचमे मुख्य देवीके समानदेखल जाइछेलै । वोकर एकदम कारी आ कानी फटूल फटूल धनगर आ सपारल केश रहै जैमे सुन्दरता बढबैले आ मोहनी लगवैवला सुन्दर फूल गाथल रहै । वोकर आइखकेभूम जेनङ्ग कोनो सिद्ध हस्त करखैनिया असलसे रङ्ग रोगन लगैने रहै । वोकर आइख दिव मणि लखा छट-छट छटकैत रहै । सुग्गा ठोरी नाक, कानके समानुपातिक लड़मे लटकलहा कनफूल, झल झल झलकैत उजरादात वोकर सुन्दरताके अप्रतिमक्यादेने छेलै । वोकर समानुपातिक रूपसे उन्नत उरोज मरदसवके त कोनवात बैशालीके जनिजातो सवके डाह उठयादै। छिन-छिन पातार डाड, केराके थमलखा जांघ, पैरी पिह्लहा गोर बरहरी आ फूल सनकेकोमल सुपतासे ओकर सर्वांग अत्यन्त सुन्दर रूपवती परी नहाइत लाग छेलै । वोकर सुन्दरतम भौतिकशरीरके एक झलक देखैले जे लोकसव मन मसोसने रहै छेलै आ तकरा से दर्शन भ्या गेलासे जे सन्तुष्टिहै छेलै तै ठाम वोकर वोली सेहो कोईलीके वोली लखा छेलै जेकरा सुइनके लोकसवके प्राकृतिक सङ्गित सुनै सनके सतुष्टि प्राप्त है छेलै ।

वोकर सुन्दरता वोकर अंगरक्षकसवके वास्ते वडा चिन्ताके विषय भ्यागेल छेलै । जाव कखनो उ घरसे वहरावै छेलै त बडा बलगर आ पहलमान व्यक्ति सव वोकरा घैरके चलैछेलै । बैशालीके लाखपतिसव वोकर सुन्दरतासे आकर्षित भ्याके वोकरसे सहवासके आनन्दप्राप्त करैके लौलसामे आपन आपन धन सर्वस्व खतम क्याके खाकपति भ्यागेलछेलै । जाव उ बुद्धके दर्शनकरे चललै त लोकसव आपनमे कना फूसी करेलागल छेलै ।

"आव सर्व सिद्ध भेलहा शाक्यके बेटाके वडा मस्किल समस्या हेतै । यद्यपि वोकर लग एखैनतक जे गेलछै तकरा आपन शक्तिसे पघल्याके आपन दिसर क्या

नेने छै लेकिन ऐ वेर अम्रपाली जे लाखपतिके खाकपति क्या देलकै तकरसे पला परतै ।" थोरहेक गोडे कैफियत कैलकै ।

अङ्गरक्षक एवं सिपाहीसे घैरल अम्रपाली बुद्धलग गेलै । बुद्धके सादर नमस्कार क्याके एक दिसर बैठगेलै । उ देखलकै जे महिला शिष्यसव जे बुद्धके सन्त मण्डलीमे सम्मिलित भेलछेलै तै मे कोनो कोनो जवाइन आ देखैमे सुन्दर छेलै ।

"गुरू महाराज, तो की ई बिचार नै करै चिही जे युवती महिलासव जे सव एखनी जवाने छै आ जे आपन जिवनमे रंग रभसके आनन्दके अवसर कहियोने प्राप्त कैनेछै तकरा सवके तो ऐ संघमे सामिल कैने चिही से की अपराधके काम नै चिऐ ? प्रकृति हमरा महिलासवके कृपा क्याके एहेन वनैने छै जे हमरा सव जे चाहवै से प्राप्त करे सकवै। जवान युवती महिला सव कथीले ई हरदिनका पैहरन पिह्नके गरिवी आ दुःखित जिवनके पछा दौडल फिरतै ?"

"अम्रपाली , तो वडा सुभैर आ मोहनिके मुरूत चिही । तोरा जतहेक आ जे धन चाहीसे सवटा छौ लेकिन यै दुनियामे तो ई अङ्गरक्षक आ सिपाही वेगर बहार भितर जाई आवेले कतहेक स्वतन्त्र चिही ? ई वर्तमान जिवन तो कतहेक दिन तलिक ऐ प्रकारसे भोग करेसकविही ? तो त ओई काँखोर लखा चिही जेकरा मछमरासव पकडके एकटा भैर तसला पाइनमे राइखके चुइल्ह मे चडहचा देनेछै आ निचासे कैसके आच लगवैछै जावे तलिक पाइनै खदकै छै तावे तलिक कौख रासव अरामसे मनगरे रहैछै। लेकिन उ अराम आ स्तवन्त्रता वेसी कलातक नै रहैछै तहिनङ्ग ई दुनिया अस्थाई आ मृत्यु कारक चिऐ। ई साच चिऐ जेकरा अपनासव झूठनै करेसकवै ।"

वैशालीके धनिक व्यक्ति सवके अतृप्त अभिलाषाके साथै आपनो सुखभोगके तृप्त करैके अतृप्त लौलसासे आपन पसिनके जिछलहा बिछलहा मरदसवके सहवास आनन्दमे लिप्त भ्याके अम्रपाली सम्पैतके अमार लग्या देनेछेलै । यै किसिमसे अतृप्त लौलसाके अवाधररूपसे भोगकरैवाली अम्रपाली आपन अमार लागल सम्पैत आ प्रतिष्ठामे डुगल अम्रपाली; परिवारसे परित्याग भेलहा बुद्ध जै दृष्टिसे ऐ दुनियाके क्षणभंगुरताके देखै छैले से दृष्टि ओकरा केनङ्गकेहेतै आ केनङ्ग केदेखतै

बुद्ध आपनो वड बलिष्ठ शरीरवला सुन्दर पुरूष छेलै । शरीरसे कान्ति फुटै छेलै । सिद्धिप्राप्त करैसे पहिने दर-दर बौआइत रहै, तखैनियो रजा बिम्बीसार

नहाइत पारखी वोकरा परखने छेलै आ राजकीय सम्मानके वडका ओहदा प्रदान करैले उद्दत भ्या गेलछेलै। अम्रपाली ऐ सर्वसिद्ध सुन्दर एवं बलिष्ट देहवला पुरूष बुद्धके बहौत खालसे देखरहलछेलै। वोकर अतृप्त भोगलौलसा बुद्धके बलिष्ट देहयष्टि आईगमे घीके काम कैलकै। जाव अम्रपालीके नैरहल गेलै त कहे लागलै।

'गुरू महाराज आपनौत बड सुन्दर पुरूष चिऐ आ अगर अपनेके हमर संगे आनन्द करैकेइच्छा हेतै त अपनेके वास्ते हम हरदम तैयार रहबै। इच्छा भेलापर हमरा जनकारी देल जेतै।"

कहै ले त आम्रपाली कैहदेलकै लेकिन बुद्धके आपन मौनरूपके अविचलित एव निरंकार रूपके देखलकै त वोकरा आपनै मनके कोनो कोनसे डर हेवे लागलै। वोईठामसे उठलै आ एहेनमानिन जेकरा एखैनतक तिरस्कारके कोनो प्रकारके अनुभव नै भेल छेलै आपनै तिरस्कृत हैतचैलगेलै। काम वसनासे पिडीत भ्याके आपन पसिन केलहा मरदसे आई प्रथम वेर नकारल गेलछेलै।

२५– पचिसम

जैन गुरू निगन्थ नातपुत्र जे ए समयमे एकटा छोट बजार नलन्दा जे बैशाली आ राजगीर के विचैमे परै छेलै तहै ठाम आपन धुनी रमैने छेलै। बैशालीमे बुद्धके आगमनसे नातपुत्रके शिष्यसवके असलनै लागे लागलै। उ सव बुद्धके आपनसे जवर शत्रु बुझहे लागल छेलै आ वहौत जैन शिष्य जे सव धार्मिक वर्तालापके मनसाय ल्याके गेल छेलै बुद्धसे विजित भेल छेलै जैमे धुरंधर पण्डित शत्यकके नाम सवसे पहिने आवै छेलै।

जते दिन तक इच्छा भेलै बुद्ध बैशालीमे निवास कैलकै आ तकरा बाद आपन पुरूष एवं महिला शिष्य सवके साथमे ल्याके राजगीर दिसर बिदा भ्या गेलै। रस्तामे नालन्दाके परिवरिक नामके आमके बगैचामे आपन आसन जम्या देलकै। नातपुत्रके दोसर विद्वान शिष्य दिर्घतपसी जाव सुनलकै जे बुद्ध नालन्दा पहुच गेलछै त उ वोकरसे भेट करे चाहलकै। परिवरिक आमके बगैचामे वोकर आगम न भेलैत बुद्ध वोकरा स्वागत सत्कार कैलकै। आपसि स्वागत सत्कारके बाद दिर्घ-तपसि आपन जगहमे बैठलै त बुद्ध वोकरा प्रश्न कैलकै।

"मित्र तपसि, हम सुनने चिऐ जे बहौत फकिरसव जेनङ्ग पूर्ण कस्यप, पाकुधाकत्यायन आ मक्खाली गोसल उसव आचरज रूपसे कर्म अथवा नैतिक

जिम्मेवारीके नै मानैछै लेकिन तोहर गुरू नातपुत्र ऐ जिम्मेवारीके सिद्धान्तके वडी जोरसे मानैछौ । वोकर कर्मके सिद्धान्तके विषयमे तो कुछ वर्णका कैरके हमरा कह ।"

"मित्र, नातपुत्र वास्तवमे कर्मके सिद्धान्तके मानैछै । लेकिन उ कर्मके दण्डके रूपमे स्वीकार करैछै ।"

"उ कथी हैछै ? दण्ड कथी करैले करम संगे जेतै ? जाव कोनो व्यक्ति बचन या कर्मसे खराब काम करैछै आ रजा वा वोकर कर्मचारीकेऐ सम्बन्धमे ज्ञातव्य भ्या जाइछै ताव वोकरा अंशतः दण्डके भागी हेवे परैछै । लेकिन उ त अधिनके विषय चिऐ । समाजसे मनता प्राप्त कामके कानूनके निर्माणमे ऐ बातके प्रवधान बन्या देछै जे एहेन एहेन प्रकारके काम कैलासे कानून विपरीत मानल जेतै आ तदनुरूपके दण्डके भागी हेतै । ई कानून एकटा थिती मात्र चिऐ । ई सवत देश देशमे आ समाज समाजमे फरक रहैछै । एकटा कानून कोनो देशके वास्ते अपराध मानने रहैछै आ वोकर विपरीत कार्य करैवलाके अपराधी घोषित क्याके सजायके भागीदार बनबैछै । लेकिन वोहै प्रकारके कानून दोसर समाजके वास्ते पारितोषित भ्या सकैछै ।"

"तो जे कहलिही मित्र से बिल्कुल साच चिऐ । समाज समाजके आ देश देशके ऐन नियम फरक फरक हैछै । ई कानून सवत समाजिक मनतामे आधारित रहैछै । लेकिन नातपुत्रके नजैर मेत कर्म एकटा एहेन कानून चिऐ जे सवदेशमे, सव समाजमे आ सबजिवमे समान छै । उ, सवके एकेटा धुरीमे बाह्लने छै। ऐसँ बचैके कोना प्रकारके उपाय नैछै । एखैन जे अपना सव अनुभव क्या रहल चिऐ, चाहे उ सुखके अथवा दुःखके दर्शावै छै, सवटा पहिने केलहा कामके कारणसे बाह्लछै । एखैन जे काम अपना सवकरै चिऐ से भबिष्यके बाट जोहै चिऐ ।"

"कीत एकर मतलव इ भेलै जे कर्म एकटा एहेन कानून चिऐ जे व्यक्तिके बहार से हैछै। कोनो प्रकारके अजगुत बल वा शक्ति मनुष्यसे स्वतंत्र रैहके मनुष्यपाहि करावैछै । अगर बात ऐ प्रकारके छै त नातपुत्रके कर्मकेसिद्धान्त मे आ मक्खाली गोसल योगी जे कर्मके सिद्धान्तके नै मानैछे कोन फरक भेलै ? गोसल सरिखा एकटा विद्वान पुरुष, जेनङ्ग हम बुझहचिऐ, विश्वास करैछै जे मनुष्य आपन सत्वसे कोनो भी प्रकारसे काम करैले शक्ति हिन छै किएकत संसारके सवचिज बिना कोनो हेर फेरके एकेटा नियमके रस्सामे बाह्लल छै ।"

बुद्धके बिरोधके प्रतिउत्तर दैके वास्ते तपसिके वडा कठिनाई भ्या रहल छेलै। उ एकक्षण बिचार कैलकै त वोकर आइख चमकेलागलै।

"मित्र, नातपुत्रके सिद्धान्तसे गोसलके सिद्धान्त वास्तवमे बहौत फरक छै। देखैनै चिही जे गोसल मनुष्यके सत्वके तकार करैछै तै ठाम नातपुत्रनै करैछै सांचपूछ त नातपुत्र आदमीके केलहा कामके महत्वमे बेसी जोरदै छै। एहेन काम आदमी आपन नियंत्रणके कमजोरी भेलापर मात्र करैछै। तखनी ई बाहरी प्रभावसे प्रभावित रहैछै आ एनङ्ग भ्या जाइछै त आदमीके दुःख भोगेपरैछै सेह्या दुःख भोगनाईके कानूनी शव्दमे दण्ड कहैछै।"

"लेकिन तपसि तोहर कहैके मानेकी ई भेलौ जे आदमी के जे आपन कर्मके अनुसार दुःख भोगे परैछै तै मे उ आपन काम इच्छा अथवा अनिच्छा, चतेन अथवा अचेतन अबस्थामे रहैछै ?

"हृ मित्र, मनुष्यके इच्छा मात्र कोनो महत्वनै राखैछै। यैमे कर्म स्वयंके कोनो मतलव रहैछै। एक आदमी एकटा छोट जीव माने एकटा चिमटीमे लात ध्या देलकै। ई सत्य भ्या सकैछै जे उ चिमटीके नै देखलकै आ उ वोई चिमटीमे चेतन भ्याके लात नै देलकै लेकिन जहा तक चिमटी के सवालछै तै मे लात दै चला आदमी जाइन के वा नै जाइनके देलकै त उ बेचारा जिवके त [अपहत्या भ्यागेलै। उ वोई आदमीके लात आ भारसे मृत्युके प्राप्त क्या लेलकै नातपुत्र वडा करूणमय पुरूष चिऐ, हमर असल मित्र। ई वोकर अहिंसाके आदर्श सिद्धान्त चिऐ।"

हम नातपुत्रके प्रत्येक जिवके प्रति भेलहा असिमित करूणाके धन्य बुझहैं चिऐ। लेकिन अनजानमे केलहा कामके वास्ते कथिले कोई भागीदार हेतै अनिश्चित भ्याके अनजानसे भेलहा गेलहा कामके सम्बन्धमे उ व्यक्ति दण्डके भागीदार कोन हिसाबसे भ्या सकतै सेटा हम नै बुझहै सकलिऐ। ऐ प्रकारके कामके सम्बन्धमे कोनो प्रकारके मूल्यांकन करैसे पहने ऐ कामसे केकरा जिम्मेवार आ केकरा दोष देवै तकर निर्णय कथीलेने करवै ? कीतो ई नै विचार करै चिही जे वोई आदमीके निर्दोषिता ततवेहेक महत्वपूर्ण छै जतहेक ओई चिमटीके प्राण।

तपसि चुपे छेलै। बुद्ध आपन प्रश्न पूछैतगेलै।

"नातपुत्रके विधान अनुसार क्या प्रकारके दण्ड विभाजन भेलछै, तपसि ?"
"उ तीन प्रकारके दण्डके प्रवधान राखने छै, शारिरिक बाचिका आ मानसिक।"

"ए तिनुमे नातपुत्रके दृष्टीमे कोन सवसेबेसी दावेदार छै ?"

"शारीरिक दण्ड बेसी दुःखद् है छै मित्र । तपसि जबाव देलकै ।"

"हमहू तहिनङ्ग बिचार करैं चिऐ ।" बुद्ध कहलकैं । नातपुत्रके दर्शनमे ई भेनाई अवश्यमभावी रहैं । हम सुनने चिऐं जे तोहर गुरू नातपुत्र बडी दुरके बात पकैडके आपन व्यवहारिक काम करैछै, जेनङ्ग बाटमे चलैतखिन बाटके बरहारैत चलैछै जैसे कोनो जिवके लातसे नै मारे सकबैं अथवा नाकमे कोनो पातर कपडा ल्याके सांस लेवै जैसेकि सासके हावाके मार्फत कोनो जिव भितर ज्याके मृत्युके प्राप्त क्यालकैतैं आ तकर पराछुत लागतैं ।

तपसी चुपैं रहलैं ।

तपसि हमहू आन जिवमे दया क्याके करूणाके समर्थन करैवला मेसे चिऐ आ अहिंसाके उपदेश सेहो दै चिऐं । लेकिन तो ईं कथीलेने विचार करैं चिही जें नातपुत्रके दर्शन कोनो भी प्रकारसे व्यवहारिक नै देखैं चिऐ, दण्डसे बचनाई असम्भव देखैं चिए । ए दुनियामे त कतहेक एहेन जिव सबछै जेकरा हम आपन खाली आइखसे दृष्टी गोचर नै क्या सकैं चिऐ त एकटा व्यक्ति नै देखलहा चिजके कोन प्रकारसे दुःख नै पुग्या सकतै ? ई त वास्तवमे ऐ दुनियाके प्रत्येक जिवके ऐ दुनियामे निवास करनाई असम्भव क्या देतै ।" आब हमरा एकटा और प्रश्न पूछेदे, तपसि ।"

नातपुत्रके दर्शन सिद्धान्तके बाटमे अग्रसर भेलासे स्वतंत्रता (सिद्धि) प्राप्त करैंके माध्यम कथी हैछै ?

"मित्र, नातपुत्र विश्वास करैं छै जे दुई प्रकारके प्रक्रियासे सिद्धिके प्राप्ति भ्या सकैछै । पहिनका व्यक्तिके आपन केलहा कर्मके दण्ड स्वयं निर्धारण क्याके तदनुरूपके भुगतान आ भविष्यमे ऐ प्रकारके दण्डके फेरसे भुक्तान करैले बाकी नराइखके क्या लेबक चाहीं । एना करनेसे व्यक्तिके पहिनका गत पाप सबटा धव्याल जाइछै । स्वयं शरीर सधना वा अपनाके कष्टमे दयाके सधना रत भनाईके उद्देश्य यहैंमे निहीत छै । आ दोसर नया कार्यमे आपन प्रवृतिके नियंत्रण केनाई आवश्यक छै जैसे लवका पाप समूहसे तीन लाठी फराके रहैंके भाज भेटैछै आ व्यक्ति भबिष्यके वास्ते सचेत रहैछै । ई दुनु प्रकीया व्यक्तिके सिद्धि प्राप्त करैंके सक्षम बाट देखबैं छै आ जेकरा नातपुत्र प्राप्त क्या चुकलछै ।"

"अकरमण्यताके जिन्दगीके कोन उद्देश्य भ्यासकैछै तपसि ? तैसेत मनुष्य आ एकटाबिना जानके बस्तु वा पाथरमेंकोनो प्रकारके फरक नै रहतै" बुद्धआपन कैफियत देलकै ।

तपसि आपन मुडी निचा माथे क्यालेलकै । उ बुद्धके तर्कके मरम बुझ्झ लेलकै।
"मित्र, तोहर शिक्षामे आ नातपुत्र के शिक्षामे कोन अन्तर छै ।"

"तपसि, कर्मसे सम्बन्धित नातपुत्रके सिद्धान्त वर्णन आ वोहै कर्मके सिद्धान्त सम्बन्धमे हमर वर्णकामे कैएक प्रकारसे फरक है । पहिने कर्म अकाट्य आ नै मेटवै वलाछै से विचारहम नै करै चिऐ। दोसर आपनासव एखैन वर्तमानमे जे अनुभव करै चिऐ से सवटा गतमे केलहा कामके फलाफल चिऐ तैमे विश्वास नै करै चिऐ, किएकत सवटा कामसे फलाफल के सम्भावना नैरहैछै । तेसर कामकेलासे प्राप्त भेलहा सवटा फलाफलके दण्ड रूपमे नै लैचिऐ । आ अन्तमे जाना जान भ्याके जे कोई व्यक्ति तेहेन काम करै छै तकर जिम्मेवारी के भागीदार वोकरे बुझहै चिऐ। एहै सव सिद्धान्तके अधारमे हमर धरणा केलहा क्रियाकलाप से मानसिक चेतनाके बेसी जिम्मेवार बुझहै चिऐ ।"

"वास्तवमेहमराबुझ्झ परै एजे क्रिया कर्मके सम्बन्धमे अपनेके धरणा नातपुत्रके धरणासे बहौत फरक छै। लेकिन ऐ फरकके अपने ततहेक छोटकरी मे कहलिए जे हम तकरा असल से नै बुझहै सकलिऐ । की अपने क्रिपा क्याके ऐ विषयमे कुछ विस्तारसे वर्णका क्या सकैचिऐ ?"

"ह, ह, हेतै नेत । एकर वर्णका करैमे हमरा वड खुसी लागत, तपसि । अच्छा पैहने हमरा सव पैहनका कारणके वुझहे परते । हम ऐ दुनियामे कतौ कोनो चिजमे निश्चित नियम नै देखेचिऐ । अपना सव आपन आपन अनुभवके अधारमे ऐ दुदियामे घटित हेवै वाला घटनाके परीक्षण करै चिऐ। उनिरिक्षण जे हमरा सव पूर्वमे परीक्षण क्याके अनुभव क्या नेने छेलिऐ तकरे अधारमे भविष्यमे हेवै वाला तहै प्रकृतिके घटनाके सम्भवनाके अडकल क्याके कहै चिऐ जे ऐ क्रममे आव एनङ्ग हेतै । कार्य-व्युत्पन्नके सिद्धान्त जेकरा हम प्रतिपादनकैने चिऐ यहै प्रकारके उत्पन्न हेवै वला घटनाके वर्णन करैछै । आव, कर्मसे कार्य बुत्युत्पन्न सिद्धाके ऐकेटा गुणकके समाहित करैछै । लेकिनयेमेऔर दोसर दोसर गुणक सव समाहितभेलछै। अगर सवटा कारणी यह्या चिऐ त की तो विचार करै चिही जे अपनासव एखैन जे अनुभव क्या रहल चिए से सवटा पहैनका केलहा कामके परिणाम चिऐ ।"

"नै मित्र, एहेन नै भ्या सकैऐ ।" तपसि जवाव देलकै ।

"तै तपसि यै दुनियाके चिजसव अपनासवके बससे बहार भेलाके कारणे कहियो कहियोविना कोनो करण दुःख भोगे परैछै । उदाहरणके वास्ते हमरा सव कतौके

यत्रा कैने रहैचिऐ आ विचैंमे अति वर्षाके कारण थोरहैक कला बाटमे बेकारमे बैठे परैछै । की एकरा हम आपन पहिनका करणीके फल कहवै ?'

"नै हम ऐ प्रकारके विचार नै क्या सकैचिऐ ।'

कहियो कहियो परौसिया शक्तिशाली राष्ट्र शक्ति मदान्ध भ्याके आन राष्ट्रमे लडाई करैले चढाई क्या दै छै आ तैसे हमरा सवके तकलिफ सहे परैछै । ई पूर्वमे केलहा कामके फलाफल कहियो ने भ्या सकैछै ?"

"नै, पूर्व कर्मके फलाफल कहियो नै भ्या सकैए छै ।"

लेकिन दुःखदैके मनसाय ल्याके अगर हम ककरौ नेकसान करै चिऐ आ उ हमरौ नोक्सान पुन्याके हमरा दुःख दैए त की ई हमर पूर्व कामके फलाफल हेतै कि, नै ?"

"ह, मित्र ई वास्तवमे आपने पूर्व कर्मके फलाफल चिऐ ।"

"अगर प्राप्त भेलहा दुःखद फलाफल हमरा सवके प्रत्येक कामके प्रतिदिधित्व नै करै छै त वोई दुःखद फलाफलके कर्मके प्रतिफल केनङ ठिमियावे सकवै । एहौसे बेसि त हमरा सव देखै चिऐ जे खराबोकाम केलासे बहौत आदमीसवके बाहबाही के साथे भौतिक पारितोषित से विभूषित है छै जेनङ्ग रजाके सेनासव अगर आपन शत्रुके सेनाके संघार क्याके क्षति पहुचावै छै त ओकरा मान पदबीके साथे इनाम सेहो भेटैछै । ऐ प्रकारके बात तो नै विचार करै चिही ।"

"ह. ई त अहिनङ्ग है छै ।" जवाव देलकै तपसी ।

"ऐसे त साफ जाहिर हैछै जे ऐ दुनियामे कोनो प्रकारके कोनो निश्चित नियम नै छै । तपसि ऐ दुनियामे चाइर प्रकारके कामछै एक प्रकारके कर्म जेकरा केलासे हरदम बढिया फलाफलके प्राप्ति हैछै । एकटा कर्म खराब हैछै तकरा कार्यान्वित करलासे हरदम खराब प्रतिफल के प्राप्ति है छै । एकरै अधार बन्याके कोई हरदम ई बातके विचार क्याके कोनो कर्म नै करक चाही जे हमरा बढिया हेवै करत बा खराब काम केलासे खराब हेतै । एहे प्रकारके तथ्यके अधार बन्याके एकटा निश्चित निर्णय ल्याके कोनो कार्यके कार्यान्वयन पक्षमे जेनाई हरदम उचित एवं महत्व पूर्ण नै हैछै ।

"मित्र अपने चाइर प्रकारके कर्मके विषयके कहलगेलै तैमे दुईटाके विवेचनाके सम्बन्धमे अपने वर्णका क्या सकैचिऐ ?"

"एकटा काम असल लागैछै, लेकिनवोकर परिणाम खराब निकलैछै आ एकटा काम खराब रहैछै लेकिन वोकर परिणाम बढिया बहरावैछै । यै सम्बन्धमे ककरो तुरन्ते ऐ निष्कर्षमे पुगनाई जे ऐ प्रकारके कर्म एवं कर्मके प्रतिफलमे कोनो प्रकारके सम्बन्ध नै छै से कहनाई विल्कुल उचित नैहै छै किएकत कोनो कोनो कामके प्रतिफल विपरीतार्थ है छै । ऐ ठाम फेरो तार्कित निष्कर्ष विल्कुल गलत अर्थमे प्रयोग भ्या जाइछै जेनाङ एक दुईटा घटना देखके सम्पूर्ण कारणीमे वोहै किसिमके निष्कर्षमे पुगनाई ।"

"ए दुनु ओर छोरमे नै पैंरके हम कर्मके व्युत्पतिके अधारमे विवेचना करै चिऐ आ एकर प्रतिफल सेहो व्युत्तपतिके अधारमे अधारित रहैछै । अगर यहै प्रकारके बहौत कारणीसव के परीक्षण जैसे एके प्रकारके ऐ कारणीसवके प्रतिफल समान हैछै त हम यै बातके माने लागै चिऐ जे ऐहेन कामके प्रतिफल ठिक तहिनङ्ग हेतै । ऐ प्रकारके कामके करनहार व्यक्तिके तहिनङ प्रतिफलके भुगते परतै जेनङ दैवी प्रतिफल रहै । लेकिन वास्तवमे उ कोनो प्रकारके दण्डके विधान नै भ्या सकैछै । मित्र, तपसी, हमर अडान छै जे मनमे गठलहा बात कर्मके रूपमे परिणत हैछै । मनमे नै गुइनके कोनो काम कार्यान्वित नै भ्या सकैछै चाहे मानसिक, वाचिक अथवा कर्मिक चिऐ । हम कर्मके यहै सिद्धान्तके विस्तारित करैचिऐ आ सवके सिखवै चिऐ ।" "जी, ई हिनङ्ग है छै । दिर्घ तपसी कहलकै आ बुद्धके नमस्कार क्याके आपन घर दिसर विदा भ्या गेलै ।"

तपसी आपन गुरु निगन्थ लग एलै आ बुद्धसे भेलहा वातचितके वर्णका क्याके सुन्या देलकै । "वडा बढिया तपसि, वर्तालाप विषयके वहस तो खो असलसे केलही तकर वास्ते हम तोरा प्रसंशा करै चिओ । हम खुसी चिऐं जे तो बुद्धके शिष्य नै भ्या गेलही । तो हमर शिक्षाके ठिक ठिक प्रतिनिधित्व कैलही ।"

ऐ वर्तालापके समयमे नातपुत्रके एकटा शिष्य उपाली वोई ठाम उपस्थित रहै आ सवटा बात सुनैत रहै । तपसीके सवटाबात बुझके उपाली नातपुत्रके कहै लागलै ।

"गुरु महाराज, हमरा बुद्धसे भेट करैके अज्ञा भेटक चाही । हम वोकरसे यहै विषयमे वहस करे चाहै चिऐ । हमरा विश्वास आइछ जे हम वोकरा ऐ विषयमे परास्त क्याके आपन मन अनुसारके बात कहया देवै ।

नातपुत्र एतहैक सुइनके खुसी भ्या गेलै ।

"जो, उपाली, तो जो आ शाक्य पुत्रसे वहस कर। हमरा विश्वास छं जे तो ए प्रकारके वर्तालापमे विजय प्राप्त करवीही।"

दीर्घतपसी नातपुत्रके विनित भावसे कहेलागलै।

"गुरू महाराज, उपालीके बुद्ध लग नै ज्या देल ज्या। आदमीके आपन वसमे करेले वोकरा मन्तर आवै छै। हम वडा मस्किलसे वचे सकलिऐ। कोनो कोनो ऐहेन कारण भेलै जे उ गैहिरियाके हमर वातनै पकडलकै आ ने त हम आपन वातसे पिछैड सकै छेलिए। उपाली अपनेके बहौत विश्वासी कार्यकर्ता चिऐ। गुरू महराज, अगर उपाली बुद्धसे वात चित करत त उपाली आवश्यक रूपसे हमरा सवसे चिछुड ज्यात। उ एकटा उदार एवं विश्वासी शिष्यके रूपसे कार्य क्या रहल छै।"

ई सम्भवनै भ्या सकैए तपसि। उपालीसनके एकटा विश्वासी शिष्य अदना शाक्य फकिरके बात सुइनके वोकर शिष्य नै हेतै। फेर उपालि त एकटा वडा विश्वासी पंडित शिष्य चिऐ आ उ हमर सिद्धान्तके गहनतम विषयके बुझने छै। हमरौ वोकरमे वड विश्वास आइछ।

नातपुत्रसे आदेश भेलै त उपाली सोझहे परिवरिक आमके वगैचा जैठाम बुद्ध धुनी रमैने रहै, गेलै। बुद्धसे सक्षत्कार भेलै त आपसि नमस्कार सत्कारके वादमे उपाली कहलकै।

"महात्माजी, हम सुनलिऐ जे विद्वान दिर्घतपसीके अपनेसे कर्मके सिद्धान्त विषयमे खौ असल वर्तालाप भेल रहै। शारीरिक दण्डके तुलनामे मानसिक दण्ड जे वास्तवमे कोनो महत्वपूर्ण वात नै हैछै तकर विषयमे और कोन कोन असलका तथ्य भ्या सकैछै।

उपाली अगर तो ऐ विषयमे हमरसे बहस करे चाहै चिही त बहसके वर्तालाप कोनो युक्ति संगैत तथ्यमे अधारित हेवक चाही।

जी महात्माजी, हम ऐ वहसके कोनो भी पक्षमे तथ्यके अधारित तर्क मात्र पेश करव।

"उपाली, हम बुझहै चिऐ जे तोहर गुरू नातपुत्र पाइनके सम्बन्धमे चाइर प्रकारके अडान ने ने छौ। लेकिन जाव उ नदीके रस्ता भ्याके पार हैछै तखनी वडा छोट छोट अदृश्य जान सवके हत्या भ्या जाइछै तखनी तोहर गुरू नातपुत्र वोई हत्याके सम्बन्धमे कोन प्रकारके दण्ड विधान प्रतिपादन करने छै।"

"उ अनजानमे ऐ प्रकारके हत्याके काम कैलकै तँ येकर प्रतिफलके भागी उनै भ्यासकैछै ।"

"अगर उ सचेत अवस्थामे ऐ प्रकारके करणी कैलकै ताव ?"

"ताव उ पापके भागी भ्या सकैछै ।"

"नातपुत्र अपनाके कोन अवस्थामे सचेत बुझहैछै आ तँ अवस्थामे केलहा कामके फलाफल कोन श्रेणिमे राखैछै ।"

"हमर गुरूनातपुत्रएहेन कामके फलाफल त मानसिक दण्ड बिधानके श्रेणिमे राखैछै । उपाली जवाव देलकै ।"

"आव उपाली तोरा बिचार क्याके बात बाजे परैछै । तो त आपन बातके आपनै काटै चिही ।"

बुद्ध आपन किसिमके थोरहेक उदाहरणसव द्याके उपालीके चित बुझह्या देलकै जे मानासिक चेतनासे केलहाकाम शारीरिक कामसे प्राप्त भेलहाफलाफलमे बेसी जिम्मेवारी रहैछै । बर्तालापके अन्तमे उपाली आपन अव्यवहारिक ज्ञानके स्वीकार कैलकै आ वुद्धके शिष्य हैके निवेदन कैलकै । लेकिन बुद्ध उपालीके ऐ बिचारसे ततहेक खूसी नै भेलै ।

उपाली तोहर बिचारसे जे उचित लागैछौ सेकर । तोहर सनके पुरूषके वास्ते उचित चाइल चलन अपनेनाई वडा महत्वपूर्ण हैछै ।

"गुरू महराज, अपनेके विचारधरासे हम छकित चिऐ । जाव कहियो हम एकटा गुरू के छोडके दोसर गुरूलग जाइछेलिए त, उ गुरू संपूर्ण नालन्दामे आपनै हल्ला करने फिरै जे उपाली आईसे हमर शिष्य भ्या गेलै । आ महामान्यवर, हमरा खाली उचित चाइत चलन अपन्याके कर्तव्य करैके सलाह देल जाइछै । महामान्यवर हम अपनेके विचारधरासे पूर्ण रूपसे कायल भ्यागेलिऐ ।"

"हे भगत, बहौत समयसे तो आ तोहर परिवार नातपुत्र आ वोकर शिष्यसवके अवलम्वन भ्याके सेवा कैलहक । तँ कृपा वयाके ई बातके विचारकरहक जे उसवके अखैनीयो तोहर सहायताके खाचो छै ।"

एतहेक बात सुइनके उपाली बुद्धके विचारधराके और बेसी सराहे लागलै । एखैन तलिक लोक सव वोकरा गलत फहमीके समचार कहै छेलै जे बुद्धके वोकर सेवाके वडका अबश्यक्ता छै । आव बुद्ध आपनै कहै छेलै जे उ नातपुत्र आ वोकर शिष्यसवके सेवा करैत रह जावकी उ बुद्धके शिष्य भ्या गेलछै ।

ई समचार चारूकता फैल गेलै जे उपाली भगत बुद्धके शिष्य भ्या गेल । जाव ई समचार नातपुत्रके कानमे परलै त उ उताहुल भ्याके कहेलागलै जे भैरसक बुद्ध उपालीके शिष्य भ्या गलहेतै । एकर बिपरीत नै भ्या सकैए । तपसी एहिनङ्ग समचार ल्याके नातपुत्र लग एलै । सवटा समचार सुइनके नातपुत्रके किछधका लागलै ।

"तपसी तो जो, आ पतालगा जे बातमे कतहेक सत्यता छै ।

दिर्घतपसी उपालीके घरमे गेलै । घरके फटकमे द्वारपालसव वोकरा रोईक देलकै ।

"महोदय, यहै ठाम रूकलज्या । आई दिनसे उपाली भगत बुद्धके शिष्य भ्या गेलै । आई दिनसे नातपुत्र आ वोकर शिष्यके वास्ते उपालीके ई द्वार वन्द भ्यागेलै । ई द्वार आव महात्मा बुद्ध आ वोकर शिष्य सवके बास्ते हरदम खूगल रहतै । अगर अपनेके रासन पानीके आवश्यक्ता छै त एहै ठाम बैठल ज्या हम भितरसे आइनके अपनेके दयादेव ।"

"मित्र, हम तोहर अन्नके फभूखल नै चिऐ ।" दिर्घतपसी कहलकै आ चैल गेलै उपालीके घरमे भेलहा घटनाके सम्बन्धमे दिर्घतपसी सवटा बात नातपुत्रके कहलकै । समचार प्राप्त भेलापर नातपुत्रके ततहेव दुःख भेलै जे उ तुरन्ते लहु बोकरै लागलै आ वोकरैत वोकरैत आपन जिवन लिला समाप्त क्या लेलकै ।

२६—छविसम

नालदनासे धुनी उठयाके बुद्ध राजगीर एलै जते ओकर पुत्र राहुल सारिपुत्रके रेख देखमे रैह रहल छेलै । बहौत वरिससे बुद्ध आ राहुलके आपसमे भेट नै भेलरहे । जाव राहुलसुनलकै जे ओकर पिता बुद्ध के आगमन भ्या रहलछै त उ वडा उत्साहित भेलै । बुद्धके चरण परखारैके वास्ते जलके व्यवस्था कैलकै, विश्रामकेवास्ते स्थान तैयार कैलकै । जाव बुद्ध आपन स्थानमे बैठलै त राहुल ज्याकेसाटाङ्ग दंडोत कैलकै । बुद्ध राहुलके देखलकै । आव उ बच्चा नै रैह गेल छेलै । खाँ छरहर जवान भ्याके निकलल छेलै । बुद्ध बिचार करे लागलै जे राहुलके आव धार्मिक कृतके सवसे उपरका खाडहीके शिक्षाप्राप्त करनाई आवश्यक भ्या गेलै । आव उ सधारण तालिमी नहाइत रहतै से उचित नै छेलै ।

"राहुल हमर अनुपस्थितिमे तोरा केहेन लागै छेलौ ?"

"बहौत बढिया छेलै, पूज्यबर । महामना सारिपुत्र हमरमे वडा कृपा करने रहै छेलै आ नियम पूर्वक हमरा सिद्धान्तके व्यवहारिक शिक्षा द्या रहल छेलै ।"

"तो जे जिवनके व्यतितक्या रहल चिही, से की तोरा निक लागैछौ" ? बुद्ध पूछलकै ।

"जी, पूज्यबर" राहुल जवाव देलकै ।

"राहुल, तो जे जिवन व्यतित क्या रहलचिही, तै के सम्बन्धी तो अगा पछा बिचार करैं चिही, कि, नै ?"

राहुल चुपेचाप रहलै ।

"दर्पणके कोन काम है छै, राहुल ?" पूछलकै बुद्ध ।

"ई त अपनाके लिहारैके वास्ते तैयार केल ग्याल रहैछै ।" जवावदेलकै राहुल ।

"ठिक तहिनङ्ग राहुल, जावतो शारीरिक रूपसे चेतन भ्याके कोनो काम करैं चिही त ओई कामके सम्बन्धमे अगा पछा बिचार करे परैछै जेनङ्ग तो दर्पणमे अपनाके लिहारैं चिही । उ शारीरिक काम जे तो करलीही से तोरा दुःख देतौ, कि अनकारा दुःख देतै, कि तोरा आ अनकरा दुनुके दुःख देतै ? जाव तो ऐं प्रकारसे विचार करबिही जे इ काम करलासे हमरौ दुःख, अनकरौ दुःख अथवा दुनु गोडेके दुःख भ्या रहल छै त तोरा तै कामके बिल्कुल त्याग क्या देवक चही जे ई काम खराव छै आ दुःख दिसर ल्या ज्या रहलछै । ओहै प्रकारसे मानसिक आ वाचिक कामसे हरदम हटल रहक चाही ।"

"लेकिन राहुल, जाव तो देखैं चिही जे काइक, बाचिक वा मानसिक काम जेकरा करलासे अपना अथवा दोसरके अथवा दुनुके नोकसान नै है छै त उ कामके बढिया कैहके विचार करक चाही आ एहेन काम करैले हरदम उदत्त रहक चाही । तोरा ओहिनङ्ग काम करैके अभ्यास करैक चाही ।

राहुल आपन पितासे ई शिक्षा प्राप्त कैलकै आ बिश्वास पूर्ण ओई काममे तत्पर भ्याके कायिक, वाचिक आ मानिसक रूपसे लाइगगेलै त घोरबेहेक दिनके अभ्यासके बाद सिद्ध सन्त के खाडहीमे पुगलै ।

लेकिन ओकर पिती नन्द धार्मिक क्षेत्रमे एखैन तक कोनो प्रकारके उन्नतिनै करे सकने छेलै । आपन जेठ भाईके अज्ञानुसार यद्यपि नन्द फकिरी जिनवके कठिनतम अभ्यासमे अभ्यस्त छेलै लेकिन नन्दके वडा कठिनाई भ्या रहेल छेलै । फकिरी जिवनके कठिनतमक अभ्यास कैलाकै बावजूदो चित स्थिर नै भेलासे नन्द वडा कमजोर एवं दुबन्या गेलछेलै ।

एक दिन भोजनके वास्ते एकटा धनिक व्यपारीके निमन्त्रणामे बुद्धके संग नन्द एवं दोसर शिष्य सब गेलै। वोई व्यपारी के घरमे अति सुन्दर युवती सव नौडिके काम क्या रहल छेलै। जाव बुद्ध वोई धनी व्यपारीके निवासमेगेलै आ भण्डार चेतावे लागलै त उ सुन्दर नौडिया सव बुद्धके सुन्दरतासे मुग्ध भ्याके ओकर दिसर टक टकी लग्याके देखैत रहलै। वोई युवती मे सेएकोटा कनछीतरीयोनजैरसे नन्द दिसर नै ताकलकै जे लैटके सैंट गेल रहै। नन्द ऐ बातके अनुभव क्या लेलकै जे ओकर दिसर कोईयोने ताकलकै।

भोजनोपरान्त आबश्यक धर्म परिचयर्याके बाद जाव बुद्ध बासधारी बगैचा मे पुगलैत नन्द के निरसा के बुझ्झ गेलै त पूछलकै।

"तोरा कोन चिज चिन्तातुर क्या रहलछौ नन्द"? बुद्ध प्रश्न कैलकै। नन्द चुपे चाप रहलै। बुद्ध ओकरा दुईतिन वेर पूछलकै। बुद्धके तेसर बेर पूछलापर नन्द-आपन वातके गोप नै राखे सकलकै। बिना कोनो बात छप्याके नन्द सवटा वात कैह देलकै जे उ भोजन करैके समयमे देखने रहै।

"लेकिन नन्द कि तो शाक्य सुन्दरताके प्रशंसक नै छेलही" आपन हसकीके नै दव्याके बुद्ध प्रश्न कैलकै।

नन्दके आव कोनो वात वाजैके ठाम नै रैह गेल छेलै जेकि बिल्कुल सत्य छेलै। "ऐ सुन्दररी सवके मुकैवलामे कतै उ छौरी सवके बात मिल्याल ज्या सकतै एकर अगामे त उ सव बुढिया वानर्नी लखा लागैछै।"

नन्द धार्मिक जिवनके आनन्दले। तो यैं सव सुन्दरीसे बढिया बढिया सुन्दरीके आर्काषित क्या सकैं चिही।

वहौत जल्दी सन्त मण्डलीमे ई हाल्ला फैल गेलै जे सुन्दर सुन्दर युवतीके आकार्षित करैके वास्ते नन्द धार्मिक जिवनके वड उत्साहके साथ ग्रहण क्या रहलछैं। ओकर मित्रसव ओकरा देख देखके गिजोआवे लागलै जे असल असल छौडी सवके वास्ते उ धार्मिक जिवनके अगा बडह्या रहलछैं।

मित्र मण्डलीमे चललहा हल्लासे नन्द वडा दुःखीत एवं निरूत्साहित भेलै। तैं उ आव एकान्त बासके फैंसला कैलकै आ चितके स्थिर क्याके वडा कडा मेहनैत से धार्मिक जिवनमे ध्यानस्त भ्याके अपनाके नियंत्रण कैलकै आ बहौत छोट समयमे सवसे बडका लक्ष्य हासिल कैलकै आ सांसारिक बन्धनसे पूर्णतया मुक्त भ्याके स्वतन्त्र भ्यागेलै।

देवदत्त जे बुद्धके उत्तर दिसरके नमहरका प्रवासमे रजगीरं मे रहलै आ बिम्बीसार के सुपुत्र अजातशत्रुसे मित्रता गहलकै । बिम्बीसार त बुद्धके वडका भगत रहै लेकिन अजातशत्रुके ओकर राजनीती के शिक्षासे वडा डर है, जाइन ने जाइन बुद्धके राजनीति दर्शनके प्रभावसे हम मगहके राजा हवैके सौभाग्य प्राप्त नै करेसकबै तै अजातशत्रु आपन पिता बिम्बीसार एवं बुद्धके बिरूद्ध जालरचेलागलै। देवदत्तसे उ वडा असलसे मित्रता कैलकै जैसे कि उ आपन पापी इच्छाके पूरा क्या सकै ।

लेकिन अजातशत्रु से देवदत्तके मित्रता त वड महग परलै । ओकर धरम करमके सवटा बाट वडी जोरसे बिगडलै । अजातशत्रु बहौत सधारण रूपसे देवदत्त के आपन भौतिक साधनके वर्षा करे लागलै। देवदत्त ई नै बुझहे सकलकै जे सुख के ई सामग्री सव ओकर धरम करमके भविष्यमे कोन दिसर पुग्या देतै । जै चिजके वास्ते उ घरके परित्याग क्याके बुद्धके पछा पछा लागलै तकर बाट मे ई भौतिक सामग्रीके सुख भोग ओकरा आपन लक्ष्यसे दुरौग क्या रहल छेलै । आपन स्वभावसे निर्दोष देवदत्त आव वहौत भ्रष्टाचारी भ्या गेलै । दोसर सन्त सव सेहो बुझ्झ गेलै जे देवदत्त अजातशत्रुके वडका महजाल मे बाझ्झ गेलै । बुद्धके राजगीर आगमनके थोरबेहेक बादमे ओकरा सवटा समचार मालूम भ्यागेलै । बुद्ध देववत्तके करतूत आ करणीके असल नै मानलकै आ कहलकै जे देवदत्तके ऐ प्रकारके करतूत से ओकरा त दुःख हेवे करतै अनकरौ दुःख पुगैतै ।

एकदिन जाव देवदत्त महात्मा बुद्धके द्वारा आपन चरित्रके विषयमे केलहा टिका टिपणीके विषयमे सुनलकै त दुःख पकट कैर रहल छेलै तखनी अजातशत्रु निक समय देखके सलाह देलकै :

हमर पिता आब वड बुढ भ्यागेलै लेकिन मगहके समाजमे एखैनियो ओकर वड प्रसिद्धि छै आव ई समय चेलऐलै जे उ आव हमरा राज्याधिकारके सवटा बागडोर द्यावै आ तहिनङ्गे बुद्ध सेहो । ओहो आव बृद्धा अवस्थामे पुगलै । तै आव ई उचित भ्या गेलै जे देवदत्त जे बुद्ध के वालक समयसे परिचित आ आपने पितिओत भाइ भेलासे सङ्घके सङ्गठनके सवटा जिम्मेवारी ओकरै द्या दै ।

बहौत बढिया, आपने बहौत बढिया बात कहल गेलै । देवदत्त जे एखैन तलिकमे अजतशत्रुके जालमे पूर्ण रूपसे ओझ्झ्या गेलछेलै आ धार्मिक जिवन से वडि दूर पुइग गेल छेलै, तै अजातशत्रुके बात ओकरा खौ पसिन परलै आ दोसर बेर जाव उ बुद्धलग दर्शनके वास्ते गेलै त आपन प्रस्ताव राखलकै ।

"बबा महराज आव उमेरमे बहौत बेसी भ्याके वृद्ध अवस्थामे पुगल गेलै । सन्तके कामके बोझ सेहो हरदम चिन्ताके विषय बनल रहैछे । पहैनका लखा भ्रमण करनाईसेहो आव महात्मा दाजुके स्वास्थ्यके वास्ते हमरा ततेक बढिया नै लागैए । महात्मा दाजुके वास्ते समय आइवगेलै जे आव दाजु अरामसे सिद्धिके परिपूर्णताके आनन्दमे मगनरैहके आपन जिवन के आनन्दमय बन्या लज्या । सन्त मण्डलीके सङ्घके सवटा अभिभारा हमरा सौप देलज्या । अपनेके सन्तुष्टिके वास्ते हम आव ऐ मण्डलीके सञ्चालन करैमे अधिकार के वास्ते निबेदन करै चिऐ ।"

देवदत्तके ए प्रकारके प्रस्तावित बात सुइनके बुद्ध छकित भ्यागेलै । "देवदत्त, हम ई कहियो नै बुझहलिऐ जे हम ऐ सङ्घ मण्डलीके चलवैचिऐ । हमत खाली बाट देखवैबाला मात्र चिऐ । कोनो अधिकारीक व्यक्ति नै चिऐ । तो ई कथिले बुझहै चिही जे सङ्घ मण्डलीके चलवै वला कोनो अधिकारीक व्यक्ति हेवैक चाही ?"

"महामान्यवर, सन्त मण्डलीके सङ्घत वडी जोरसे बहौत वडका संख्यामे निर्मित भेलै । सङ्घ मण्डलीमे खाली लवका सन्त सव जे एखैन तक सिद्धिप्राप्त नै करनेछै ततबेहेक नै छै बल्कि महिला सव सेहो वहौत वडका संख्यामे सङ्घ मण्डलीमे प्रबेश कैलकं । तैंई जरूरी भ्या गेलै जे कोनो एकटा व्यक्ति ऐ सङ्घ मण्डलीके सुसञ्चालनके वास्ते हेवक चाही जैसे सङ्घ मण्डलीमे अनुशासनके साथ नियमके पालन हेवै ।"

"बहौत कहलिही, देवदत्त, बहौत भेलौ । सन्त मण्डलीके सञ्चालन करैके अभिभारा लैके जिम्मेवारी के बखान नै करै । अनकरा नियमके अनुशासनके पालन करैले सिखावैके बदलामे तो पहिने आपन नियमके अनुशासनमे रहैके बात सिख ।" बुद्ध कहलकै ।

ई बात देवदत्तके तामस चढबैले वडका बात छेलै । उ आव सन्त मण्डलीमे रहैके बिचार खतम क्या देलकै आ आव ऐ जिवनके त्याग क्याके फेर घर दिसर जाइले सेहो नै चाहै छेलै । तामस आ इख से उ ऐ सङ्घ मण्डली के त्याग क्याके चैल गेलै आ आपन सङ्घ मण्डली तैयार क्याके रहे लागलै ।

दोसर दिन जाव आनन्द भिक्षाटनके वास्ते राजगीर शहर दिसर ज्या रहल छेलै त देवदत्तसे भेट भेलै । भेट भेलापर देवदत्त आपन मनके बात कहलकै जे उ

आव दोसर सङ्गं मण्डलीके थपना क्याके रहे लागलछै । आनन्द जाव भिक्षाटनसे फिरके एलै त सवटा बात कहलकै । बात सुइनके बुद्ध कहल कै ।

सज्जन लोकसव मात्र बढिया काम क्या सकैछै । दुष्टसे बढिया काम नै क्याल जाइछै । खराब काम दुष्टसव असानीसे क्या लैछे । सज्जन सव खराब कामनै क्या सकैछै ।

२७– सत्ताइसम

बुद्ध राजगीरसे श्रावस्तीके वास्ते यात्रा कैलकै । जाव उ श्रावस्ती पुगलै त भिक्षाटनके वास्ते श्रावस्ती शहर दिसर ज्या रहल छेलै त लोकसव एकटा बाट दिसर नै जाइले बुद्धले रोकलकै । डाकू अंगुलीमाल एहै गलीमे रहे छै तै अपनेके ई रस्ता नै गेनाई दढिया ।

डाकू अंगुलीमालके हाथ लोकके लहुसे राङगलछै। आदमीके कनगुरिया औङ्गरीके मला पिनहैंके वोकर मनमे बैठलहा इच्छा अनुसार उ बहौत निर्दोष मरद आ जनिजातके हत्या क्याके आपन इच्छा पूरा कैलकै आ क्या रहलछै। कोशल राजके लोकसब डरसे घऱ्या गेलछै । की जाने कखनी आ कोने भरसे डाकू अंगुलीमाल केकरा हत्या करतै ।

"महात्मा बबा, तै अपने ई बाट नै गेल ज्या। डकूवा अंगुलीमाल यहै गलीके कोनो घरमे घोसरलछै । बहौत लोकसब वोकर हाथे मारल गेले आ बहौत गोडे ऐ गामसे पऱ्या गेलै ।"

बुद्ध वोकरा औरके बिन्ती भावके नै मानलकै । उ मनैमन बुझ्झ गलै जे अंगुलीमाल सधारण डाकू लखा धन सम्पैतके वास्ते लोक सबके हत्या नै करैछै। उ लोक सबके अंगुरी जम्मा करैके वास्ते हत्या कार्य क्या रहलछै। उ मनोबैज्ञानिक रूपसे मानसिकताके बिरामी चिए तै उ अंगुलीमाल एवं वोकर सिकार दुनुके बच्या सकैछै। वाटैबाट बुद्धके आपन निवास केलहा घर लग दने जाइत देखलकै त अंगुलीमाल आपनै छक्क परे लागलै । उ बिचार करे लागलै ।

"कोसलके सबसे बलगारहा लोकसव सेहो ई बाट नै चढहैछै । रजाके सिपाही सब सेहो ऐ बाट से दुरौगे रहे चाहैछै। केनङ्गके ई बाबाजी एसगरे ऐ बाट

वने लरैके हिम्मैत कैलकै । भ्या सकैछैं जे बबाजी जिवनसे थकित भ्या गेल हेतैं आ हमर हाथे मौरैले ई बाट जोहलकै जैसे हमरो आपन मला गाथैले एकटा अंगुरी भ्या ज्यात ।"

आपन तरूबाइर ल्याके उ बुद्धके खिहारैले वोकर पछा पछा गेलै । उ दौडके तरूवाइर सोझीय्याके बोकर दिसर फेंकके नै मारे चाहे । उ त एं बबाजीके विश्वास नै लागैवला साहस देखके छक परल छेलै जे ई कथीके भरमे ई बाट ताकलकै । तैं बुद्धके ललकारैत पूछेलागलै ।

"हे, ठाढहो बबाजी । जते तो चिही, हम, तोहरसे बात करे चाहे चिश्रौ । बुद्ध अंगुलीमालके बातके अनसुनी करैत आपन बाट नापैत रहलै । अंगुलीमाल दौडबो करै आ जोरसे बुद्धके ठाढहैले कहवो करै ।

"ठाढहो बबाजी, ठाढहो ।" लेकिन बुद्ध लग नै पुगे सकलकै ।

"हम ठाढ भ्यागेलचिएं अंगुलीमाल । की तो अपना ठाढ नै हेवै चाहे चिही ?' बुद्ध पूछलकै आ आपन बाट चलैले सेहो नै छोडलकै ।

अंगुलीमाल किंकर्तव्य विमुढ भ्यागेलै । उ बिचार करे लागलै ।

ई बबाजी, शाक्य कुलके बेटा साच भखैछै आ साच करनी करैछै । लेकिन यद्यपि ई बबाजी आपन बाट नपनाई नै छोडनेछै तैयी ई कहैछै जे उ ठाढ भ्या गेल छै । हम जे ठाढ भ्या गेल चिएं त कहैछै जे हम लरतै चिएं । एकर माने उ कोनो दोसर बात कहे चाहैछै ।

उ बुद्धके प्रश्न कैलकै जे आपन वाटमे रस रस चैल जाइछैलै ।

"महराजी, तो कहैं चिही जे तो ठाढ चिही लेकिन तो चलते चिही आ हम ठाढ भ्याके तोरा ठाढ हेवे कहे चिश्रौ जे हम लरतै चिएं आ ठाढ नै भेल चिएं । एकर माने तो कथी कहे चाहे चिही ।"

"अंगुलीमाल हम संसारके जिव प्राणीके दुःख दैले वा हत्या करैले त्याग क्या देने चिएं तैं हम संसारिक मोह भरमके चक्करसे दुरौग भ्याके ठाढ भ्यागेल चिएं । तोहर त बाते अलग, निर्दोष जिव प्राणीके लगतार हत्या करनाई तोहर दिनचर्या भ्या गेलछौ । एकर बिना तोरा कोनो कामनै चलैछौ । तो त वडका तेजधारवला खोलामे चलैवला बिना पतवारके लाह चिही । तोहर अगामे त भयानक खतरा एकदमसे तोहर साठे असिय्याल छौ । अगर तो आपन धन्धाके समाप्त नै करै चिही त तो कखनो समाप्त भ्या सकै चिही ।"

अंगुलीमाल डरसे थर थन्या गेलै ।

कोन प्रकारके खतरा हमर ठेसरैंमे श्रोगरने छै । श्रंगुलिमाल पूछलकै ।

"जावे तलिक तो बलगर श्रा तन्दुरुस्त चिही तावे तलिक तोहर जे मन हैछौ से तो क्या सकै चिही लेकिन तोहर एके रतिके भूलसे तोहर बिनास श्रवश्यम्भावी भ्या गेलछौं । रजाके सिपाही सबटा तोहर पछा लागल छौ । एक ने एक दिन उसव तोरा पकैंडके वान्हवे करतौं श्रा तोहर केलहा श्रपराधी कामके वास्ते सज्या देवे करतौ । श्रगर तो ऐ सब सज्यासे बचवो करबिही त श्रापन श्रपराध कानके समँझ समँझके श्रापन मृत्युके बिछोनामे कल्पैंत रह बिही श्रा से दुःख तोरादोसर जिवन तलिक खिहारतौ ।"

श्रंगुलीमालके रिढके ह्राडके भितर वने जुडका हवा वैह गेलै । उ श्रापन तरुवाइर सडक कताके खधियामे फेक देलकै । उ भगवान बुद्धके चरणमे श्राहि दवरके खसलै श्रा बिन्ती गोचर करे लागलै :

"दोहाई महात्माके ! श्रपने करूणकर चिऐ । श्रपने दया क्याके हमरा ऐ जिवनसे उवाइर देल ज्या । भविष्यमे हेवै वला हमर जिवनके प्रत्येक जंजालके झंझटसे बच्या देलज्या हम दया सागरके चरणमे श्रपनाके शरणगत बन्या सकै चिऐ ?"

"श्रा, महत्मा, श्रा ।" बुद्ध कहलकै ।

डाकू श्रंगीलीमाल, महात्माके शरणमे श्राईवगेलै श्रा महात्माके शिष्य भ्यागेलै । श्रंगुलीमालके साथमे ल्याके बुद्ध, श्रनाथपीण्डक निर्मित जेत कुटीमे एलै ।

बहौत जल्दी ई हल्ला श्रावस्ती शहरमे फैलगेलै जे श्रंगुलीमाल डाकू बुद्धके शिष्य सबके मंडली जेत श्राश्रममे घोसरलछै । डरसे लोक सब ई विश्वासकरे लागल छेलै जे श्रंगुलीमाल कोनो भी समयमे श्रावस्ती शहरमे उत्पात मच्या देतै । डरसे लोक सब बुद्ध श्रा वोकर शिष्य के दर्शन करनाई छोइड देलकै । लोक सब राज दरबारके फटकमे ज्याके उजूर करे लागलै जे रजा प्रसेनजित श्रापन सेना सबके श्रडर दयाके महात्मा बुद्धके श्राश्रम जेत बनमे पठ्याके श्रंगुलीमाल डाकूके गिरफ्तार क्यालै ।

रजा तोई ठाम श्रापनैसे जाइके निर्णय कैलके श्रा पाचसय सीपाहीके साथमे ल्याके जेत श्राश्रम दिसर बिदा भ्यागेलै । शहरके लोक सब डरसे एकठाम जम्मा भ्यागेलै श्रा रजाके सेना एवं बुद्धके शिष्यके बिचमे हेवै वला संघर्षके विषयमे बिचार करे लागलै । जाव रजा जेत श्राश्रममे बुद्धके नजदिक पूगलै त वुद्ध पूछलकै ।

"हे राजन, कोनो प्रकारके दुष्यकार्य भेलैं कि केनङ्ग तोरा कोनो परौसिया रजा चढाई क्या देलकौ कि केनङ्ग ?"

"जी, नै, महामान्यवर हमरा कोनो दोसर रजा चढाई नै करने छै। हमरा पता लागल जे डाकू अंगुलीमाल श्रावस्ती ऐलै आ यहैं जेत आश्रममे घोरसरलछै। महामान्यवर, उ बडा खतरनाक व्यक्ति चिऐ। तैं वोकरा पकैडके जहलमे रखनाई जरूरी छै।"

"लेकिन, राजन, जाव तोहे देखबिही जे अंगुलीमाल आपन केस मुड्याके बबाजीके हरदिनका पैहरन लग्याके, आपन घर द्वार त्याग क्याके घरबिहिन योगी भ्यागेलै आ जिव हत्य, कर नाई छोइड देलकै। चोरी डकैती से दुरौंग भ्याके एक छाक भोजन करनाई, शुद्ध बबाजी जिवनमे प्रवेश क्याके असलका जिवन व्यतित करैके सवटा व्यवहार करे लागलै से जे तो देखबिही त कथी करबीही ?" बुद्ध पूछलकै।"

महामान्यवर, अगर वास्तवमे उ एनङ्ग करे लागलछै त वोकरा हम आदरसे नमस्कार करवैं। वोकरा भिक्षा देवैं आ वोकर सुरक्षाके प्रवन्ध करवैं। लेकिन महामान्यवर, ई त बिल्कुल असम्भव बात हेतै। अंगुलीमाल त एकटा दुष्ट मनसाय के व्यक्ति चिऐ। उ त कोसल राज्यमे एक प्रकारसे बडका उत्पात मच्या देने रहै। उ आदमी केनङ्गके असल भेलै आ केनङ्गके बबाजी के जिवन अपनैलकै ?

एखैनतलिक अंगुलीमाल आपन मुडी निचामाथे क्याके बुद्ध लग बैठल रहैं आ सवटा बातचित सुनैत रहै। बुद्ध आपन अंगुरीके इसरासे रजाके अंगुलीमाल दिसर देग्याके कहे लागलै।"

"राजन, अंगुलीमाल यह्या चिऐ।" अंगुलीमालके देखके रजा डरसे थर थर कापे लागलै वोकर केस हाड़ भ्यागेलै। बुद्ध वोकर डरके बुझहलकै त कहे लागलै।"

"राजन, डरावैके कोनोटा बात नै छै। आव अंगुलीमाल लोकसवके अंगुरीके मला नै पिह्नने छै।"

अंगुलीमाल आपन मुडी उठैलकै आ रजा दिसर तालककै आ बिहुसे लागलै। ई बास्तव मे कोनो दुष्टके दुष्टतापूर्ण चरित्रके परिलक्षित हेवै वला बिहुसनाई नै छेलै। एकर बदलामे वोकर बिहुसनाई कोनो अनिश्चित व्यवहारके नै दर्शाबैछेलै बल्कि निर्दोष व्यक्तिके बलत्कार हत्याके वास्ते रजासे क्षमा जचनाके प्रश्नात्मक भाव भोरलरैहै। ई कृपादृष्टिसे परिपूर्ण एवं सचेष्टताके प्रदर्शनकरै छेलै।

"रजाके डर हृयागेलै। उ महात्मा अंगुलीमालके लगमे गेलै आ पूछलकै।

"महात्मा अंगुलीमाल वडा आदर्श परिवारसे सम्बन्धित छै, छै किनै ?"

"जी, सरकार, महरजाधिराज !" अंगुलीमाल मुडी निचामाथे क्याके धरती दिसर ताकैत रजाके कनिए जोरसे कहलकै।

"महात्मा अंगुलीमालके पिताके परिवारके विषयमे हम पूइछसकै चिए ? महात्माके मैयाकेपरिवारके हम जाइन सकै चिऐ ?"

"हमर बाबु गागा छेलै आ मैया मन्तानी छेलै।"अंगुलीमाल जवाव देलकै

"गागा-मन्तानीके आदर्श सुपुत्र केहम बिन्ती करै चिऐ जे हम वोकर बास्ते पहिरन, भिखके भोजन, निवास स्थान एवं दवाई दारूके सवटा प्रबन्ध मिल्याके पूराकरैत रहवै।

"हे राजन, ए सबके वास्ते कोनो प्रकारके चिन्ता करैके आवश्यकता नै छै। हम जङ्गलमे निवास करनाई बढिया बुझहै चिऐ। भिक्षाटनसे प्राप्त भेलहा अन्न मात्र भोजन करे चाहै चिऐ। कमर-बोरा के पहिरन लगवे चाहै चिऐ। हम तीनटा पहिरनमे सन्तुष्ट हेवे चाहै चिऐ।

अंगुलीमालके चिन्त स्थिरके कर्तव्य परायणतासे रजा द्रबित भ्यागेलै। उ बुद्ध दिसर मुखातिव भेलै आ कहे लागलै।

"इत वडा आचरज भेलै ,महामान्यवर। ई त वडका कमालके बात भेलै महामान्यवर। अपने त अनहोनीके होनी क्याल देल गेलै। नै हेवे वलाके बन्या देलगेलै आ से करैले कोनोप्रकारके हथियारके जरुरी नै भेलै। गजब भ्या गेलै। महामामान्यवर , जतहेक दिनतक सम्भवछै प्रभु आपने श्रावस्तीमे निवास केलज्या यैमे हमरा सबके बहुत लाभ एवं सुख देखैचिऐ। आ आव महामान्यवर, हम राजके पेचिदा काममे व्यस्त चिऐ तै प्रभुसे अज्ञा चाहै चिऐ।"

"भ्या सकैए राजन, तो जे असल बुझहै चिही सेह्या कर।"

रजा प्रसेनजित बुद्धके अभ्यर्थना क्याके चैल गेलै।

एक दिन अनगुता पहरमे अंगुलीमाल भिक्षाटनके वास्ते शहरमे गेलै आ घर घर ज्याके भिक्षाके जचना करै। तहैमे उ एकटा घरके द्वारमे पुगलै त भितरसे कोनो जनिजातके कानै कुहरैके अवाज सुनलकै। ई एकटा छोटका घरछेलै आ ऐमे रहैवला व्यक्ति बड गरिव आ अपहेलित लागै छेलै। एङ्गनाके देहरीमे कनहीक काल खडा भेलै। वोकरा जाव भिख देलै कोई नै बहरैलै आ घरके भितरसे

जनिजातके तकलिफके स्वरके कननाईके अवाज सुइनके अंगुलीमालके पूरा शंका भ्या गेलै जे भितरमे कानै वालीके तकलिफ छै आ वोकरा सहायताके वडा जरूरी छै। उ घरके देहरीसे हुलकी देलकै त देखलकै जे घरके भितरमे एकटा अवला बिछौनामे प्रसुति वेथासे छटपटचा रहलछै आ बच्चाके जनम दैके वास्ते भेलहा दरदके तकलिफमे वेहोसहेवे चाहैछै। उ बिचार करे लागलै।

"बच्चा जनम देनाई त प्राकृतिक चिऐ। लेकिन ई अवला त जेना अप्रकृतिक बेदनासे छटपट्या रहलछै। भ्या सकैए जे बच्चाके जन्म दैले कोनो गडबडी भेलहैते आ तहैसे जन्मासोच नैभ्या रहलछै आ अवला छटपट्या रहलछै।"

अंगुलीमाल भैरसक सहायता करे चाहलकै लेकिन जाब वोकरा किछो नै फुरैलै त उ दौडैत आश्रममे बुद्ध लग गेलै। आ सवटा वृतान्त कहलकै। अंगुलीमालके बात सुइनके बुद्ध कहलकै।

"अंगुलीमाल तो घुइमके फेर वोहै घरमे जो वोई ठाम ज्याके तो वोई अवलाके सामने खडा भ्या जाइहै आ दरदसे छटपटवैत मनके दोसर दिसर लजवैले कोनो कोनो चिज मंत्रर लखा गुनगुनवे लागिहे, तैसे ई सम्भवना छैजे वोकरा किछ राहत भेटलै।

"हम कोन मन्तर फद फदैवै?' अंगुलीमाल पूछलकै।

"तो ई कहे सकै चिही 'धरमके बहैन हम धरमा धरम कहै चिऔ जे जै दिनसे हम जनम लेलिऐ तहियासे जाना जान हम कोनो जिवके हत्या नै करने चिऐ'। अगर ई वात साच चिऐ त वोहै साचके धर्माथतो आ तोहर छवाके शान्ति भेटौ।"

"लेकिन, प्रभु, हम त ई बात नै कैह सकै चिऐ। ई त बिल्कुल गलत बात चिऐ"। अंगुलीमाल जवाव देलकै।

भगवान बुद्ध हांसे लागलै। उ वडा खुसी भेलै जे अंगुलीमाल सचेत भ्याके जवाब देलक।

"ह, अंगुलीमाल जे गलत भ्यागेलै से व्यवहारिक नै भ्या सकैछै। झूठके उच्चारणके माध्यमसे बढिया प्रतिफलके आस केनाई कोनो भी बढिया शिष्यके असल बाट नै भ्या सकैछै। एखैनियो उपरका कहलहा मन्तरके बिना प्रतिरोध कैनै तो ई कैह सकै चिही 'धरमके बहैन जहियासे शाक्य शिष्यमे हमर आदर्श जनम भेलै तहियासे हम जाना जान कोनो दोसर जिवके हत्या नै करने चिऐ'। वोहै सत्यके धरमसे तो आ तोहर छवाके शान्ति भेटो।"

अंगुलीमाल फेर वोई घरमे एलै। वोई जनिजात लग ज्याके ठाढ भ्यागेलै श्रा उपरका सिखैंलहा पाती वोई श्रवला लग तीन बेर भषलकै। मन्तर कानमे गेलाके तुरन्ते बादमे उ जनिजात बिना कोनो दरद श्रा तकलिफके छवाके जन्म देलकै।

थोरहेक लोकसब जे अंगुलीमालके देखने रहै से देखलकैजे उ एकटा घरसे वह्न्याके श्रावै छेलै त वोकरा चिह्नलकै श्रा बिचार करे लागलैः

"बुद्धके शिष्यसब बिना निमन्त्रणाके ककरौ घरके भितरमे नै जाइछै। भिक्षाटनके वास्ते एलहा शिष्यसब घरके द्वारमे मुडी निचा माथे क्याके ठाढ भ्या जाइछै श्रा भिक्षा मांगैत रहैछै। यै घरके श्रादमी एखनी घरमे नै छै। उ सबदिन जङ्गल ज्याके जारन श्रानैछै श्रा बेचके श्रापन पैतपाल करैछै। दुष्ट श्रादमी फेर श्रापन दुष्टाइमे उतैर गेलै श्रा भगवान बुद्धके सेहो कलंकके टिका लग्या देलकै।"

एतहेक कैह्के उ लोकसब अंगुलीमालके ढोङ्गा, पाथर लाठी श्रादिसे मार-पिट करे लागलै श्रा वोकरा घायल क्या देलकै। मारापिटीमे वोकर कपाड फुइट गेलै श्रा लहु बहारावे लागलै। पहिरनके उपरका कपडा चिरी चोत भ्या गेलै। भिक्षापात्र फुइट गेलै श्रा तहिनङ्ग दशामे अंगुलीमाल भगवान बुद्ध लग जेत श्राश्रममे पुगलै। अंगुलीमालके दशा देखके बुद्ध कहलकै।

"सहे परतौ, अंगुलीमाल, ई सब सहे परतौ। ई संसार मूरूख एवं उद्धत लोक सबके बास करैके स्थान चिऐ। एकवेर खराव छापके मेटबैले बहौत दिन लागैछै। तहिनङ्ग श्रसल छापसेहो मेटावैले बहौत समय लागै छै। एकरा तो श्रापन करमके और मजवूत करैके चानके बुझही। धार्मिक जिवन यापन करैके बाटमे तो श्राव बहौत जल्दीमे बढिया काम करैके छाप लग्या देवही श्रा तो श्रापन पहैनका कामके प्रतिफलके वास्ते फेरसे दुःख नै भोगबिही। खराब कामके प्रतिफलसे सुतंत्र हैके ई श्रसलका बाट चिऐ।"

एकान्त जिवन, सबसे दुरौग, कर्तव्यनिष्ट भ्याके एकदम एकमना ध्यानसे अंगुलीमाल बहौत जल्दीमे श्रापनै करनी श्रा करतूतसे सन्तके सबसे उपरका खाडहीमे पुगैले सफल भ्या गेलै। जैले लोक सब घर त्यागक्याके फकिरी जिवन श्रपनावैछै श्रा ध्यान लगादैके कोशिस करैछै तैमे उ सबसे उच्च स्थान प्राप्त कैलकै।

२८—अठाइसमे

बुद्धके समयमे भारतवर्षमे महिलाके स्थान दोसर दर्जाके नागरिक समान रहै। मगह, कासी एवं कोसलके समाजिक संगठनमे महिला सवके कोनो प्रकारके गन्तीमे नै राखने छेलै, ऐ सवके बावजूद किछ महिला सव जेना गार्गि, मैत्री जे समाजिक काम धाममे जनता समक्ष खूलारूपके बहस, सभा आदिमे उपस्थित भ्याके आपन क्रीया कलापके अगा त बढहावै लेकिन ई सवके आपन क्षमता देखवैंके बहौत कमे अवसर रहै।

महिलाके विरूद्धमे कतहेक आ केहेन पूर्वाग्रहसव जोडल रहै तकर ठेकान नै। बहौतके सुझ बुझसे त जनि जातसव मात्र पुरूषके आनन्द देवैंवाला साधन मानल जाई छेलै। थोरहेक गोडे ई विचार करैंछेलै जे मौगीके काम त घरके भितरमे रैहके घरायसी काम धन्दा करनाई एवं जन्मेलहा बच्चासवके पालन पोषण करनाईमे सिमित रहैंक चाही। बहौत व्यक्ति ई विश्वास करैले नकार करै जे पुरूषके समान महिलासव अध्यात्मिक एवं धार्मिक जिवनके उच्चतम सफलता प्राप्त करैमे सक्षम हैछै। सवसे वडका बात त ई रहै जे मौगी कोनो राज्यके राज्याधिकारी भ्याके शासन करे सकते से कोईने पतियावैले तैयार छेलै।

उदाहरणके वास्ते शीलाके विश्वास बन्याल गेलरहै जे मौगी सव काम वसनाके खेलवाडके बस्तु मात्र चिऐ, कोनो प्रकारके स्वतंत्रताके सहभागी प्राप्त करै वला जिव नै चिऐ। सोमनीके कहल गेल छेलै जे वोकर ज्ञानके कमीके कारण उ कोनो प्रकारके अध्यामित्क जिवनके सफलता प्राप्त नै करे सकतै। बहौत दिन तलिक बिमलाके ई कैहके भूल्याल गेल छेलै जे वोकर देहसवसे सुन्दर छै और दोसर कोनो चिजनै छै। नन्दोत्तरी एतवेंहेक जानै छेलै जे अध्यात्मिक क्रीया कलापमे उ सुरूज आ चानके पूजा क्या सकै छेलै तैसे बेसीके बात वोकरसे बहौत वहार छेलै। सोनिया एतवे हेक बुझहै छेलै जे उ खाली बच्चा जन्मावैले जन्मलछै। मिठनी तीनीएटा चिज जानै छेलै घरके काम, भात भन्सा आ मरदके खेलवाड।

शाक्य महिला मण्डली जेकर नेतृत्व बुद्धके सतमहताईर गौतमी क्या रहल छेलै आ जे सव बुद्धके सन्त मण्डलीमे प्रवेश क्याके महिला वर्गके समाजिक उत्थानमे रचनात्मक योगदान दैकै प्रारम्भ करै छेलै परिबर्तनके असलका लक्षणके द्योतक भेल छेलै। यै प्रकारके काम करबाहीसे महिला बर्गमे एक प्रकारके साहस आ उमंगके संचार भेलछेलै। वोकरा सवके धार्मिक एवं नैतिकता सम्बन्धमे पुरूषके

समान अधिकारी हैके बाटमे भेलहा विघ्न बधाके हटयाके निर्मल मार्गके खोजी करैके असलका बाट भेटल छेलै ।

तैयो, सिद्धी प्राप्त कैलाके वादौमे महिला शिष्य सवके सामने एकटा समस्या पहाड भ्याके ठाड भ्या गेल छेलै । शोभा जे एखनी उमेर वाली सुन्दरी रहै आ जे सिद्धी प्राप्त क्या नेने छेलै एकटा आमके बगैचा जे एकान्त आ शान्तपूर्ण बातावरण मे रहै, ऐ सव विषयके सम्बन्धित समस्याके समाधान करे परै । उ बुद्धके एकटा असलका शिष्य रहै ।

एक दिन जाव शोभा भिक्षाटन क्याके शहर दिसरसे वगैचामे लौट रहल छेलै त एकटा छिनार प्रकृतिके पुरूषके फेला परलै । शोभा वोकर दिसर ताकल कै त वोकर मनसाय बुझ्झगैलै आ पूछलकै ।

"मित्र, हम तोहर बाटमे कोनो गल्ती काम त नै केने चिऔ जे तो हमर बाट छेकै चिही ? हम आदर्श बुद्धके शिष्या चिऐ । हम पवित्रताके पन्थ पकैडके चलल चिऐ । येहेन कोन कारण भ्या सकैऐ जे तो हमर बाटमे ठाड भ्या गेलही ।"

"तो एकटा युवती आ सुन्दैर जनिजाइत चिही । तो ऐहेन कोन गल्ती काम कैलही जे तोरा ई हरदिनका पैहरनके पिह्ने परलौ आ दोसर बबाजी नहाइत भिख मांगे परैछौ । यै पैहरनके फेक दहै । तोहर देह त कासीके बनल रेसमी कपडामे सज्याल रहैक चाहै छेलौ । यै प्रकारके गन्दा कमरके बनलहा हरदिनका पैरहनमे नै हेवक चाहै छेलै । प्यारी, हम तोहरसे वेसी कोनो चिजके प्रेम नै करने सकने चिऐ । अपना सवके जिनगीमे आनन्द मय सुख भोगैक चाही । ई त बसन्तके प्रथम प्रभात चिऐ आ जिनगीमे आनन्द लैके वास्ते ऐसे बढिया समय नै भ्या सकैछै । गाछ बिरीछ फूल्या गेलछै आ फूलके सुगन्धित बसना बातावरणमे मौंध मास आनने छै । हे मृग नैनी, हम तोरा सव प्रकारके अराम आ सुख देवौ । तोहर ई सुन्दर शरीर पोखैरसे तोडलहा कमलके फूल नहाइत कथीले रौदमे सुखावै चिही?"

"ई शरीर जे अन्ततः एक दिन अछियामे भसम भ्या जेतै तकर विषयमे ऐ प्रकारसे बिचार करनाई कोन तत्वके संकेत करैछै ?" पूछलकै शोभा ।

"ऐ दुनियामे बहौत कम आ कोनो कोनो एहेन चिजछै जेकरा सुन्दर कहल ज्या सकैछै । हे सुन्दरी, तैमे तोहर आईख सवसे असलछौं । जे कोईयो एकरा एकबेर देखनेने छै से कि कहियो बिसन्या सकैछै ? हे मृग नैनी, हम तोरा बिन्ती करै चिऔ जे तो ऐ निरस जिनगीके छोड आ हमर संगे बिहार क्याके जिनगीके प्रकृतिके

अद्भूत लिलाके आनन्दमे झिझरी खेलाईत रह । तोहर दर्शन भेलाके बाद हमे ककरौसे प्रेम नै करलिए ।"

"मित्र, जै बाटमे कोनो प्रकारके उन्नतिनै छै तै मे चलैके कोशिस नै करै। बुद्धके शिष्यसे छिनरपनिकाम त हिमाल पहाडसे धस कुदनाई मानल जाइछै। हम शारीरिक सुखके सवटा तृष्णासे बहार भ्या गेल चिऐ आ हम सधारण जिवन व्यतित करैले असल मानै चिऐ ।"

उ युवक, शोभाके कैफियतके नै बुझहलकै। शोभाके वोकरसे पिण्ड छोडेनाई मस्किल भ्या गेलै। उ एक छण विचार करे लागलै आ पाशबिक पर्वृतिसे बचैके एकेटा उपाय देखलकै ।

"मित्र, तो हमर आईखसे वड प्रेम करै चिही । अगर हम आइखके बहार क्याके तोरा देवौ त की तोरा संतोषभ्या जेतौ ताव फितो हमरा शान्ती पूर्वक रहे देवही ?"

उ युवक ई सुइनके आश्चर्यसे उत्तेजित भ्या गेलै। उ विचार करे लागलै जे ई जनिजात जे भषै छै से करैले देरी नै लगैतै। लेकिन जावे उ युवक किछो वाजतै तै से पहिने शोभा कहे लागलै ।

"मित्र, हम ऐ नासहेवैवला शरीरसे वडा दुःखित एवं तंग भ्या गेल चिऐ। हमरा एकरसे कोनोटा मोह नै आइछ। इन्द्रिय जन्य सुख हमर बास्ते तेज धार वला तरूवाइर लखा लगैए आ पुरूषके छाह जवह करैवला कसाइके अगरठ लागैत रहैए। हमरा ऐ सवमे कोनो प्रकारके आनन्दके अनुभूति नै हैए ।"

बबाजीसवके बेकारके बकझक वला अर्जाके बात नै करै। ई बबाजीसव त जिनगीमे पारिबारीक सुखके सवटा अनुभूतिके आनन्द ल्याके जाव इन्द्रीय सुख भोग करैले अयोग्य भ्या जाई छै त निर्वाण ग्रहण करै छै। हमरा सव कतहेक मस्किलसे ऐ मानुष तनमे जनम लेलिऐ आ तहौमे इन्द्रीय सुखके आनन्द लैके अवसर त्याग क्याके फकिरी जिवन व्यतित करनाई त मूर्खता बाहेक किछोने लागैए। युवक आपन कैफियत दैलकै ।"

"मित्र, तो जे बात कहै चिही से कोनो बबाजी आ बबहान जे ई बुझहैछै जे व्यक्तिसव जाव ई महशूस क्यालैछै जे उमेरके लिहाजसे आव शरीरिक सुखके उपयोग करैके काबिल नै रहलै त फकिरी जिवनके दिसर भागैछै। लेकिन यहे बातके अधारमे सव फकिरके बास्ते समान्यकरण करनाई कोनो सत्य बात नै

भ्या सकैए । हम शाक्य पुत्र जे येहेन विषयमे कोनो प्रकारके भेदभाव नैराखैछै तेकर शिष्य चिऐ । जाव कोई व्यक्ति पाको उमेर पूरा क्याके फकिरी जिवनके सुख से सुखी भ्या सकैछै त कम उमेर वला पुरुष श्रा महिलाके वास्ते ई बात कथीले नै लागू हेतै ?"

"लेकिन बिना अनुभव करनै तो इन्द्रिय जन्य सुखके अनुभूति केनङ्ग क्याके करे सकबिही ?"

"हम करे सकवै । लोक सव जे इन्द्रीय जन्य सुखके आनन्द भोगैके वास्ते वोकर पछा पछा दौडते रहैछै श्रा तै भविताके कारणसे उ सव अत्यन्त दुःखी जिवनके प्राप्त करैछै से हम देख सकने चिऐ । हम ई प्रत्यक्षरूपसे देखनेने चिऐ जे पुरूष एवं महिला जे सव लोभ घृणा श्रा शंकाके वशीभूत भ्याके जे क्रीया करैछै से सव कसाईके हाथसे मारल गलहा जानवर सरिखा मृत्युके प्राप्त करैछै । रजा प्रसेन जित ऐ प्रकारके कर्म करैवलाके दण्ड दैके विधान अनुसार दण्ड दैत रहै छै । एकर मतलव ई नै जे उ यहिनङ्ग क्याके दण्ड देवे चाहे छै बल्कि वोहेन काम करैवला व्यक्ति श्रापन कर्मके फलके भुगतानकरैके वास्ते निश्चित केलहा बिधान अनुसारके दुःखमय कर्म फल प्राप्त करै छै ।"

अकुशल कार्य केलाके बादमे दुःखद परिणामके फलाफल निश्चित रूपसे प्राप्त करवे करैछै से बात सुइनके युवक और वेसी डेऱ्यागेलै । उ बुझ्झगेलै जे शोभाके कोने प्रकारके प्रलोभन देनाई बेकार चिऐ । उ तै वोकरा एकान्तैमे छोइड दैके निश्चित क्यालेलकै । लेकिन वोकरा छोडै से पहिने युवक कहे लागलै ।

"वहैन, हम वुझहै चिऐ जे तुही असल बात कहै चिही । तो जै बाटमे लागल चिही सेह्या बाटमे तोरा कुशल हेवौ ?"

जाव शोभा दोसरवेर बुद्धके दर्शन कैलकै त घटित भेलहा घटनाके सवटा वर्णका क्या देलकै । एकान्त बास केलापर महिला शिष्या सवके हेवै वाला खतराके पूर्ण रूपसे विश्लेषण क्याके बुद्ध सव महिला शिष्य सवके निदशना देलकै जे उ सव एकान्त वास नै करे । ऐ प्रकारके परिस्थिति से उबरैके बास्ते शो भाके केलहा अदम्य साहस एवं श्रान्तरिक बलके प्रयोगके माध्यमसे व्यवहारिक रूपके उ खौ सराहलकै ।

भूलरी, राजगीरके एकटा युवती जे बुद्धके शिष्य मण्डलीमे समर्पित भेलै रहै, श्रापन जिवनके करिया करणीसे तंग भ्यागेलछेलै । वोकरा श्रा वोकर आपते

मह ताईरके एकटा धनिकहा बाबहनके घरमे धौरवी भ्याकेरहे परै छेलै । जखनी शोभा आपन घटनाके वर्णका बुद्ध लग करै छेलै त भूलरी वोहै ठाम उपस्थित छेलै ।

"गुरू महराज, ऐ प्रकारके दुष्टसवके साधहैके वास्ते कि हमरासव आपन मन्तर प्रयोग क्याके वोकरा सवके खतम नै करे सकवै ? हमरासव वोकर पेटमे ढुइक जेतिऐ अथवा वोकरा औरके वौरनीमे लटैक जेतिए आनेत वोकरा औरके देखैत मातैर बिल्या जेतिऐ ?"

"ह भूलरी एनङ्ग करनाई सम्भव छै लेकिन ए प्रकारके परिस्थितीमे ई व्यवहार करनाई असलका बाटनै चिऐ। पुरूषके छिनार प्रवृतिके कामके प्रतिफलसे प्राप्त हेवै वला अवश्यमभावी दुःखद परिणामके प्रभावके डर देख्याके शोभा जे वोई युवकके मनमे भय उत्पन्न कन्याके अपनाके बचैलकै से सवसे असलका रस्ता चिऐ । एकर प्रतिफल हरदम बिदमान रहतै ।तन्तर मन्तरके प्रयोग बलसे प्राप्त भेलहा प्रतिफल ततेक लभकारी नै है छै । अगर शोभा वोई युवककसे छुटकरा पावैले आपन बाचित तर्क से बिफल भ्या जेतिऐ तखनी तन्तर मन्तरके प्रयोग करनाई आवश्यक भ्या जेतिऐ । राह बदलैकै वास्ते आपन बल देखनाईसे बढिया वोकर पाछे पाछे लाइगके परिवर्तन करनाई असल ।"

"हम अपनेसे सहमत छी गुरू महराज ।" जवाव देलकै भूलरी । महिलासव तन्तर मन्तर के बदलामे आपन चरित्रके शुद्ध बन्याके आपन बल बुद्धि से आपन रक्षा करैके सम्बन्धमे जे बुद्धके विश्लेषणात्मक उपदेश भेलरहै से ओकरा खौ पसिन परलै ।

२९–उनन्तिसम

मनौबैज्ञानिक अधारके तन्तर मन्तर शक्ति, दिव्य दृष्टि, अपरिमित शक्ति आदी ऐहेन शक्ति चिऐ जेकरा कोनो कोनो महात्मासव आपन सधनाके बलसे प्राप्त करे चाहै छेलै । कश्यय जे बुद्धके प्रारम्भिक शिक्षाकालमे वोकर शिष्य भ्या गल छेलै ऐ शक्तिसवके प्राप्त क्या सकने छेलै । बहौत महात्मा सव ऐहेन छेलै जे यहै शक्तिके आपन धार्मिक जिवनके सवसे वडका लक्ष्य मानने छेलै । ई शक्ति सवके वोकरा सव एकटा दैवी शक्तिमे निरूपण क्याके समाजमे आपन स्थान वडका वन्या ने ने

छेलै आ धन सम्पैतके अमारलग्या दैके कारणसे एकरा बहौत मूल्यवान बुझहै छेलै। उपाझक्य नामके एकटा बावहन छेलै जे ऐ शक्तिके प्राप्त क्या सकने छेलै। उ ऐ प्राप्त भेलहा आचरज लगवैवला शक्तिके पूर्ण रूपसे आपन मनके अनुसार बन्या लेने छेलै।

"ई येहेन शक्ति चिऐ जे बहौत कमे व्यक्ति प्राप्त करैमे सक्षम हैछै। वडा कठिन अभ्यास (तपस्या) के पश्चात हमरा ई शक्ति प्राप्त भेल आइछ। हमरा प्राप्त भेलहा ऐ शक्तिके उपयोग हम आपन देश आ नरेसके भलाईके काममे लगैवै।"

यहै सव बातके बिचार क्याके उ न्याय सम्बन्धी मंत्रीके अड्डामे ज्याके भेट कैलकै।

"महोदय, हम आपन तपश्चर्यके बलसे उच्चतम ज्ञान प्राप्त करने चिऐ आ तैं ज्ञानके उपयोगके द्वारा ऐ राज्यमे घटित भेलहा अपराध कामके अनुसंधान कार्यमे अपने एवं रजाके सहयोग क्या सकैं चिऐ।"

ऐ बातसे आचरजमे परलहा मंत्रीजी उपाझक्यके पूछलकै।

"तोन कोन प्रकारसे हमरा एवं रजाके सहयोग क्या सकैंचिही?"

"ऐ राज्यमे अपराधी द्वारा भेलहा खूनके खुनी, डकैत एवं अन्य अपराधी सवके पता लगवैले अपने एवं रजा स्वयंके वडका हरानी उठवे परैछै। शंकाके अधारमे यद्यपि कोनो अपराधी व्यक्तिके अपने हिरासतमे ल्या लैचिऐ लेकिन प्रमाणके अभावमे वोकरा दोषि ठहरावैले मस्किल भ्या जाइऐ। उ अपराधीके छुटकरा भेट जाइछै। हम आपन प्राप्त केलहा उच्चतम ज्ञानके माध्यमसे अपराध केरैवला व्यक्तिके तुरून्त पत्ता लग्या सकैचिऐ वोकर केलहा अपराध कार्यके प्रमाण सेहो पेश क्या सकैं चिऐ।" उपाझक्य जवाव देलकै।

"ई वास्तवमे एकटा आदर्श सहयोगके सेवा हेतै।" मंत्री जवाव देलकै आ आवश्यक परलापर भविष्यमे वोकर सेवा लैके बचन सेहो देलकै।

किछ दिनके बाद जाव एकटा डकैतिके उजुरी रजाके समक्ष पेश भेलै त मंत्री उपाझक्यके बिद्वताके क्षमताके जाच करैके बिचार कैलकै। कोसलके एकटा धनिक व्यपारी जे भ्रष्ट तरिकासे डींगुर सम्पैत आर्जन करने छेलै तकर घरमे डाक परलछेलै आ युवकसवके एकटा समूह मिलके वोकर घरवालीके बहुमूल्य गहना एवं अन्य दामीदामी धन सर्वस्वसव ल्यागेल छेलै। उ सव बास्तवमे वोई भ्रष्ट व्यपारीके धन लोलुपताके कारणे आपन सवचिज वोकर जिम्मा लग्या दैले बाध्य भेल छेलै। उपाझक्यसे सलाह मसाविरा लेलगेलै। उ डका सवके नामेटा मात्र नै कहलकै

वल्कि रजाके आदमी सवके साथमे लज्याके चोरी भेलहा धन रखलहा स्थानमे ज्याके सवटा धन सेहो प्राप्त कन्या देलकै । मंत्री खुसीसे नाचे लागलै । ऐतहेक जल्दीमे डकासवके पतेटा नै लागलै बल्कि जे तेजीसे हरेलहा धन प्राप्त भेल छेलै तै कारणे उ रजा प्रसेनजितके आपन अनकुल बनवैके वडका मौका प्राप्त कैलकै उ उपाझक्यके घरमे ज्याके भेट कैलकै ।

आपने त गजव क्या देलिऐ महाशय । आपने त राज्य एवं रजाके बहौत वडका सेवा क्याके ऋणी बन्या देलिऐ । आपने त वोई गरिब व्यपारी जे बहौत कडा परिश्रम क्याके धन आर्जन करने छेलै तकर हरेलहा धन ताकैले वडका सहायता केलिऐ। अपराधी सवके आव नियमानुसारके दण्ड भेटवे करतै आ अपनेके बहौत वडका इनाम सेहो भेटत ।

श्री मान, मनसाय जे किछ भी रहै लेकिन एकटा डाकुके डाकुवे कहल जाइछै । तै वोकरा दण्ड देवैक चाही । रजा एवं मंत्रीके सहयोग करनाई त हम आपन कर्तव्य बुझहै चिऐ चाहे हमरा कोनो प्रकारके पारितोषिक भेटे किनै । जे किछ भीहोई ई त हमरा सवके घरम चिऐ जे असलका बाटमे चली । असलका बाटमे चललासे कहियो कहियो खरावी प्रतिफल के समना करे परैछै आ कहियो कहियो असलका सेहो । कानून अथवा धरमसवसे उच्चतम बस्तु चिऐ । परिणाम के फलाफलके कोनोटा विचार नै क्याके धरमके काममे उच्चतम मनसायसे संलग्न भ्याके करैके चाही ।

"तो बडका साधु प्रकृतिके व्यक्ति चिही ।" जवाव मन्त्री देलकै जे आपन अरहौटे सवके उपाझक्य के सेवा अनुसार यथेष्ट नजराना दैके वास्ते अरहा देने छेलै ।

दोसर दिन अपराधी सवके मुस्की बान्ह लग्याके श्रावस्ती शहरके गलीमे घुम्याल गेलै । एकटा चौबटियामे ज्याके वोई अपराधी सवके दस दस कोर्रा मार-लगेलै आ बहौत बरिसके जेलके सज्या देल गेलै ।

बुद्ध शहरसे भिक्षाटन क्याके लौट रहल छेलै त लोक सवके भिडमे हो हल्ला करैत सुनलकै । जाव उ जेत वनमे एलै त एकटा सन्त जे ई करवाहीके सवटा वृतान्त देखनेछेलै बुद्धके सविस्तार सुनैलकै । बुद्ध ऐ विषयके एकटा परिचर्याके विषयवन्याकेसन्त मण्डलीके अधिकारी बातके कर्मक्षेत्रमे प्रयोग करैके तीन प्रकारके प्रयोगके देशना देलकै ।

"सन्त लोकैन, प्राप्त भेलहा विद्याके प्रायोगिक रूपसे कार्यान्वयन करैके वास्ते तीनटा विषयमे ध्यान देनाई जरूरी हैछै । एकरा कोनो प्रकारसे नकार करनाई

मुस्किलछै। एकटा ज्ञानी व्यक्ति कामके कार्यान्वयन करै ले पहिने असलसे विचार करैछै।एकर प्रयोगिक कार्यान्वयन करैसे कहिने करैवलाके आपन ईति वितिमे ध्यान देनाई जरूरी रहैछै। दोसर, एकर फलाफल दुनिया जहानमे कोन प्रकारसे परतै आ तेसर, धार्मिक पक्षमे ई कोन पलराके भारी करतै।

"महामान्यवर, प्रयोगके कार्यान्वयन करैवला व्यक्ति दुनिया जहान एवं धार्मिक पक्षमे ई कोन प्रकारसे प्रभावित करैछै।" एकटा महात्मा पूछलकै।

"जाव तोरासव कोनो काम करै चिही त उ बढिया रहैछै वा खराब रहैछै तकरातो अपना से नै छुटबे सकै चिही। एकटा खराब काम कैनेसे करैवलाके बाहेक और दोसर गोडे थाह पावै छै। उ काम तोरा बहौत दिन तलिक आपनै आपनै सतवैत रहतौ। जाव यै बातके कोनो ज्ञानी पुरूष बुझहै छै त उ खराब काम दिसर आपन हाथ नै बढवैछै। ई आपन कर्तव्यके प्रयोगिक व्यवहारके सुझ बुझके बात चिऐ।"

"दुनियामे बहौत लोकसवछै आ वहौमे बहौत किसिमके लोकसवछै। यै बहौत किसिम के बहुतायत मानव समाजमे फकिर आ बावहन सवसेहो छै जे सव ऐ प्रकारके बुद्धि, शक्तिसे सम्पन्नछै। वोकरासव दिव्य दृष्टि एवं दिव्य मनस्थितिके जानै वला है छै। उसव तोरा लगसे अथवा वहौत दुरौगसे देखलेतौ उसव तोहर मनके बात अथवा तोहर विचारके अध्ययन क्या लेतौ। उ सव तोहर काम जे खराब है छै किनै तकर ज्ञान क्या लेतौ। उ सव अनकरा कहे लागैछै जे ऐ आदमी के देखही, ई आदमी खराबछै ई ऐ प्रकारके खराब काम करने छै। एहै सवके विचार क्याके एकटा ज्ञानी पुरुष खराब काम करैसे तीन लाठी फराके रहैछै। महात्मा सवके संसारसे वचैके यही एकटा उपाय चिऐ।"

"अन्तमे, माहात्मा सव एकटा व्यक्तिके आपन साथीके जे ऐ प्रकारके ज्ञानसे अभिभूत भेलछै आ तकर बदौलत खुसी एवं तृप्तिके जीवन यापन क्या रहलछै से देखैछे। ई सवके दृष्टिगोचर क्याके वोहो ऐ प्रकारके ज्ञान हासिल करैके अभ्यास करे लागैछै। जाव उ ऐ प्रकारके ज्ञान एवं अन्तराज्ञानके प्राप्त करैके अभ्यास करे लागैछै त बेज्या काम करैसे मुह मोडैछै आ असल काम दिसर मन लगावै छै। धरम प्राप्त करैके प्रयोगिक व्यवहार एकरै कहैछै।

यै उपदेशके समयमे जैन गुरु नातपुत्रके एकटा शिष्य जेकर नाम राजकुमार अभय छेलै यै उपदेशके समयमे उपस्थित रहै आ बुद्धके उपदेश निदेशनाके श्रवण क्या रहल छेलै। बुद्ध एवं वोकर शिष्य समूहके भेलहा वर्तालाप एवं बुद्धद्वारा

देलह। निदेशनाके बडा ध्यानस्त भ्याके सुनने रहै । उपाझक्य द्वारा केलहा सहयोग कार्यके विषयमे बुद्धके मनसाय बुझहेके वास्ते कार्यके प्रयोगिक कार्यान्वयनके सम्बन्धमे उचित अनुचित विषयमे अभय राजकुमार प्रश्नकैलक ।

"प्रभु, कोन प्रसङ्गमे कथी बोलैक चाही आ लोक सवके कथी सुइनके नै नीक लागतै से विषयमे करूणानिधान सेकिछ उपदेश प्राप्त भ्या सकैए ? अगर करुणा-निधानसे, ई दाबी है जे दोसरके अस्वीकार हेवै वला बात आपने नै बाजलजाइछै त अपने सत्यवात नै बाजे चिऐ किएकत देवदत्तके विषयमे अपने बाजलगेल छै जे देवदत्त एकटा खराब प्रकृतिके व्यक्ति चिऐ आ वोकरा अधिक दुख: भेनाई जरूरी छै त ई बात देवदत्तके आवश्यक रूपसे बढिया नै लागल हेतै ।"

बुद्ध अनुभव क्या लेलकै जे वास्तवमे ई एकटा बडा कठिन प्रश्न पूछलगेलै । सम्भवतया बुद्धके ज्ञानके कुशाग्रता जानैके वास्ते राजकुमार अभय ऐ दोधारी प्रश्नके सम्पुट करने छेलै । उ राजकुमार अभय दिसर ताके लागलै आ विहुसे लागलै । जावे उ ए प्रकारसे विहुसै छेलै तखनी प्रश्नके समुचित जवावके वास्ते ध्यान सेहो लगैने रहै ।

"अभय, अपनासव जेवात बाजै चिऐ तकर वौहते उपाख्यान भ्या सकैछै । दोसरके वास्ते ई सत्य वा असन्त्य, सुखद, लाभकारी वा अलाभकारी भ्या सकैछै ।

"जी, प्रभु, कोनो बात मुहसे निकललासे आठ प्रकारके प्रतिफलके प्राप्त भ्या सकैछै । अभय राजकुमार कैफियत देलकै ।

"ह, अभय हमरा सवजे कोनोबात बाजै चिऐ तकर प्रभाव आठ प्रकारके भ्या सकैछै ।"

"ऐ मे कोनबात प्रभुद्वारा बाजल जाइछै आ कोनबात त्याग क्या देलजाइछै ।"

"हम अगर जानै चिऐ जे कोनोबात झुठ, अव्यावहारिक आ दोसरके सुनवैवला नैछै त हम से बात बाजैके कोशिसनै करबै । अगर हम जानवै जे कोनो बात साचछै लेकिन अव्यावहारिक एवं बाजैवला नै छै हम सेहो बात बाजैके कोशिस नै करवै । अगर हम जानवै जे कोनोबात साचछै, व्यावहारिक छै लेकिन दोसरके स्वीकार्य नैछै त सेहो बात हम अवस्था देखके बाजैके कोशिस करवै । अगर हम जानबैजे बात गलत छै, अव्यावहारिक छै लेकिन बाजै बला छै सेहो बात हम नै बाजवै । लेकिन अगर कोनो बात साच छै, व्यावहारिक छै आ बाजै वलाछै तकरौ हम फेर समयके अवस्था देखके विचार क्याके बाजवै ।"

एतहेक समय तक राजकुमार अभय अंगुरीमे सवबात गनै छेलै । बाजै वला आ नै बाजैवला बातके सम्बन्धमे बुद्ध मात्र ६ प्रकारके उपदेश देनेछेलै ।

"प्रभु, अभय कहलकै "गल्ती लेकिन अव्यावहारिक, सुखद एवं दुःखद दुनु, ऐसव बात विचारके वास्ते अपनेके केहेन धरणाछै ?"

"तोहर गणित बहौत पक्का छौ, छौने अभय ?"

राजकुमारअभय बुद्धकेबातसे हांसे लागलै। बुद्धफेर कहे लागलै ।

"अभय ई बात विश्वास करनाईहमरा कठिन भ्या रहल आइछ जे जे बातगलत छै उ व्यावहारिक केनङ्गके हेतै। यहै सवकारणसे हम वोई वातमे कोनो प्रकारके उदाहरण देवे नै चाहलिऐ ।"

"प्रभु, कोनो बात सुखद अथवा दुःखद हौ लेकिन अगर उ बात साँच आ लाभकारी छै त करुणा निधानतै बातके उपदेश क्या दैछै लेकिन तै यो करुणानिधान वर्णका क्याल जाइछै जे वोहो बातसव समय परिस्थितिके जाइनके बात बाजैक चाही। कथी ले ? एकर मतलव की इनै भेलै जे करुङ्णानिधान साच बाजैके पक्षमे नै रहैछै, यद्यपिकी बात साचो रहैछै ।"

"अभय, कोनो बात विल्कुल साचे हैछै तै बातमे हमरा शंका रहैए तै हम एहेन बात कहै चिऔ ।" जवाव देलकै बुद्ध ।

"पूर्ण सत्य है वला बातके सिद्धान्तके स्वीकार नैकरैके मानेत ई भेलै जे अपने धर्मके परिचर्यकि परिभाषाके अस्विकार क्या रहल चिऐ जेकरा बहौत सन्त आ बाबहनसव नै मानैले तैयार छै ।" अभय कहलकै ।

"अभय, आपन कर्तव्य करनाई सवसे असलका आदर्शके बात चिऐ लेकिन यहो नै विसरैक चाही जे दुनियाके सवटा लोकसव सिद्धि प्राप्त नै करे सकनेछै। अज्ञानी लोक सवके परिपेक्षमे कर्तव्यके आदर्श पूर्ण परिभाषाके अधारमे खाली आपनै स्वार्थ पूर्ति दिसर ध्यान दचाके दोसरके नोक्सान पुगावैवला बातके तो कखनो कथीलेने विचार करै चिही ।"

"प्रभु, उपाझक्य सनके व्यक्ति जे आपन कर्तव्यके असलका आदर्शसे प्रेरितछै, अगर कोनो व्यक्ति आपन कर्तव्य पालन करैछै त दोसरके ऐ मे टाङ्ग अडावैके कोन खाहिस भ्यासकैछै। एक आदमीके आपन कर्तव्य पालन करनाई जरुरी हैछै अगर वोई कर्तव्यसे अनकरा नोक्सान पुगलै तकर भागी उ हेवक चाही वोकर आपने सखासन्तान मेलाके ऐ मे कोनो बात नै हेवक चाही ।"

"अभय, हमरा बहौत बातके विचार करे परैए किएकत हमराऐ दुनियाके जिव प्रति करूणा राखे परैछै ।"

महात्मा बुद्धके मानवीय पक्षके गुण अवगुण अनुसार के कर्तव्या-कर्तव्यके विषय राजकुमार अभय तुरन्त बुझहलकै आ नातपुत्रके शिष्य मध्ये ई तेसर छेलै जे बुद्धके शिष्य भ्या गेलै ।

३०—तीसम

कोसल राज्यमे रहैत बुद्ध कोसलराज्यके सम्पूर्ण कोने खाखी यत्रा क्या लेलकै। कहियो कहियो लोक सबके निमन्त्रणमे आ कहियो आपनैमनसे यत्रा करै छेलै। यहै भ्रमणके शिलशिलामे एकवेर उ केशपुत्र नामके छोटका बजारमे गेलै जै ठाम कालम जाइतके लोकसवके वस्ती रहै। कालम वस्तीमे हरदम फकिर आ बाबहन सव आवै छेलै आ उसव आपन शिक्षाके प्रचार करै छेलै लेकिन कालमसव कहियो कोनो पन्थके शिष्वत स्वीकार नैकरने छेलै। उसव खूला हृदयके व्यक्ति छेलै। जाव ई समचार गाम भैरमे पुगलै जे शाक्य मूलके महात्मा एलछै त कालम वस्तीके असलका बिद्धानसव वोकर लग एलै आ धार्मिक बात विचारके बहसके वास्ते बुद्धके आमन्त्रण कैलकै।

बुद्धके दर्शन क्याके उ सव प्रश्न कैलकै।

"महात्माजी, वहौत रङ्गके फकिर एवं बावहन सव ऐ केशपुत्र गाम आबैतरहै छै। सवटाआपन आपन पन्थ अनुसार असल आ खराब, ठिक आ बेठिकके वर्णका करैछै। जाव उ सवके वोकरा सवसे पहिने एलहा फकिर अथवा बावहनसवके कलहका धार्मिक विषयके पन्थके बात करै चिऐ त उ सव पहिनकाके खराब कहे लागैछै आ आपन पन्थके वडाई क्याके हमरा सवके भूलवे चाहै छै। हमरासव ऐ प्रकारके धार्मिक बिबादसे ससङ्कित भ्याके किकर्तव्यबिमूढ भ्यागेल चिऐ हमरासव ई नै जानै चिऐ जे केकर सिद्धान्त असल, के साच बाजै छै आ के साच नै बाजेछै।"

"तोरासवके सशंकित रहनाई, किङ्कर्तव्यबिमूढ भेनाई वास्तबिकता चिऔ। तोरा सवके जै चिजमे शङ्का उठबैक चाही तै मे सशंकित भेनाई आवश्यक छै असल आ खराब, ठिक आ बेठिकके ज्ञान हसिल करैके खोजिमे आन आन चिजमे पूर्णरूपसे आश्रित रहनाई बिलकुल गाफिल बात हैछै।"

"महत्माजी हमरासव वोईसव चिजके जानैके वास्ते वडा उताहुल भ्या गेल चिऐ ।"

"प्रीय कालमसव, कोन चिज ठिक आ कोन बेठिक एकर निर्णय करैले परम्परामे पूर्णरूपसे आश्रित भेनाई कोनो प्रकारसे उचित नै हेछै । तहिनङ्ग कोनो प्रकारके टिपोट, श्रुति आ पोथी-पतरामे लिखलहा बातके जानै वला अधिकारीसवके भरमे रहलासे कोनो फेदाके वात नै सोचे एहै प्रकारसे तर्क आ गलथोथैनके बातसवसे कोनो प्रकारके असलका उद्धेश्य प्राप्त करैले सहायक नै हैछै । कोनो प्रकारके मूर्तरूपमे आश्रित भ्याके बिचार करनाई, स्वीकारकेलहा सिद्धान्तमे आकृष्ट भ्याके कोनो जानै वला वा पुरहितके आदरके वास्ते वा असलहेतै तैमे भर क्याके कोनो प्रकारके असल वा खराब छुटियावैके बाटमे असलका माध्यमके काम भ्यासकै छै तैमे हम कोनो प्रकारके सहमती नै द्यासकैचिआँ ।"

"महात्माजी एखैनतक फकिर आ बाबहनसव जे हमरासव के असल आ खराब, ठिक आ बेठिकके सम्बन्धमे शिक्षा देने छै तै सव सिद्धान्तके आपने खतम क्या देलगेलै । ताव ऐ सब चिजके असलसे जानैके वास्ते और दोसर कोन कोनबाट भ्या सकैछै ?" कालम प्रश्न कैलकै ।

"कालम, जावतो आपनै जानै चिही जे फलना फलना काम कलङ्क लगवै बलाहैछै आ ज्ञानीसव ऐ कामसे तीन लाठी फराके रहैछै आ एहेन कामसे नोकसान आ दुःख मात्र हैछै त ई जरूरी छै जे तोरा उ काम नै करैक चाही ।"

"जाव कोनो व्यक्ति लोभी भ्याके काम करै छै त तैसे की उ बढिया अथवा खराव दिसर अग्रसर हैछै ? तैमे तोरासवके केहेन बिचार क्यासकैचिही ?" बुद्ध पूछलकै ।

से त आबश्यक रूपसे खराब हेतै । एकटा कालम जवाव देलकै ।

"महात्माजी, लोकसव अति लोभी मनोवृत्तिमे पैरके जे खराब काम करैछै तै विषयमे आपने किछ वर्णका क्या सकै चिऐ ।" दोसर व्यक्ति अभ्यर्यना करलकै ।

अच्छा ई बात त कह, कालम , जे कोनो व्यक्ति आपन जिवन खतम क्या लैछे, चोरी करैछै, छीनरपनी करैछै, झूठ बोलैछै अथवा खराब काम करैले अनकरा लगावैछै तकर विषयमे तोरा सवके कोन बिचार करै चिही ?" बुद्ध प्रश्न कैलकै ।

"कहियो कहियो लोभमे पैरके आ कहियो दोसरे कारणसे ई बात भ्या सकैछै।" एकटा कालम जवाव देलकै ।

"हम तोहर बातसे सहमत चिऔं जे कहियो कहिओ लोभमे पैरके लोकसव एहेन खराब काम करैछै लेकिन हरदम लोभहेटा कारण नै हैछै। तँ तोरा सव और दोसर कारणके विषयकमे कहे सकबिही जँसेकि लोकसव खराब काम करैमे अग्रसर हैछै ?" बुद्ध पूछलकै।

"महात्माजी कहियो कहियो एकटा व्यक्ति के दोसर पसिन नै परैछै आ तँ वोकर प्रति इख ल्याके खराव काम करैले अग्रसर हेछै।"

"ह तो ठीक कहै चिही। जाव तो ई कहै चिही जे एकटा व्यक्ति दोसरके पसिन नै करैछै तकर मतलव भेलैजे उ व्यक्ति दोसर अमूक व्यक्तिसे घृणा भाव राखैछै। की यह्या कारणनै भ्या सकैऐ।" ?

"जी महत्माजी"। दोसर कालम पूछलकै।

"एहेन खराब काममे अग्रसर हैके वास्ते अलगे वोसर कारण भ्यासकैछे।'

"निश्चित रूपे दोसर कारण भ्या सकैछै लेकिन की तो तँप्रकारके विषय भिन्नता क्यासकै चिही ?' पूछलकै बुद्ध

"एकटा व्यक्ति जे पतित भ्या गेल रहैछै आ जेकरा एहेन खराब काम नै क्याके नै वनैवला भ्या गेल रहैछै सेहया व्यक्ति आपन ईच्छाके सन्तुष्टिके वास्ते खराव काम करैले अग्रसर हेछै।"

"आपन सन्तुष्टिके वास्ते ऐहेन खराब काम नै क्याके नै हेवै वलाछैसे उ कथिले ऐहेन बिचार करैछे ?" बुद्ध प्रश्न कैलकै।

"भ्यासकैछे जे दोसर प्रकारके काम क्याके सन्तुष्टी प्राप्त करैके विषयमे उ अज्ञान हेतै।" कालमसवके प्रश्न एवं उत्तरसे बुद्ध वडा प्रशन्न भेलै। उ कहे लागलै।

"कालम, तोरा सव वास्तवमे वडा तेज बुद्धिके आदमीसव चिही। आव वेखही एखैन तलिकके बातचित अनुसार जे तोरासव खराब काम जेनङ्ग खून करनाई, चोरी, छीनरपनी, झूठ बोलनाइके विषयमे जे तोरासवके आपनै मन मानल बातके तर्क वेलहीसेमात्र तीनटा विषयकेछुवै छै-लोभ, ईष आ अज्ञानता। ऐसे वहार अगर कानो दोसर कारण छै त सेहोकहै।

"ऐसे बहार अगर कोनो दोसर तेसर कारण हेतै सेहो सव यहे तीनुके अन्तर्गतैमे चैलऐलै।'

"बहौत असल, कालम, बहौत असल । यह्या तिनटा कारण छै जेकर फेरमे पैरके लोकसव खराब काम करैके बाटमे अग्रसर हैछै । लेकिन कालम, लोभ, ईष आ अज्ञानताके जालमे ओझन्याके जे खराब काम क्याल जाइछै से की तैसे अपना आ अनकारा दुःख धुगैछै कि,नै ?"

"महात्मा गुरू, लोभ ईष आ शङ्काके वशीभूत भ्याके केलहा कामके प्रभाव द्वारा काम करैवलाके साथे दोसरौके हेवेवलाँ दुःखके विषयमे कोंईभी जानिफकारलोक ऐ बातसे नकार नै क्या सकतै ।"

"जै कामसे कलङ्क लागैछै, जे काम करलासे दुःख हैछे आ जेकरा ज्ञानी पुरूष सव त्याज बुझहैछै से काम असल की खराव ?"

"ई त बिल्कुल घृणित भेलै ।" बहौत कालमसव ऐकेवेर जवाव देलकै ।

एकर मतलव त ई भेलै जे जे काम लोलूपता, ईष आ अज्ञानताके वशीभूत भ्याके नै क्याल जाइछै से काम सुखकर आ आनन्द देवैवला हैछै आ तकरालोक सव असलो कहैछे ।

"बिल्कुल ठिक महात्मा गुरू ।" प्रशन्न चित कालमसव जवाव देलकै ।

"यहै सव कारणे, कालम, पूर्णरूपसे परम्परामे भरपरनाई, कोनो प्रकारके कहासुनी अथवा जनश्रुति, धर्मग्रथके अधिकारीके तर्क वितर्कके अधारमे कोनो प्रकारके बिचारके मूर्तरूप देनाई, स्वीकृति सिद्धान्तके स्वीकारोक्ति एवं आदर वा बनावटी तौरके गुरूबरसवके अज्ञाके पालन आदिमे लकिरके फकिर बननाई उपयुक्त नै है छै । ई उपरका तथ्य सव एसगरे एसगरमे कोनो बातके ल्याके असल आ खराबके निर्णायक बिन्दुमे सहयोगी आश्रय नै भ्या सकैछै ।"

"महात्मा गुरू, अगर हमरासव ई नै जानै चिऐ जे कोन कामके कार्यान्वित केलासे बढिया फलाफलके असा राखवै आ कोन कामके केलासे खराब हेतै त हमरासव तकरा पसिन करैके निर्णायक अधार कथी भ्या सकैछै ?"

"ई बडा समुचित प्रश्न भेलौ कालम : एकटा व्यक्ति जे पूर्णरूपसे अज्ञानछै, असल, आ खराब ठिक आ बेठिकके निर्णय नै क्या सकैछै । अगर तोरेऔरके ऐ प्रकारके परिस्थिती एतौ त तोरा सव कथी करवीही ?"

"हमरा सवके त एकटा जनिफकारमे भर परे परतै ।"

वास्तवमे, असल सुझ बुझ के ज्ञान दुई प्रकारसे प्राप्त हैछै-पहिनका अध्ययन-

अध्यापन से प्राप्त केलहा ज्ञान, दोसर परिस्थिती अनुसारके वैचारिक मान्यतासे प्राप्त हैछै।"

"की अपने ऐ दुनु कारणीके सविस्तार वर्णका केल जेतै?',

"ह, ह, करवैनेत, पहिने पहिने हमरा सवके परिस्थिती जेकरा बुझनाई जरूरी रहैछैतैसे परिचित नै रहै चिऐ। हमरा सवके तेहेन परिस्थितीसे मुकैवला करैके कोनोटा अनुभव नै रहैऐ तै ई उचित भ्या जाइछै जे हमरा सव जानिफकार व्यक्तिमे भरोसा राखी।"

"लेकिन, महात्मागुरू, प्रारम्भिक अवस्थामे जाव हमरा सवके परिस्थितीके ज्ञान नै रहैछै त कोनो चलाक हमरा सवके असानीसे चलाकी देख्याके ठैक सकै छै।"

यहो तो ठिकै कहै चिही।

"ताव, हमरासव परिस्थितीके सत्यताके बुझहैले दोसर कोन उपायके खोजी क्या सकैचिऐ ?"

"कालमसव, एकटा व्यक्ति जे सत्यताके खोजीमे लागै छै तकरा से चिजके अनुभव क्याके बुझहैले कमसेकम पाच किसिमकेबाट चलैके समस्यासे उलझेपरैछै ई सव बिश्वास, पसिन, परम्परा, आकार-प्रकारके बिचार आ चलन चल्तीके मान्यता। अभाग्यवस ऐ पाचोके दोहरी फलाफल प्राप्त हैके सम्भवना बहौत अधिक रहैछै। कहियो कहियो विश्वासके साथ आ कहियो कहियो अनढन्याल रूपसे केलहा कामके फलाफल बहौत बढिया भ्या जाइछै। आ यहै प्रकारसे आन चारू विषयके कर्मके दोहरा प्रतिफल प्राप्त हैछै। यहै सव कारणसे कालम सव, प्रारम्भकरैवला व्यक्ति जे सत्यके ओगैरके काम करै छै एके वेर कोनो प्रकारके उपसङ्हार प्रतिफलके असा नै करक चाही। यह्या एकटा साच चिऐ और सव झुठ चिऐ तै प्रकारके ढालनै जमावैक चाही। अगर उ ऐ प्रकारसे करैछै त सत्य चिजके प्राप्त करैके सवटाबाट आपनै बन्द क्या लैछै। उ अमूक व्यक्ति कट्टरपनाके प्रदर्शनकरे लागैछै। तै अगर कोई व्यक्ति परिस्थितीके विषयमे ततहेक निश्चित नै रहैछै त तै मे कोनो प्रकारसे आपन निर्णय थोरहेक समयके वास्ते रोकैक चाही।"

"आपन निर्णयके रोइकके, सत्यके अनुकुलता जे हमरासव शिक्षा लेवे ज्या रहल चिऐ तकरा कोन प्रकारसे जाँच करवै।

अपना सव ई स्वीकार क्या नेने चिऐ जे लोभ, ईब आ शङ्काके बिचमे केलहा

कामसव खराव हैछै। तँ ई कहैके सम्भवना छै जे व्यक्ति लोलुपता, डाह आ अज्ञानतासे प्रेरित भ्याके काम करैछै से खराब हेतै। की ई बात ठिक नै चिऐ ?

"ह इत ठिक बात चिऐ।"

अगर ई बात मानै चिही त हमरावके हरदम सतर्क रहैक चाही जे जै व्यक्तिके उपरमे हमरासव आपन बिश्वास राइखके चललचिऐ से व्यक्ति कोनो प्रकारके लोभ इष आ अज्ञानता के बशीभूत नै छै। यै प्रकार वोई व्यक्तिके करतूतके वडा सूक्ष्म परिक्षण करेपरतै ताव मात्र हम कोनो अधार वन्या सकै चिऐ।"

"जाव हम ई बुइझ जेवै जे अमूक व्यक्ति असल अथवा खराव करतूतसे प्रेरित छै तकरा बाद कोन उपाय करवै।"

"अगर तोरा ई मालूम भ्या जाइछौ जे अमूक व्यक्ति खराब छै त तो कथी करवीही से त जानै चीही, जानै चिहीने ?"

"ह ,हमरासव वोकर विश्वास नै करवै। लेकिन एकर मतलव ई नै भेलै जे अगर हमरा सव कोनो असल व्यक्तिमे विश्वास करै चिऐ त वोकर कहलहा सव बातके अनहाधुने विश्वास क्या लिऐ।"

"नै ,कालमसव, तो वोकरा विश्वास क्या सकै चिही लेकिन उ जे कहैछै से सवटा स्विकार करनाई जरूरी नै छै। अगर तो कोनो असल व्यक्तिमे विश्वास क्याके वोकर भरमे चले लागलीही त ई जरूरी नैछै जे खाली विश्वासैके भरमे जे कहै तकरा तो आइख मुइनके विश्वास करैत जो। हमरा सवके एकटा पथ प्रदर्शक गुरू चाही। एकर मतलव इनै जे गुरू जे कहै तकरा हमरा सव विश्वासके भरमे वोकर कहलहा बात सवके मानने चलिऐ। ऐ संक्रमणके बिन्दुमे हमरा सवके वास्ते ई जरूरी भ्या जाइहछै जे हमरासव अपनाके आपनै तौलैक चाही जे असल विश्वासमे स्वीकार क्याके करलहाचिज साच छै अथवा झुठ छै। दोसर बात जे हम पहिने कहने छेलिऔ ऐ समयमे और जरूरी भ्या जाइछै । परिस्थितीके अनुकुलता वा प्रतिकुलताके असलसे बिचार करैके बादैमे हमरा सव ई पत्ता लग्या सकैचिऐजे विश्वासके भर मे स्वीकार कैलहा तथ्यके आधारमे केलहा काम साच अथवा झूठछै।"

"महात्मा गुरू, परिस्थितीके अनुकुलता वा प्रतिकुलताके बिचार करनाई केकरा कहल जाईछै।" एकटा कालम पूलछकै।"

"दुनिया दारीके चिज सवके देखही, देखके बिचार करही जे अमूक चिज

केनङ्‌ भेलै, कोन कारणसे एलै। कालम एकरै परिस्थितीके अनुकुल वा प्रतिकुलता के अनुसारके बिचार कहल जाइछै।" कालम, हमरा एकटा बात पूछैलेदे।

"जाव ऐ दुनियामे कोनो घटना घटैछै अथवा ककरौ जन्म, मरण हैछे से चिज आपनै आपनै है छै कि दोसर और कोनो बस्तुमे आश्रित भ्याके आवैछै।"

"महात्मा गुरू, जहा तक हमरासव जानै चिऐ, ऐ दुनियामे कोनो भी चिज आपनै धटित नै हैछै ए दुनियाके प्रत्येक चिज दोसरमे आश्रित भेल लागैए।"

एखैन तकके भेलहा अनुभवके अनुसार हमरा सवके ज्ञात आइछ जे दुनियाके प्रत्येक चिज जे धटित भ्या रहलछै दोसर मे आश्रित छै; तकरा हमरासव की ऐ सम्भवावनाके बिचार क्यासकै चिऐ जे कोनो भी चिज विना कारणके आपनै आपनै हेतै ?"

"जी, नै महात्मा गुरू, ई कोनो प्रकारे सम्झभवनै छै।"

"तै, कालम, पछामाथे देखही आ विचार करही जे फलना चिज केनङ्ग क्याके भेलै आ केनङ्ग क्याके एलै। तो देखबिही जे प्रत्येक चिज दोसरमे आश्रित भ्याके एल छै। ऐ प्रकारसे सर्तक भ्याके जाच केलाके बादमे हमरा सव थाह पावइ सकै चिऐ जे कोन चिज खराब छै आ तकरा त्याग करक चाही एवं कोन चिज असलछै जकरा हमरा सव करवे करवै। कथी खराव चिऐ तकरा त्याग करनाई आ कथी असल चिऐ तकरा कार्यरूप देनाई, कालम, बुद्धके समचार शिक्षा यह्या चिऐ।

एहै प्रकारसे केशपुत्रके कालमसव, महात्मा बुद्धके शिष्वत स्वीकार क्याके वडका असलका शिष्य भेलै।

३१– एकतिसम

रजा प्रशेनजितके संरक्षणमे बुद्ध आपन बृद्ध अवस्थाके थोरहेक बरिस श्रावस्तीमे व्यतित कैलकै। जाव रजाके स्वर्गवास भ्या गेलै त बुद्ध राजगीर विसर आबैके निर्णय कैलकै। आव उ उमेरमै असिके लग धग भ्या गेलछेल। जाव उ मगह पुगलै त वोकरा थाह भेलै ज अजातसत्रु आपन बृद्ध पिताके राजगद्दीसे हट्याके अपना स्वयं मगह राज्यके राजमुकुट धारण क्याके रजा घोषित क्या लेलकै। अजात

शत्रुओंके बुद्धके मगहमे आगमन भ्यागेलै से सालूम भेलै लेकिन बुद्धके उदारनीति वोकरा पसिन नै भेलाके कारणसे बुद्धके दर्शन करैके इच्छा नै कैलकै ।

अजातशत्रु ई जाने चाहै छेलै जे उ अकंटक राज्यके रजा चिऐ । राजगद्दी प्राप्त करैके वास्ते अपनेलहा बाटके विषयमे विचार क्या क्याके उ हरदम सशंकित रहै छेलै जे कोई वोकरा गद्दीसे हट्या द्या सकैछेलै अथवा लगके वलगरहा परोसी राज्य जेनेङ्ग बज्जी संघ मगह राज्यमे चढाई क्याके वोकरा समाप्त करैके शक्ति राखैछेलै । उ ई निश्चित रूपसे पत्ता लगवे चाहै छेलै जे बास्तवमे ई बात भ्या सकैछै अथवा नै । तै उ आपन प्रधानमन्त्री भास्करके चाल क्याके कहेलागलै ।

"भास्कर, हमरा मालूम भ्यालजे बुद्ध राजगीर पुइग गेलछै आ गृद्धकुट पर्वतमे आपन धुनी राम्या देने छै । वोकरा दिव्य दृष्टि एवं देबी ज्ञान प्राप्त भ्यागेलछै । ई सम्भव छै जे निकट भविष्यमे कोई मगहमे चढाई क्या देतै से वोकरा थाह भ्या गेलहेवक चाही । तो जो आ वोकरा पूछही जे हम बज्जीमे चढाई क्याके वोकरा खतम करे चाहै चिऐ । तो खौ बात के विचार करिहै आ उ कथी कहैछै से सवटा हमरा सुनाविहे ।"

भाष्कर अज्ञाके स्वीकार क्या लेलकै । गृद्धकुटमे बुद्धके दर्शन कैलकै आ आपसी स्वागत सत्कारके बादमे रजा अजातशत्रुके इच्छा जे उ बज्जी राज्यके विरुद्ध लडाई करे चाहैछै से बातके सलाह लैके वास्ते बुद्धके पूछलकै । बुद्ध विचारक रे लागलै जे बज्जीके विरूद्धमे अजातशत्रुके लडाई करैके बात पूछैके कोनो आवश्यकता नै रहै । उ महसूस केलकै जे अजातशत्रु जे गलत धन्धाके उपयोग क्याके आपन बापसे राज्य हथिऐलेकै तै आजतशत्रुके राज्यके राजसत्ताके बुद्ध मानै छेकि नै आ अजातशत्रु आपन शत्रु सवसे सुरक्षित छै कि नै तहै बातके जानैके वास्ते रजा ई रचना रचनेछै । तै, भाष्करकेजवाव दैके बदलामे बुद्ध आनन्दके जे ओकर पछामे खडा भ्याके वेना हुईक रहल छेलै तकरा सम्बोधन क्याके पूछलकै ।

"आनन्द, की तो सुनने चिही जे बज्जीसव निश्चित रूपसे अधिकसे अधिक राज्याधिकारी सव जम्मा भ्याके हरदम बैठककरैत रहेछै ।"

"जी, प्रभु, हम बुझहै चिऐ जे उ सव यहिनङ्ग करैछै ।" जवाव देलकै आनन्द ।

कीतो, सुनने चिही जे उ सव शान्तिसे एक ठाममे जमा है छै ? एक ठाममे उठैछै आ बज्जी भ्याके आपन आपन काम शान्ति पूर्वक आ मेल जोलसे करैछै ? सामूहिक रूपसे जे उसव कानूनके निर्माण करैछै तकरा उल्लंघन त नै करैछै ?

की उ सव ज्ञानी, बृद्ध एवं सज्जन बज्जी सवके आदर आ सम्मान त करैछै ? की उ सवके चेली वेटी स्वतंत्रपूर्वक बिनाकोनो डर भयके रहैछै ? की उसव आपन आपन कुला धर्मके पावैन, तिहार स्वतंत्र एवं सहिष्णुताके साथ सम्पन्न करैछै ?

"बास्तवमे उसव ऐ सव चिजके वडा असलसे निमाहै छै ।" आनन्द जवाव देलकै ।

"जावे तलिक, आनन्द, वज्जीसव ऐहै प्रकारसे आपन दैनिक कार्यक्रममे रत भ्याके कार्य सम्पादन करतै तावे तलिक उ सव वडा बगलर आ अजय रहतै । उ सवके राष्ट्र कहियो कमजोर नैहेतै अथवा असानी रूपसे समाप्त नै भ्या सकैछै ।"

बुद्ध, भाष्कर दिसर मुह घुमैलकै आ कहे लागलै :

भाष्कर एक वेर हम वैशालीके सारनडाडा कुटीमे धुनी रमैने छेलिऐ । तह समयमे हम बज्जी सवके ई सातोटा अखिहासके निदेशना करने छेलिऐ जैसे कोनो भी राज्यके क्षीण हैसे बच्याल ज्या सकैछै । जावे तलिक उ सव ऐ सातोनैतिक सिद्धान्तके पालन करैत रहतै तावे तलिक कोनो दोसर राष्ट्र वोकर उपरमे चढाई क्याके नै जिते सकतै ।

"गुरू महराज, सातटा नैतिक सिद्धान्तके त कोन बात वोई सातोमे अगर एकोटाके नीयमरूपसे पालन करलजाई त वज्जी सवके असानीसे परास्त करै के बाट नै देखैछिऐ । अजातशत्रुके वास्ते त ई मूर्खता के काम हेतै जे उ वज्जी सवमे अनाहकमे चढाई क्याके लडाई करतै । लडाई झगडा कैलासे उ बज्जी सवके किछोने बिगारे सकतै । अगर उ वोकरा सवके धन मनसे नै जिते सकतै अथवा वोकरा सबके बिचमे आपसी ईर्षा आ द्वेषके भवना नै जग्याल जेतै ।

बुद्धके कोनो दोसर प्रशन नै क्याके भाष्कर वोकरा नमस्कार कैलकै आ बिदा भ्यागलै । आजतशत्रु जेकरा बुद्धके दृष्टीकोणके विषयमे कहल गेलै त उ वडा उदभिग्न भ्यागेलै । उ ऐ बातमे वडी खलासे समस्याके विचार कैलकै ।

हमर पितामे बुद्धके शिक्षाके प्रभावसे हमरा करिव करिव अधिकारीक राजमुकुट प्राप्त करैसे वन्चित क्या देने छेलै । आव उ वज्जी आ दोसर दोसरके राजकीय पद्धतिसे बेवास्ता राखैके शिक्षा दया रहलछै । उ त क्षत्री वंशके नास करैमे लागलछै जे ब्रह्माद्धारा उत्पति भ्याके पृथ्वीमे राज करैके वास्ते शीरजल गेलछै । एहेन पाखण्डी सेत काम बिगडै से पहिनै छुटकरा पावनाई वढिया हेतै ।

उ जानै छेलै जे बुद्ध पहैनकाचोटी सन्त एवं सन्तनीसवके मण्डलीके संचालन

करैके सलाहके अस्वीकार क्या देलासे देवदत भितरे भितर तमस्या गेलछेलै ।

उ बिचार कैलकै, देवदत्त एकटा एहेन पुरूषछै जे बुद्धके बिरूद्धमे खडा भ्या सकैछै । उ बुद्धद्वारा वडा अपमानित भेलरहै आ तै वोकरसे वदला लेनाई वोकरा जरूरी भ्या गेलरहै । बुद्ध जावेतक जियैत रहतै त वोकर शिक्षा मगहमे सवगोहे आदरपूर्वक मानवे करतै तैसे हमर अधिकारीक राजकीय क्रीयाकलाप मगहमे कहियो कोई नै मानतै आ हम उखड भ्या जेवै ।

उ भाष्करसे सलाह बिचार करे लागलै ।

"मगहके लोकसवके नजैरमे बुद्धके नीचा करैके वास्ते तो ऐहेन कोनो योजनाके सम्बन्धमे बिचार क्या सकै चिही ?"

तेहेन उ तिक्षण बुद्धिके छेलै जे भाष्कर एकटा योजना बनवैले देरी नै लगैलकै ।

एक दुई दिन बादमे जाव भाष्कर रजा अजातशत्रुके दर्शन करे गेलै त आपन बनेलहा कार्यक्रम रजामे प्रस्तुत कैलकै ।

"सरकार, बाबहन, पुरहित आ फकिर मण्डलीमे बुद्धके बढियानै मानल जाइछै तै ई सम्भव भ्या सकतै जे वोकर प्रतिके आक्रोस विषयके समस्या बन्याके अपनासवके फेदाके बातमे लाभकारी साबित हेतै ।"

"बावहन, पुरहित समाजमे बुद्धके प्रति आक्रोस भ्या सकैछै लेकिन फकिरसव वोकरा नै चाहै छै से बात तो कोन अधार ल्याके बोलै चिही ।" अजागतशत्रु जाने चाहलकै ।

बहौत फकिरसव बिचार करैछै जे बुद्ध वडा अराम के जिवन व्यतित क्या रहलछै । जते जते उ जाइछै धर्मान्धभक्त सव बुद्ध एवं वोकर शिष्यसवके निवास के वास्ते सुविधा सम्पन्न घर बन्या दैछै, स्वादिष्ट भोजन द्याके स्वागत सत्कार करैछै । फकिरसव जे पूर्ण रूपसे फकिरी जिवनवसर करैले अपना होमने छै सेसव बुद्धके व्यक्तित्वके छाहमे पैरके बिल्या गेल छै । ई सम्भव भ्या सकैछै जे बुद्धके प्रति असंतुष्ट फकिरसवके भडक्याके बुद्धके व्यक्तित्वके मलिन करैमे सहायता हेतै ।

"हमरा सवके ऐ कार्यके कार्यान्वियन करैमे कथी करे परतै ?"

"महात्मा देवदत्त हमरा सवके पक्षमे छै, छै कि ने ?" भाष्कर पूछलकै ।

ह, से त वास्तवमे छै, लेकिन देवदत्त कथी क्या सकैछै ? उ त आपनै लोकसवमे ख्याति प्राप्त नै करे सकने छै ।"

"महात्मा देवदत्त, बुद्धके बिरूद्ध भडकावैले सन्त मण्डलीमे वकीली करे । सधारण व्यक्ति त जे देखैछै तहै मे विश्वास करैछै । उसव त जे आपन चसमसे देखैछै तैंमे जतेक उत्साहित है छै ततहेक ज्ञानके भरमे देखेलहा बातसे नै है छै । बुद्ध आव कहैले मात्र फकिर रैह गेलै, व्यवहारमे आव उ फकिर नै रहलै । महात्मा देवदत्त फकिरी जिवनके कठिनतम अभ्यास एवं जिवन यापनके कण्टकाकीर्ण बाटके प्रस्ताव ल्याके बुद्ध लग जेतै, जैमे बुद्ध आ वोकर शिष्यसवके व्यवहारसे फरक भ्या जेतै । वोकर शिष्यसव मेसे जे एखैन तलिक सिद्धि प्राप्त नै करे सकने छै उ सव यै बातके पक्षमे वडा जल्दी चैलएतै ।"

"भाष्कर तो वास्तवमे वडा तेज दिमागके व्यक्तित्व राखै चिही । ऐ से वेसी हम आपन प्रधानमंत्रीसे और कोन सल्लाहके अपेक्षा क्या सकै चिऐ ? हम आपनैसे महात्मा देवदत्त लग जेवै ।"

प्रधानमन्त्री भाष्करके प्रस्तावीत कार्यक्रमसे रजा अजातशत्रु खौ खूसी भेलै आ देवदत्तसे भेट करैले तुरून्त बिदा भ्या गेलै । यै समयमे देवदत्त सन्त मण्डली से अलग भ्याके आपने चेला सवसंगे दोसरे स्थानमे रैह रहल छेलै । रजाके दुरौगैसे आवैत देखलकै त स्वागत करैके वास्ते देवदत्त हतर पतर करैतगेलै ।

"सरकार, आपने कथीले कष्ट क्याल गेलै । सरकार एवं सरकारके प्रजाके वास्ते की हम कोनो सेवा प्रस्तुत क्या सकै चिऐ ?" देवदत्त विनय कैलकै ।

"ह, साचे साच, महात्मा देवदत्त, हम आपन राष्ट्रमे प्रचलित अध्यात्मिक मूल्य एवं परम्परा कायम राखैके विषयमे किछ सलाह करैके वास्ते एल चिऐ । समाजमे अध्यात्मिक मूल्यके कायम राखैके वास्ते परापूर्व कालसे वाबहन-पुरहित सवके वडका योगदान छै । तहै मनता अन्तरगतमे फकिरी जिवनके वास्ते प्रचलनमे एलहा परम्पराके तहत व्यक्ति विशेषसव जे गृहस्थी जिवनके सवटा जिम्मेवारी बहन क्या नेने छै आ अध्यात्मिक जिवनके आवश्यक्ता महसूस करैछै सेसव निवणि भ्याके जंगलके रास्ता लैछै आ तपस्यामे लीन भ्याजाइछै । लेकिन ई आदर्श परम्पराके त बुद्ध जे आपनैटा मात्र अराम तलवके जिवननै बितवै छै बल्कि आपन शिष्यसवके सेहो तहै प्रकारके जिवन यापन करैके उत्साही क्या रहलछै, पहैनका बभनौटी परम्पराके नास क्या रहलछै । दोसर दोसर वडका फकिर जेनङ्ग नातपुत्रके जिवन यापनके क्रमके बिपरीत बुद्धके जिवन यापन के बाट वडा सन्देह जनक लागैछै । तैंमे हम एकटा अपने महात्मा देवदत्तके देखैचिऐ जे ऐ दुःखद परिस्थतीके बिरूद्ध अवाज उठ्याके ऐ मे कोनो प्रकारके परिवर्तन लाइव सकैछै । भ्या सकैए जे महात्मा देवदत्त आपन सलाह द्याके बुद्धके चलेलहा

सिद्धान्तमे परिवर्तन क्याके फकिरी जिवनके बाटमे किछ व्युतिक्रम आइनके फकिरी जिवनके असलका बाट देखैतै । शायद बुद्ध ए प्रकारके सलाहके अबहेलना नै क्याके आपन सिद्धान्तके परिबर्तन करतै आ आपन प्रसिद्धिमे कायमे रहतै।

देवदत्त विचारकरे लागलै । ऐसे पहिनौ राजकुमार जे एखनी रजा भ्याके सलाह दया रहल छै तकर कथनानुसार उ बुद्ध लग ज्याके आपन प्रस्ताव राखने छेलै । अभाग्यवस उ प्रस्ताव व्यक्तिगत जिवनसे बहौत सम्बन्ध राखने छेलै आ वास्तवमे वोई प्रस्तावके अस्विकार करैमे बुद्धके कोनो प्रकार के गल्ती नै देखलकै। तैयो जै प्रकारसे बुद्ध वोकरा अपमानित करने छेलै तै वातके ल्याके उ बुद्धके प्रति वडा तमस्याल रहै । लेकिन एखैनका प्रस्ताव त मूल रूपसे सिद्धान्त एवं सिद्धान्त प्रतिके अनुशासन सम्बन्धमे रहै । अगर ऐ प्रस्तावके समर्थनमे बुद्ध, देवदत्तके अस्वीकार क्या देतै त उ खाली समाजैटामे वदनाम नै हेतै बल्कि आपन सन्त मण्डली सेहो बेरूखी भ्या जेतै ।

ई सब बिचार क्याके देवदत्त तुरून्ते तैयार भ्यागेलै । आपन पाचटा मित्रके साथमे देवदत्त बुद्ध के लग गेलै । ई त एकटा आचरज लागैवला वात छेलै जे देवदत्त बुद्ध लग गेलै । बुद्धके कोनो प्रकारके बिचार करैके समय नै भेटल रहे जे देवदत्त कोन प्रकारके प्रस्ताव ल्याकेएखनी एलछै आ तै कनहिक रूक्षता प्रदर्शन क्याके पूछलकै ।

"देवदत्त तोरा कथी भेलौ जे हरासवके लग एलही ? की तो फेर कोनो दोसर प्रस्ताव ल्याके एल चिही ?" देवदत्त आ वोकर मित्रसव बुद्धके वात सुइनके छकित भ्यागेलै ।

सिद्ध पुरूषके ई जानकारी प्राप्त भ्या गेलछै जे हमरासव ऐ ठास कथी करे एल चिऐ।देवदत्त विचार कैलकै एकर सर्वज्ञान सम्पन्नतासे बचनाई वडा मस्किलछै । जे किछ भी होई हमरा आपन प्रस्ताव राखैके चाही आ हम निश्चित चिऐ जे सर्व-शक्ति सम्पन्न भेलाके बाबजूदो बुद्धके ऐ प्रस्तावके अस्वीकार करैमे बहौत बिचार करे परतै ।

"महामान्यवर, अपने सर्व सिद्ध चिऐ आ अपने हमेशा फकिरी जिवनके पक्षधर भ्याके आपन जिवनके होम क्या देलगेलै । लेकिन आईके बहौत फकिरसव वडा अरामदेह जिवन बसर क्या रहलछै । ई जिवन उ नै चिऐ । उ व्यक्तिसव जे इन्द्रिय सुख लिप्साके त्याग क्याके यै जिवनसे प्रवेश क्याके फेर यहिनङ्ग जिवन व्यतित करैले लागलै । आव हमर बिचारमे पाचटा ऐहेन बुनासव छै जै मे महा-

मान्यवर, आपन स्वीकृति प्रदान क्याके आपन शिष्यसवके यहै प्रकारके जिवन व्यतित करैंके शिक्षामे आबद्ध करेलासे उसव जल्दी जल्दी सिद्धि प्राप्त करैंके लक्ष हासिल करतै आ सन्त मण्डलीके परम्पराके पवित्रता सेहो वरतल जेतै ।

"देवदत्त, उ पाचो कोन बुना चिऐं जे तोहर दिमागमे एलौ ?" बुद्ध पूछलकै ।

महामन्यवर, एकटा व्यक्ति जे गृह त्याग क्याके फकिरी जिवन अङ्गालकै तकर बास्ते ई जरूरी भ्या जाइछै जे उ आपन दिनचर्यामे ऐ पाचोटा बुनाके पकडने रहै । वोकरा जंगलके जिवन व्यतित करक चाही आ समाजिक जिवनके विल्कुले त्याग करक चाही । भिक्षाटनसे प्राप्त भेलहा भिखसे मात्र आपन जिवन बसर करे आ कोनो प्रकारके निमंत्रण स्वीकार नै करे । गुदरी झालैरके बनल पहिरन मात्र पिह्नहै आ लोकसवके देलहा पहिरनके उपयोग नै करे । एकटा फकिरके कोनो गाछकेतरमे बैठकेआपन तपश्चर्या करकचाहीकोनोप्रकारकेघरमेनिवास करनाई वर्जित हेवक चाही । अन्तमे वोकरा कोनो प्रकारसे सामिष भोजन (माछ मास) नै क्याके हरदम शकाहारी भोजनमे आश्रित रहैक चाही । फकिरी जिवन यहिनङ्ग हेवक चाही जे आपन घर त्याग क्याके ऐ जिवनमे प्रवेश करनैछै । ऐ प्रकारके जिवन बितेलासे फकिरके अध्यात्मिक जिवनके लक्ष्य जल्दीऐ लगैटामे नै एतै बल्कि समाजके नजैरमे फकिर जिवनके महत्व और बैढजेतै आ लोकसव फकिर सवके और वेसी प्रशंसाके दृष्टीसे देखे लागत ।"

"बहौत भ्यागेलौ, देवदत्त, बहौत भ्यागेलौ ।" जवाव देलकै बुद्ध । "ऐमे आपन व्यक्तित्व बघारैंले प्रतिस्पर्धा के कोनो जरूरी नै छै । अगर कोनो सन्त दुनियादारीके कचरासे उपर उइठ गेलछै आ सिद्धि प्राप्त क्या नेने छै तकर वास्ते हम कोनोटा कारण नै देखै चिऐं जे उ जंगलैमे बास करै । उ त वोई कमलके फूल नहाइत छै जे जलमे जनम ल्याके जलके गन्दा प्रभावसे हटल रहैछै तहिनङ्ग एकटा सिद्धि प्राप्त महात्मा अपनाके बिना बिगाडने ऐ समाजमे रैह सकैछै आ तैयो ऐ समाजके असल सेवा पुग्या सकैछै । देवदत्त, वोई अति सुन्दर बनफूलके कोन महत्व हैं छै जे जंगलमे फुलवै छै आ फूल्याके जंगलैमे सुख्या जाइछै ।"

देवदत्त आपन मित्रसव दिसर ताकलकै । बुद्धके प्रतिउत्तर दैके वास्ते कोइयोने कोनो प्रकारके हाव भाव प्रकट कैलकै । बुद्ध आपन कहनाई कहतै रहलैः

"हम आपन शिष्यसव जे राग द्वेषसे उपर भ्याके सिद्धी प्राप्त क्या नेने छै सेसवके वोई सुन्दर वनफूल नहाइत बोनेमे औलवे वैले नै चाहै चिऐ । ऐ दुनियाके

आदमीसवके वोकर सहायताके वड जरूरी छै। वोकरासवकेआपन सेवासे भलमन साहत क्याके आपन जिवन नेछावर करैक चाही ।

बुद्ध एकछन बिचार करे लागलै ।

"लेकिन अगर कोनो सन्त जे ऐ दुनियाके रागसे उपर नै उड़ठ सकने छै आ तैसिद्धि सेहो प्राप्त नै करे सकने छै त अगर उ जङ्गलमे बसेरा करे चाहैछै त हमरा ऐमे कोनो प्रकारके उजरी नै आइछ। तैयोअगर जङ्गलके बसेरा करलासे उ कोनो प्रकारके धार्मिक जीवनके लक्ष्य हासिल करैमे बाधा बुझैछै त उ गामैमे रहतै तहौमे हमरा कोनो मतलव नै छै। तहिनङ्ग और तीनुटा बुनामे जेकरा तो समस्या बनैने छिही तहौके विषयमे हमरा कुछोनेकहलजाइए। अन्तिम बुनाके सम्बन्धमे हम महन्थसवके माछ-तिमन खाइके सलाह दया देने विऐ लेकिन वोईमे तीनटा एत्ता राखने चिऐ जाव उ मारैत नै देखने वा सुनने रहै वा ऐके व्यक्ति द्वारा जिवहत्या क्याके तिमन तैयार नै क्याल गेलरहै ।"

"महामान्यवर, अगर शिष्य सवके अनुशरण करैके वास्ते कोनो निश्चित नियम नै हेतै त उ सव कोन प्रकारसे सिद्धि प्राप्त क्याके स्वतन्त्र हेतै ?" देवदत्त पूछलकै।

"देवदत्त, कोनो निश्चित नियमके अनुसरण कैलासे अगर सिद्धि प्राप्त करैके बात रहितिए त मानव जीवन सहित ऐ दुनियाके सव चिजके वास्ते एकटा निश्चित नियम रहवै करतिए, लेकिन हम देखैचिऐ जे ऐ दुनियामे कोनो प्रकारके निश्चित एवं परिवर्तन नै हेवै वला नियम नै छै । वोई प्रकारके अपविर्तनशील नियम नै देखलासे आ ऐ दुनिया मे एलहा चिजसवमे कोनो ने कोनो प्रकारसे शर्त अन्तगर्त वाहल देखै चिऐत हम बुझहै चिऐ जे दुनिया हरदम बनैत रहैछै आ विगडैत रहैछै ताव हम कोन प्रकारसे ऐ सन्तसवके वास्ते एकटा निश्चित अनुशासनके नियमके प्रतिपादन करे सकवै ।"

बुद्ध एकछन अराम करे लागलै ।

"देवदत्त, आदमीके ऐ दुनियामे आपने व्यवहारिक क्रियकलापसे दुःख भोगे परैछै। ई व्यवहारिक क्रियाकलाप बहौत बहौत कारणीसवसे ओझन्याल रहैछै। यहै व्यवहारिक क्रियाकलापके आपन बुद्धिके अनुशासनमे राइख के काम करलासे सुखके प्राप्तिहै छै आ अगर व्यवहारिक क्रियाकलाप के विभिन्न प्रकारके कारणीमे ओझन्याल रहैछै र तहौसे पारपावैले विभिन्न प्रकारके बाट जोईहके सुख शान्ति के प्राप्ति भ्या सकैछै। तँ देवदत्त हम विचार करै चिऐ जे लक्ष्य एकेटा छै आ वोई लक्ष्यके प्राप्त करैके बाट हजार छै ।"

बुद्धके ऐ प्रकारके हितोपादेश निदेशना सुइनके देवदत्तके मित्रसव वोकरा छोईड देलकै आ बुद्धके शिष्य भ्या गेलै । देवदत्त एसगरे आपन आश्रममे ऐलै । आपन मित्रसवसे दुःखद विछुडन, आपन प्रतिष्ठाके समाप्ति आ सवसे वेसी त आपने पितिग्रोस भाई आदर्श बुद्धके विरूद्धमे केलहा पाप करम सवके विचार करैत करैत उ बेमार पैरगेलै आ एके दुई दिनमे छाती फाइटके मोइर गेलै ।

जाव आपन पितिग्रोत भाई देवदत्तके समचार बुद्ध लग पुगलै त उ बडा कारूणिक भ्याके कहे लागलै ।

"सन्त, दुष्ट जनसवके सङ्गहैतमे पैरेक दुष्टता दिसर मन बडहयाके दुःखद अन्त हेबै वला देवदत्त एकटा ज्वलन्त उदाहरण भेलै । तैं हम तोरासबके सिख्या रहल चियौ जे दुष्टके सङ्गहैत नैकर आ असल व्यक्तिसे सङ्गहैत करेके बातमे हरदम ध्यान पुगा ।

३२– बत्तीसम

बहौत शिष्य सबके साथमे आनन्दके ल्याके बुद्ध राजगीरसे उत्तर माथे बिदा भ्या गेलै आ गाम शहरके यत्रा करैत बैशाली पुगलै । यै वैशाली शहरमे उ पहिनौ कपिल वस्तुसे राजगीर जाइके समयमे धुनी रमैने रहे । ई बैशाली शहर लिछवी सबके रजधानी छेलै । वैशाली पुगलै त बुद्ध एकटा आमकेबगैचामे आपनधुनी रमैलकै जे बैशालीके नगर बधु अमपालीके रहै ।

अमपाली सुनलकै जे बुद्ध बैशाली पुइग गेलछै आ उ वोकर आमके बगैचामे धुनी रमैने छै त हडबड सरबरमे उ बुद्धके दर्शन करैले बिदा भ्या गेलै । ऐबेरा दुई चाइरटा अधेड जनिजातके साथमे ल्याके वोकर लग गेलै । दुरौगे से बुद्ध वोकरा आवैत देखलकै आ वोकर अङ्गरक्षक सबमे भेलहा परिवर्तनके सेहो देखके बिचार कैलकै । जाव उ लगमे एलै त बुद्ध वोकरा पूछलकै ।

"अमपाली, उ पहलमान आ सुन्दर पुरुष जे जतैतो जाई छेलही तोहर आगा पछा रैहके अङ्ग रक्षकके काम करैछेलौ से सबके आव कथी भैलौ ।

लाज आ आत्मग्लानीसे अमपाली मुडी तरमाथे क्या लेलकै । वोकर सुन्दरता आव चैल गेल छेलै । मरूभमिमे वडका झाट एलेसे जेनङ्ग बौले बौलके मैदानमे कतौ कतौ खाइर फारल नहाइत वोकर मुखडा घोकैईचके डाइर फन्या गेल छेलै ।

वोकर करिया केश एकदमसे उजर भ्या गेल छेलै । वोई उजरा केशमे गाथल फूल आव एकोरतिने सोहावै छेलै । वोकर आइख सब गैहका कुपाके पाइन लखा लगैछेलै । पहिनका लखा वोकर माछी पिछरैवला मिलन जुलल देह आव चौकैटके भद्दा भ्यागेलछेलै । बडी खालमे उ साहस कैलकै त कहेलागेलै ।

"प्रभु, हमरा आव वोई अंगरक्षक सबके कोनोटा जरूरी नै रहे गेलै ।" "कथीले अमपाली ?"

"आव त हमर ऐ देहके कोईने पूछैछै । जाव एकरा प्राप्त करैके ककरौ चाहिट नै छै त एकरा रक्षा करैके सेहो कोनो खाचोके बात नै रहलै ।"

"लेकिन अमपाली, पहिनेत लोक सब तोहर ऐ देहके वास्ते हरदम तछार मछार करैत रहै छेलौ । आ तुहु वोई आदमीके हरदम ललचैने रहै छेलही । ऐ देहके रक्षाकरैले सिपाही सबके राखने छेलही ।"

अमपाली कुछो जवाब नै देवे सकलकै आ चुपेचाप रहलै ।

"अमपाली तोहर ऐ देहके वास्ते जतहेक जिम्मेवार तो छेलही ततबेहेक वोहो सब छेलै । उ सब तोहर देहसे खेलबाड करैके जतहेक चहना करै छेलै तैसे कम तोरो चहना नै छैलै । अगर तो वोकरा सबके छूट नै देतिहै त वोकरा औरके वोई से तोहर देहमे लोभ्याल नै रहतिऔ जेनङ उ रहै छेलै । हमर शिष्य शोभाके देखही । उ वडा सुन्दर देहवाली महिला चिऐ आ बहौत बहसलहाँ मरद सब वोकर अगा पछा लरैके कोशिस कैलकै लेकिन वोकर देहमे कोई हाथ राखे नै सकलकै यद्यपिकी उ एसगरे जङ्गलमे बास करै छेलै । तो आपन सब प्रकारके हतोत्साह एवं मानसिक मलिनताके शोभा संगे तुलनाकर जे हरदम शान्त आ सुखवय जिन व्यतित कैलकै ।"

"प्रभु, पहैनका भेटमे जे हम गुरू संगे मुर्खताबस आपन घमण्डी देखैने छेलिऐ तकर बास्ते हम पश्चाताप करैत क्षमा याचना क्या रहल चिए । की हमरा सर्ब सिद्ध पुरुष हमर पापके माफी देतै आ हमरा आपन शिष्य बनवे सकतै ?"

"हँ, अमपाली, तोहर वास्ते एखैनियो कोनो देरी नै भेलछै जे तो शान्त आ सुखी जिवन बन्या सकै चिही ।"

अमपाली दोसर दिनके भोजनके वास्ते बुद्धके निमन्त्रण देलकै आ श्रद्धासे नमस्कार क्याके चैलगेलै ।

घर जाइत रहै त बाटमे अमपालीके बहौत लिछावी सबसे भेट भेलै जे सब बुद्धके दर्शन करैले आवै छेलै । उ सब वोकरा रोकलकै आ पूछे लागलै ।

"अमपाली तोरा बुद्धके भेट हेवे सकलकौं कि नै ?"

"ह मित्र, वोकरा आई हम पहिनका बेर देखलिऐ।" जवाब देलकै अमपाली।

वोई झुण्डमे भेलहा आदमी सबमेसे वहौत गोडे छकित भ्यागेलै ।

"अमपाली, हमरा सब जानै चिऐ जे तो बुद्धके जाव उ पहिनका बेर बैशाली एल छेलै तखैनियो वोकरसे भेट करने छेलही। वोई समयमे हमरासब विश्वास क्या नेने छेलिए जे तो बुद्धके आपन जिवनके बाट बदलैले बाध्य क्या देवही आ बुद्ध तोहर वातसे प्रभावित भ्या जेतै। लेकिन आव तो कहै चिही जे तो वोकरा पहिनका बेर देखलिही।"

"ह मित्र, हम बुद्धके पहिनका बेर दर्शन कैलिऐ आ उ हमर घरमे बिहौनका भोजन करैके निमन्त्रण स्वीकार क्या लेलकै।"

एतहेक कैहके उ आपन बाटै बाट चैलगेलै। लिछवी सबजे सुनने रहै तै मे पतियारने लागलै। उ सब विचार करे लागलै।

ई केनङ्ग भेलै जे बुद्ध जखनी जवान छेलै त सुन्दर अमपाली दिसर आर्कषित नै भेलै। लेकिन आव बुडहारीमे उ आपन चरित्रके सवटा बल बुता गम्या देलकै।

उ सब आमके बगैचा दिसर गेलै आ बुद्ध लग पुगलै। स्वागत सत्कार केलाके बादमे लिछवी सब एक दिसर बैठलै आ बुद्धके पूछलकै।

"प्रभु, ई त हमरा सबके भाग्यके बात चिऐ जे महात्माजी ऐ बैशाली दिसर फेरसे आवैले आपन चरण हुलुक क्याल गेलै। बैशालीके लिछवी सब आपनमे बैठके सलाह बिचार कैलकै जे महात्माजी एवं शिष्य सबके असलसे स्वागत सत्कार हेवक चाही तैमे कोनो प्रकारके कोताही नै हेवै आ तै कौलका भोजनके वास्ते महात्माजीके निमन्त्रण स्वीकार करैकचाही।"

"मित्र, हम तोरा औरके बिहानका भोजनके निमन्त्रण स्वीकार करैमे असमर्थ चियौ। हम अमपाली के घरमे भोजन करैके निमन्त्रण स्वीकार क्या नेने चिऐ।

ई वात सुइनके लिछवी दुःखित एवं चिन्तित भ्यागेलै। वोकरा औरके मुखिया बिचार करे लागलै।

"ई अमपाली फेर हमरा सबके जित लेलक। भ्यासकैए जे हमरा सब बुद्धके बिचार परिवर्तन कन्या सकैचिऐ।"

"महात्माजी, ई अमपाली वडा खराव चरित्रके आ विश्वास करैवली नै छै। उ बैशालीके युवक सबसे आपन प्रभाव गम्या देने छै आतै उ सबलोक सबसे तमस्या

गेलछैं । हमरा सबके वोकरसे एखैंनिऐ बाटमे भेट भेल छ्याल त उ कहै छेलै जे उ अपने, सिद्ध पुरुषके, प्रथम बेरिया दर्शन कैलकै ।तैंयो हमरा सब सब गोडे जानै चिऐ जे आपने, सिद्ध पुरुष, जाव पहिने पधारल गेल छेलै त उ अपनेके दर्शन करने छेलै आ अपनेके बाटसे गुमराह करैके वडका कोशिस सेहो करने छैलै । पहिनका बेरियाजे अपने सिद्ध बुरुष वोकरा ठुकन्या देलगेलै तहैं तामससे उ अपनेसे बदला लैंके बास्ते ई सवटा जाल रचने छै । कृपा क्याके वोकर निमन्त्रण स्वीकार नै करल ज्या ।"

"नै, लिछवीगण जाव उ कहलकौ जे उ हमरा पहिनका वेर देखलकै त उ कोनो झुठनै बाज लै । बास्तवमे उ साच बाजलौ । जाव उ पहैनका चोटी हमरा देखैंले ऐल छेलै तखनी उ आपन जवानी आ सुन्दरताके घमण्डमे ततहेक चूर छेलं वे उ हमरा नै देखैं सकलकै । लिछवी गण, जे वुनियाके हम बनेनै चिऐ आ जेकर वर्णका हम करैं चिऐ से वास्तविकताके देखैछै त हमरौ देखैछै ।. अमपाली आव हमर शिष्य भ्यागेलै ।"

लिछवी सब आचरजमे पैंरे गेलै ।

."प्रभु, हमरा सबके बुझहैमे वडा कठिनाई भ्या रहल आइछ जे अमपाली सनके चरित्रहीन एवं भ्रष्ट जनिजात अपने बुद्धके गूढ एवं गैंहर सिद्धान्तके केनङ्ग क्याके बुझगेलै ।"

अमपाली के आपन व्यक्तित्वमे एलहा परिवर्तनके बुझहैमे कोनो प्रकारके भाङ्गठ नै भेलै । लिछवी गण, तोरा औरके वोकरा बहौत शिक्षा देलही । जाव उ जवाइन छेलै तखनी वोकर सहवासके वास्ते तोरा सब ललच्याल रहै छेलिही तै समयमे तोरा वोकर सहवासके आनन्द लैंके वास्ते आपन सबटा धन सर्वस्व खर्च करैले तैयार भ्या गेलछेलही । लेकिन आव तोरा सबके वोकर प्रति कोनो प्रकारके आकर्षण नै रहलौ । कथीले ? आवकोन कारण भेलै जे जै चिजके वास्ते तो बहौत दिन तलिक लौलसा लग्याके आपन धन सर्वस्व स्वहा कैलही तैहै चिज के आव कथीले नेपूछै चिही ?"

लिच्छवी सब चुपेचाप रहलै ।

"अमपाली ऐ बातके भितरसे बुझहलकै ।" बुद्ध आपन कहनाई जारी राखल लकै । "उ ऐ बातके असलसे बुझहलकै जे ऐ दुनियाके सवचिज अस्थाई छै । वोई अस्थाई नामके चिज ककरौ नै छोडैछै, ककरौमे कोनो भेदभाव नैकरैछै । सर्व शक्तिमान, सबसे सुन्दरतम् आ सबसे आनन्द देवैवला चिज सबके अन्त हैवै परैछै

आ शक्ति हीन, कुरूप आ दुःखके मोहान भ्या जाइछै। एखनी तोरा औरके बात बुझहैके समय छौ जे ऐ दुनियामे जिनगीके प्रकृति एहिनङ्ग छै। लिछवी गण, सवटा दोष अमपालीऐंके नै लगाविही। अमपालीके त आपन अज्ञानतासे वडा पछतवा छै, उद्धतपनासे दुःख छै तै उ सबके परित्याग क्याके मानसिक रूपसे शान्ति प्राप्त कैलकै। तोरासब वोहे दिनमे अमपालीके सुन्दरताके सहवास क्याके आनन्द लैके मौका प्राप्त नै करे सकलाके कारण एखैन तलिक तोरा औरके मनमे दम्भ, इष आ घृणा बिदमान छौ। ऐसे तोरा सबके भलाई एवं शान्तिमे कोनो प्रकारके सहयोग नै भेटतौ। हमरा बुझपरैये जे जै अचार-बिचार एवं क्रीया कलाप बज्जी संघके वहौत वडका बनैनेछै तै परम्परा के तोरा औरके बिसैर रहल चिही। एनङ्ग करलासे त दुष्ट शक्ति सब तोरासवके जल्दिए खतम क्या सकै छौ।"

जम्मा भेलहा लिछवी सवमे कोई त वडका संघ राज्यधिकारी बज्जीसे सम्वन्ध राखै छेलै। आ उसव बुद्धके मुहसे इसव वात सुनलकै त अकचक्यागेले। बुद्धसे क्षमा माङ्गल कै आ तुरते बिदा भयके अमपालीके निवासमे एलै आ वोकरसे अनुनय करे लागलै।

"अमपाली, बुद्ध एवं वोकर शिष्यके वास्ते जे बिहौनका भोजनके इन्तजाम तोहर निवासमे भ्या रहलछै तै मे हमरा सब सबगोडे मिलजुइलके सहभागी हेवे दे। शाक्य वंशी महात्माके स्वागत सत्कारके एकटा पावैन बन्याके तोहर नेतृत्वमे ई आतिथ्य समारोह हेवक चाही।"

ह,, वास्तवमे मित्र, अमपाली आपन स्वीकृति देलकै आ तदिनसे उ आपन अलेल सम्पैत बुद्ध, वोकर शिष्य सवके भालाइमे मात्र खर्चा नै करे लागलै वल्कि लिछवी गणराज्यमे गरिव दुखिया एवं अपाहिज सबके भलाई मे लगवे लागलै।

३३– तेतिसम

जावेतलिक बुद्धके मन लागलै तावेतलिक उ अमपालीके आमके बगँचामे रहलै आ उ आनन्दके कहलकै।

"चल आनन्द, अपना सब बेल्वा गामदिसर चलै चल।"

"हे तै प्रभु, आनन्द जवाब देलकै आ बैशालीसे बिदाहैके इन्तजाममे लाइग

गेलै । बुद्धके बेल्वागाममे पदार्पण केलाके तुरन्ते बादमे बर्षाऋतु प्रारम्भ भ्या गेलै त वोकरा आपन शिष्यसबके साथमे वर्षात भैर वोई कनकिरवा गाममे रहे परलै ।

वर्षाके कारणसे जाव वोकरा वोई बेल्वा गाममे रहे परलै त धुनी रमेलाके तुरन्ते बादमे उ बेमार परलै । बेमारी बडा खतरनाक भेलै । वडका जोरसे मरणान्त दरद भ्या रहल छेलै । तकरा उ कोनो प्रकारसे अमल नै हेवे देलकै । वोकरा अमल नै है देले उ हरदम सचेत आ भनमस्तिष्कके संतुलित राखने रहे छेलै । बुद्धके बेमारीमे आनन्द हरदम सेवामे लागल रहै छेलै ।

बिमारीसे स्वास्थ्य लाभकरलाके बादमे बुद्ध आपन कुटिसे बहार एलै आ वोकर बास्ते बनेलहा बैठकीमे आसन राखलकै । आनन्दके सम्बोधित क्याके उ कहे लागलै ।

"आनन्द, हम तोहर कृतज्ञ चिऔ जे तो हमरा जखनी हम बेमार छेलिऐ त बड सेवा केल्या । तो वड कलान्त भ्या गेल चिही । हम बेमार छेलिये त तो की अराम नै करै छेलही ?"

"प्रभु, आई तक हम अपनेके सब दिन स्वस्थ्य आ सुखी देखने छेलिये । बास्तवमे जाव आपने बमारीसे अक्रान्त छेलिऐ त हमरा बुझ्झ परै छ्याल जे हमर देह शुन भ्यागेल । हमर आइख अनहर भ्या गेल छेलै आ हमर दिमाग शसंकित भ्या गेल छेलै । तैयो हम ई बिचार क्याके मनके थामहैछैलिए जे शिष्य मण्डलीके कोनो प्रकारके निदेश नै क्याके आपने, सिद्ध पुरुष, एखनी व्यतित नै भेल जेतै ।"

"आनन्द, शिष्य मण्डली, हमरसे आव कोन प्रकारके आस राखै छै ?"

"प्रभु, जावे तलिक, अपने ई चोला राखने चिऐ तावेतलिक शिष्य सबके कोनो समस्या आवै छै त उ सब अपनेके चरणमे आवै छै आ अपने वोकर समस्याके समाधान क्या दै चिऐ। जाव अपने व्यतित भ्या जेतै त वोकर समस्याके के देखतै ?"

"आनन्द, हम आपन सिद्धान्त आ अनुशासन आपन दिल खोइलके पढहैने चिऐ । हम कोनो प्रकारके गोप्यता नैराखलिये आ सबके बुझहैवला भषामे कहलिये । हम ककरौसे कोनो चिज नै घोसारलिये । हम कहियो टिपौरी गुरू नै भेलिये आ ने त हम कहियो ई बिचार कर लिऐ जे हम सन्त मण्डलीके संघमे शासनकरै चिऐ आ मण्डलीके संघ हमर मे आश्रित छै । तै ए प्रकारके घोषणा करनाइके मतलब त ई भेलै जे हम संघके कोनो प्रकारसे शासन करैचिऐ ।"

बुद्ध थोरहेक कला अराम करे लागलै । वृद्धावस्थानके लक्षण सबपष्ट भ्या रहल छेलै जे उ आव पहैनका नहाइत बिना अराम करने नै बाजे सकै छेलै । एकछनके बादमे उ कहे लागलै ।

"आनन्द, अज्ञान आ मूर्खलोक सब ई घरणा बनैने रहैछै जे उ एकटा शासक चिऐ आ दोसर गोडे सवटा वोकरमे आश्रित छै । एकर बिपरित हम अपनाके एकटा बाट देखैनहार मात्र बुझलिऐ । कोनो प्रकारके शासक अधिकारी कहियोने बुझहलिऐ । ए प्रकारके अधिकारी नै बुझलासे हमरा आपन शिष्य संघके सन्तके कोनो चिज दैले नै आइछ ।"

"आव आनन्द, हम बृद्ध भ्यागेलिऐ । हम आपन असी वरिसमे ज्या रहल चिऐ । हमर शरीरत आव पुरना गडी भ्यागेलै जे घकैल फकैलके मात्रै चलैछै । हम शारीरिक दुःख दरदसे दुरौग नै भेल चिऐ । वोई दरदके अवस्थामे अपनाके शान्त राखैके वास्ते हमरा योगाभ्यासके प्रत्येक्ष सम्बेदन दृष्टिके वोई खाडहीमे ज्या परैए जैठाम सबचिज निरोध भ्या जाइछै आ कथी, कथीके अनुभव हेछै आ तकर जरूरी भेलासे हमरा से करे परए आ तैमे शरीरिक क्लेशके अनुभव नै हैछै आव बहौत जल्दी, आनन्द, बहौत जल्दी हम चैल गेल रहवौ ।"

"सिद्धि प्राप्तिके बाद, आनन्द, हम आपनैमे आश्रित रहलिऐ । हम आपनैके शरण लगैनै रहलिऐ । तहिनङ्ग, आनन्द, तोरा औरके सव गोडे आपने भरमे रह । आपनैमे आश्रित रह आ आपनैके शरण परल रह । हमर प्रतिपादित केलहा सिद्धान्तके शरण पकडने रह, ऐसे दोसरमे भर नै पर । हम ककरौ आपन अनुगामी नियुक्त नै करे सकवौ, ककरो अधिकारी बनवैके अधिकार हमरा नै आइछ । उ सिद्धान्त जे हम प्रतिपादन करने चिऐ आ अनुशासन जे हम कायम करने चिऐ स्याहसव तोहर आ शिष्य मण्डलीके बाट देखवै वला हैतो; बह्या तोरा-सबके अधिकारी हैतो ।"

"प्रभु, अपने द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तके लोकसब कोन प्रकारसे आपन गुरू मानतै ।" आनन्द पूछलकै ।

मन मस्तिष्कके नियन्त्रणमे राखैके चाइरटा बिधि बिधान जे हम तोरा औरके शिक्षा देने चिऔ से तोहर न्याक आ पथ प्रदर्शक चिऔ आ तो वोहैमे आश्रित रह । एकटा शिष्यके चाही जे उ आपन शरीरके शरीर नहाइत देखैले पूर्ण रूपसे जाग्रत रहै । मनसे ठेकान करैत रहै आ मन मस्तिष्कमे भेलहा राग द्वेषसे बिजय प्राप्त क्या लेलाके बादमे एकरा जरूरी बुझ्झके ठकान राखने रहै ।तहिनङ्ग मनमे एलहा

चिजके तहँ नहाइत ठेकान राखे परतै । चाहे एखनी अथवा हम चैलजेवौ तकर बादौ मे एकरा, हमर शिष्य जे अपनाके बास्तवमे अभ्यस्त हेवे चाहै छै तकरा ई सिद्धान्तके अनुसार चलै परतै ऐमे आश्रित हेवै परतै आ तहैसे उ आपनै भरमे रहतै ।"

एहै समयमे सारिपुत्र जे बुद्धके प्रमुख शिष्यमेसे एक छेलै आजे बेसी कला मगहैमे रहै छेलै से बडी जोरसे बेमार परलै आ एक दुई दिनमे काल कवलित भ्यागेलै । कुन्द नामके युवक फकिर शिष्य वोकर भिक्षा पात्र एवं पोशाक ल्याके बुद्धके दैके वास्ते एलै त वेल्वा पुइगके सवटा समचार आनन्दके कहलकै ।

समचार सुइनके आनन्द बडा दुःखी भेलै । उ ई समचार बुद्धके बिन्ती वया देलकै ।

"प्रभु, महात्मा सारिपुत्र आव ऐ दुनियामे नै रहलै । जाव हम ई समचार सुनलिऐ त हमर देह सुन भ्या ग्याल, आइख नै सुझहे आ दिमाग काम करनाई छोइडदेलकै ।"

"तो कथी बिचार करै चिही ? आनन्द । जाव महात्मा सारिपुत्र शरीर त्याग करलकै त की उ असलका गुणके सिद्धान्त, ध्यान लगावैके तरिका आ बात बुझहैके श्रोत, आ वाकतृतकलाके ज्ञान एवं सञ्चारके उ कथी, वोईकके आपने संगे ल्यागैले ?"

"नै, प्रभु, लेकिन हम बिचार करैले बाध्य भ्यागेल चिऐ जे अभ्यास करैवला शिष्यसवके वास्ते उ केहेन सहयोगी रहै, सलाह दैले, बिचार दैले, शिक्षा दिक्षा दैले, सौहार्दता, करूणा आदिसे भरपूर भ्याके शिष्यसवके चलवैले आ सिद्धान्तके शिक्षा दैले अथक प्ररिश्रम करैवला छेलै ।"

ई बात साच चिऐ आनन्द । लेकिन, की, तोरा हम नै कहने चिऔजे जे चिज तोरा असल लागै छौ आ जै चिजसे तोरा वड प्रेम छौ तै सवसे तोरा दुरौग हेवै परतौ । ई केनङ्ग हेतै जे जे चिज ए दुनियामे जनम नेने छै, ऐ दुनियामे भेलछै से सवटा अधिकारीक क्रीया कलापके अन्तगर्त क्रम छे तै उ निचा माथे खसवे करतै त उ कथिले नै मोरतै । अमर रहनाई सम्भव नै छै । सारिपुत्र बास्तवमे गाछके सवसे बडको डाइर रहै । सवसे बडका डाइर टुइटके खैस परलै तहिनङ्गे एकदिन गाछौ सखतै । यहै सव धतुमतुसे तोरा हम निदेश करैचिऔ जे तो आपनैके शरणमे जो तो आपनै मे आश्रित रह । आपनै मेहनैत कर, आनन्द, खेलवाड कैलासे नै हेतो ।

बुद्ध बेमारीसे उठल त छेलै लेकिन एखनी तलिक वड कमजोर छेलै । उ वेवा छोडके काविल नै भेल छेलै तँ उ किछ दिन और वोई ठाम रहलै । एहै समयमे बुद्धके दोसर प्रमुख शिष्य मोग्दल सेहो स्वर्गिय भ्या गेल रहै आ तकर समचार बुद्ध लग एलै ।

वोई दिन वेरिया पहरमे बुद्ध आपन छोटका कुटीसे बहार भ्याके खूला स्थानके आसनमे बिराज मान भेलै । शिष्य सव वोकरा देखलकै त चारूकतासे जमा भ्या थेलै । वोकराऔरके सेहो मालूम भ्या गेल छेलै जे महात्मा मोग्लद स्वर्गिय भ्या गैलछै । थोरहेक शिष्यसव जे एखैन तलिक सिद्धि प्राप्त नै करे सकने छेलै आ जे सव महात्मा सारिपुत्र एवं मोग्दलसे शिक्षा दिक्षा प्राप्त करने रहै सेहो सव वोई ठाम उपस्थित भ्याके जमा भेल रहै । उ सव उदास आ कननसुख भेल रहै । कानैत कानैत बहौत गोडेके आईख सुइज गेल छेलै । वोई ठामके वातावरण वडा विचित्र छेलै । चारू कता मरघट नहाइत शान्ति छेलै जेहेन कहियो ने है छेलै । वोई ठाम पूर्ण शान्ति रहै ।

सन्त एवं महिला सन्तसवके चुपचाप शान्त देखलकै त बुद्ध कहे लागलै ।

एनङ्ग लागै छै जेनङ्ग ई जमघट खाली भ्या गेलछै । ई जमघट खाली छै किएकत महात्मा सारिपुत्र एवं मोग्दल हमरा सवके बिचमे नै छै । ए ठाम एहेन कोनो व्यक्ति नै छै जे कैह सकैए जे महात्मा सारिपुत्र आ मोग्दल एहै ठामछै ।

"जी,प्रभु "आनन्द जवाव देलकै । ई सङ्घ एखनी खाली भ्या गेलछै । ई महात्मा सारिपुत्र एवं महात्मा मोग्दलके स्वर्गिय भेलासे खाली भ्या गेलछै । हम नै बुझहै सकै चिऐ जे अपने प्रभुके अनुपस्थितीमे ई सङ्घ मण्डली केनङ्ग क्याके आपन अस्तित्त्व कायम राखे सकैतै ।"

"आनन्द, महात्मा सारिपुत्र एवं महात्मा मोग्दलसे पहिनौ बहौत महात्मा सव बितल छेलै । ई केनङ्ग भेलै जे पहैनका महात्मा सवके व्यतित भेलासे ई मण्डलीके ततेक दुःख नै भेलरहै जतहेक की एखनी भ्या रहल छै ।"

आनन्द बुझहलकै जे बुद्ध कथीले ऐ प्रकारके प्रशन क्या रहल छै । तैयो उ जवाव देलकै ।

"प्रभु, दोसर सन्तसवके त बात नै कहव लेकिन महात्मा सारिपुत्र एवं महात्मा मोग्दल ऐ सङ्घके वड सेवा करने छै । जहिया जहिया प्रभु अपने बहार रहै छेलिऐ तहिया उ दुनुटा हमरा सवके बहौत असलसे शिक्षा दिक्षा दै छ्याल ।"

'ह, आनन्द, सङ्घ वास्तवमे वोई दुनु महान महात्मा के अतुलनीय निःस्वार्थ

सेवाके वास्ते वडा ऋणी छै। तैयो आनन्द, वोई महात्मासवके बास्ते जे एखैन तलिक सिद्धि प्राप्त नै करे सकने छै तकरा एकटा चानके हेतै। वोकरासवके ई बुझहैके चाही जे वडका आ शक्ति शाली सव टा नै समाप्त है छै बल्कि ऐ दुनियामे एलहा सव अधिकारीक शर्तके दुःख भोगनाई अवश्यम्भावी भ्या जाइछै। देखही आनन्द। आन सन्त सवके स्वर्गारोहणके समयमे तो ततहेक दुःख नै मनैलही जतहेक दुःख तोरा महात्मा सारिपुत्र आ महात्मा मुग्दलके स्वर्गारोहण से भेलौ। अगर तोरा नै बेसी त मनौ मनमे वोकर प्रति कोनो अधिकारीक क्रीया कलाप नै रहतिऔ त तोरा वोतहेक दुःख नै हेतिथौ। तो त अधिकारीक रूपसे महात्मा सारिपुत्र एवं महात्मा मोग्दल प्रति आकर्षित चिही। तै आनन्द ऐ अधिकारीक क्रीया कलापके बिलुप्त कैरैके मनन चिन्तन कर, ताव मात्र दुःखके पूर्णरूपसे अन्त भ्या जेतौ।

३४- चौतिसम

बेल्वा गामसे वुद्ध आपन धुनी उठ्याके भण्डा गाम पुगलै। भिक्षाटन क्याके ऐलै आ आपन भण्डार चेत्याके आनन्दके कहे लागलै।

"आनन्द, मनोवैज्ञानिक तन्तर मन्तरके चाइरटा अधार है छै। ई सव उद्धेश्य ईच्छा, बिचार आ-अनुसन्धानके विषयमे प्रयोग क्याल जाईछै। अगर कोनो व्यक्ति ऐ मनाबैज्ञानिक तन्तर मन्तरके सधनाके विकास क्याके वोकरा साइधनेने रहैछै त उ व्यवतीके कोनो प्रकारके बेमारी नै छुवे सकैछे आ उ आपन पूर्ण जिवन प्राप्त करैमे सक्षम हैछै। आनन्द, हम मनोवैज्ञानिक तन्तर मन्तरके ई चारू सधनाके-साधहैमे सफल भ्यागेल चिऐ आ तहैले अगर हम इच्छा करवै त सव प्रकारके वेरामीके दुरे राइखके आपन पूर्ण जिवन तक जिवित रैह सकै चिऐ।"

आनन्द जे महात्मा सारिपुत्र एवं महात्मा मोग्दलके स्वर्गिय भेलासे एकदम दुःखी रहै आ-बुद्धके अबश्यम्यावी मृत्युके लगैमे देखके एकदम बिचलित भ्यागल रहै से आपन होसहवास गम्या देने छैलै। बुद्धके पूर्ण जिवन पर्यन्त जिवीत रहैके अनरोधकरैले कोनो प्रकारके बिचार एवं ध्यानतैदेवे सकलकै। बुद्ध ई बात बुझ्झ गेलैजे आनन्द दुःखसे आपन मनस्थितीमे नै छै त उ आपने श्रृजन केलहा संघ समाजके विषयमे बिचार करे लागलै त महशूस क्या लेलकै जे सङ्घ मण्डली खौ

असलसे जैभ गेलछै आ वोकर अनुपस्थितियौ मे असलसे सञ्चालन हैत रहतै । तहै सव बात्त बिचारके तहत उ मनके एकिन क्या ले लकै जे मनोबज्ञानिक तन्तर मन्तरके शक्तिके व्यबाहार क्याके आपन जिवनके दीर्घ समय तलिक नैराखतै ।

थोरहेक दिनके बाद बुद्ध सन्त मण्डलीके समूहमे बिना कोनो सूचनाके एकाएक उपस्थित भ्यागेलै । वोकरा देखके सवगोडें चुप भ्या गेलै । महात्मा बुद्धके कोनो प्रकारके प्रश्न करैके विचारनै करलकै । उ सव ई बिचार करलकै जे कोनो प्रकारके प्रश्न करलासे बुद्ध बाजैत बाजैत थाइक जेतै । उ आव बडवृद्ध, कमजोर आ हरदम दरदसे छटपटाइत रहैछै । बुद्ध आपन चटियासवके मनोभवनाके बुझहलकै । उ वोकरा सवके कहे लागलै ।

"सन्तसव एवं महिला सन्तसव तोसव अनुपयुक्त रूपसे शान्त चिही । तोरा सव आपन प्रीय बस्तुके नास भेलाके कारणे बिल्कुल दुःखी भ्या गेलचिही । हम तोरा सवके क्यावेर चेत्या देने चिऔं जे अधिकारीक क्रीया कलापके माध्यमसे प्राप्त भेलहा हरेक चिज एहिनङ्ग कार्य कारणके जिजिरमे जकडल रहैछै । उ सव उत्पैन हैछै आ फेर नास सेहो भ्या जाइछै । ऐ प्रकारके विचारके मथन करलासे तोरासव दुःख आ बेदनाके त्याग क्याकें सन्तुष्टि प्राप्त करबिही । मेहनैतसे जप तप कर । अज्ञानताके आपन भितरमे प्रवेश नै करे दहै ।"

बुद्ध एकक्षण अराम करैले चुपचाप रहलै ताव फेरो कहे लागलै ।

"आव हम पाकल उमेरके भ्या गेलिऐ आ बहौत कमे जिनगी बाचल छै । बहौत जल्दी हम तोरा औरके छोईडके चैल जेबौ । हम आपनैके आपन आश्रित बनैलिऐ । सन्त एवं सन्तनीसव मेहनैतियाहेवे परतौ आ मनके चनाखो राखे परतौ। परोपकारी हो । आपन बिबेक आ तपश्चर्याके मार्फत आपन दिल आ दिमागके हरदम तनकी करैत रह । उ सव जे ऐ सिद्धान्त आ अनुशासनके आपन तपश्चार्या मेहनैतसे करतै सेसव जनम-मोरनके भव चकरसे उवैर जेतै आ दुःखसे पूर्णरूपसे स्वतन्त्र भ्या जेतै ।"

ए प्रकारके सम्बोधन क्याके बुद्ध आपन जगहसे उठलै आ आपन कुटीमे चैल गेलै ।

आनन्द सहित उ सन्त एवं सन्तनीसव जे एखैन तलिक सर्व सिद्ध नै भ्या सकल छेलै बुद्धके सम्वोधनसे वडा दुःखित भेलै । कोई कोई त काने लागलै । अन्तमे आनन्द बोई मण्डलीके सम्बोधन करलकै ।

"मित्रबर्ग, हम बुझहै चिऐ, कोनो व्यक्ति जे मनोबैज्ञानिक तन्तर मन्तरसधनाके चारू अधारके साइध नेने छै से व्यक्ति कोनो प्रकारके बेमारीके लगमे नै आवे देंछै आ आपन इच्छा अनुसारके पूर्णजिवन व्यतित क्या सकैछै आ आपन, प्रभुजी, जे मनोवैज्ञानिक तन्तर मन्तरके चारु अधार के सधनाके विकास क्याके पूर्णसफल भ्यागेलछै तै, प्रभुजी, आपन जिवनके नमहर क्याके जतेहक दिनमन हेतै ततहेक दिन तलिक जिवनके राखे सकतै। हम प्रभुजीके निवेदन करवै जे उ ऐ मन्तरके प्रयोग क्याके आपन जिवनके इच्छानुसार बेसी दिन भोग करै।"

"बहौत असल बात कहलिही, आन्द बाबा। ई बास्तवमे बहौत बढिया प्रस्ताव चिऐ। कृपाक्याके आनन्द बाबा तो प्रभुजीके लगमे जो आ ऐ वातके निवेदन करवे कर।" सन्त आ सन्तनी सवएकेवेर वोकरा अनुरोध करलकै।

आनन्द अबसर ताके लागलै आ जाव वोकरा समय भेटलै त उ बुद्ध लगमे ‌‌गुगलै आ बिन्ती करेलागलै।

"प्रभु, सन्त मण्डलीके ई बडका अभिलाषाछै जे प्रभुजी मनोबैज्ञानिक तन्तर मन्तरके सधनाके तहतमे रँहके आपन जिवनके ईच्छा अनुसार बढहैने चलल जेतै।"

बुद्ध एकछन बहौत उपर निचा बिचारकैलकै। उ आपन मनैमन कहे लागलै।

"ए प्रकारसे हमरा आपन जिवनके बढोतरी करनाई कहा तलिक उचित भ्या सकैछै। अगर हमऐ प्रकारके कार्य करवै त एकर फलाफल कोने भर जेतै। सन्त मण्डलीके वास्ते लाभदायक हेतै अथवा ऐसे एकरा नोक्सान पुगतै ?"

सम्भाव्य फलाफलके खौं असलसे बिचार क्याके उ आनन्दके कहे लागलै।

आनन्द मनोवैज्ञानिक तन्तर मन्तरके प्रयोग क्याके हम प्रत्येक प्रकारके वेमारीके दुरे राखवै आदोसर कायिक दुःखवेदना सेहो सवके निर्मूल क्याके हम आपन जिनगीके समयके बढोतरी क्याके आपन इच्छा अनुसारके औरदा बन्याके पूर्ण जिवनके भोग करवै। ऐ विषयके बातचित हम तोहरसे पहिनै करने छेलिऔं। तखनी तो चुपे चाप रहलीहि। लेकिन आव एखनी तो हमरा फेर बह्याकाम करे कहै चिही। तोहर एखैनका कहनाई हमरा ततहेक उचित नै लागैए, आनन्द, ई त तो हमरसंगै रहैके लोभी इच्छाके बसमे भ्याके आ हमरसे बिछुडन हैके अतृप्त लौंलसाके बसीभूत भ्याके एहेन बातके बिचार क्याके हमरा कहे एलही। अगर आव एखनी हम तोहर ऐ बातके स्वीकारक्या लेवौं त ऐसे तोरा आ ऐं सन्त मण्डली दुनुके बडका नोक्सानीके फलाफल भोगे परतौ।"

एकछन जिन्याके बुद्ध फेरो कहे लागल ।

"अगर आव हम आपन औरदाके बढोतरी करवैं त एकर बिभिन्न फलाफल भ्या सकतै । सन्तमण्डलीके राग एवं लिप्साके बढोतरी क्या देवैं । वोकरा कोनो प्रकारसे उपर उठैके गुण नैं कहे सकवैं । आव समय आइवगेलौ आनन्द जे तो आ तोहरलखा वोसर दोसर चटियासव जे कोईएखैंन तलिक सिद्धी प्राप्त क्याके स्वतन्त्र नैं भेलछैसेसव खौ मन लग्याके तपश्चार्यकाममेलाग । सिद्धीप्राप्त क्याकेस्वतन्त्रता प्राप्त कर। आनन्द हम अनुभव करैंचिऐ जे आव तीन महिनासेबेसीहम नैं वाचवैं । तीन महिनापूरा हेवैंके दिनमे हम तोरा सवके छोइडके चेल जेवौ आ आपन पूर्ण-स्वतन्त्रताके प्राप्त करवौ । तो ई बात मण्डलीमे प्रचार कैरसकैंचिही ।

एतहेक कैहके वुद्ध आनन्दके बिदा क्या देलकैं । बुद्ध बचनके जाव आनन्द सन्त मण्डलीमे कहलकैंतसिद्धी प्राप्त नैकरलहा महात्मा सव आनन्दसे रूष्ट भ्या गेलैं ।

"आनन्द, पहैनका बेर जाव बुद्ध आपन औरदाके बढवैंके बात तोहरसे करने छेलौ तखनीतो वोकराऐ के बास्ते कोनो प्रकारके निवेदन नैं करलही से बडका गल्ती काम भेलौ । ई त वडा दुर्भाग्य के बात भेलौ। ईत हमरासवके बडका नोक्सान भेलौ ।"

"मित्र बर्ग, पहैनका बेरिया जहिया प्रभुजी हमरसे आपन औरदा बढवैंके सम्भवनाके बातचित करलकै तहिया हम दुष्ट शक्तिके फेरामे परल छेलिऐ । तखनी हम लोभके जोसमे फासल छेलिऐ, तैं लिप्सामे लिप्त छेलिऐ । ठीक एहैं प्रकारके शक्ति एखनी तोरा सवके बलबती भ्या रहलछौ जेप्रभुजी आपन और-दाके बडह्या लैं आ हमरासवके साथमे जिवनके भोगकरैं । ई अवजस हमरा सवके उपरमे आवैं छै । हमरासव बहौत बरिससे प्रभुजीके सहवासमे व्यतित क्या देने चिऐ लेकिन एखैंन तलिक अपनासव प्रमुजिके व्यतित्त्वके नैं चिनहे सकने चिऐ, तैं हमरा सव वोकर असलका शिष्य नैं हेवे सकने चिऐ । हमरासव एखैंन तलिक आपन लोभ, मोह आ ईर्षाके त्याग करैंमे सफलनैं हेवे सकने चिऐ । ऐ अन्तमो समयमे हमसव अपन तपर्श्चार्यमि तलिन भ्याके सवसे वडका खाडहीके सिद्धि प्राप्तिके काममे जुइटके लागक चाही ।"

आनन्द मनमे दुःख मनवैंत वोई सन्त मण्डलीके छोइडके बुद्धके सेवा करैले वोकर कुटी दिसरबिदा भ्या गेलैं ।

किछ दिनके बादमे बुद्ध वोईसे उत्तर माथे जाइके पीयाम क्या देलकैं । उ भण्डा गामसे बिदा भ्याके एक्टा छोटका बजार पावा पुगलैं । पावा पुइगके बुद्ध एकटा

सोनार जेकर नाम चुन्डरहै तकर ग्रामके करजानमे ग्रापन धुनी रम्या देलकै। जाव चुण्ड सुनलकै जे बुद्ध ग्रापन शिष्य सहित वोकर ग्रामके करजानमे धुनी रमैने छै त उ खौ खूसी भेलै ग्रा ग्रापन-जिवनके धन्य माने लागलै। चुन्ड दौडके बुद्धके दर्शन करे गेलै ग्रा दर्शन परसन क्याके ग्रापन घरमे दोसर दिनका भोजन करैके बास्ते बुद्धके निमन्त्रण देलकै। यदयपि बुद्धके स्वास्थ्य ततहेक बढिया नै भेल छेलै लेकिन चुन्डके मन राखैले बुद्ध वोकर घरमे ज्याके भोजन करैके निमन्त्रणके स्वीकार क्या लेलकै।

चुन्ड खूसीसे नाचेलागलै। ग्रापन जानैतउ खौ ग्रसल ग्रसल स्वादिष्ट पकवान के भोजन तैयार करलकै। भोज समग्रीमे बनेलके तीमन सेहो तैयार करने छेलै। भोजन करै कला घरवैयाके कर्तव्य भ्या जाइ छै जे सवसे पहिने बुद्धके ग्रगामे भोजन परसतिऐ ग्रा ताव दोसर दोसरके एक पातिसे भोजन परसलजेतिऐ। घरके दोसर दोसर व्यक्ति जे वारिकके काम करैछेलैसेसव पहिनका परसलहा थारी बुद्धके ग्रगामे परसतै ग्रा ताब वोकर लगसे पाति लग्याके दोसर महात्मा ग्रतिथि सवकेभोजन परसल जेतिए।

जाव चुण्ड परसलहा भाग बुद्धके ग्रगामे राखलकै त समग्रीके विषयमे जनकारी प्राप्त करैले बनेलके तीमनके सम्बन्धमे पूछलकै जे ई कथी चियौ?" चुण्डके जवाबसे बुद्ध विचार करेलागलै जे ऐ प्रकार के तिमन जल्दी नै पचैछे। जे व्यक्ति कडा तपस्याके सधना क्याके सिद्धि नै प्राप्त करने रहैछै से सब ऐ तीमनके एकदमे ने पचवे सकैछै। एकरा पचदैले एकेटा उपाय छेलै जे वोकर शिष्य मण्डलीमे जे सब मनोबैज्ञानिक तन्तर के सिद्धी प्राप्त करने छेलै सेह्या सब ऐ तिमनके पचवे सकतिऐ। ऐ ठाम एलहा शिष्यमे वेसी गोडे एप्रकारके तन्तर मन्तर से सिद्धि प्राप्त नैकरे सकने छेलै ग्रा जे सबके ऐ प्रकारके सिद्धि प्राप्तो भेलछेलै तकरा ऐ प्रकारके भोजन सामग्रीसे भोजन करनाई के चस्का लगेनाई ठीक नै लागलै। तै उ चुण्डके चाल कैलकै ग्रा कहे लागलै।

चुण्ड, तो हमर ग्रा हमर शिष्यसबके भोजनके वास्ते वडा तकलिफ क्याके ई स्वादिष्ट भोजन तैयार करलिही। लेकिन ई ग्रमूक तीमन वला सामग्री हमर शिष्य सबके वास्ते ततहेक ग्रसल नै छै। सिर्फ सर्ब सिद्ध पुरूष मात्र एहेन भोजनके ग्रहार क्या सकै छै ग्रा क्याके पचवे सकैछै। तै ग्रगर तोरा इच्छा छौ त तो ई भोजन सामग्री हमरैटादे। लेकिन दोसर दोसरके नै परसै।!"

चुण्डके मन एक रती छोट भेलै। लेकिन जाव बुझहलकै जे बुद्ध ऐ सामग्रीके ग्रमेला नै क्याके एकरा भक्ष करैले तैयार छै ग्रा एकर माङ करैछै त उ

खुसी भ्या गेलै आ दोहन्या तेहन्या के बुद्धके देलकै । भोजन उपरान्त बुद्ध लोभ, मोहके रहित भ्याके दान दँछना के महत्वके विषयमे एकटा खौ असल देशना देलकै आ आपन धुनी दिसर बिदा भ्या गेलै ।

आपन कुटीमे एलै त थोरवेहेक समयके बादमे बुद्ध फेरो बडी जोरसे बेमार परलै । लेकिन फेरो उ बिना कोनो आहि काटने वोई दरद आ दुःखके झेलैतै रहलै । सम्पूर्ण वेरामी अवस्थामे उ एक दम आपन मन मस्तिष्कके तनकी करैत जाग्रत रहै छेलै । राइत बित गेलै । उ कनहिके कला निनमगन भ्याके सुतलै । वोई बेरामी अवस्थामे उ जाव ध्यान लग्याके योगाभ्यासके अन्तिम खाडहीके प्रत्यक्षके निरोध आ कथी देखल आ बिचारण क्याल जाइछै तहै अवस्थामे रैहके अरामके अनुभव करै ।

शारीरिक कष्ट दरद जे उ अनुभव क्या रहल छेलै तै से उबरैले हरदम ध्यान मगन भ्याके अन्तिम खाडहीमे पुइगके मृत्यु पर्यन्त बिछोनामे अराम करैत रह से त बुद्धके जिवन क्रमके बाट नै चिऐ । सेह्यासबके बिचार करैत उ दोसर दिन अनगुतिए आनन्दके चाल कैलकै आ कुशीनगर दिसर यात्रा करैले आपन इच्छा जाहिर कैलकै । कुशीनगर एकटा छोटका बजार रहै जे पावा से थोरबेहेक दुरौग उत्तर भरा छेलै ।

बाटमे बुद्ध रस्तासे हैट गेलै आ एकटा धनगरहा गाछके छाहमे जिरवे लागलै । आनन्द के सम्बोधित क्याके कहलकै ।

आनन्द हमर कपडाके चाइरदोबर क्याके बिछयादे । हम थाइक गेलिऐ आ अराम करे चाहै चिऐ ।

बुद्ध किछ समय अराम कैलकै । जाव उ जाग्रत अवस्थामे भेलै त प्यास के अनुभव भेलै । बुद्ध जानै छेलै जे इ प्यास वोकर बेरामीके कारणसे लागलछै । उ आनन्दके चाल कैलकै आ पिऐले कतौसे पाइन आनैके बन्दोवस्त करे कहलकै ।

बुद्धके भिक्षापात्र ल्याके आनन्द खोला दिसर गेलै जे लगैमे बैह रहल छलै । लेकिन खोलाके पाइन गन्दा रहै ।

आनन्द बिचार करे लागलै । भैरसक सिरामे बहौत बैलगडी पार भेलै तहैले खोलाके जल गन्दा भ्या गेलछै । एहेन गन्दा जल प्रभुजीके वास्ते ठीक नै हैते । हमरा सिरा माथे ज्याके कतौ सफा निर्मल जल ल्याके ज्याक चाही ।

आनन्दके पाइन ल्याके आवैमे बहौत देरी भ्यागेलै आ बुद्धके शारीरिक दरदसे छुटकरा पावैके एकेटा उपाए रहै जे ध्यानके उपरका खाड्ही जै ठाम सब प्रकारके प्रत्यक्ष बन्द भ्या जाइ तै ठाम पहुचके आराम हैछेलै ।

आनन्द पाइन ल्याके नै एल छेलै आ बुद्ध ध्यान लग्याके वडका उपरका खाडहीमे ज्याके अराम कैर रहल छेलै तखौनिए ए के बेर वडी जोरसे वैशखा झाट आ वर्षा मेघ गर्जनके संगे एले। झाट कडगर छेलै आ तहिनङ्ग वर्षा आ बिच बिचमे बडी जोरसे बिजली छटकै आ ठनका खसल लखा मेघ गर्जे। सबटा चेला चाटी सब एकटा बडका धनगरहा गाछके ओत ल्यालेलकै लेकिन बुद्ध वोहिनङ्ग झाट बर्षामे आपन ध्यान लगैने बैठल रैह गेलै।

अलार कालमके पन्थमे चलै वला एकटा व्यक्ति जेकर नाम पुकुसा रहै आ जे कुसी नगरसे पावा दिसर ज्या रहल छेलै भगवान बुद्धके वोई बडका झाट, बिजली आ भारी वर्षामे आपन ध्यानमे मगन भ्याके बिना हिलडुल क्याके बैठल देखलकैत छक परलै आ वोहै ठाम बुद्धके सधारण मन स्थितिमे आवै तलिक अडल रहलै। जाव बुद्धआपन ध्यान मुद्रासेफिर्ता भ्याके सहज मनःस्थितिमे एलै त उ कहे लागलै।

"महामान्यवर महात्माजी, हम महात्मा अलार कालमके पथमे चलैवला फकिरके शिष्य चिऐ। यद्यपि हम महात्मा कालम स्वयंके वनेलहा शिष्य नै चिऐ आ वोकर दर्शन नै भ्याल आइछ लेकिन वोकर शिक्षा पथके हमरा खौ असलसे चित्त बुझहल आइछ आ वोकर शिक्षाके सबसे उचका स्थान के प्राप्त करे चाहै चिऐ। हम सुनने चिऐ जे एकवेर महात्मा अलार आपन तपश्चर्याके ध्यानमे लागल छेलै तहै समयमे पाचसय गडीके एकटा छोर लागल वोकर लगै दने गेलै। लेकिन एके छन पाछे कोई आइवके महात्मा अलारके पूछलकै जे गडीके छोर ऐ मेगरदने गेलै कि नै त उ कहलकै जे गडीके छोर हमने देखलिऐ आ ने सुनलिऐ। महामा-न्यवर, ई त वडा कमालके बात भेलै जे महात्मा अलार कालम पाचसय गडीके छोरके अवाज नै सुनलकै आ वोई अवाजसे वोकर ध्यान भगन नै भेलै। लेकिन महामान्यवर. ई त वोहैसे वेसी आचरजके बात भेलै जे अपने ऐ झाट, बिजली ठनका आ भारी वर्षामे निठाहे भ्याके हिल डुल नै क्याके आपन ध्यान मानके भंग नै करलिऐ। की, आपने महात्मा कालमके आपनै बनेलहा शिष्य छलिऐ ?"

'ह, मित्र, हम अलार कालमके शिष्य भ्याके थोरहेक समय वोकरसे शिक्षा प्राप्त करलिए। लेकिन वोकर शिक्षासे जाव हमरा संतोष नै भ्याल त हम वोकरा छोइडके चैल जाइत रहलिऐ। वोकरा छोड़के गेलाके बादमे हम आपनैसे मेहनैत करलिऐ आ आपन वल कलके भरमे वोकरसे बहौत वडका आ आचरज आचरजके शक्ति प्राप्त करैमे सफल भेलिऐ। झाट, बिजली, ठनका आ वर्षासे डेन्याके टस मस नै हैके योग्यता त कोनो वडका शिक्षाके फलाफल नै चिए लेकिन हमजे प्राप्त करने चिऐ से त ऐ सबसे बहौत वडका ज्ञान चिऐ।"

"महामान्यवर, भरतभूवनके एकटा व्यक्ति और दोसर कोन कोन बडका ज्ञान हासिल क्या सकैछै। हमर निवेदन जेएकर वर्णका हेवक चाही।" पुकुशा बिन्ती करलकै ।

'मित्र ठनका, बिजली आ वरषा प्रकृतिके सबसे खराव शक्तिके परिचायक नै चिऐ जेकरा एकटा व्यक्ति ऐ भरतभूवनमे आईवके मुकैवला करैछै। लोभ क्रोध आ मोह येसे बेसी खतरनाक आ बिनासकारी तत्व चिए। एकटा व्यक्ति तपश्चर्यामे लिन रैहके मात्र ऐ बिनासकारी तत्व सबसे दुरौग हटल नै रहैछै बल्कि सधारण मनःस्थिति जखनी आपन सबटा ज्ञानेन्द्रीय एवं कर्मेन्द्रीय पूर्णरूपसे व्यवहारिक क्रिया कलापमे लागल रहेछै तखैनियो जाव ऐ तत्व सबसे दुरौगे रहै छै से व्यक्तिके हम सबसे शक्तिशाली जेकि मनुष्य प्राप्त क्या सकैछै तकरा शक्ति वान कहै चिऐ आ हम सह्या चिजके प्राप्त क्या नेने चिऐ। हमर धरमके पन्थो एहै बिषयमे चललछै जेकरा कि हम संचालन क्या रहल चिऐ।

यहै समयमे आनन्द भैर भिक्षापत्र कन्चन जल नेने एलै। बुद्ध जलपीके आपन प्यास मेटलकै आ कुसीनगर दिसर के आपन बाट पकैडके रसे रसे चले लागलै।

३५– पैंतिसम

बद्धके शारीरिक स्वास्थ्यके वलके अनुसार थाह भ्या गेलै जे कुसीनगर वोकर अन्तिम स्थान हेतै तैं उ आनन्दके जनकारी कन्या देलकै जे कुसीनगर वोकर यत्राके अन्तिम स्थान हेतै वोईसे बेसी उ नै ज्या सकतै। बात सुइनके आनन्द एवं आन शिष्यसव जे एखैन् तलिक सिद्ध प्राप्त नै करे सकने छेलै से सवके बडा दुःख भेलै। वोकरा सवके विचारधरा बडा दुखित भ्यागेलै।

एकटा शिष्य दोसरके कहे लागलै।

महात्माके विरामी हेवैके सवटा जिम्मेवारी चुन्डके उपरमे छै। वोकरा उ वनेल के तिमन (माँस) प्रभुजीके भोजनमे नै देवक चाहै छेलै जावकि प्रभुजी आपनै कंह देलकै जे ऐ प्रकारके भोजन हमरासव संत फकिरके वास्ते उपयुक्तनै हैछै।

दोसर कहलकै।

"लेकिन हमरा त मालूम भ्यालजे प्रभु आपनै वोई भोजनके माङ्गकैलकैआ हमरासव सनके फकिरके भोजनमे ऐहन खाद्य नै हेवैक चाही व रोकव्या देलकै। ताव चुन्डके एकर जिम्मेवारी केनङ्गके देबै।"

"कि त एकर मतलव ई भेलै जे प्रभु जाना जान ऐहेन प्रकारके भोजनकैलकै जैसे कि उ बेमार भ्या जाई? प्रभजी ऐहेन काम कथिले करलकै? तेसर शिष्य प्रश्न कैलकै।

जखनी शिष्य मण्डलीऐ प्रकारके बहसमे विचार क्या रहल छेलै तखैनिए आनन्द वोई ठाम पुगलै त एकटा गोसाई आनन्दके पूछलकै ।

महात्मा आनन्द, हमरासव प्रभुजीके करतूतसे बडा दुःखित भ्या गेल चिऐ। प्रभुजीके बेरामीके वास्ते हमरा सव केकरा जिम्मेवारी बूझवै। की ई चुन्डकेकरतूत चिऐ अथवा प्रभुजी आपनै एनङ्ग क्या लेलकै ?.

"मित्र, ई बात साच चिऐ। प्रभुजीके ज्ञातव्य छेलै जे चुन्डके देलहा भोजनके भक्षकरलासे उ बेरामीभ्या जेतै। तकर विपरीत अगर प्रभुजी वोई भोजनके स्वीकार करैके वास्ते तैयार भ्यागेल छेलै आ भोजनसे प्राप्त भेलहा फलाफलके भक्षकरैले,सव प्रकारके कोशिस क्यालेलकै। मनोवैज्ञानिक शक्तिके चारूटा मन्तरके वलके अधारमे वोई भोजनसे प्राप्त हैवैवला अधलाह प्रतिफलके हटया सकै छेलै।"

"अगर मनोवैज्ञानिक शक्तिके चारूटा मन्त्रके वलके अधारमे वोई भोजनके भक्ष करलासे उत्पन्न भेलहा अधलाह फलाफलके हट्या सकैले सक्षम हैछै त प्रभुजी दोसर दोसरके वोई भोजन करैके सलाह कथिलेने देलकै ?"

आनन्द मनैमन विहुसे लागलै ।

मित्र वर्ग, अपनेसव ई महसूस करैले विसैर रहल चिऐ जे प्रभजी दुनियाके सवसे बडका आ अतुलनीय गुरु चिऐ। उ खौ असलसे जानैछै जे महातमा व्यक्तिसव राग, द्वेष आ शंकासे उवैरके सिद्धि प्राप्त नै करे सकने छै से सव ऐ मनोवैज्ञानिक शक्तिके तन्तर मन्तरके प्रयोग कोनो गल्तिलक्षके साधनमे व्यवहारकरतै। बहौत व्यक्ति सव जे आपन सधनाके वलसेऐ प्रकारके मनोवैज्ञानिक शक्तिके तन्तर मन्तरके सिद्धि त प्राप्त क्या नेने छै लेकिन वास्तवमे राग, द्वेष आ शंकासे उपरका खाडहीमे नै पूगलछै से सव एकर व्यवहारमे बहौत ठाम गल्ती स्थानमे प्रयोग क्याके अधलाह फलाफलके प्राप्त करने छै। यहोसव कारणसे उ मनोवैज्ञानिक शक्तिसम्पन्न तन्तर मन्तरके प्रयोग मैमलाके निरूत्साहित करैछ। चुन्डसे प्राप्त भेलहा भोजनके अधलाह फलाफलके दमन करैके वास्ते उ कथिले तन्तर मन्तरके प्रयोग नै करलकै तैके सम्बन्धमे हमर विचार से ई आपन जवाफदेही तैयारक्यासकने हेतै। हमर विचारसे प्रभुजी खौ विचार क्या नेने छै जे आव वोकर जीवनके अन्त भ्या रहलछै। एकटा विश्वासी भगतद्वारा अनजानमेतैयार केल गेलहा भोजनजेकरा भक्ष करलासे थोरहेक समयतक दुःख भ्या सकैछै तकरा अस्वीकार करनाई प्रभुजीके असल नै लागलै। समय सापेक्ष वातावरण आ परिस्थितिके गौरसे विचार क्याके काम करनाईके सम्बन्धमे प्रभुजी हरदम अपनासवके देशना दैत रहैछै। संसारिक वस्तुसवके उत्पत्तिके सम्बन्धमे जे विचार पुगावै छै वह्यासव परिस्थितिके मरमके बुझ्झके तदनुरूपके क्रिया कलापमे

संलग्न भ्याके असलसे सम्पादन करैछै। संसारिक वस्तुके मुल्याङ्कन करैके कोनो खास अटुट नियम नै छै। महात्मा जन, यह्या मध्याम मार्ग चिऐ।

जखनी ई वहस भ्या रहल छेलै त बुद्ध आपनै वोई ठाममे उपस्थित भ्यागेलै। वोकरा देखके सव चुपचाप शान्त भ्यागेलै। एकटा महात्मा आपन पोशाक विछ्या देलकै। बुद्ध वोईमे अरामसे बैठलै त आपन शिष्य सवके प्रश्न पूछलकै।

"महात्मा जन, हमरा बुझ्झ परैऐ जे तोरासव असलका आ प्रमुख विषयके वर्तालापमे मगन छेलही की हमरा थाह द्या सकै चिही जे तोरा औरके कोन विषयमे वर्तालाप करै छेलही ?"

आनन्द बाइज उठलै।

"महामान्यवर चुन्डद्वारा प्रदान केलहा भोजन जेकरा भक्ष करलासे प्रभुजी अपने बडका बेमार भ्या गेलिऐ तकरा अपने कोन रूपसे विचार करै चिऐ।"

"आनन्द ई सम्भव छै जे बहौत गोडे वोई सोनारके बेटा चुन्डके ई कैहके द्वेष देतै जे चुन्ड तोरा वड पाप लागलौ। तोहर देलहा भिक्षाटन भोजनके भक्ष क्याके बुद्धके मृत्यु भेलै। ई कहनाई उचित नै छै आनन्द। आनन्द, दुई प्रकारके भोजन भिक्षा हैछै जकर फलाफल एवं पवित्रता बरावैर हैछै आ जेकर फलाफल एवं पवित्रता आन दोसर भिक्षासे बहौत उच्च दर्जा के हैछै। पहैनका भिख जेकरा भोजन करलासे एकटा व्यक्ति सवसे उचका खाडहीके सिद्धिके प्राप्त करैछै आ दोसर प्रकारके भीख जेकरा भोजन करलासे व्यक्ति निर्वाण प्राप्त करैछै आ आपन ई पार्थिव शरीरके ऐ मरतभूवनमे त्याग क्या दैछै ?"

तैं, चुन्ड ई काम क्याके बडका पुण्यके भागी भ्या गेलै आ बहौत दिन तलिक उ सुखके अनभव करतै।

उपस्थित भेलहा सन्त मण्डलीके सव गोडे शान्त रहै। अन्तमे बुद्ध पूछलकै।

"सन्त जन, तोरा सवमे कोई एहेन चिही जे हमरा किछो पूछेचाहै चिही ? अगर तोरा सवके कोनो चिज पूछैके छौ त एखनी समयछै जावे तक हम जिवै चिऔ तावै तलिक हम जवाव देतरहवौ, हमर गेलाके वादमे ई कैहके नै पछताविहै जे प्रश्न पूछैले विसर गेलिऐ।"

शिष्य मण्डलीके सन्त सव चपेचाप रहलै, लेकिन आनन्द प्रश्न क्या देलकै।

महामान्यवर, प्रभुजी, अपने एवं अपनेके शिष्यसव जे ज्ञान प्राप्त क्याके सर्व सिद्ध एवं स्वतन्त्र भ्या गेलै तकरमे कोनो प्रकारके फरक छै कि नै ?

"नै, आनन्द जहा तलिक ज्ञान प्राप्त क्याके सर्वसिद्धि एवं स्वतन्त्र हैके बात छै तै विषयमे हम एवं उ शिष्यसव जे ज्ञान प्राप्त क्याके सर्व सिद्ध एवं स्वतन्त्र भ्या गेलछै तकरमे एकोरती कोनो फरक नै छै। हमरासव बरावैर भ्या गेलिऐ। ऐ परिपेक्षमे हमरा सवमे ऐकेटा फरक जे हम बाट देखलिऐ आ उ सव हमर पछा पछा एलै आ ज्ञान प्राप्त क्याके सिद्ध एवं स्वतन्त्र हैके सवसे उचका खाडीहीमे पुगलै। ए विषयमे गत समयमे भेलहा कोनो भी बुद्ध एहिनङ्ग करने हेतै आ भविष्यमे हेवे वला बुद्ध सेहो एहिनङ्ग करतै।"

ई बात सुइनके आनन्द खुसीसे गदगद भ्यगेलै आ आनन्द खुसीसे आनन्द भ्याके नाचे लागलै। बुद्धके प्रशंसा करैत केहे लागलै।

"प्रभुजी एखैनका सवगुरूसे वडका गुरू चिऐ। देवता एवं मनुष्यमे सर्वशक्ति सम्पन्न, सर्व श्रेष्ठ मुखिया चिऐ। यखनी प्रभुजी के तुलनामे कोनोटा गुरू ऐ दुनियामे नै छै। माहामान्यवर प्रभुजीके देलहा शिक्षाके सम्बन्धमे ऐ सन्त मण्डलीके कोनोटा कोनो प्रकारके शंका नै छै तै कोनो प्रश्न नै भ्या सकैछै।

आनन्द, सन्त मण्डलीके सुझ बुझ एवं धरणाके सम्बन्धमे तो हदसे बेसी विश्वास करे लागल चिही। शिष्य हमरा आदर द्याके कोनो प्रकारके प्रश्न नै करे चाहै एकर मतलव ई नै भेलै जे ऐ मण्डली के मनमे कोनो प्रकारके प्रश्न नै छै।'

मण्डलीके सन्त मध्ये एकटा सन्त विचार क्या लेलकै जे बुद्ध हमरा सवके धरणासे अवगत भ्या गेलै त शान्तिके भङ्ग कैलकै आ पूछलकै।

"महामान्यवर, हमरा सव जनिजात सवसे कोन प्रकारके बर्ताव करवै?"

'वोकर दिसर नै ताकै।"

"अगर हमरा सवके वोकर दिसर तक्या जेतै त वोकरसे केहेन बर्तावकरवै?"

'वोकरसे नै बाजै।"

"अगर वह्यासव हमरसे बाजे लागतै त वोकरसे केनङ्ग बर्ताव करवै?

प्रज्ञाके, मन मस्तिष्कके सन्तुलित राइखके मुडी चिचा माथे क्याके बातचित कर।"

मण्डलीके एकटा महिला सन्त लख काटलकै जे ऐ प्रश्नके सम्बन्धमे बुद्धके प्रतिउत्तर त वोई सन्तके सम्बन्धमे छेलै जे एखनी तलिक सिद्धी प्राप्त नै करेसकने छै तै एकटा महिला सन्त जे सिद्धी प्राप्त नै करेसकने रहै से एकटा पुरुष सन्त संगे कोन प्रकारके बताव करतै तकर विषयमे प्रश्न करैके विचार कैलकै।

"गुरू महराज, एकटा महिला सन्त जे सिद्धी प्राप्त नै करे सकने छै उ एकटा सिद्धी प्राप्त नै भेलहा सन्त संगे कोन प्रकारके बतवि करतै ।"

'तोरा वोई सिद्धी प्राप्त करे नैसकलहा सन्तसंगे ठिक वोहै प्रकारके वर्ताव करैक चाही जेनङ्ग एकटा सिद्धी प्राप्त नै भेलहाँ सन्त करतै ।"

थोरहेक समय यत्राकेलाके वादमे बुद्ध आपन शिष्य सव संगे कुशीनगर गाममे पुललै । उ सव सखुवाके घनगहरा गाछके टोकीमे आपन आसन जम्या देलकै । बुद्ध कमजोर आ थाकल छेलै । उ अनुभव क्या लेलकै जे ओकर अन्तिम समय पुइग रहलछै । उ आनन्दके चाल कैलकै आ कहलकैजे दुइटा घनगहरा सखुवा केगाछ जेकर छहाइर हरदम रहतै तै गाछके बिचमे एकटा विछोना तैयार कर । जाव वोकर कहल अनुसारके काम सम्पन्न भेलै त बुद्ध वोई बिछोनामे ज्याके देहना करौटिया भ्याके आराम करे लागलै । वोकर एकटा गोड दोसरके उपरमे चढहल छेलै । उ पूर्ण रूपसे प्रज्ञा (मन मस्तिष्क) मान एवं चेतन अवस्थामे रहै ।

आनन्द सेहो बुझ्झगेलै जे बुद्धके जिवन आव समाप्त भ्या रहलछेलै । उ एक दिसर कातमे एकटा सखूवा गाछके अढमे ज्याके काने लागलै । एकटा दोसर सन्त आनन्दके देखलकै त वोकर लगमे एलै आ पूछे लागलै ।

"महात्मा आनन्द, तो कथिले कानै चिही ?"

"मित्र, एखैन तलिक हम बबाजिए चिऐ जकरा कर्तव्य करैके काम बाँकिएछै गुरू आव निर्वाण हैके तैयारी क्या रहलछै । कह त हम आव कथी करेसकवै ?"

बुद्ध आनन्दके अनुपस्थिती बुझ्झगेलै ।उ एकटा सन्तके चालकैलकै आ पूछलकै ।

"आनन्द कते गेलै ? हम वोकरा वडि खालसे नै देखने चिऐ । ई त वडा आचरज भेलै ।"

"महामान्यवर, आनन्द वोनेभर एकटा गाछके अढमे ओङ्गैठ के कानै छै ।"

"कि तो वोकर लग ज्याके वोकरा चाल क्याके आने सकबिही ?" बुद्ध अनुरोध कैलकै ।

जाव आनन्द वोकर लग एलै त बुद्ध कहे लागलै ।

"बहौत भेलौ, आनन्द, बहौत भेलौ, अपसोच नै करै । तो हमर वडका सहायक भेलही आ एहेन भेलासे तो हमर शिष्यके सेहो बडका सहायक भेलही । तैमे सिद्धी प्राप्त कैलहा सेहोसव आइव जाइछै ।

"ई वास्तवमे एखनी एहेन समय एलै जे तोरा वडका साहससे काम करे परतौ । तोरा सवके कथी हम बेर बेर नै कहने चिओ जे आपन प्रीय बस्तुसे बिछुरन हेवेटा

करैछै ? जे चिज ऐ दुनियामे उत्पति लेलकै तकर बिनास हेबेटा करैतै । आनन्द, तो बहौत दिनसे, स्थाई रूपसे, वडा यतनसे, खूसी खूसीसे आ अपनाइतके भावसे हमर सेवा करैत एलही । तोहर जिवन एक प्रकारके बहौत बडका सफलता प्राप्त क्या नेने छौ । तो यहै प्रकारसे आपन काममे प्रयत्न करबिही त वडा जल्दीसे तोरा सर्व सिद्ध ज्ञान प्राप्त हेतौं । आ तो स्वतंत्र भ्या जेवही ।"

ऐ प्रकारसे जाव आनन्दके चित भरोस देल गेलै त वोकरा बकार फुटलै । एखैनियो तलिक ढव ढव्याल आइख करने आनन्द बुद्धके बिन्ती करे लागलै ।

"प्रभुजी, कुशीनगर एकटा वड छोट बजार चिऐ । अपने सर्व सिद्ध पुरूषके ऐ छोट जगहमे निर्वाण नै हेवक चाहै छेलै । चम्पा, राजगीर, श्रावस्ती, साकेत, कोसाम्वी आ वाराणसी सनके वडका शहर छै । सर्व सिद्ध पुरूषके वोहेन सबजगहके शहरमे निर्वाण प्राप्त करनाई बढिया हेतिऐ । वोई वडका शहरके बहौत बहौत लोक सव आपने सर्व सिद्ध पुरूषके प्रतिष्ठा स्थापना करतिऐ ।"

आनन्द, एहेन बात नै बाजक चाही । ई शहर छोट छै तै एकर हेला क्याके कोनो प्रकारके बात बजनाई उचित नै हैछै । के जाने गेलै ? आवै वला समयमे ई छोटका शहर बहौत वडका भ्या जेतै आ उ वडका शहरसवके नामो निसान नै रहतै । औजका राइतके आनन्द, औजका राइतके अन्तिम पहरमे हम चैल जाइत रहवौ । हम आपन अन्तिम निर्वाण प्राप्त क्या लेवौ ।

ई समचार वोई शहर भैरमे तुरून्ते चारूकात बिस्तार भ्या गेलै । मल्ल देशके वोई छोटका शहर कुशनिगरमे बुद्धके आगमन भेलछै आ बुद्ध आइके दुनियासे निर्बाण ल्यालेतै से समचार सुइनके शहरके छोटका, बडका सव जम्मा हेवे लागलै । शाक्य वंशीय महात्माके अन्तिम प्रतिष्ठाके वास्ते झुण्डके झुण्ड लोकसव आवे लागलै । वोई झुण्डमे एकटा फिरन्ते योगी रहै जेकर नाम सुभद्र छेलै ।

सुभद्र आनन्द गल गेलै आ बुद्धके दर्शनके वास्ते अनुरोध कैलकै ।

"नै मित्र । आव प्रभुजीके हरान करैके समय नै रहलै । प्रभुजी वड थाकलछै ।" आनन्द जवाव देलकै । सुभद्र वोकरा बिन्ती करैत रहलै आ आनन्द वोकरा नकार करैत गेलै ।

बुद्ध वोकरा औरके बात चित सुनलकै । उ आनन्दके कहलकै ।

"आनन्द, सुभद्रके आवे दहै वोकरा वहारमे नैराखै । वोकरा हमर लग आवे वहै । वोकरा अगर कोनो प्रकारके सन्देह छै त उ हमरा हरान करैके खातिर कुछने

पूछत । बल्कि ज्ञान प्राप्त करैंके वास्ते वोकरा जिज्ञासा हेतै । उ एकटा अनुभवी व्यक्ति चिऐ आ हम जे कहवै तकरा उ वडा जल्दी बुझ्झजेतै ।"

सुभद्रके, बुद्ध जे आपन निर्वाणी बिछोनामे अराम क्या रहल छेलै तकर लग जाइके सलाह भेटगेलै ।

"प्रभुजी, अपनेके ऐ थाकल अवस्थामे रहितौ जे अपनेके कष्ट द्या रहल चीऐं तकर वास्ते हम माफि चाहै चिऐ ।"

"तो आपन काम कर सुभद्र । तोरा अगर कोनो प्रकारके प्रश्न पूछैके छौ त से हमर से पूछ ।" बुद्ध जवाव देलकै ।

"प्रभुजी, एखनी बहौत महात्मा एवं बावहन सवछै जे सवके आपन आपन आश्रमछै । सवके आपन पन्थछै । सवके आपन आपन शिष्य समूहछै आ ई सवटा आपन पन्थके वास्ते प्रसिद्धी प्राप्त क्याके महात्माके दर्जा प्राप्त क्या नेने छै जेनङ्ग पूर्ण कस्यप, पाखूधा कात्यायन, मक्खाली गोसल, अजित केशम्वली, संजय वेलाथिपुत्र एवं निगन्थ नातपुत्र जे सव अपनाके अन्तर्यामी आ सर्व सिद्ध कहैछै । ऐ सवमे की त सवटा अन्तर्यामी एवं सर्व सिद्ध भ्या गेलछै अथवा कोई कोई मात्रै सर्व सिद्ध छै ?"

"सुभद्र, अगर कोई गुरू ई दावा करैछै जे उ सर्व सिद्ध ज्ञान प्राप्त कैरने छै अथवा नै करने छै एखनी से प्रश्न करैंके समय नै छौ । तै प्रश्नके फटके राख । हम तोरा सिद्धन्तके वर्णका क्या दे चिऔ तकरातो ध्यानसे सुन ।"

"जी, गुरू महराज, कृपा हेतै ।" जवाव देलकै सुभद्र ।

सुभद्र जै सिद्धान्त आ शासनमे अष्टांङ्गिक मार्गके असलसे वर्णका नै क्याल गेल रहैछै तै सिद्धान्त आ शासनमे वास्तविक शिष्यके वड कमी रहैछै । ई त वोई सिद्धान्त एवं शासनके सुसंचालन क्याके कायम राखैके महत्तामे, वोकर पालन क्याके चलवैवला शिष्य सवके कर्तव्याकर्तव्यके मूल्याङ्कनके अधारमे अधारित रहैछै । अगार शिष्यसव आपन सम्यक अहार-व्यवहार पालन करैमे सक्षम भ्याके तदनुरूपके काम कर्तव्यमे संलग्न रहतै त ई दुनिया सन्त महात्मासे खाली नै हेतै ।

एतहेक सुइनके फकिर सुभद्र खौ खुसी भेलै ।

"सुन्दर, अति सुन्दर, प्रभुजी, ई वास्तवमे बहौत सुन्दर छै । एकटा सिद्धान्त एवं अनुशासनके मूल्यांकन करैंके वास्ते ई वास्तवमे सवसे बढिया तरिका चिऐ । कोई भी जेकरा मूल्यांकन करैंके दोसर अधार अवगत नै छै से ऐकर माध्यमसे

सिद्धान्त एवं अनुशासनके मूल्यांकनके साथै वोई सिद्धान्त एवं अनुशासन के प्रतिपादन करनिहार सर्व सिद्ध ज्ञानसे अभिभूत छेलैं कि नै तकरो विषयमे मूल्यांकन भ्या जाइछै। प्रभु, गुरू महराज, की अपने हमरा आपन शिष्य मण्डलीमे सामिल हैके आज्ञा प्रदान क्या सकै चिऐ ?"

बुद्ध आनन्दके चाल करलकै आ आनन्दके अनुरोधकैलकै जे उ सुभद्रके सन्त मण्डलीमे भर्ना क्या लेतै। ए प्रकारसे सुभद्र भगवान बुद्धके आपनै शासन कालमे भेलहा शिष्यमे सवसे अन्तिम शिष्य भेलै।

एकर बाद वोई ठाम जम्मा भेलहा सवटा शिष्यसवके बुद्ध आपन लग जर करैलकै आ कहे लागल।

"ऐ ठाम जमा भेलहा शिष्यगण, जाव हम चैलजेवो त तोरासव ई विचार करे लागबिही जे गुरू वचन त गतके बात छेलै जेकर आव ततहेक उपयोगिता नै रहलै। लेकिन तोरा सव एकरा ऐहैं प्रकारसे विचार नै करिहे। सिद्धान्त जेकर विषयमे हम तोरा सवके शिक्षा देलिऔ आ अनुशासन जेकरा हम संस्थागत करलिऐ हमर गेलाके बादमे सेह्या तोरा सवके गुरूके काम करतौ।"

बुद्ध अराम करैके वास्ते थोरहेक समय तक चुपचाप रहलै। अन्तमे उ कहे लागलै।

"हम तोरा शिष्यगणके ईबात खोइलके कहै चिऔ जे संसारकेप्रत्येक अधिकारीक क्रीया कलाप आ वोई अधिकारीक क्रीया कलापके माध्यमसे प्राप्त भेलहा सव चिज क्षणभंगुर छै। आपनै मेहनतैके बल बुतासे ज्ञान प्राप्त कर।"

ई बात बुद्धके मुखारबिन्दसे निकललहा अन्तिम वाक्य छेलै।

रसे रसे बुद्ध आपन नेत्रके बन्द क्या लेलकै आ जिनगी भैर अभ्यास कैलहा तपस्यामे लीन भ्यागेलै आ प्रत्यक्ष दर्शनके सवसे उचका खाडहीमे पुइगके विचरण करे लागलै आ अनुभव प्राप्त करे लागलै।

जमा भेलहा शिष्यसवके आनन्द कहे लागलै।" सर्व सिद्ध ज्ञानी पुरूष आव अतिम निर्वाण प्राप्त क्या लेलकै।"

अनुरूद्ध जे आनन्दके संगे संगे बुद्धके सन्त मण्डलीमे बैराग लेने छेलै आ जे आपन मेहनैतके बलसे सिद्धि प्राप्तिके ज्ञान प्राप्त क्या लेने छेलै से कहे लागलै।

"नै आनन्द, सर्व सिद्ध प्रभुजी एखनी अन्तिम निर्वाण नै प्राप्त करने छै। प्रभुजी एखनी खाली तपस्याके अन्तिम खाडही के निरोध स्थानमे पुगलछै।

वोई निरोध स्थानसे फिर्ता भ्याचे रसे रसे बुद्ध तपस्याके प्रथम स्थानमे पुगलै अा वोई ठामसे फेरो तपस्याके चारिम स्थानमे पुगलै ।

अन्तमे तपश्चर्याके सवटा खाडहीके त्याग क्याके बुद्ध आपन लौकिक स्थितीमे पुगलै आ आपन नेत्रके विस्तारीत क्याके ऐ दुनियाके अन्तिम बेर असलसे लिहाइरके देखलकै आ अन्तिम साँस ल्याके निर्वाण प्राप्त करलकै ।

इति सुभम्

उद्धरण:-

ऐ पुस्तकमे देलहा उद्धरण सब सवटा पाली साहित्य समाज द्वाराप्रकाशित अख्यानमे अधारित क्याल गेल छै ।

प्रथम अध्याय

सिद्धार्थ ऐ पुस्तकमे सबसे पहिने गव लैके समयभमे चित्रित क्याल गेल छै । ई वर्णन महा सत्यक सुत्र (मझिन निकाय १.२४६) मे अधारित छै । ऐ वर्णकाके बहौत बिद्वान सब खेतमे हर ठाडकरैके पावैन मानने छै लेकिन वास्तवमे ई गव लै कलाके वर्णन चिऐ । निकायमे" पितु शाक्यसा कामान्ते" लिखल शब्दके वर्णकामे ई बिचार व्यक्त क्याल गेल छै । ऐ अध्यायमे कहल अनुसार सिद्धार्थ रौदसे बचैले घनगरहा गाछ तरमे बैठैले गेलै आ ध्यानस्त भ्या गेलै । ई ध्यान योगाभ्यासके प्रथभ चरणके सिद्धिके उपलब्धी चिऐ । समालोचक महोदय सब महायान खण्डमे वर्णन केलहा बोधिसत्वके उपाधिसे विभुषित करैके विषयमे जोर दैके खातिर कहल गेल नहाइत मानल गेल छै। ई मानल गेलछै जे सिद्धार्थके पहिनका जनमके केलहा अभ्यासके फलाफलसे ऐ जनममे वोकरा एकोरति ध्यान लगैलासे प्रथम चरणके सिद्धी प्राप्त भ्याजाइछै, (ललित विस्तर) लेकिन वास्तवमे सिद्धि प्राप्त करैसे थोरहेक पहिने वोकरा ई सिद्धी प्राप्त भेलछै । हम यहै गव लैवला घटनासे ऐ पुस्तकके प्रारम्भ करने चिऐ ।

ऐ अध्यायके दोसर घटना गुरू असित काल देवल पाहिबालक सिद्धार्थके भविष्यवाणी के वर्णन छै। ई भविष्यवाणी सिद्धार्थके अगामी जिवनमे बहौतवडकारूपसे प्रतिभूत भेलछै। वास्तवमे एकटा ऐतिहासिक घटना क्रमसे वर्णका भेटैछै जेनङ्ग सुत्र निपात (५५-६९८) के ललकु सुत्र जे एकटा बहौत पूरान सुत्रमे गनल जाइछै ।

दोसर अध्याय

सिद्धार्थके समसामयिक उपनिषद जेनङ्ग बृहदरण्य एवं छन्दयोग उपनिषद

जै सबके पद्धतिमे अधारित शिक्षामे सिद्धार्थ दिक्षित क्यालगेल रहै । ऐ दुनु उपनिषदके सुत्रधार उद्धालक आरुणी एवं यज्ञवालक्य ऋषी मूख बिभूति मानल जाइछै । उद्धालक आरूणीके दिक्षा पद्धती यज्ञवालक्यके शिक्षा पद्धतीसे सिद्धान्त एवं व्यवहार दुनुमे बहौत फरक भेटैछै । उद्दालक एकटा दार्शनिक मानल जाइ छै जावकी यज्ञवालक्य अजगुत अजगुतके लिलादेखबैके सामर्थ्य राखै छेलै । ऐ कथामे ऐ दुनुमे निहित बिषयान्तरके समाहित करने चिऐ । उद्दालकके असलसे सैरिय्याल दर्शन गान्धारके शिक्षा संसर्गसे प्राप्त भेलहा विषयके अभिलेख मार्फत जानकारी प्राप्त भेलछै । गन्धार भरतवर्षके उत्तर पछिमके एकटा रजवडा रहै जकर रजधानी तक्षशिलामे छेलै आ जे तत्कालिन पाश्चात्य देशके ग्रीस रोमन सभ्यतासे अटुट रुपमे सम्बन्ध कायम रहै । छन्दयोग उपनिषदसे प्राप्त भेलहा प्रमाणके अलैहदाबुद्ध साहित्यके उद्दालक जातक कथामे सेहो एकर वर्णन भेटैछै जे ई दार्शनिक तक्षशिलामे आपन अध्ययन एवं अध्यापन कार्य सम्पन्न करने रहै (छन्द योग उपनिषद–६, १४–१, २ एवं जातक ४–२९८)

छन्दयोग उपनिषदमे भेलहा प्रमाणके अनुसार शाख्य बिचार दर्शनके अधारशिला उद्धालक आरुनीके शिक्षा पद्धतीमे निमित क्याल गेलछै । वर्तमान समयके विद्धान सब बुद्ध धर्मके अधार शांख्य पद्धतीमे अधारित हैके विषयमे सहमत भ्या रहलछै जावकी प्रारम्भिक बुद्ध साहित्यमे ऐ विषयके प्रमाण नै भेटैछै लेकिन सिद्धार्थ ऐ सब शिक्षा पद्धतीसे पूर्ण रुपसे अवगत छेलै से बात निर्विवाद छै। सिद्धार्थ शिक्षा आर्जनके वास्ते आपन घर कपिलवस्तुसे बहार कहियोने गेलै तै बातके प्रमाण बुद्ध साहित्यमे आदीकालसे वर्णन क्याल गेलछै । बाहरी दुनियाके ससंर्गमे आइबके सिद्धार्थके संसारिक ज्ञानमे दखल हैके वास्ते शांख्य पद्धतीके बखान करैवला कपिलके ऐ कथामे तहै दुवारे तक्षशिला दिसर पठैने चिऐ । कपिल एवं दोसर वालशखा ललकु आ नरदत्तके मार्फत सिद्धार्थ तन्तकालिन भारतके वडका जगह सबमे भेलहा वा हैत रहैत समाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक उथल पूथलके ज्ञान हासिल करैमे उपयोगी सावित करैके कोशिस क्याल गेलछै । सिद्धार्थ एके बेर आपन घर त्याग क्याके बहरैले आ दुनियाके इतिहासके बदैल देलकै ।

तेसर अध्याय

ब्रह्मा रचित श्रृष्टी मानव आ एकर वातावरणसे अवस्थित स्थाई आ अविनासी तत्व के संगे वर्ण विभाजनके चारू जाइत एवं समाजिक नितिमे अधारित जातिय व्यवस्था ई सब वात कथित हिन्दु धर्मके ढकोसला पूर्ण शिक्षाके अङ्ग

मानल गेलछै। ऐ विषयके प्रमाणिकता के सम्बन्धमे के. एन. जयतिलके "प्रारम्भिक बौद्ध सिद्धान्तके ज्ञान" (लन्डन, एलेन एण्ड अनबिन १९६३) एवं कलपहना दम्पति द्वयके "कारणी, बुद्ध धर्मके सार तत्व" (होनोलूलू युनिभरसिटी प्रेस हवाई १९७५)। सिद्धार्थके बावहन विद्याके ऐ शिक्षा पद्धतिमे पारंगत क्याल गेल छेलै अथवा सिद्धार्थ एकटा टुगर बच्चा भेलाके कारण ऐ शिक्षा सबके उ आपन अनुसार से अखिहास क्या के तदनरूपके मनोभवनाके उजागर करैके अभ्यास बचपनै से क्या रहल छेलै। ऐ तेसर अध्यायमे सिद्धार्थ से पहिनका समसामयीक परम्पराके वर्णन जेनङ्ग ऋग वेद(ऋग वेद १०–९०) के नारायण पुरुष सुक्तमे वर्णित समाजिक दर्शन आ यज्ञवालक्य द्वारा प्रतिपादित बृहदरण्य उपनिषदके सिद्धान्तमे अधारित क्याल गेलछै। ऐ सिद्धान्त सबके वर्णन बुद्ध साहित्यमे भर मार धेटैछै जे विषयान्तर सेहो छै। ब्रह्मजाल सुत्र (दीर्घ निकाय १–१८), आगम सुत्र (३–८०) कात्यायन गोत्र सुत्र (संयुत्त निकाय २–१७) आदि।

चारिम अध्याय

यद्यपि बद्ध उपनिषदमे वर्णन भेलहा अजगुत सिद्धान्तके अस्वीकार करने छै लेकिन उ भौतिक वादी नै छैलै। अजित केशम्वली एवं पाकुधा कात्यायन नहाइत प्रसिद्धी प्राप्त भौतिकवादी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तमे नैतिक चरित्रके दर्शनके उ वडा सुक्षमरुपसे दृष्टीगत करै छेलै। ऐ बातके प्रमाणिकता बौद्ध साहित्यके समानफल संहिता (दीर्घ निकाय १–४७) से प्राप्त क्याल ज्या सकैछै ई अध्याय एहै नैतिकताके प्रतिकूलमे सिद्धार्थके मनोभावनाके वर्णन भेलछै।

खेल प्रतियोगिता आ संगित प्रतियोगिताके वर्णन (ललित विस्तर, ई. प्रथम शताब्दि) ब्रह्म जाल सूत्र (दीर्घ निकाय २–६) एवं जातक कथामे भेटैछै। शाक्य बंशके प्रभावकारी युवक भेलाके कारणे सिद्धार्थ ऐ सब समाजिक जमघटमे आपन क्रीया कलाप देखेनाई स्वभाविक भेला के कारणे ऐ अध्यायमे प्रस्तुत क्याल गेल छै।

पंचम अध्याय

थरूनी कथा (५५.२३६–२५१) मे एहै प्रकारके वर्णन भेलाके कारणे ऐ अध्यायमे ऐलछै जै मे बुद्धके एकटा महिला शिष्य जेकरा एकटा बाबहन जे जलके तर्पण क्याके पवित्र हैके अभ्यास करै छेलै तहै बतकहामे अधारित छै। ऐ अध्यायके अन्तमे रोहणी लटीके किनार मे बैठल सिद्धार्थ जे एकछन एकदमसे निमग्न है छै से विषय अनुसोथा (अंगुत्र निकाय २.०७) से उद्धत क्याल गेलछै।

छठम अध्याय

प्रारम्भिक बौद्ध साहित्यमे सिद्धार्थके घरवाली हेवँके कोनो वर्णन नै भेट रहल छै। ऐ ठाम सिद्धार्थके घरवाली यशोधरा नामसे परिचित क्याल गेलछै। वोकर दुइटा वहँनपा रोहणी आ अनुपमा थरूनी गाथाके(५५.२७१–२९०) एवं (५५–१५१–१५६) मे क्रमशः भेटैछै।

सातम अध्याय

ऐ अध्यायमे वर्णन केलहा विषय प्रारम्भिक बौद्ध साहित्यमे अप्राप्त छै।

आठम अध्याय

विवाह पश्चात सिद्धार्थ ऋतु अनुसारके निवास करैले तीन ठाममे निर्मित घर एवं जनिजात नटुवा सबके द्वारा सिद्धार्थके मनोरज्जन हैके वर्णन (अंगुत्र निकाय १–१४५ आ मझिम निकाय १–५०४) मे भेटैछै।

नवम् अध्याय

यहौ अध्यायके वर्णन पुरना बौद्ध साहित्यमे नै भेटेछै लेकिन सिद्धार्थके बबाजी मनोभावना जै जिवनके उ अपनैलकै तै दिसर ल्या जाइतले ई कथा गडहल गेलछै।

दसम अध्याय

सिद्धार्थके बबाजी हैवेसे रोकैले वोकर घरवालीके जतहेक प्रयास भेलै तैसे बेसी वोकर महताइर वापसे भेलै। बहौत पुरना दुइटा आख्यानसे ऐ बात के प्रमाणिकतासाबित है छै जैमे सन्तप्त पितृके वर्णन छै (माझिम निकाय १.१६३)

एगारहम अध्याय

सिद्धार्थके वियाह भेल छेलै। वोकरा घरवालीसे एकटा पुत्र सेहो भेलै छेलै तै बातके पुरना ग्रथं सव प्रमाण नै दैछै तैयो भारतीय सभ्यताके समाजिक क्रीयाकलापमे अधारित ग्रन्थ सवके निचोड जै मे समाजिक रूपसे भारतीय महाद्विपमे वियाहके प्रथा सर्वथा प्रकृतिएकटा नै छेलै बल्कि अनिवार्यता सेहो रहवे करै।। फेर जङ्गलके खोजमे निवास करै वला समाजके ई अनिबार्यता और बेसी अपरिहार्य छेलै तै ई बात जे सिद्धार्थके पत्नी छेलै वा नै छेलै तै वातके एतिहासिक तथ्य मात्र प्रमाणिकताके आधार नै चिऐ। यहै सव कारणसे ऐ अभ्ध्यायमे पैछला ग्रन्थ महावस्तु एवं ललित बिस्तर (ई स प्रथम शताद्वी) के अधार बन्याके वर्णका क्याल गेलछै।

बारहम अध्याय

सिद्धार्थके जनमके तुरून्त बादमे वोकर महताइर स्वर्गिय हैके विषय आ वोकर मौसी प्रजापति गौतमीके वोकर पालन पोषणके अभिभारा लेनाईके वर्णका दक्खिन बिभङ्ग सुत्र (मझिम निआउय ३.२५३)मे भेटैछै ।

हमरा सवके ज्ञातव्य अनुसार सिद्धार्थके देखलहा चाइटा दृश्य बेमार व्यक्ति, बृद्ध व्यक्ति, मुर्दा आ फकिर जे वोकरा बबाजी हैके बेसी प्रेरणा देलकै तकरा जाइनके ऐ कथामे सामिलनै करलिऐ । ई साच भ्या सकैछै लेकिन पुरना प्रमाणमे ईबात नै भेटैछै। ऐ अध्यायमे बतही जनि जात के वर्ण न थरूनी गाथाके (५५–२१२ २२३) मे भेटलछै ।

तेरहम अध्याय

यहौ अध्यायमे कहलहा बातके सम्बन्धमे पुरना ग्रन्थ कोनो प्रमाण नै दया रहलछै लेकिन महापदान सुत्र (दीर्घ निकाय २.२८) मे ऐं बात के वर्णन भेटैछै जे सिद्धार्थ राइतके घोडामे सवार भ्याके घरसे बहरैलै। सिद्धार्थ से पहिनका बिषपी बुद्ध सेहो यहिनङ्ग क्याके घर त्याग करने छेलै ।

चौदहम अध्याय

सिद्धार्थके जिवनके पूर्ण परिवर्तनके साथे दुनियाके इतिहास बदलै वला ऐ अध्यायके विषयमे बौद्ध साहित्यके सवसे पुरातन ग्रन्थके अधार ल्याके वर्णन क्याल गेलछै। अरिय परिय सन सुत्र (मझिम तिकाय १.१६०–१७५) एवं महा सत्यक सुत्र (१–२४०) । ऐ सुत्र अनुसार सिद्धार्थ प्रखर प्रयौगिक सन्त अलार कालम एवं रूद्रक रामपुत्रके निर्देशनमे दिक्षित हेवे लागलै ।

यहै अध्यायके दोसर भागमे स्वयं शरिर सधनाके अभ्यासके वर्णन उपरका कहलहा महा सत्यक सुत्रसे उद्धरण क्याल गेलछै ।

पन्द्रहम अध्याय

सिद्धार्थके महगके रजा बिम्बीसारसे भेट बर्तालापके विषय पवज्या सुत्र निपात (५५–४२५) के प्रमाणिकतके आधार मानने छै । बोधि वृक्षके तरमे बैठके ध्यान मगन हैके विषय अरिय परियबेसन सुत्रके अन्तर्गतके वर्णका चिऐ । सुजातके कथा परम्पारिक कथा संग्रहसे उद्धत क्याल गेलछै । मनके मथैवला आपने मनोभावना से सङ्घर्ष करैके कथा ध्यान सूत्र स्तुतनिपात (५५–४२५–४९) एवं परस्परासे कथित संग्रहके समिश्रण मे अधारित छै ।

सिद्धार्थके सिद्धिके विषय सम्बन्धमे अरियपरियसन सुत्र एवं तेविज वत्स गोत्र सुत्र मझिम निकाय ६१-४८१-४८३ मे अधारित क्याल गेलैछै । अरिय-परियसनमे ई बात कीटके लिखत छै जे बुद्धके बुद्धत्व मन मस्तिष्कके एकाग्र क्याके मात्र नै भेलछै बल्कि आपन आन्तरिक नैतिकताके सेहो बडका विकास करने छेलै । यदयपि ऐ आन्तरिक नैतिकता के विश्वासके सम्बन्धमे अपवित्र क्रीया कलापके त्यागसे प्राप्त भेलहा विषय जे दुईटा उच्चतम ज्ञानके अभिभूत करैछै जेकरा (अभिन्न) के सज्ञा देल गेलछै । उच्चतम ज्ञान बहौत प्रकारके मानल गेलछै । ऐ कथामे स्थापित केलहा विषय तीन प्रेकारके उच्चतम ज्ञानके जेकरा बुद्ध स्वयं प्रमुख मान्यता देनेछै आ जे तेविज बत्स गोत्र सुत्रमे वर्णन क्याल गे लछै ।

सोलहम अध्याय

सिद्धार्थ सिद्धि प्राप्तक्याके बुद्धत्व प्राप्त कैरके तुरन्ते बादमे जे सिद्धि सम्वन्धमे बिचार करे लगलै तैसे चाइरटा आदर्श सत्य, एवं कार्य व्यूत्पन्नके सिद्धान्तके बारह कडीके निरूपण कैलकै ई विषय बौद्ध साहित्यमे भरमार रूपसे व्याख्या क्याल गेलछै तै सबके वखान करनाई ततहेक बढिया ऐस्में नै बुझहै चिऐ ।

पहिलका दिक्षान्त सम्मेलन जे बाराणसीमे भेलै आ जे "धम चक्र परि-बर्तनके' नाम से संसारमे प्रसिद्धि प्राप्त करलकै से विषय अरिय परियसन सुत्रमे वर्णन क्याल गेलछै । ये सम्मेलनके व्याख्या संयुक्त निकाय (५-४२०) मे छै एकर वाद ऐ संसारके अनित्य हैके गुढ विषयमे सेहो यहै निकाय मे बखान क्याल गेलछै ।

सत्रहम अध्याय

अश्वजित मार्फत कोलिता एव उपातिसाके प्रवज्या लेनाइके विषयके वर्णन परम्परा के अधारमे क्याल गेलछै लेकिन ई दुनु शिष्य जे पाछू मोग्दल एवंसारि-पुत्रके नामके जग जाहिर भेलै तकर सिद्धिके सम्बन्ध मे दिर्घ नख नामके एकटा फकिरसे बुद्धके भेलहा धम चर्चा सम्बन्धमे (दीर्घ नख सुत्र मझिम निकाय (१-४९७-५०१) विषयमे अधारित क्याल गेलछै । दीर्घनख सुत्रके मार्फत ऐ दुनु शिष्य कोलिता एवं उपातिसाके सिद्धिके बखान ऐ ठाम जोडनाई आवश्यक भ्या गेलछै । ई दुनु शिष्य तत्तकालिन महाबिचारक सन्त संजय बेलाथिपुत्र जे कोनो विषयमे बढियासे बुझवैके कोसिस नै करे तकर शिष्य भ्याके तहि प्रकारके नकारात्मक पक्षके मनोभवना से प्रेरित छेलै ।

संयुक्त निकाय (४-३८८) के बहस अनुसार सन्तके मनरनोपरान्त के स्थितिमे सारिपुत्रके मनाभवनामे एलहा शंकाके सविस्तार व्याख्या क्याल गेलछै ।

अगर वास्तवमे ई बात चिऐ त दिर्घनखंसे भेलहा धर्म चर्चाके समयमे वोकरा सिद्धि प्राप्त नै भेलै तै ई जरूरी भ्या गेलैजेजै समय मे बुद्ध उपाख्यान दैछैलै आ दसटा अध्यायमे वर्णन केलहा विषय कुल माल्यांक सूत्र (मझिम निांय १.४२६) अगी अडगे वत्स गोत्र सुत्र (१.४८३)आ संयुक्त निकाय (४.३९१)से लेल गेल छै ए सूत्रसवमे चाईर प्रकारके (१) प्रश्नके वर्णात्मक बिभेद (२) प्रश्नके खण्डी करणके अधार (।।।) प्रश्नके प्रश्नात्मक विचार (।।।।) अनुन्तरित प्रश्नके ई कथा अंगुत्र निकाय (२.४६) मे एल छै ।

अठारहम अध्याय

कश्ययके कथा बुद्धके पारम्परिक कथाके जोडतीसे जोडल गेलछै । यै ठामजे वर्णन क्याल गेलछै से सवटा खण्ड थारू कथा (५५–६७) (५–३८०) से ल्याल गेलछै । कश्यप भेलहा बहसके विषय आदित्य परिय एवं संयुक्त निकाय (४–१९–२०) से उद्धृत क्याल गेलछै ।

समाजिक एवं राजनैतिक सम्बन्धमे रजा बिम्वीसारके बुद्ध जे देशना देलकै से विषय चक्कवत्ति सिहानन्दा सुत्र (दिर्घ निकाय ३–५८–७९ ए)आगभा सुत्र (३–८०–९८) मे वर्णका क्याल गेल छै ।

उनैसम अध्याय

कालुदाईके विषय थारू गाथा (५५–५३७) से प्राप्त हैछै । कपिलबस्तुमे शाक्य रजा शुद्धोधनके नेतृत्वमे वुद्धके देलहा उपदेश अलगदुस्म सुत्र (मझिम निकाय १.१३०–१४२) से उद्धृत क्याल गेलछै । थारू कथामे नन्दके विषयमे उपाख्यान छै । सौरभनन्द महाकाव्य (ई स. ७८) यहैमे आधारित छै यखैनका कथा सेहो एकरे जोडती चिऐ ।

बीसम अध्याय

ऐ अध्यायमे प्रारम्भिक विषय परम्परा अनुसारसे ल्याल गेलछै । दण्डपानी के प्रश्न एवं बुद्धके प्रतिउत्तर विगय अंगुत्र निकाय (४.२२०) गौतमी जे बुद्धके पहिरन देलकै से दक्खिन विभंग सूत्र (मझिम निकाय ३.२५३–२५७) आ बुद्धके अस्वीकारोक्ति सम्बन्धके उपाख्यान अगुत्र निकाय (५.३२८) से सम्बन्धीत छै जैमे बुद्ध कपिलबस्तुसे धुनी उठवैके बातछै ।

एकैसम अध्याय

बिनय पिटक (२.१८२–१८३) से सम्बन्धित विषयसे ई अध्याय प्रारम्भ क्याल गेल छै। चोचा बानर आ हाथीके उपाम यहै प्रकाण (२.१६१–१६२) मे अधारित क्याल गेल छै। कोई छोट छै तकरा हेला करनाई बढिया बात नै है छै से सम्बन्धमे बुद्धके चेतावनी संयूक्त निकाय (३.१) से ल्याल गेलछै।

बुद्ध एवं जानुसोनीके बिचमे भेलहा बर्तालाप चिनी भषामे प्राप्त शोभा सुत्रके –संयुक्त निकाय (३.१) से उद्धृत क्याल गेलछै। पाली भाषामे एहै प्रसंगमे जानुसोनीके चर्चा नै भेटैछै मगर यहै सम्वाद नहाइत दोसर स्थानमे जानुसोनीके वर्णका भेटैछै। संयुक्त निकाय (२–७६) बुद्ध कात्यायान सम्वाद कात्यायान गोत्र सुत्र (संयुक्त निांय २.१६.१७) जेकरा दुनियाके प्रत्येक वडका बौद्ध दार्शनिक सव उद्धरणके रूपमे समाविष्ट करनेछै। अन्तमे दुई प्रकारके ज्ञान विषयके चर्चा संयुक्त निकाय (२–५६–५९) से ल्याल गेलछै।

बाइसम अध्याय

बुद्ध लग अनाथपीण्डकके पहुच, संयुक्त निकाय (१.२१०–२१२) आ अनाथपीण्डकके देलहा उपाख्यान अंगुत्र सुत्र (२.६९–७०) के अनुसार छै। अनाथपीण्डकद्वारा निर्माण क्याल गेल बौद्ध बिहारके बर्णन विनय पिटक (२.१५४–१५९) मे आधारित छै। पुत्रके मृत्यु शोक से बिह्वल भेलहा व्यक्तिके साथे रजा प्रसोनजित आ रानी मलिकसे बुद्धके बर्तालाप पीयजातिक सुत्र (मझिम निकाय २.१०६–११२) से उद्धत क्याल गेलछै।

तेइसम अध्याय

महीला सबके सन्त मण्डलीकमे सामिलहैके बास्ते प्रजापति गौतमीके अनुरोध बिषय बिनय पिटक (२.२५३) आ अगुत्र निकाय (४.२७४–२७९) अनुसारके बर्णका भेटलछै। पुरुष एवं महिला एक दोसर प्रतिके आकर्षण सम्बन्धके बतकहा अगुत्र निकाय (१.१–२) मे भेटैछै।

कपिल बस्तुमे दिक्षान्त गृहके निर्माण, उदघाटन, बुद्धके उपदेश आ बेमार परनाई बिषय के बात शेष सुत्र (मझिम निकाय १.३५३–३५९) मे भेटैछै। आनन्द जे दन्डपानीके बात कहनेछै से अगुत्र निकाय (१.२१९–२२०) आ भिक्षाटन करैके समय नन्दके अस्वभाविक चरित्र संयुक्त निकाय (२.२८१) से ल्याल गेलछै।

चौबिसम अध्याय

बुद्धके बैशालीमे आगमन आ जैन शिष्य सत्यकसे बर्तालापके बिषय कुल सत्यक सुत्र, (मज्झिम निकाय १.२२८–२३७) से प्राप्त क्याल गेलछै। सर्व सिद्ध सम्बन्धमे बत्सगोत्रसे भेलहा बर्तालाप तेविज बत्स गोत्र सुत्र (१.४८१–४८३) से उद्धत्त क्याल गेलछै। महिला बर्गके सन्त मण्डलीमे सामिल करैके बिषय अगुत्र निकाय (४.२७४–२७९) आ अम्बपालीके व्यक्तित्वके बर्णका थरूनी कथा (५५–२५२–२७०) मे भेटैछै।

पच्चिसम अध्याय

जैनके पथ अनुसार कर्मके सिद्धान्त उपाली सुत्र (मज्झिम निकाय १.३७१–३८७–) से प्राप्त क्याल गेलछै।

छबिसम अध्याय

अम्वलथिक राहुल सुत्र (मज्झिम निकाय १०४१४–४२०) अनुसार राहुलके शिक्षा देलगेलछै। बुद्धके धरम भाई (स त भाई) सम्बन्धमे परम्परा कथा एवं उदान सुत्र (पृ. २१–२४) आ देवदत्तके अजातशुत्रसे भेलहा सम्बन्ध संयुक्त निकाय (२.२४२) आ बुद्धके बिरूद्ध अजातशत्रुके करतुत सम्बन्धमे अंगुत्र निकाय ४.१६०) से उद्धृत क्याल गेलछै।

साताइस अध्याय

अंगुलीमाल सुत्र (मज्झिम निकाय २.९७–१०५) मे अंगुलीमालके भयानक करतुत के बर्णन एवंबौद्ध धर्मके पथके पकडैके सम्बन्धमे बहौत बडका बर्णका छै।

अठाइसम अअयाय

ई अध्याय पूर्ण रूपसे थरूनी कथासे उद्धृत क्याल गेल छै। एकर नाम शिला (५५.५७–५९) सोमा (५५–६०–६२) बिमला (५५–७३–७६) आदि।

उत्तीसम अध्याय

ये अध्यायके प्रथम खण्डकेपात्रसव मानसी चिऐ आ अंगुत्र निकाय (१.१४९–१५०) मे "प्रभुताई" के सम्वन्धमे देलहा अख्यानके जोडैले जोडती जोडल गेलछै। बर्तमान समयमे प्रचलित श्री मद् भागवत गीता मे बर्णन केलहा कर्मयोगके अव्यबहारिक पक्षके बिरूद्धमे बुद्धके व्यबहारिक ज्ञानके उपदेश मे महत्ताके दर्शावैके उद्देश्यल्याके ई बिषयसमाबेसक्याल गेलछैं यहै अध्यायमे राजकुमार

अभयक के देलहा अखिहास मझिम निकाय (१.३९२–३९६) से मिल्याल गेलछै ।

तीसम अध्याय

ई अध्याय कालम सुत्र (अंगुत्र निकाय १.१८८–१९३) से मिल्याल गेलछै सम्यक सुझ बुझके बिकासके सम्बन्धके बुद्धके देलहा अखिहास मझिम निकाय (१.२९४) मे भेटें छै। ऐ अध्यायके अन्तिम बर्णका चान्की सुत्र (२.१६४–१७७) में भेटैछै ऐ सुत्रके अनुसार ऐ ठाम चान्की नामके एकटा वावहन के वतकहा देलछै लेकिन कालम सबके चाइख अनुसार हमे खाली कालम सवके मात्र समावेश करने चिऐ ।

एकतिश्चम अध्याय

ऐ अध्यायके प्रारम्भके घटना महापरिनिर्बाणे सुत्र (दिर्घ निकाय २.७२–१६८) से व्यवहृत छै दोसर भागके विषय देवदत्तके पाचोटा मांगके सम्वन्ध विनय पिटक (२.२९६–२००) मे भेटैछैं ।

बतिसम से पैंतिसम अध्याय

ई सवटा अध्याय बुद्धके निर्वाण प्राप्त समयके चिऐ एकर वर्णका महापरि-निर्माण सुत्र दिर्घ निकाय (२.९४.१५६) मे सविस्तार बर्णन क्याल गै छे।

पुस्तकालय

२८४.२
वा।३२८२।T

लेखक– तेजनारायण पञ्जियार थारु

शिक्षा– एम. पी. एच. (वायोस्टाटिस्टिक्स)

भ्रमण– अमरिका

प्रकाशन– अंग्रेजी, नेपाली आ थारु भाषाके विभिन्न मासिक, साप्ताहिक पत्र पत्रिकामे अनेक प्रकार के लेख प्रकाशित।

सदस्य– धर्मोदय सभा

मुद्रक– मुद्रण तथा प्रकाशन विभाग, सिंहदरबार काठमाडौं।